समर्पित लोक सेवक

श्री मनोहर सिंह महता

(1911–1990)

प्रकाशक
सेवा सघ, बीगोद
भीलवाडा

लेखिका – डॉ रेणुका पामेचा
सम्पादन – श्री बालू लाल पानगडिया
आवरण एव सज्जा – श्री पकज गोस्वामी
परामर्श – वेद्य नन्द कुमार
दोहे – आशु कवि श्री मोतीलाल छापरवाल

लेजरसैटिग
प्रिन्टोमैटिक्स
लालकोठी जयपुर
फोन – 515 480

मुद्रक
याहुवली प्रिंटर्स
लालकोटी जयपुर–302 015

अनुक्रमणिका

प्रथम खण्ड – व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय खण्ड-संस्मरण

तृतीय खण्ड

परिशिष्ट





11623
21/12/2000

भूमिका

जीवन यात्रा प्रारभ कर रहे व्यक्तियों के लिये एक दीप -स्तम्भ

आजकल कई लोग अपनी पहचान 'समाज -सेवक ' कहकर करवाते है । आजादी के बाद तो सरकारी नौकरी भी समाज-सेवा हो गई है । कइयों का तो समाज-सेवा पेशा ही बन गया है ।

भाई मनोहर सिंह जी सचमुच एक समाज-सेवक थे , भले ही वे अपने -आपको वैसा कहते न रहें हों। दुसरे लोग तो उनको "सेठ साहब" ही कहते थे । उन्हें समाज-सेवक कहलाने की आवश्यकता भी नहीं, क्योंकि वे समाज-सेवा का कोई श्रेय नहीं लेना चाहते थे, न उसका ढोल पीटना । बदले में कुछ पाने की बात तो सपने में भी उनके ध्यान में नही आई होगी , न दूसरे लोगो ने कभी उनके विषय में इस बात की कल्पना की होगी ।

वास्तव में समाज-सेवा कोई अहसान नहीं है , वह तो मनुष्य के स्वाभाविक धर्म का पालन है। पश्चिम से आया हुआ विचार अक्सर व्यक्ति और समाज को आमने-सामने खडा कर देता है । भारतीय परपरा में या विचार में ऐसा कभी नहीं माना गया । वास्तव में व्यक्ति और समाज दोनों परस्पर पूरक है । एक के बिना दूसरे का अस्तित्व ही सभव नही है।

इसीलिये शायद भारतीय परपरा में 'समाज --सेवा ' शब्द का प्रचलन नही रहा है । आज जिसे समाज--सेवा कहा जाता है उसे हमारे यहाँ समाज से ' उऋण ' होना कहा गया है । उसे कर्तव्य माना गया है , समाज पर किया जाने वाला अहसान नही । मनुष्य के जीवन के जो चार सोपान माने गये हैं उनमें एक वानप्रस्थ है । (अध्ययन) ब्रहम्चर्य गार्हस्थ्य वानप्रस्थ और सन्यास - ये चारों जीवन की सहज दशायें हैं । इनमें से कोई भी कृत्रिम या आरोपित नहीं है , बल्कि सफल जीवन के आरोहण की वैज्ञानिक सीढिया हैं । इनमें से गुजरे बिना जीवन पूर्णता को प्राप्त हुआ ऐसा नहीं माना जा सकता ।

समाज –सेवा मनुष्य का कर्तव्य है । व्यक्ति के जीवन को सहज और सुखमय बना देते के लिये ही नही बल्कि व्यक्ति में आध्यात्मिक विकास के लिये भी परिवार और समाज का योगदान अनिवार्य है । समाज की सेवा उस अनेक विध् योगदान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना है , कर्ज की अदायगी है । सामान्य ऋण भी मूल से अधिक चुकाया जाता है तभी वह चुकता हुआ माना जाता है । समाज के ऋण का तो कोई हिसाब नही रहता इसलिये हर व्यक्ति को अपनी पूरी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार वह ऋण चुकाना चाहिये । मल से अधिक चुकाया तो वह व्यक्ति और समाज दोनो के लिये श्रेयस्कर ही होगा।

आज के स्वार्थ–प्रधान युग में अगर कोई सचमुच 'समाज–सेवा'करता है तो वह उल्लेखनीय बात हो जाती हैं , क्यो कि आज जीवन के विज्ञान और जीवन की कला को पश्चिम के भोगवादी प्रवाह के कारण हम लगभग भूल गये हैं। भाई मनोहर सिंह जी के जीवन में सेवा उनका सहज कर्म था वह भी जीवन के तीसरे चरण में प्रवेश करने पर प्राप्त हुआ कर्तव्य –कर्म नही बल्कि शुरु से ही वह उनके स्वभाव का अग था । तभी तो अपनी जवानी मे ही सरकारी नौकरी को छोड़कर उन्होंने इस मार्ग को अपनाया और जीवन के अत तक बिना किसी आडम्बर या दिखावे के सहज से उसे निभाया ।

उनकी स्मृति में प्रकाशित किये जान वाले इस गथ में कुछ मित्रों ने अवश्य ही भाई मनोहरसिंह जी की इस "सहज समाधि " का जिक्र किया होगा । इस दृष्टि से यह ग्रथ अपनी जीवन –यात्रा का प्रारभ कर रहे व्यक्तियो के लिये खास तौर से एक दीप –स्तम्भ का काम करेगा ।

जयपुर ,

अक्षय तृतीया, 5 5 1992 सिद्धराज ढड्ढा

लेखिका की ओर से

एक पुत्री के लिए ऐसे पिता के बारे में, जिन्हें उसने न केवल पिता के रुप में वरन् एक निस्वार्थ सेवाभावी समाज सेवी एव एक विशुद्ध आत्मा के रुप में देखा है, लिखना अत्यन्त कठिन कार्य हो जाता है। इसके बावजूद मैंने पूरा साहस बटोर कर इस पुण्य कार्य को एक कर्तव्य के रुप में हाथ में लिया। मे भलीभाति जानती हू, कि मेरे इस कार्य के लिए एक ओर जहा मेरे स्वर्गीय पिता के सहयोगी मुझे दाद देंगे, वहा कुछ सज्जन ऐसे भी होंगे, जो मेरे इस कार्य को पसन्द नही करेंगे। मैंने अपनी प्रशसा व आलोचना की समान रुप से परवाह किए बिना मित्रों व स्नेहीजनों के सहयोग से इस कठिन कार्य को सम्पादित किया है। मुझे इस कार्य में विभिन्न सार्वजनिक सस्थाओ कार्यकर्ताओ व "काका"[1] के मित्र जनो से सभी तरह से पूरा सहयोग मिला है। इस सहयोग के बिना मुझ जैसी अकिंचन व्यक्ति के लिऐ इस पुण्य कार्य का पूरा करना सम्भव नही हो पाता।

काका सही मायने में एक समर्पित जनसेवी थे। वे सदैव धरातल से जुडे रहे। उन्होनें अपने सार्वजनिक जीवन में जो कुछ किया आम लोगो के हित मे और उन्हें विश्वास में लेकर किया। उनकी भावनाओ के अनुकूल किया। यही कारण है कि उनके कार्यक्रम एव विचार आज भी न केवल माढ़लगढ क्षेत्र में वरन् उन सभी सामाजिक सस्थाओ में गूजते रहे हैं, जिनका काका से किसी न किसी रुप में सम्बन्ध था।

काका को समाज सेवा का पहला पाठ श्रद्धेय भाई साहब डा मोहन सिंह महता ने एक स्काउट के रुप में पढाया। काका शुरु से ही महात्मा गाधी, सन्त विनोबा भावे व लोकनायक जयप्रकाश नारायण के विचारों से प्रभावित रहे। उन्हेंने उनके विचारो को न केवल अपने जीवन में उतारा वरन् अपनी विभिन्न सामाजिक प्रवृतियों में भी मूर्त रुप देने का कार्य किया।

---

1 हम सब भाई बहिन, परिजन और हमारे मित्र गण मेरे पिता श्री मनोहर सिंह महता को स्नेह भाव से 'काका' के नाम से पुकारते थे।

काका ने राजकीय सेवा में आने के बाद बीगोद में अपनी सार्वजनिक प्रवृतियों का श्री गणेश किया। बीगोद उनकी कर्मस्थली बन गई। वे उस क्षेत्र के प्रमुख जन सेवक बन गए। बीगोद क्षेत्र में उन्हे सबसे पहले जागीरदारों के अत्याचारो के विरोध में संघर्ष करना पडा। पर इस संघर्ष को उन्होनें कभी भी हिंसात्मक रुप देने का प्रयत्न नही किया। उन्होनें संगठन – शक्ति और प्रेम से जागीरदारो का हृदय परिवर्तन किया और जागीर की गरीब जनता को लाग–बाग, बेगार आदि ज्यादतियों से मुक्ति दिलाई। काका को अपने इस कार्य में श्री विजय सिंह पथिक और श्री माणिक्यलाल वर्मा द्वारा संचालित बिजौलिया आन्दोलन से बडी प्रेरणा और शक्ति मिली।

काका के प्रौढ शिक्षा कार्यक्रम से न केवल क्षेत्र में शिक्षा का प्रसार हुआ वरन् लोगो मे नए जीवन का संचार हुआ। सहकारिता कुटीर उद्योग शराबबन्दी, मृत्युभोज, छुआछूत निवारण आदि सामाजिक रचनात्मक कार्यों में उनकी सफलता का राज उनका प्रौढ – शिक्षा का कार्यक्रम था। वे इस कार्यक्रम के द्वारा सभी वर्गों में पूरी तरह हिलमिल गए। इसी के द्वारा उन्होनें क्षेत्र में हिन्दू मुस्लिम एकता की भी मिसाल कायम की।

काका ने ग्राम समाज के सर्वांगीण विकास के प्राय सभी पहलुओ को समझा, और उस दिशा में जीवन पर्यन्त कार्य किया। वे गाव के जन–जीवन से एस जुड गए कि गाव के परिवार के हर सदस्य का दुख दर्द उनका दुख दर्द बन गया।

काका सार्वजनिक जीवन में रहते हुए सन् 1946 में मेवाड प्रजामण्डल के उत्तरदायी शासन के आन्दोलन में शामिल हो गये थे। वे प्रजामण्डल की सर्वोच्च समिति, कार्यकारिणी समिति के प्रमुख सदस्य रहे। राजस्थान के निर्माण के बाद रियासतों के प्रजामण्डल कांग्रेस की समितियो में परिवर्तित हो गए। वे सन् 1952 तक कांग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ता रहे। उस समय सन्त विनोबा भावे की प्रेरणा से देश में लोक सेवक संघ का निर्माण हुआ, जिसमें यह निश्चय हुआ कि जो कार्यकर्ता गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम से व लोक सेवक संघ से जुडे रहना चाहत हैं वे राजनीति से अलग हो जाए। काका ने तुरन्त ही कांग्रेस की सदस्यता से अपने आपको मुक्त कर लिया और पूर्ण रुप से रचनात्मक कार्यों में रत रहने का संकल्प ले लिया।

1967 में काका को क्षेत्र की जनता के अनुरोध पर अत्यन्त दबाव में एक निर्दलीय सदस्य की हैसियत से विधानसभा के लिए चुनाव लडना पडा। वे चुनाव में विजयी हुए। वे विधानसभा में दलगत राजनीति से ऊपर उठकर आम जनता की भलाई व शराबबन्दी जैसी समस्याओ को लेकर निरन्तर 5 वर्ष तक विधानसभा के

मच पर सघर्ष करते रहे। विधायक के रुप में भी उनकी पहचान रचनात्मक कार्यकर्ता की ही रही। सन् 1972 के चुनावो में उन्होंनें भाग नहीं लिया।

इस दौरान काका सागानेर आकर रहने लग गए थे, पर सेवा सघ बीगोद में उनकी सक्रिय भूमिका चलती रही। सन् 1972 के बाद उन्होंनें प्रान्त व्यापी शराब बन्दी आन्दोलन को सशक्त बनाने में पूरी शक्ति लगा दी। इसमें उन्हें आशिक सफलता भी मिली।

सन् 1975 में प्रधानमत्री श्रीमती इदिरा गाधी ने देश में आपातकाल स्थिति लागू कर दी। लोकनायक जयप्रकाश बाबू मोरारजी भाई सहित कई शीर्षस्थ नेता गिरफ्तार कर लिए गए। समाचार पत्रों पर सेन्सर लागू कर दिया गया। सारे देश में दमन चक्र चला। इसके फलस्वरुप देश के अन्य भागों की तरह राजस्थान में भी विभिन्न विरोधी दलों एव सर्वोदयी कार्यकर्ताओ ने सत्याग्रह चलाया। काका व उनके सर्वोदयी साथी इस सत्याग्रह में गिरफ्तार किए गए, और भीलवाडा जेल में रहे।

सन् 1977 में भारत सरकार ने आपात स्थिति में ढील दी और आम चुनाव करवाए। काका को भी जनता दल के चुनाव चिन्ह पर अपने क्षेत्र माडलगढ से विधानसभा के लिए पुन चुनाव मैदान में आना पडा। वे विजयी रहे। उन्होंनें शराबबन्दी के प्रश्न को एक बार फिर विधानसभा में मुखरित किया। इस बार वे राज्य में पूर्ण नशाबन्दी के अपने उद्देश्य के निकट पहुचने में स फल हुए। 1980 में विधानसभा भग कर दी गई। उसके बाद उन्होंनें राजनीति से स यास ही ले लिया।

काका ने अपना शेष जीवन सागानेर (भीलवाडा) में ही बिताया। उन्होंने सागानेर की स्थानीय उच्च माध्यमिक विद्यालय का विस्तार करवाया। माध्यमिक स्तर की छात्रों एव छात्राओ की शालाओ के लिए जमीन का आवटन करवाया, भवन निर्माण के लिए आवश्यक धन जुटाया। इसमें उनक मित्र श्री मिश्री लाल पानगडिया ने काफी मदद की। फलस्वरुप इन विद्यालयो के लिए भव्य भवन तैयार हो गए, जो आज सागानेर कस्बे की शोभा बढा रहे हैं। योतो काका का विभिन्न क्षेत्रों में सलग्न सभी प्रकार के कार्यकर्ताओ से व्यापक सम्पर्क रहा, पर चूकि वे सर्वोदय आन्दोलन से गहराई से जुडे हुए थे अत यह स्वाभाविक था कि सर्वोदय विचारधारा के मित्रो से उनका निकट का सम्पर्क होता। वे शराबबन्दी आन्दोलन को लेकर श्री मोरारजी भाई देसाई एव श्रीमती सुशीला नैयर के बहुत निकट सम्पर्क में आ गए थे। बल्कि उन्ही की प्रेरणा से उन्होने सन् 1977 का चुनाव लडा था। सन्त विनोबा भावे के निकट आने का कारण भूदान ग्रामदान आन्दोलन था। उन्हीं की प्रेरणा का परिणाम था कि राज्य में सर्वाधिक भूदान, काका के क्षेत्र माडलगढ में ही हुआ

था। श्री जयप्रकाश नारायण व श्रीमती प्रभावतीजी से काका का गहरा रिश्ता सर्वोदय कार्यक्रमो के दौरान बन गया था। अन्य प्रमुख सर्वोदयी नेता, जिनसे उनकी गहरी मित्रता थी, वे श्री ठाकुरदास बग श्री गोकुल भाई भट्ट, श्री सिद्धराज ढड्ढा आदि।

विभिन्न राजनैतिक विचारधाराओ वाले कार्यकर्ताओ से भी उनका जीवन्त सम्पर्क रहा चाहे फिर उनसे कितने भी सैद्धान्तिक मतभेद ही क्यों न थे। काग्रेस के श्री माणिक्यलाल वर्मा श्री मोहनलाल सुखाडिया,श्री रमेशचन्द्र व्यास, भारतीय जनता पार्टी के श्री भैरोसिंह शेखावत, समाजवादी दल के श्री माणिक चन्द सुराणा, प्रोफेसर केदार व श्री राम किशन उनक निकट मित्रो में से थे। स्थानीय व अन्य जिन कार्यकर्ताओ से पारिवारिक घनिष्ट सम्बन्ध रहा है, वे थे श्री त्रिलोक चन्द जैन, श्री छीतरमल गोयल, श्री पूर्णचन्द जैन, श्री केसरीपुरी गोस्वामी , श्री रुपलाल सोमाणी, श्री भवरलाल मादादा श्री नन्द कुमार वैद्य श्री रामस्वरुप अजमेरा, श्री सोहनलाल मून्दडा श्री समरथ सिंह मेहता, श्री मदनलाल जोशी, श्री जसवन्त सिंह पगरिया, श्री प्रताप धाकड श्री बशीधर श्री वैष्णव श्री मिश्रीलाल पानगडिया सहित अनेक साथी। साथियो की सूची बनाना आसान काम नही है।

काका जीवन में सदा स्पष्टवादी रहे। वे खरी–खरी बात सुनाने में बड़े से बडे व्यक्ति से भी नहीं चूकत थे। उनकी व्यापक मित्र–मण्डली आज भी उनके तीखे व्यग्यों को स्मरण करती है। वे बहुत खुश मिजाज थे और हर समय अपने ईर्द–गिर्द खुशनुमा माहौल बनाए रखते थे।

जीवनभर सार्वजनिक प्रवृतियो में व्यस्त रहने के बावजूद उन्होंनें अपने परिवार की कभी उपेक्षा नही की। काका ने अत्यन्त सीमित आर्थिक साधनों से हम भाई बहिनो को ठीक तरह से लिखाया, पढाया, और हमारे मानसिक विकास की ओर पूरी तरह ध्यान दिया। दूसरी ओर काका को अपने कार्यों में परिवार से सदा पूर्ण सहयोग मिला। मेरी माँ ने, हम सब भाई बहिनों ने व अन्य सभी निकटस्थ परिजनों ने काका के सिद्धान्तो का निर्वाह किया। खादी के वस्त्र पहने सामाजिक कुरीतियों से लड़े और हर कार्य में रुचि रखी। यही नही बल्कि मेरी दादी ने भी, जो कि सामन्तवादी परम्परा में पली और बडी हुई धीरे–धीरे काका के सुधारवादी कार्यक्रमों को स्वीकार कर, सहयोग दिया और स्वय विधवा विवाह की पक्षधर बनीं। मैं यह निसकोच कह सकती हू कि मेरी माँ व दादी का काका को खुले दिल से सहयोग नहीं मिलता तो शायद जितना उन्होंने समाज के लिए किया वह उनके लिए आसानी से सम्भव नही होता।

काका को जीवन में आर्थिक ही नहीं अन्य प्रकार की कठिनाईयो का भी सामना करना पड़ा। किन्तु वे कभी क्षण मात्र के लिए भी विचलित नहीं हुए और अपने मार्ग पर ईमानदारी व निष्ठा से चलते रहे। शायद यही उनकी सफलता की कुजी थी।

काका देश-प्रदेश व क्षेत्र की कई सामाजिक एव स्वयसेवी सस्थाओ से घनिष्ट रुप से जुड़े हुए थे। उन्होंने कई सस्थाओ का निर्माण भी किया। बीगोद का सेवा सघ व सहकारी समिति उनकी महत्वपूर्ण रचना थी। सस्थाओ में निष्ठा ईमानदारी रहे यह उनका मूल मन्त्र था। किसी भी सस्था के साथ जन्म जन्मान्तर तक चिपके रहना उनके स्वभाव में नही था। वे अन्य लोगों को आगे लाने में विश्वास करते थे, और ऐसा ही उन्होने किया।

काका के रचनात्मक कार्यों में वैद्य नन्दकुमार का सबसे ज्यादा सहयोग रहा। सेवा सघ की स्थापना स लेकर सहकारिता आन्दोलन के पूरे प्रयोग में वे सदैव काका के साथ रहे। आज भी सेवा सघ बीगोद वैद्य नन्दकुमार की अध्यक्षता मे कार्यरत है। इस पुस्तक को लिखने का बीडा भी मैंने उनकी ही प्रेरणा से उठाया। उन्होंनें सन् 31 से अब तक क कार्यों का समस्त विवरण व फाईले उपलब्ध करवा कर इस पुस्तक की सूचनाओ को विश्वसनीय बनाया है, इसके लिए मै व्यक्तिगत रुप से उनके प्रति अत्यन्त आभारी हूँ।

मैं उन सभी परिजनों एव काका के साथियो और सहयोगियों के प्रति आभारी हू, जिन्होंने मुझे इस स्मृतिग्रन्थ की प्रेरणा और सहयोग दिया। मैं उन विद्‌जनो के प्रति विशेष आभारी हू, जिन्होंने अपने सस्मरण लिखकर इस ग्रन्थ की उपयोगिता बढाई। इस ग्रन्थ का सम्पादन जाने माने विचारक चिन्तक, लेखक श्री बालूलाल पानगड़िया ने किया जो काका के घनिष्ठ मित्रों में थे। मैं उनके प्रति सादर आभार प्रकट करती हूँ।

टकण के कार्य के लिए श्री पुष्पेन्द्र चौधरी का मैं आभार प्रदर्शन करती हू। मैं श्रीमती राजकुमारी सूद का भाषा सुधार के लिए आभार प्रकट करती हू। इस समस्त कार्य में मेरे पति श्री सुरेन्द्र सिंह पामेचा का अत्यन्त प्रेरणादायी सहयोग रहा, जिसके कारण यह कार्य सम्पन्न हो सका।

बीगोद सेवा सघ ने प्रकाशन का भार उठाकर न सिर्फ काका के कार्यो को गरिमा प्रदान की, बल्कि समस्त आर्थिक भार उठाकर प्रकाशन को आसान बना दिया। सेवा सघ बीगोद के जरिए मैं उन समस्त कार्यकर्ताओ के प्रति आभार प्रकट करती हूँ जिन्होनें काका के साथ काम किया और आज भी कर रहे हैं। यह स्मृति ग्रन्थ

एक लोक सेवक की स्मृति को सदा–सदा ताजा बनाए रखने और हर कार्यकर्ता को गॉव व जमीन से जुडने व कार्य करने की प्रेरणा देने की दृष्टि से लिखा गया है। हर कार्यकर्ता को मेरा शत् शत् प्रणाम। यह ग्रन्थ उन्ही को समर्पित है।

डा रेणुका पामेचा,

एस– 5 बजाज नगर,

जयपुर –15

प्रकाशकीय

"न त्व ह कामये राज्यम् ,न स्वर्ग नाचुअवम् ।
काम ये दु ख तप्ताना , प्राणिनामार्ति नाशनम् ।।

उन दिनो की बात है जब देश मे अग्रेजो की गुलामी से छूटने की तीव्र लालसा लग रही थी। सारे भारत में गाधी की आधी जोरो से चल रही थी। प्रत्येक देशवासी चाहे वह वृद्ध ,युवा या बालक ,स्त्री या पुरुष कोई भी हो उसके हृदय में एक ही टीस चल रही थी कि देश कैसे आजाद हो ? तब भावुक हृदयी नौजवान श्री मनोहर सिंह महता उस तेज हवा से कैसे बचते ? सयोग की बात है कि युवा मनोहर सिंह महता को अभिजात्य पारपरिक एव राज्य के पुराने आनुवाशिक सम्बधो के कारण विद्यालय से निकलते ही शराब के भट्टी खाने की अफसरी की नोकरी मिली और नियुक्ति मिली बीगोद ग्राम में। दिल में देश की आजादी की तडफन और लौ लगाए नवयुवक के लिए प्रशासन का अनुशासन पालते हुए देश में अग्रेजो से सीधी टक्कर के लिए सत्याग्रह की लडाई छेड रखी थी , और इसकी ओर देश को आजादी के लिए तैयार करने और जन जागृति के लिए रचनात्मक कार्यक्रम चलाने की मुहिम चला रखी थी। श्री महता ने सीधी लडाई में न कूदकर जन जागरण करने के लिए रचनात्मक कार्यक्रम का रास्ता अपनाया।

आज का माडलगढ उपखण्ड उस समय का एक पिछडा हुआ जागीरी क्षेत्र था। जहाँ परम्परा से चले आ रहे सारे रीति रिवाज जागीरी तरीकों के ही थे। शिक्षा का नितान्त अभाव था। अज्ञान के कारण जनजीवन की भयकर दुर्दशा थी। तब सबसे पहले श्री महता ने ज्ञान की जोत जगाने का काम प्रौढ शिक्षा से शुरु किया। धीरे -धीरे जनता की माग बढने लगी और इस काम ने सेवा सघ नाम से सस्था का स्वरुप ग्रहण किया। समय आया और उन्होंने राज्य की नौकरी छोड पूर्ण रुप से अपना जीवन लोक सेवार्पित कर दिया।

धीरे-धीरे जन चेतना बढती गई। सेवा सघ की विविध प्रवृतियां द्वारा सेवा की जाने लगी। जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नही बचा कि श्री महता ने उस काम को अपने हाथ में न लिया हो और सेवा काम से पीछे हटे हो। शिक्षा, स्वास्थय , अभाव अभियोग, भूदान आन्दोलन , शराबबन्दी , सामाजिक कुरीति निवारण सामाजिक

न्याय, हरिजन उद्धार , महिला जागरण जैसी विविध विधाओ तथा प्रवृतियों द्वारा वे रात दिन जीवन पर्यन्त सेवा में तल्लीन तथा तन्मय रहे।

ऐसे पूर्ण समर्पित श्रदेय अग्रणी साथी के जीवन पर प्रकाश डालने के लिए ग्रन्थ का प्रकाशन करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष एव गौरव अनुभव हो रहा है।

इस पुस्तक के सकलन में जिन जिन साथियों व मित्रों ने सहयोग दिया उनके हम आभारी हैं। विशषकर डॉ रेणुका पामेचा बधाई की पात्र है,जिन्होंने सबसे अधिक परिश्रम कर लेखन का कार्य सम्पन्न किया और पुस्तक का रुप दिया। हम श्री बालूलाल जी पानगडिया व श्री पकज गोस्वामी के आभारी हैं जिन्होंने पुस्तक को विधिवत स्वरुप देने मे पूरा पूरा सहयोग दिया।

श्रदेय भाईसाहब श्री सिद्ध राज जी ढड्ढा ने हमारा आग्रह स्वीकार कर भूमिका लिखने का कष्ट किया जिससे समर्पित लोकसेवक के जीवन से प्रेरणा मिलती रहेगी। हम भाईसाहब के बहुत आभारी हैं ।

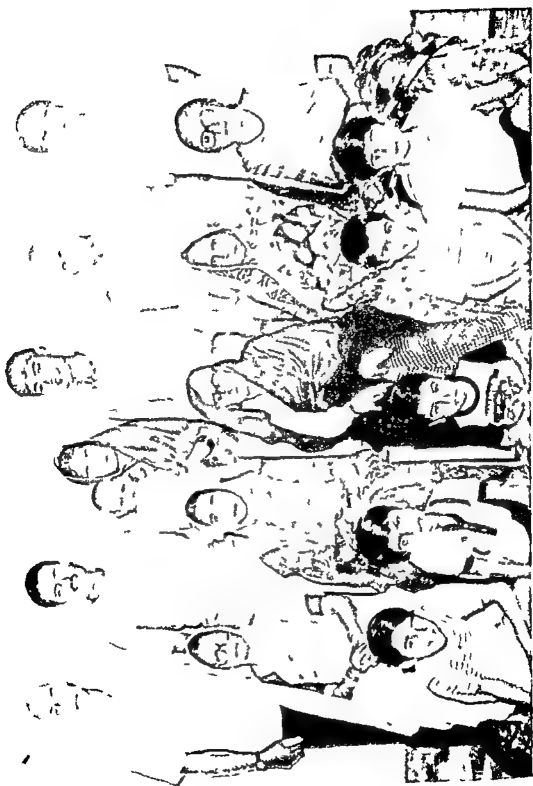
टकण व मुद्रण के लिए हम श्री पुष्पेन्द्र चौधरी एव श्री अखिल बसल के आभारी हैं। अन्त में उन सब सस्थाओ, साथियों, मित्रों, सहयोगियों का आभार मानते हुए उन्हे धन्यवाद देना चाहते है जिन्होनें इस पुस्तक में लिखने एव प्रकाशन के लिए हर प्रकार का सहयोग प्रदान किया।

दिनाक 5-5-1992

वैध नन्द कुमार
अध्यक्ष
सेवा सघ बीगोद
(भीलवाडा , राजयस्थान)



काका के ओजस्वी प्रेरणा स्त्रोत
डॉ मोहन सिंह महता एवं काका के सहयात्री मित्रों को निवेदित



चित्र-परिचय

खडे हुए (बायें से) -

श्री चन्द्रसिह महता (दामाद) श्री गजेन्द्र महता (पुत्र) श्रीमती अरुणा महता (दोहिता वधु)
श्री राजेश महता (दोहिता) श्री मनोहर सिंह महता श्री सुरेन्द्र सिह पामेचा (दामाद)

कुर्सी पर (बाये स) -

श्रीमती यशवन्त महता (बडी पुत्री), श्रीमती रश्मि महता (पुत्र वधू)
श्रीमती पिरोज कवर (माता) श्रीमती विमला महता (पत्नी) श्रीमती रेणुका पामेचा (पुत्री)

नीच बैठे हुए (बाय से) -

सौरभ (पोता) मनीष (दोहिता) तरुण (पड दोहिता) गौरव (पोता) अमित (दोहिता)

सुख संपत अर नाम री, किंचित रखी न चाह।
जीवन भर चल्या रिया, जन सेवा री राह॥

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

व्यक्तित्व एवं कृतित्व
व्यक्तित्व एवं कृतित्व
व्यक्तित्व एवं कृतित्व
व्यक्तित्व एवं कृतित्व
व्यक्तित्व एवं कृतित्व
व्यक्तित्व





श्री मनोहर सिंह महता

जीवन परिचय

सम्वत् 1968, श्रावण शुक्ला अष्ठमी तदनुसार 3 अगस्त 1911 को राजस्थान के चित्तौडगढ जिले के गाँव बस्सी मे, महता परिवार में श्री मनोहर सिंह महता का जन्म हुआ जो आगे चलकर एक सच्चा जन सेवक बना।

मूल रूप से यह महता परिवार मारवाड (जोधपुर व बीकानेर) से सम्बन्धित था। कालान्तर में कुछ परिवार मेवाड में आए। प्रारम्भ में उदयपुर में दो परिवार आकर बसे। इन्ही में से एक परिवार बस्सी चला गया और दूसरा भीलवाडा के पास सागानेर गाँव में जा बसा।

महता परिवार का मूल गोत्र पुगलिया था जो बाद में बदल कर कोचर बन गया। इस सम्बन्ध में एक किवदंति हे कि बरसों तक इस परिवार में कोई सन्तान नही बची, तब एक रात कुल देवी ने स्वप्न में दर्शन दिए और कहा कि अब जब सतान हो तो उस समय मकान की छत पर जो भी पक्षी बोले उसी का नाम उस सतान को देना। छत पर कोचर पक्षी के चहकने पर पहली सतान का नाम कोचर रखा गया। बाद में यही मूल गोत्र बन गया।

मनोहर सिंह महता के पिता श्री धनराज जी को बडे दादा श्री पृथ्वीराज जी के यहाँ गोद रखा गया। धनराज जी के तीन सतानों में सबसे बडे पुत्र श्री हीरालाल जी को धनराज जी के छोटे भाई श्री भैरूलाल जी के यहाँ गोद रखा गया और सबसे छोटे पुत्र श्री मनोहर सिंह महता को 9 वर्ष की उम्र में सागानेर निवासी सेठ इन्द्रचन्द जी महता के यहाँ गोद रखा गया। इस तरह तीन पुत्रों ने तीन परिवारों को आबाद किया।

श्री मनोहर सिंह महता के बस्सी वाले परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर थी। वे जिस परिवार में गोद आए वह एक सम्पन्न परिवार था। परन्तु उनके सागानेर आने के एक महिने बाद उनके दत्तक पिता सेठ इन्द्र चद का देहावसान हो गया।[1]

---

1 सागानेर के महता परिवार के पूर्वजों को यह उपाधि उत्कृष्ठ सामाजिक,साहसिक कार्यो के फल स्वरूप मेवाड–दरबार द्वारा प्रदान की गई थी। सेठ इन्द्रचन्द के देहान्त के बाद श्री मनोहर सिंह महता मेवाड में सेठ साहब के नाम से विख्यात हो गये थे।

उनकी माताश्री पिरोज कवर ने 102 वर्ष की उम्र में अपना शरीर छोडा। जैन परिवार की होते हुए भी माताजी कट्टर वैष्णव धर्मावलम्बी थी। वे सामन्त वादी माहौल की पोषक थी। ऊच नीच को वे बहुत ज्यादा मानती थी एव अपने पुत्र मनोहर सिंह को हरिजन बच्चो के साथ खेलने कूदने से मना करती थी। इसकी जबरदस्त प्रतिक्रिया युवक मनोहर सिंह के ऊपर हुई। उन्होने जातिगत बधनों को तोड दिया और हरिजन उद्धार के कार्यो मे लग गए। माताजी ने यह मान लिया कि पुत्र पर गाधीजी का असर है और उन्हें कहना व्यर्थ है।

बालक मनोहर सिंह की प्राथमिक शिक्षा बस्सी में ही प्रारम्भ हो गई थी। गोद आने के बाद पिताजी के देहान्त के कारण उन्हे अपनी शिक्षा जारी रखने के लिये ननिहाल जाना पडा। प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने उदयपुर के महाराणा कॉलेज से मेट्रिक पास की। उदयपुर में शिक्षा के दौरान वे स्थानीय जैन छात्रावास मे रहे।

घर में धीरे-धीरे पुराना पैसा सामाजिक कुरीतियो में बरबाद होता गया। सामन्तवादी माहौल, राजसी ठाठ का रहन सहन दास दासियों के विवाह, देवी देवताओ और तुलसी के समय समय पर किये जाने वाले समारोह आदि पर दिल खोल कर खर्च किया गया। अन्त में स्थिति यह बन गई कि युवा मनोहर सिंह को अपना आगे अध्ययन छोडने के लिए मजबूर होना पडा। उन्होने अपने जीवन में इसका प्रायश्चित घर-घर मे शिक्षा प्रसार करने के सकल्प के रूप मे किया।

श्री मनोहर सिंह को बचपन से ही भाषण देने व नाटक खेलने का बहुत शौक था। वे अपने उदयपुर के शैक्षिक काल में स्काऊटिंग से पूरी तरह जुड गए थे। उसी दौरान वे डॉ मोहन सिंह महता के सम्पर्क में आए। फिर तो वे उनके भक्त ही बन गए। दोनो के बीच आत्मीयता बढती ही गई जिसे दोनो ने जीवन पर्यन्त निभाया।

श्री महता ने उदयपुर में अपने अध्ययन के साथ-साथ प्रौढ शिक्षा का काम हाथ में लिया। इसके लिए नगर के पिछडे मौहल्लो मे कई केन्द्रो का सचालन किया। इन केन्द्रों के माध्यम से किए जाने वाले साक्षरता सम्बधी कार्यो की बडी शौहरत हुई और नगर एव बाहर के प्रतिष्ठित शिक्षा कर्मी इन केन्द्रो को देखने आने लगे। उत्तर प्रदेश के मेरठ कॉलेज के प्राचार्य और विद्वान श्री शीतल प्रसाद ने श्री महता के काय की भूरि-भूरि प्रशसा की। उन्होंने डॉ मोहन सिंह महता को एक पत्र लिखा कि मैं एक बालक (मनोहर सिंह) के काम से अभिभूत हो गया हू। यह बालक आगे चलकर समाज को नई दिशा देगा।

अपने "स्काउटिंग" के अनुभव के आधार पर श्री महता ने अपने गाव सोगानेर में भी एक मित्र मडली तैयार की जिसने ग्राम सेवा के कार्य हाथ में लिए।

श्री महता के दो विवाह हुए। पुराने रिवाज के अनुसार उनका पहला विवाह छोटी उम्र में हो गया था। यह विवाह बडी धूमधाम से हुआ था। इस विवाह का ससुराल पक्ष पर अत्यधिक भार पड गया था, जिससे यह परिवार आर्थिक दृष्टि से कमजोर हो गया। उनकी पहली पत्नि से एक पुत्री "यशवन्त" का जन्म हुआ। वे विवाह के आठ साल बाद बिमारी के कारण अपनी एक मात्र 3 वर्षीय बच्ची (यशवन्त) को छोड कर चल बसी।

इस विवाह ने श्री महता के मन में सामाजिक कुरीतियों के प्रति एक द्वन्द्व पैदा कर दिया। अब वे सार्वजनिक जीवन में प्रवेश कर चुके थे और देश में चल रही गाधी विचारधारा से प्रभावित हो चुके थे। वे केवल 28 वर्ष के थे। मित्रो और परिजनों के दबाव से उन्होंने दूसरी शादी करना स्वीकार कर लिया। पर उन्होने पूर्णत ठान ली कि उनकी यह शादी एकदम सादगी से होगी। वे केवल तीन मित्रो को बारात में ले गये। शादी की सादगी का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उसमे कुल खर्च 175 रु हुआ। उस समय जब कि मेवाड में, और विशेषत मुत्सद्दी परिवारों में पर्दे का बोलबाला था उन्होंने पर्दा तोड़ कर शादी की जिसकी कई दिनो तक चर्चा रही। वे सादगी पूर्ण विवाह के समर्थक व प्रचारक बन गए। वे उन्ही विवाह समारोहो में जाते जहाँ तिलक अथवा दहेज न लिया जाता और दिया जाता।

श्री महता का दूसरा विवाह नन्दराय के चौधरी परिवार में हुआ था। धर्मपत्नि श्रीमती विमला देवी ने अपने पति के विचारों को जल्दी ही समझ लिया और उन्होंने उनके सामाजिक–सुधार सम्बन्धी कार्यो में सभी प्रकार सहयोग दिया। अपने सुधारवादी पति की भाति उन्होंने भी खादी पहनना प्रारम्भ कर दिया। श्री महता को गर्व था कि उनके जीवन भर इमानदारी से गुजर बसर करने में उनकी धर्मपत्नी का बडा हाथ था। इस विवाह से एक पुत्री रेणुका (लेखिका स्वय) व पुत्र गजेन्द्र का जन्म हुआ। दोनो ही भाई बहन शिक्षा पूरी करने के बाद से महाविद्यालयो में प्रोफेसर है।

पहले विवाह के समय ही श्री महता मेवाड सरकार के आबकारी विभाग में एक अधिकारी नियुक्त होकर बीगोद (भीलवाडा) आ गये थे। तभी से बीगोद और माडलगढ क्षेत्र उनकी कर्मस्थली बन गई।

श्री महता को सन् 1938 में सरकारी सेवा से इस्तीफा दे देना पडा। कारण यह था कि श्री महता के जन जागृति के कार्यक्रम से आसपास के जागीरदार और अन्य

निहित स्वार्थ वाला तबका उनसे चौंक गया था। डिस्टलरी में कार्यरत कर्मचारी तो उनसे पहले ही दुखी थे, क्योंकि उन्होंने डिस्टलरी के उपयोग में आने वाली वस्तुओं के खरीद फरोख्त और शराब में मिलावट सम्बन्धी किये जाने वाले घोटालों पर अकुश लगा दिया था। इन परिस्थितियों में एक ओर तो जागीरदारों ने स्वय श्री महता की सार्वजनिक प्रवृतियों के विरूद्ध मेवाड सरकार को शिकायतें की, और दूसरी और उन्होंने कर्मचारियों से भी ऊल–जलूल शिकायतें करवाई। सरकार ने श्री महता के विरूद्ध एक जॉच समिति बैठाई। पर जब उसे कुछ नहीं मिला तो सरकार ने श्री महता को बीगोद से चित्तौडगढ स्थानान्तरित कर दिया। श्री महता ने इस तबादले को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया और अन्ततोगत्वा राजकीय सेवा से त्यागपत्र दे दिया। इस सारे प्रकरण में आबकारी आयुक्त का बडा हाथ रहा। उन्होंने सरकार को लिखा कि श्री महता का माडलगढ क्षेत्र में प्रभाव बढता जा रहा है, अत उन्हें राजनैतिक कारणों से वहॉं से हटाना जरूरी है। ■

शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य
सेवा संघ बीगोद की स्थापना

श्री महता राजकीय सेवा से मुक्त होकर माडलगढ क्षेत्र में ही पूर्णरूप से रचनात्मक कार्यों में सलग्न हो गए। माडलगढ क्षेत्र मेवाड राज्य के अत्यन्त गरीब और पिछडे हिस्सों में से था। वहाँ की आबादी लगभग 60 हजार थी। रेल, डाक, तार सडक से इसका सम्पर्क नहीं था। चारो और अशिक्षा, अ धविश्वास जागीरी जुल्म और बेगार का साम्राज्य था। वहाँ के किसान इतने डरपोक व कायर बन गए थे कि चुपचाप सब जुल्म सहा करते थे। उन दिनों पास के ऊपरमाल (बिजोलिया) क्षेत्र में जागीरदारो के भयकर अत्याचारों व जुल्मो की शिकार जनता ने स्वनाम धन्य श्री विजय सिंह पथिक के नेतृत्व में बिजोलियाँ का किसान आन्दोलन छेड रखा था। इस अहिंसक किसान आन्दोलन की महात्मा गाधी ने भी भूरि-भूरि प्रशसा की थी। श्री महता इस अन्दोलन से बडे प्रभावित हुए।

डॉ मोहन सिंह महता और बाबू श्री हुक्मीचन्द सुराणा के प्रगाढ सम्पर्क मे आने के कारण श्री महता में सेवा के सस्कार अकुरित हो गए थे। उनमें कार्यकर्ताओ को तैयार करने की अटूट क्षमता थी। फलस्वरूप बीगोद में श्री नन्दकुमार वैद्य श्री मोतीलाल चण्डालिया आदि जैसे सेवा भावी युवको से उनका सम्पर्क हुआ और उन्होंने धीरे-धीरे वहा सार्वजनिक कार्यकर्ताओ की एक अच्छी सी मडली बनाली। इन्ही कार्यकर्ताओ के माध्यम से श्री महता ने जन सेवा के कार्यक्रम चालू कर दिए। उन्होने प्रारम्भ में महापुरूषो की जयन्तियाँ पर्व एव उत्सवों के आयोजन द्वारा लोक शक्ति को सगठित किया। फलस्वरूप सन् 1933 मे 'माडलगढ - बीगोद प्रान्तीय सेवा सघ" नाम के सगठन का स्वरूप सामने आया।

सेवा सघ के प्रथम अध्यक्ष सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री श्री केसरी लाल बोर्दिया थे। सघ के सहयोगियों में इन्दौर के ख्याति प्राप्त जन सेवी च द्रसिंह भडकतिया को सदैव स्मरण किया जायेगा। धीरे-धीरे सेवा सघ व श्री महता एक दूसरे के पर्याय बन गए।

सेवा सघ का लक्ष्य जनता में चेतना लाना शिक्षा प्रसार करना कुरीतियो का निवारण अ याय का शान्त और अहिंसक प्रतिकार व्यसन मुक्ति का प्रचार दलित शोषित और पीडित जनता की सेवा करना रखा गया था।

सन् 33 से लेकर श्री महता के मृत्युपर्यन्त, श्री महता के नेतृत्व में सेवा सघ ने सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक और सास्कृतिक प्रवृत्तियों द्वारा क्षेत्र की अभूतपूर्व सेवाएँ की हैं।

क्षेत्र का पहला स्कूल 23 फरवरी सन् 31 को खटवाडा नामक ग्राम में जन सहयोग से खोला था। इसके बाद आम्बा में एक दूसरा स्कूल और बीगोद में औषधालय रात्रिशाला, व वाचनालय प्रारम्भ किये।

श्री महता ने सरकारी अधिकारी के रूप में बीगोद में आते ही यह अनुभव कर लिया था कि जब तक शिक्षा प्रसार नहीं किया जायेगा, अज्ञानता में डूबी जनता में चेतना जगा पाना कठिन ही नही असम्भव होगा। अत उन्होंने सन् 1932 में स्थानीय डिस्टलरी भवन में रो पहली प्रौढशाला प्रारम्भ की। यह जिले की प्रथम प्रौढशाला थी। श्री महता ही इस प्रौढशाला के प्रथम अनुदेशक थे। वे दिन में राज्य सेवा अजाम देते और सध्या को उक्त शाला का सचालन करते। वे इस प्रौढशाला के माध्यम से जन चेतना व जनता में स्वाभिमान, स्वावलम्बन जगाते रहे। श्री महता ने बीगोद के अनुभव से लाभ उठाकर निकट के गावों में बच्चों के विद्यालय व रात्रिशालाएँ खोलना प्रारम्भ किया।

श्री महता का मानना था कि पाठशाला सिर्फ अक्षर ज्ञान के लिये नही वरन् गाँवो में जनजागृति लाने का एक माध्यम भी है। उनका कहना था कि गाव के सामाजिक विकास की ओर ध्यान देना स्कूल के कार्यकर्ताओ का आवश्यक कर्तव्य है। श्री महता के अनुसार स्कूल क अध्यापक व रात्रिशाला के अनुदेशक को गाव में ही रहना चाहिए एव उसका गाव वालो से जीवन्त सम्पर्क होना चाहिए। इससे भी ज्यादा यह मानना था कि शिक्षक गाव वालों के सुख दु ख का साथी व सलाहकार है। बच्चो मे नैतिक गुणो का विकास करने के लिए वे अध्यापक को सबसे बडी कडी मानते थे। सेवा सघ की शालाओ में शिक्षकों के चयन के लिए वे उनकी शैक्षणिक योग्यता के साथ ही साथ सामाजिक सेवा की प्रवृति को भी समान महत्व देते थे। इन स्कूलो में जिन अध्यापको का चुनाव किया उनमें स्वतत्रता सेनानी श्री माणिक राम जी नुवाले का नाम उल्लेखनीय है। श्री महता को विद्यार्थियों से अत्यन्त प्रेम था। वे विद्यालयों की एक एक गतिविधियो में व्यक्तिगत रूचि लेते थे। उनका विश्वास था कि विद्यालयों में रचनात्मक काम व चरित्र निर्माण का काम होना चाहिए। उन दिनों इस क्षेत्र में विद्यालयों के अनेक भवन बने। श्री महता ने पता

नहीं कहाँ-कहाँ से इस कार्य के लिए धनराशि एकत्र की। सेवा सघ के माध्यम से विभिन्न स्कूलों में टूर्नामेन्ट कराना उनकी विशेष रूचि का विषय था। सन् 55 में बीगोद स्कूल में हुए टूर्नामेन्ट में जिले के 600 बच्चों व 100 अध्यापकों ने भाग लिया और श्रमदान व कताई की विशेष प्रतियोगिता रखी जिसे देखने बहुत लोग आए। इसके बाद श्रमदान व कताई विद्यालय की गतिविधियों के अग बन गए।

धीरे-धीरे सेवा सघ की प्रवृत्तियों के प्रति लोगों में विश्वास पैदा होने लगा। चारों और से ग्रामीण लोग श्री महता के पास आते और अपने गावों में स्कूल खोलने का आग्रह करते और साथ ही आवश्यक सहयोग का आश्वासन भी देते।

देश की आजादी के पूर्व सेवा सघ ने कभी राजकीय मदद का सहारा नही लिया। उन्होंने जन सहयोग से धन एकत्र कर सघ की समस्त गतिविधियों का सचालन किया। श्री महता का मानना था कि गाव की स्कूल या अन्य रचनात्मक प्रवृत्ति मे हर घर का योगदान होना चाहिए। जब गाव के लोगों का अशदान होगा तो उसकी बहतरी की चिन्ता भी गाँव वाले करेंगे। उन्होंने चन्दे में चौअन्नी से लगाकर हजारो रुपए प्राप्त किए। जितना चन्दा श्री महता ने किया वह बेमिसाल है। जिसको भी लिखा उसने चन्दा भेजा। वे सर्वोदय सम्मेलनो सहित किसी भी सम्मेलन से सेवा सघ के लिये चन्दा एकत्रित करना नहीं भूलते थे। क्षेत्र के अनेक गावो में बने विद्यालय भवन आज भी उनकी याद ताजा करते हैं। इस प्रकार सीमित साधनो के बावजूद भी अनेक गावो में पाठशालाएँ खोली गई विशेषतौर से उन गावों में जो जागीरदारों के अन्याय व अत्याचारों से पीडित थे।

आज प्रौढ शिक्षा के प्रसार के लिए बडे-बडे साक्षरता मिशन बने हुए हैं। पर उन दिनों यह कार्य कितना कठिन था उसका अन्दाज इस बात से होगा कि स्थानीय जागदीरदार अक्सर पढाने वाले कार्यकर्ता को सध्या को घर से बाहर निकलना कठिन कर देते थे। उसके घर के बाहर ताला लगा दिया जाता था जो सूर्योदय पर ही खोला जाता था ताकि वह रात्रि में प्रौढशाला न चला सके। कईबार रात्रिशाला की एक मात्र लेनटर्न भी छीन ली जाती थी। ऐसी परिस्थिति में पढने वाले युवक लकडी जला कर उसकी रोशनी में पढते थे। इन सब सकटो के बावजूद सेवा सघ के तत्वावधान में श्री महता ने अपनी लगन अटूट, धैर्य और साहस के साथ शिक्षा व जागरूकता का कार्य जारी रखा। धीरे-धीर सवा सघ की ओर से 60 गावो में रात्रिशाला व दिनशाला चलने लगी और जन जागरण बढता गया।

सन् 34 से 37 के बीच सघ की और से खटवाडा, आम्बा, बीगोद कान्दा बडलियास, भीलवाडा, सागानेर, सुवाणा, बनका खेडा, हरेल, बनेडा, आदि गावों में शालाएँ प्रारम्भ हो गई। ये सब शालाएँ सार्वजनिक चन्दे व गाव वालों के सहयोग से चली। सेवा सघ के स्कूलो में निष्ठावान एव चरित्रवान अध्यापकों ने इतने उत्साह से कार्य किया कि विद्यालय स्वय चेतना के केन्द्र बन गए। क्षेत्र में जहाँ विद्यालय नही थे वहाँ के बच्चो के पढने की व्यवस्था के लिए बीगोद में एक छात्रालय खोला गया। कई स्कूलो से बच्चे उच्च शिक्षा के लिए बाहर भी गए। कई बच्चे आगे पढने की इच्छा रखते हुए भी नही पढ पाते थे, उनका अध्ययन जारी रखने के लिए श्री महता ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की परीक्षाओ का केन्द्र बीगोद में स्थापित करवाया। इसे साहित्य विद्यालय नाम दिया गया। इसी प्रकार राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा ने भी परीक्षा के लिए केन्द्र की स्वीकृति दी। सैंकडों बच्चों ने इसका फायदा उठाया। सभी तरह की शिक्षा के लिए गरीब बच्चों को सघ से मदद दी जाती थी।

शिक्षा का काम कैसा चल रहा है और उसका क्या प्रभाव पड रहा है श्री महता उसका निरन्तर मूल्याकन करते थे। उन्होंने सघ के सम्मुख सन् 1937 में प्रस्तुत एक प्रतिवेदन में लिखा था कि सेवा सघ की प्रवृत्तियों का फैलाव तो बहुत हो गया है पर अब इसे व्यवस्थित कर ठोस रुप देने की आवश्यकता है जिससे कि ग्रामीण जनता पर उसकी गहरी छाप पडे।

सन् 49 में यह निश्चय किया गया कि महात्मा गाधी की बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्तो के आधार पर सेवा सघ द्वारा सचालित पाठशालाओ में सामान्य शिक्षा के साथ–साथ उद्योग व व्यवसाय का प्रशिक्षण भी शुरु किया जाए। परन्तु साधनो के अभाव में इस दिशा में अधिक प्रगति नहीं हो पाई।

इन्ही दिनो बीगोद में खेल क्लब का गठन किया गया। श्री महता को खेलों में बहुत रुचि थी। इस खेल क्लब के माध्यम से गाव के बच्चे, युवक, प्रौढ सभी सस्था की गतिविधियो के ओर निकट आये। क्लब में बालीबाल परम्परागत खेलजैसेगिलीडण्डा,कबड्डी आदि के विशेष आयोजन उल्लेखनीय हैं।

सन् 51 तक सेवा सघ द्वारा सचालित कार्यक्रम द्वारा अनेक प्रौढ एव बच्चे शिक्षा का लाभ उठा चुके थे। राजस्थान में यह क्षेत्र अपनी पहचान बनाने लगा था। निष्ठावान कार्यकर्ताओ का एक ठोस सगठन तैयार हो गया था एव सेवा सघ ने विशाल रुप धारण कर लिया था। पर शीघ्र ही उसका दूसरा रुप भी सामने आने लगा। सेवा सघ पर दिनो दिन आर्थिक भार बढता गया आजादी के बाद जन सहयोग की

प्रवृति का भी ह्रास होने लगा था। इस कारण सन् 51 मे सघ ने कई स्कूलो को सरकार को सौंप दिया और अपने सीमित साधनो को अन्य गतिविधियो में लगाया।

श्री महता की शिक्षा और प्रौढ शिक्षा की ओर रुझान का जिक्र करते हुए सेवा मन्दिर उदयपुर के वरिष्ठ लोक सेवक श्री रामकृष्ण शर्मा ने अपने एक पत्र में लिखा है, "सेठ सा राजस्थान के समस्त प्रौढ शिक्षा कर्मियो के जाने माने थे। प्रारम्भ से ही वे प्रदेश के प्रौढ शिक्षा आन्दोलन से जुडे हुए थे। वे एक सच्चे जन शिक्षक थे और आजीवन जन शिक्षा के काम में लगे रहे।

गाव गाव धूमते लोगो से मिलते, बातचीत करते सुख दुख पूछते अलख जगाते थे। प्रौढ शिक्षा सम्मेलन में वे नियमित रुप से भाग लेते थे।

पन्द्रवें राजस्थान प्रौढ शिक्षा सम्मेलन (1989) में उन्होंने सकल्प किया था कि वे सागानेर कस्बे को सम्पूर्ण साक्षर करेंगे। इसके लिए श्री महता ने राजस्थान प्रौढ शिक्षण समिति के अध्यक्ष को जो पत्र लिखा था वह इस प्रकार है-

``मैं अपनी ओर से अपने लिए यह सकल्प प्रस्तुत करता हूँ कि कस्बा सागानेर (भीलवाडा) में कोई अनपढ न रहे। इस काम को स्थानीय साधनो से तथा स्थानीय युवा शक्ति से पूरा कराने की जिम्मेदारी लेता हूँ।"

वे इस सकल्प के समय बीमार थे। उनकी बीमारी निरन्तर बढती गई और उनके पावो ने काम करना बन्द कर दिया। तब भी वे 16 वें प्रौढ शिक्षा सम्मेलन में भाग लेने को उत्सुक थे। पर वे सम्मेलन में शरीक नही हो पाए। उन्होंने जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल से अध्यक्ष को प्रौढ शिक्षा सम्मेलन की सफलता का सन्देश भेजा था। शरीर में अत्यन्त पीडा थी इसके बावजूद उन्होने यह पत्र अपने हाथ से लिखा। अपनी मृत्यु के एक दिन पहले तक वे सागानेर की कन्याशाला को पूरा कराने की चर्चा करते रहे। उनकी इच्छा थी मैं व्हील चेयर पर बैठकर एक बार सारे गाव में घूमू और हर घर से स्कूल के लिए चन्दा एकत्र करुँ। व्हील चेयर भी खरीद ली गई। पर स्वास्थ्य इतनी तेजी से बिगडता गया कि व्हील चेअर पर बैठ पाना भी सम्भव नही हुआ।

औषधालय एव आरोग्य केन्द्र

शिक्षा प्रचार से जहाँ जनता में जागृति की लहर चली, वही सेवा सघ की ओर से जन स्वास्थ्य की ओर भी ध्यान दिया गया। उन दिनो माडलगढ क्षेत्र मे एक छोटी एलौपेथिक डिस्पेन्सरी के अलावा अन्य किसी गाव में दवा दारु की कोई व्यवस्था नहीं थी। अत जिन गावों में पाठशालाएँ प्रारम्भ की गई वही पर प्रारम्भिक उपचार की

व्यवस्था भी की गई। इसके लिए अध्यापकों को आवश्यक प्रशिक्षण देकर तैयार किया गया। सेवा सघ के स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रम में 11 नवम्बर 1933 को बीगोद में पहले औषधालय की स्थापना हुई जो आज भी कार्यरत है। यह औषधालय जन शिक्षण का केन्द्र भी बन गया। वहाँ रोग निदान के साथ साथ रोगियों को रोग के कारण भी बताए जाते थे।

22 फरवरी 1953 को कस्तूरबा आरोग्य केन्द्र की शुरुआत खटवाडा में हुई। वहाँ पर गर्भवती एव बीमार बहिनों की देखभाल प्रसूति कार्य, छोटे बच्चों को सभाल एव शिक्षा के लिए बालवाडी औषधि वितरण का काम होता रहा। बाद में यह केन्द्र धाकडखेडी स्थानान्तरित कर दिया गया। सेवा सघ के प्रयासों से बीगोद में राजस्थान सरकार ने सन 51 में एलोपेथिक डिस्पेन्सरी खोली। फलत सेवा सघ ने वहाँ का औषधालय खटवाडा में स्थानान्तरित कर दिया जो अभी भी चालू है।

गावो में अज्ञानता के कारण इतना अधिक अन्धविश्वास था कि लोग बिमारी का उपचार करने की अपेक्षा देवी -देवताओ के भोपों के पास जाते थे। फलस्वरुप

अक्सर रोगी बिना उपचार के चल बसते थे। इस अन्धकार को दूर करने के लिए श्री महता भोपे का नाटक किया करते थे और स्वय भोपे की भूमिका में ग्रामीण जनता को समझाते थे के बीमारी का इलाज हमारे (भोपो)पास आने से नहीं वरन् अस्पताल व दवा–खाने पर जाने से होगा। इसी प्रकार चेचक के प्रकोप के समय वे नाटकों द्वारा ही लोगो को समझाते थे कि बच्चो को समय–समय पर टीका लगाना कितना आवश्यक है और यह भूल कितनी महगी पड सकती है। ■

कुरीति निवारण

श्री महता एक ऐसे परिवार में पैदा हुए थे जहाँ कई प्रकार की रुढियाँ व्याप्त थी। उन्हें बचपन से ही इन रुढियो के विरुद्ध कमर कसनी पडी। घर मे ऐसी जबरदस्त छुआछूत थी कि उनको हरिजन व पिछडी जाति के बच्चो के साथ खेलना कूदना भी मना था। उन्होंने इस परम्परा को तोडकर खेलकूद व नाटक की ऐसी मडलियाँ जुटाई जिनमें हरिजनों सहित हर जाति के बच्चे शामिल थे।

श्री महता सघर्षशील एव जुझारु थे। शादी विवाहों में फिजूल खर्चों का भान उन्हें अपने स्वय के परिवार में ही हो गया था। उन्होंने तुलसी एव देवी देवताओ के ब्याह देखे, अपना विवाह भी देखा, जिसमें ससुराल पक्ष पूरा बर्बाद हो गया था। उन्होंने परिवार में बडे मृत्युभोज देखे जिसमें सारा घर कर्ज में डूब गया। अपने परिवार व अपने ननिहाल को शराब में बरबाद होते देखा। श्री महता के परिवार में इस कदर पर्दा था कि वे दिन में भी आसानी से घर में बिना सूचना दिए प्रवेश नही कर सकते थे। वे कहा करते थे कि बैल की तरह मेरे गले में एक घटी बाध दी जाए ताकि मैं जब भी घर में प्रवेश करुँ, सबको पता चल जाए कि मैं घर में आ रहा हू। वे दिन में अपनी पत्नि से बात करना तो दूर उनकी और देख भी नहीं सकते थे।

इन सब कुरीतियों का श्री महता के विचारों पर प्रभाव पडा। उन्होने इन कुरीतियों के विरुद्ध सघर्ष करने का निश्चय कर लिया। कुरीतियों के खिलाफ लडना उनका स्वभाव बन गया। उनमें ये सस्कार इतने गहरे हो गए कि उनके बच्चो, रिश्तेदारो व खास मित्रों के मन में भी कुरीतियों के खिलाफ लडने की ताकत आ गई। उन्होंने कालान्तर में अपनी जद्दोजहद को सस्थागत रुप दे दिया। उस समय सामाजिक परिस्थितियाँ कितनी जटिल थी उसका आज अनुमान लगाना या कल्पना करना कठिन है। इसके बावजूद श्री महता की प्रेरणा से सेवा सघ ने रचनात्मक प्रवृतियो के साथ साथ सामाजिक कुरीतियो के निवारण का कार्यक्रम भी हाथ में लिया। सेवा सघ के द्वारा अभिनय, नाटक व सभाओ के आयोजन किए गए। श्री महता ने इन आयोजनों के माध्यम से किसानों को समझाया कि उनकी गरीबी का मूल कारण मृत्युभोज है। चतुर बोहरा उन्हें मृत्युभोज के जाल में फँसाकर जन्म तक कर्जदार बना देता था। एक बार जहाँ बोहरों के बच्चे बच्ची घी–दूध खाते थे। वहाँ मेहनत करने वाले किसान परिवार के बच्चों को छाछ भी नसीब नहीं होता थी। इस सबके बावजूद

भी किसानो को वोहरो के प्रभाव के कारण मृत्युभोज की कुप्रथा से निकालना आसान नहो था। पर सेवा सघ ने अपने प्रयास जारी रखे।

सवा सघ को मृत्युभोज के सम्बन्ध में आशिक सफलता 1952 में जाकर मिली। सबसे पहले चमार हरिजन जाति ने मृत्युभोज और गगोज आदि अवसरो पर बजाए चालीस गावो के जाति भाइयों को निमन्त्रित करने के केवल पडौस के पाँच गावो के लोगो को निमन्त्रित करने का निश्चय किया। इसके पश्चात धाकड जाति ने भी 12 गावो के बजाए केवल चार गाव के लोगों को आमन्त्रित करने का फैसला किया। श्री महता की प्रेरणा से क्षेत्र के लोगों ने यह भी तय किया कि सामूहिक भोज के अवसर पर स्थानीय पैदा होने वाली वस्तुएं जैसे गेंहू, गुड और घी ही काम मे लेगे। इन सीमित सुधारो से भी किसानो को राहत मिली।

हरिजन कार्य

माडलगढ क्षेत्र में हरिजनो और विशेषत महतर जाति के लोगो के साथ पशुओ का सा व्यवहार किया जाता था। श्री महता ने छूआछूत मिटाने व हरिजनो को समाज में उचित स्थान दिलाने के लिए सकल्प कर लिया। सेवा सघ ने अपने कार्यक्रम मे हरिजन सेवा के काम को प्राथमिकता दी। कई हरिजन साक्षर हुए। 1941 मे बीगोद से पहला महतर बालक मिडिल पास हुआ। सेवा सघ ने महतर व पिछडी जातियो के बच्चो को पढाने का भार भी अपने ऊपर लिया। 1941–42 तक चार बलाई, और दो भील छात्र सघ की मदद से छात्रावास में रहकर पढे और मिडिल पास की। यह सख्या निरन्तर बढती गई। सेवा सघ ने राजस्थान सरकार से हरिजन बच्चो की शिक्षा के लिए अनेक छात्रवृतियाँ प्राप्त की।

क्षेत्र में जागीरदारों के जुल्मों के सबस बडे शिकार हरिजन थे। उनके प्रति वे बडी खराब भाषा का प्रयोग करते थे। पुरुष लाल रग की पगडी नहीं बाँध सकते थे। महिलाए पैरो में चाँदी की कडियाँ नहीं पहन सकती थी। यही नहीं कोई महतर जागीरदार के निवास स्थान के सामने से नहीं गुजर सकता था। श्री महता ने इन हरिजनो के बीच कई नाटक खेले। उनके साथ उठना बैठना शुरु किया और उनमें स्वाभिमान भरा। उनके इस कार्य का विरोध घर में भी हुआ और बाहर भी। पर उन्होने इस विरोध की कोई परवाह नहीं की। वे मजबूती से अपना कार्यक्रम आगे बढाते रहे।

माडलगढ क्षेत्र में पीने के पानी की कमी नहीं थी। इसके बावजूद हरिजनों को पानी की भारी कठिनाई थी। उन्हें गाव के सार्वजनिक कुओ पर पानी नहीं भरने दिया जाता था। वे अपनी नितान्त गरीबी के कारण स्वय कुए नहीं खुदवा सकते थे। अत वे तालाव और नालों आदि का गदा पानी पीते थे। श्री महता बैचेन थे कि इस समस्या

का समाधान कैसे किया जाय। वे जानते थे कि अभी समय नही आया है कि गॉव वालों को, मेहतरो को सार्वजनिक कुएँ सक पानी भरने देने के लिए तैयार किया जाए। अत उन्होंने मेवाड सरकार से सहायता प्राप्त कर सेवा सघ के द्वारा बड्लियास,मानपुरा धामनिया व महुआ में हरिजनो के पानी के लिए कुएँ खुदवाये और इस प्रकार उनके पीने के पानी की समस्या का समाधान करवाया।

सामाजिक बदलाव लाने की दृष्टि से श्री महता जब किसी भोज मे जाते तो हरिजनो की पगत में बैठकर ही खाना खाते थे। गावो मे यह रिवाज था कि पत्तलो मे बचा हुआ झूँठा खाना महतर इकटठा कर अपने उपयोग मे लेते थे। यह न केवल उनके लिए वरन मानवता के प्रति भी घोर अपमान था। महतरों में आत्म सम्मान जगाकर उन्होंने उनसे यह रिवाज समाप्त करवाया। उन्हें महतरो द्वारा सिर पर मैला ढोने के काम से बडी पीडा थी उसके निवारण के लिए उन्होने लोगो से ऐसे शौचालय बनवाए जिससे मैला ढोने की आवश्यकता ही नही पडे।

गावो में चमार आदि जातियो के कई बच्चे साहूकारों के यहाँ गिरवी रख दिए जाते थे जहाँ उनसे सूद के बदले बेगार ली जाती थी। उन्होनें उनको साहूकारो के चगुल से मुक्त करवाया और पाठशालाओ में भर्ती करवाया।

श्री महता के अथक प्रयत्नों से हरिजनो में धीरे-धीरे जीवन का सचार होने लगा। एक ओर जहाँ मृत्युभोज सीमित रुप से एव शराब व मास की आदत को छुडवाने से उन की फिजूल खर्ची में कमी आई। वहाँ दूसरी ओर उन्हें रोजगार की तरफ प्रेरित किया। उन्हें इस के लिए सेवा सघ द्वारा कर्जा दिया गया। उन्हें सूत कातना सिखाया गया। छोटे-छोटे कुटीर धधे लगवाये। इस प्रकार हरिजनो की आर्थिक स्थिति कुछ ठीक होने लगी।

आजादी के कई वर्षो बाद भी हरिजन अपने मन्दिरो में सोने के कलश नही चढा सकते थे। सन् 1948 में बडिलयास के रेगरो ने श्री महता के सामने अपने मन्दिर पर सोने के कलश चढाने की अभिलाषा पकट की। उन्हे भय था कि गाव के सवर्ण इसका विरोध करेंगे। श्री महता ने बडलियास जाकर सवर्णो को समझाइश की। वे इसके लिए तैयार हो गए। फलस्वरुप रेगरो ने सवर्णो क साथ मिलकर पूरी धूमधाम के साथ रामदेवजी की मूर्ति की प्रतिष्ठा की ओर मन्दिर के गुम्बज पर सोने के कलश चढाए। लगभग 5000 रेगरो की उपस्थिति का लाभ उठाकर श्री महता ने इस अवसर पर रेगरो से शराब छोडने की अपील की। रेगरो पर इसका तत्काल असर हुआ और गगाजलि हाथ मे लेकर शराब व मास त्याग दिया।

शराब बन्दी

श्री महता शिक्षा समाप्ति के तुरन्त बाद बीगोद डिस्टलरी पर अधिकारी बन कर आए थे। इसलिए भी वे शराब के दुष्परिणामों से भी भली भाँति परिचित थे। जब वे राज्य सेवा में थे तभी से उन्होंने रात्रिशालाओ और पाठशालाओ में शराब के विरुद्व जिहाद बोल दिया था। श्री महता के रचनात्मक कार्यक्रम में शराबबन्दी का सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान था। राज्य सेवा से इस्तीफा देने के बाद उन्होंने शराबबन्दी के लिए गाँव गाँव प्रचार किया ग्राम सभाओ का आयोजन किया एव सत्याग्रह का सचालन किया।

श्री महता का कोई भी सार्वजनिक भाषण बिना शराबबन्दी की चर्चा के समाप्त नही होता था। उन्होंनें धर्म स्थानो पर लोगो को हाथों में गगाजलि देकर, शराब पीने वालो को भविष्य मे शराब न पीने का सकल्प कराया। जहाँ कहीं भी समाजिक कार्यो या उत्सवो मे लोगो के इक्ट्ठा होने की सूचना मिलती तो वे वहाँ पहुँच जाते थे और उन्हे शराब न पीने का सामूहिक सकल्प कराते। खेराड की बलाई व चमार जाति की पचायत ने जिसमे लगभग 80 गाव थे, शराब बन्द कर दी और पीने वालो को जाति से बाहर करने का निर्णय लिया । एक तरफ वे गाव वालो को शराब छोडने के लिए निरन्तर प्रेरित करत रहे और दूसरी तरफ सरकार पर यह दबाव बनाने का प्रयास किया कि वह शराब की आय का मोह छोड दे। उनका कहना था कि विनाश के रास्ते से विकास सम्भव नही है। वे निरन्तर इस बात पर जोर देते थे कि जब तक राज्य शराब की आय का मोह छोडकर शराब की दुकानो को खोलना बन्द नही करेगी तब तक लोक सेवक कितना ही जनचेतना का काम करें उसे पूरी सफलता नही मिलेगी। दोनो काम साथ साथ चलने चाहिए।

श्री महता ने सन् 1962 मे त्रिवेणी सगम पर बसे बीगोद व उसके आसपास के गावो से वेयर हाउस व डिस्टलरी हटाने का सकल्प लिया गाव गाव से सर्वसम्मत प्रस्ताव पास करा और जनता की पूर्ण भागीदारी के साथ सत्याग्रह का सचालन किया। फलस्वरुप उसी वर्ष न केवल बीगोद से वेयर हाउस हटा बल्कि बीगोद सहित आस पास के गाव खटवाडा, ककरोल्या व नन्दराय से शराब की नीलामी का ठेका सदा के लिए बन्द हो गया।

सम्पूर्ण राजस्थान में शराब बन्द कराने के प्रयत्नों में श्री महता स्व श्री गोकुल भाई के साथ पूरी तरह जुडे रहे और सत्याग्रह का सचालन किया। प्रदेश नशाबन्दी समिति के मन्त्री के नाते उन्होने शराब बन्दी की मुहिम सम्पूर्ण राजस्थान में चलाई।

1977 में प्रदेश में जनता दल की सरकार बनी। लम्बे सघर्ष का सुखद परिणाम आया और सन् 1978 में दो चरणों में सम्पूर्ण राजस्थान में नशाबन्दी लागू करने की घोषणा कर दी गई। श्री महता का सपना साकार हुआ। पर जनता सरकार फरवरी 1980 में भग हो गई। मई 1980 में राजस्थान विधानसभा के चुनाव हुए। उसमें प्रदेश में काग्रेस दल की सरकार बनी। इस सरकार ने सबसे पहला काम शराबबन्दी को समाप्त करने का किया। प्रदेश नशाबन्दी समिति ने सरकार के इस निर्णय का घोर विरोध किया। फल कोई नहीं निकला। श्री महता को बडी निराशा हुई।

श्री महता के रचनात्मक कार्यक्रम में शराबबन्दी का स्थान सबसे अधिक महत्वपूर्ण था। उन्होने शराबबन्दी के लिए गाव गाव प्रचार किया ग्राम सभाओ का आयोजन किया। एव सत्याग्रह का सचालन किया। उनका कोई भी सार्वजनिक भाषण बिना शराबबन्दी की चर्चा के समाप्त नही होता था। इस सम्बन्ध में उन्होने समाचार पत्रो में भी बहुत कुछ लिखा। कई पत्र भी लिखे। उनमें से कुछ पत्रों को अविकल रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

श्री सिद्धराज जी ढड्ढा को लिखा गया पत्र

पूज्यवर भाईसाहब सादर प्रणाम। दि 14 4 62

ता 6 अप्रेल के "भूदान यज्ञ" में मद्य-निषेध गोष्ठी के प्रमुख वक्ता श्री देवेन्द्र जी के ये विचार "बगैर सोचे समझे की गई कानूनन नशाबन्दी समस्या का हल नही है, वरन् उससे उसे विकराल रूप मिल सकता है" पढने को मिले। प्रान्तीय सरकारों को ये विचार अत्यन्त प्रिय लगेंगे और "भूदान यज्ञ" में प्रकाशित होना तो सरकारो के लिये सोने में सुगन्ध का काम देगा।

बगाल सरकार तो कह ही चुकी है कि तीसरी योजना में शराब बन्दी करना उनके लिये मुमकिन नही है। राजस्थान राज्य क मुख्यमत्री ने कुछ महिनो पूर्व कहा ही था कि "भारत सरकार आधा अनुदान ही देती है और शेष आधे घाटे की पूर्ति करना फिर भी हमारे लिये मुमकिन नही है।" अब तो उन्हें भी मसाला मिल गया है। भला वे कोई ऐसा काम बिना सोचे समझे कैसे हाथ में ले सकते हैं जिसका विकराल रूप सामने आ जाये ?

सन् 1935 में जब कांग्रेस ने प्रान्तों की बागडोर अपने हाथ में ली थी तो सब से पहल शराब बन्दी का काम हाथ में लिया था। अब तो स्वराज्य प्राप्त हुये भी 15 वर्ष हो चुके हैं। क्या, इस लम्बे समय के बाद भी शराब बन्द करना जल्द कहा जायेगा ?

मैं पूरे 6 वर्ष तक डिस्टलरी ऑफिसर रहा हूं और दुर्भाग्य से नित्य ऐसे रिश्तेदारों के बीच रहा हू जो न केवल नित्य शराब ही पीते थे वरन् इसी शराब के कारण वे सब पूरे परिवार को असहाय और दुखी छोड कर ससार से विदा भी ले चुके हैं। मुझे यह भी देखने को मिला है कि पिता से पुत्र तथा पौत्र को किस प्रकार शराब पीने की आदत विरासत में मिलती है और पूरा परिवार किस प्रकार चोपट होता है। शराब और शराबियो का प्रत्यक्ष अनुभव होने के कारण देवेन्द्र जी के पूरे विचार ही मुझे आश्चर्य जनक लगे।

मैं इस विचार से पूरी तरह सहमत हूं कि केवल मात्र कानूनन नशाबन्दी ही समस्या का हल नही है। लेकिन साथ ही मैं इस विचार से भी उतना ही सहमत हूँ कि केवल मात्र आदत मन्दो को समझाते रहना या उनसे निकट सम्पर्क साधना या मधुर-मधुर उपदेश देना या महापुरूषो के सूत्र और वाक्य सुनाना भी समस्या का हल नही है। न तो केवल कानूनन बन्द करने से शराब बन्द होने वाला है और न कोरे उपदेशो से ही। यह बिमारी ऐसी है कि इस पर दोनो ओर से एक साथ प्रहार होगा और सच्चाई के साथ शराबियो मे पूरी तरह प्रवेश भी करना होगा।

जिन-जिन राज्यो में शराब बन्दी हुई है यदि उनमें मद्य ने अपने कर्तव्य का ठीक तरह से पालन किया होता और कानून का कड़ाई से पालन किया जाता तो अवैध शराब निकालना और उसकी बिक्री आदि बहुत हद तक बन्द हो गयी होती लेकिन चारो ओर से जब मद्य निषेध की नीति को असफल बनाने की चेष्ठा की जाय तो फिर स्थिति विकट हो जाती है। जो राज्य के कर्मचारी नाजायज शराब निकालने वालों को गिरफ्तार करने का अधिकार रखते है, वे खुद शराब पीते है और नाजायज शराब बनाने वालो को कहते है कि "हमारे लिय भी दस बोतलें अधिक कशींद कर लना"। एसी स्थिति में शराब की कशीदगी बन्द कैसे हो सकती है ? जहाँ एक और नाजायज कशीदगी करने वालो को राज्य कर्मचारियों से प्रोत्साहन मिलता है वहा चोरी करने वालो को पडोसी राज्य और वहा के राज्य कर्मचारियो से भी प्रोत्साहन मिलता है। एक राज्य में मद्य निषेध हो और उक्त राज्य से लगे हुवे राज्य में जब शराब चालू रहें तो फिर बहुत बडी बाधा उपस्थित हो जाती है। हमारे पडोसी राज्य गुजरात में शराब बन्दी है, क्या राजस्थान ने कभी सोचा है कि हमें भी शराब बन्द करना चाहिये ? बल्कि सत्य तो यह है कि एक्साइज मिनिस्टर और एक्साइज कमिश्नर

आदि इस बात से बहुत प्रसन्न होते है कि शराब से उनकी आय बढ रही है और शराब खूब बिक रही है। मैं तो राजस्थान में यहाँ तक भी देख रहा हूँ कि एक्साइज इन्सपेक्टर्स को शराब की बिक्री कम होने पर उन्हें मोत्तिल तक करने की धमकी दी जाती है।

श्री देवेन्द्र जी ने नाजायत कशीदगी को रोकने के लिये आदत मदो को निश्चित मात्रा मे दवा के रूप में शराब दिलाने और शराब को सस्ता करने का भी हल सुझाया है। आदत वालो को दवा के रूप में शराब दिलाना या उसके परमिट जारी करना अपने आम में बहुत बडी समस्या है। लाखों की तादाद मे व्यक्ति परमिट प्राप्त करने की क्यू में खडे हो जायेंगे और ईमानदार अधिकारियो के सामने एक नैतिक सकट और रिश्वत लेने वालों के सामने आनन्द का वक्त उपस्थित हो जायेगा। शराब को सस्ता करना तो इस समस्या को और भी पेचीदा कर देगा।

यदि समस्या का कोई हल है तो यह कि कानून का कडाई से पालन हो। नाजायज तौर पर कशीद करने वालों को न केवल कडा से कडा दण्ड ही मिले वरन् अन्य अपराधियो की तरह उन्हें भी हिस्ट्रीशिटर घोषित किया जाय। कानून मे इस तरह के परिवर्तन लाये जाये कि बिना अधिक देर लगाये शराबबन्दी कानून के उलघन करने वालो को तुरन्त दण्डित किया जा सके। इसी प्रकार उन सभी राज्य कर्मचारियो को चाहे वे उच्च से उच्च अधिकारी ही क्यों न हो जिन्हे ड्राई एरिया मे शराब के नशे में पाया जाय नौकरी से अलग कर दिया जाय।

शराब बन्दी को असफल बनाने का सबसे बडा प्रयास उच्च अधिकारियो की ओर मे हो रहा है। एक समय था जब रेगर चमार, बलाई, भील आदि जहा भी समूह मे इकट्ठे होते शराब पिया करते थे। निरन्तर प्रचार से कई कोमो ने समूह में शराब पीना बन्द किया है। लेकिन जहा भी राज्य के बडे-बडे अधिकारी समूह में इकट्ठे हो जाते हैं शराब की बोतलें खुल जाती है। जो इने गिने आई ए एस या उच्च अधिकारी शराब नही पीते है उन्हें पार्टी में भाग लेने लायक नही समझा जाता है और उनकी मखौल उडाई जाती है। राज्य के बडे अधिकारी तो इस नीति को असफल बनाने में लगे हुये हैं ही जनता के चुने हुये प्रतिनिधि भी अप्रत्यक्ष रूप से उनका साथ दे रहे है। अपने और अपनी सस्था के नाम के साथ गाँधी जी का नाम जुडा हुआ होने के कारण वे यह कहने की हिम्मत तो नही करते कि केवल मात्र आय की दृष्टि से ही हम शराब बन्दी करने की स्थिति में नही है, पर वे नाजायज कशीदगी व चोरी छिपे शराब की बिक्री आदि बातो को ढाल बनाकर मना करते हैं। मैं उन जन

प्रतिनिधियों में बड़े ही अदब के साथ पूछना चाहता हूँ कि यदि आप सचमुच यह महसूस करते हैं कि शराब बन्दी से शराब की नाजायज बिक्री आदि बढ़ जायगी तो कृपा करके अफीम की खेती की इजाजत तो दीजिये क्योंकि अफीम के धंधे में तो शत प्रतिशत ही नहीं बल्कि सवा सौ प्रतिशत चोरियाँ होती हैं। कहने का मतलब यह है कि अफीम बोने वाले सौ व्यक्तियों में से तो सौ ही चोरी करते ही हैं लेकिन साथ में स्मगलर्स और इन्हें बढ़ावा देने वाले राज्य कर्मचारी प्रारम्भ से अन्त तक और जुड़ जाते हैं जिनकी संख्या हर सौ पर 25 हो जाती है।

श्री देवेन्द्र जी के मन में शराब पीने वालों के प्रति करूणा जागी है। लेकिन मैं उन्हें डाक्टरों की राय पर यह निवेदन करने का साहस करता हूँ कि शराब न मिलने से वे मरेंगे नहीं। यह नशा ऐसा नहीं है कि जिसके बिना आदमी मर ही जाय। आप और हम सब अच्छी तरह जानते हैं कि कई शराबी जेल में चले जाने के पश्चात् बजाय मरने के स्वस्थ होकर निकलते हैं। अफीम की आदत निसंदेह बड़ी कठिनाई से छूटती है लेकिन शराब की आदत छूटना इतना कष्टप्रद नहीं है। अत आपके मारफत देवेन्द्रजी से निवेदन करना चाहता हूँ कि इन्दौर जिले के लिये मद्य निषेध कार्यक्रम को सन् 63-64 तक के लिये स्थगित न करें। और बापू के उन वाक्यों को सदा याद रक्खें कि–

'जब तक राज्य शराबी को शराब पीने की इजाजत ही नहीं सुविधा भी देती रहे सुधारकों को सफलता मिलना लगभग असम्भव है।" क्या मद्य न पीने की बात और शराबियों में प्रवेश की बात हमें अब सूझी है ? हम जब से सार्वजनिक क्षेत्र में आये हैं बराबर शराबियों में प्रवेश कर रहे हैं। और बार–बार भगवान की और गंगाजली की साक्षी से शराब छुड़वा भी रहे हैं लेकिन शराब की दुकान जब खुली हुई कोई भी शराबी देखता है तो अत्यन्त खिंचाव होने के कारण वहां चला जाता है और अपनी प्रतिज्ञा को भूल जाता है। अत यदि हमारे मन में बड़ी तड़फ है तो फिर राज्य को मजबूर करना ही चाहिये जब हम ही सन् 63-64 की भाषा में बोलते हैं तो फिर राज्य करने वालों को सन् 68 से 72 तक की भाषा में बोलना अव्यवहारिक नहीं कहा जायेगा।

यदि शराबियों में प्रवेश की ही बात है तो जिस प्रकार पिछले पच्चीस तीस वर्षों से करते आये हैं। जैन मुनियों की तरह सदा करते रहें इसको रोकता ही कौन है ? लेकिन सचमुच शराब बन्द करने की लगन है तो फिर कानूनन बन्द करवाना ही होगा। कानूनन बन्द होने पर ही हमारे अन्य प्रयत्न सफल होने वाले हैं।

■

शराब के ठेकेदारो से निवेदन

सज्जनो

दिनाक 12 फरवरी 1962

कुछ दिनो पूर्व आपकी सेवामें एक विज्ञप्ति द्वारा यह निवेदन किया गया था कि कृपा करके 31 मार्च सन् 62 के पश्चात् शराब के ठेके न लें।

यह तो आपको मालूम हो ही गया होगा कि भीलवाडा जिले की करीव-करीब सब ही पचायत समितियो, ग्राम सभाओ तथा ग्राम पचायतों ने शराब की दुकानें वन्द करने के सम्बध में सर्व सम्मत प्रस्ताव पास किये हैं और जल्दी ही जिले में शराबबन्दी आदोलन चलाने का निश्चय किया गया है।

अत आपको नुकसान से बचाने के लिये शराब बन्दी आदोलन समिति, जिला सर्वोदय मडल-भीलवाडा की ओर से निवेदन है कि कृपा करके शराब के ठेके न लें।

हमें पूर्ण आशा है कि लोक और परलोक दोनों को बिगाडने वाली पाप और अनाचार की जननी शराब से दूर रह कर देश का कल्याण करेंगे और अपने आपको आर्थिक नुकसान से भी बचा लेंगे।

प्रार्थी

मनोहर सिंह महता

सयोजक

शराब बन्दी आन्दोलन समिति

शराबबन्दी आन्दोलन की रुपरेखा

सेवामें,

श्रीमान सचालक महोदय,

गाधी स्मारक निधि राजस्थान,

दिनाक 12 10 61

महोदय,

भीलवाडा जिले में शराबबन्दी सम्बन्धी प्रचार कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। उसकी सक्षिप्त रुप रेखा निम्न प्रकार है।

1 ग्राम-ग्राम से शराबबन्दी सम्बन्धी प्रस्ताव पास कराए जाएगे। शराब पीने वाली जातियो और व्यक्तियो से सम्पर्क स्थापित किया जायगा। और उन्हें शराब छोडने के लिए प्रार्थना की जायगी। प्रस्तावों के सकल्पों की प्रतिया सरकार को भेज दी जायगी।

2 दिनाक 30 जनवरी 1962 तक जिले की सभी पंचायत समितियों और ग्राम सभाओं से शराबबन्दी सम्बन्धी प्रस्ताव स्वीकृत करवाए जाएगें। हर गाव में नशा निषेध समिति का गठन पूरा कर लिया जायगा जिले की कुछ तहसीलों के लिए नशाबन्दी सम्बन्धी सघन कार्यक्रम तैयार किया जायगा। यह सघन कार्य सबसे पहले माडलगढ तहसील मे शुरु किया जायगा जहाँ कि त्रिवेणी संगम पर आज से 13 वर्ष पूर्व बापू की भस्मी प्रवाहित की गई थी।

3 यदि 1 अप्रेल 1962 तक माडलगढ तहसील से वेयरहाउस एव सभी शराब की दुकान उठाने का आश्वासन राज्य से नहीं मिला तो 6 अप्रैल 1962 से हमारे कार्यकर्ता सत्याग्रह प्रारम्भ कर देंगे। यह कार्यक्रम सबसे पहले बीगोद से शुरु होगा। यह आन्दोलन महात्मा गाधी के निम्न वाक्यो को स्मरण करके ही प्रारम्भ किया जायगा।

"अगर मुझे एक घटे के लिए सारे भारत का डिक्टेटर बना दिया जाय तो पहला काम यह करुगा कि तमाम शराब खानो को मुआवजा दिए बिना ही बन्द करवा दूगाँ।"

महात्मा गाधी (यग इण्डिया 25.6.31)

'जब तक राज्य शराबी को शराब पीने की इजाजत ही नहीं बल्कि सुविधा भी देता रहगा, तब तक सुधारको का सफलता मिलना लगभग असम्भव है।"

महात्मा गाधी (हरिजन 25.9.37)

नशाबन्दी समिति के कार्यक्रम के सम्बन्ध में राजस्थान सरकार को पत्र

दिनाक 12-10-61

राजस्थान देश का वह गौरवशाली प्रान्त है जिसने सब से पहले महात्मा गाधी के आदर्शों के अनुरुप लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण का कदम उठाकर देश के अन्य प्रान्तों को भी प्रेरणा दी है।

इस साहसिक तथा प्रेरणादायक कदम के पश्चात यह कल्पना होना स्वाभाविक था कि अब गाव के सर्वसम्मत निर्णयों का आदर किया जायगा। लकिन यह देख कर अत्यन्त आश्चर्य व दुख होता है कि बापू के नाम पर चलने वाली सरकार ने गावो के न चाहने पर भी शराब की दुकानें तथा वेयर हाउस ज्यों के त्यों चला रखे हैं। ऐसी स्थिति में लोकतत्र तथा ग्राम स्वराज्य में विश्वास रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य व धर्म हो जाता है कि यदि ग्राम सभा के सर्व सम्मत निर्णय का अनादर हो तो

फिर कडा से कडा कदम उठाकर भी ग्राम सभा के निर्णय को कार्य रुप में परिणित कराने का पूरा-पूरा प्रयत्न किया जाय।

कुछ महिनों पूर्व भीलवाडा जिले की कई पचायत समितियों ग्राम पचायतों ग्राम सभाओ ने शराब के वेयर हाउस तथा दुकाने जल्दी से जल्दी उठवाने के सम्बन्ध में निर्णय लेकर आपको सूचित किया था। लेकिन यह जान कर अत्यन्त खेद हो रहा है कि जिले भर को ड्राई ऐरिया घोषित करना तो दूर बीगोद जैसे कस्बे में भी जो मेवाड का सब से बडा तीर्थ स्थान (त्रिवेणी सगम) है और जिसमें पूज्य बापू की भष्मी का अश भी प्रवाहित किया गया है वहाँ पर ग्राम सभा के सर्वसम्मत निर्णय के बावजूद शराब का वेयर हाउस तथा दुकान ज्यों की त्यों कायम है ऐसी स्थिति में बापू के बताये हुए मार्ग पर चलने की इच्छा रखने वालों के पास सत्याग्रह के सिवाय और विकल्प नही है।

मैं अत्यन्त नम्रता पूर्वक आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि लोकमत का आदर करते हुए 31 मार्च सन् 62 तक बीगोद का वेयर हाउस तथा शराब की दुकान उठालें एव वहाँ की जनता को सत्याग्रह करने के लिए विवश न करें।

शराबबन्दी सत्याग्रह के सम्बन्ध मे जिले की पचायत समितियो एव ग्राम पचायतो को लिखा गया पत्र

सेवा सघ बीगोद भीलवाडा जिले की सबसे पुरानी रचनात्मक सस्था है। इसने प्रारम्भ से ही हर जन समस्या को हाथ मे लिया है। और जब से उसने शराबबन्दी का काम हाथ में लिया है वह विधिवत् आगे बढ रहा है।

सबसे पहले जिले भर की पचायत समितियो से शराबबन्दी करवाने के लिए सर्वसम्मत प्रस्ताव पास किए। इसके पश्चात माडलगढ तहसील की लगभग सभी ग्रामसभाओ ने तथा ग्राम-पचायतो ने शराब की दुकाने तथा वेयर हाउस उठाने के सबध में सर्वसम्मत प्रस्ताव पास किए जिनकी प्रतियाँ राज्य-सरकार को यथा समय भेज दी गयी। इसके बाद सरकार को इस आशय का एक पत्र भेजा गया कि लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण की मूल भावना की कद्र करके इस जिले से शराब की दुकाने उठाले। लेकिन उसका कोई उत्तर नही मिला। इस पर सरकार को एक और पत्र लिखा गया कि यदि आप 31 मार्च सन् 1962 के बाद लोगो की इच्छा के विपरीत शराब की दुकाने जारी रखेंगे तो जिले में 6 अप्रैल से सत्याग्रह चालू कर दिया जायगा

दुर्भाग्य से इस पत्र का भी कोई उत्तर नहीं मिला एव 13 मार्च से ही शराब की दुकानें फिर से नीलाम की जा रही हैं।

एक ओर वर्तमान चुनाव प्रणाली के अनुसार बहुमत के नाम पर 15–16% या इससे कम मत मिलने पर भी लोकसभा अथवा विधान सभा का प्रतिनिधि चुना जा सकता है। और दूसरी ओर जनता द्वारा सर्वसम्पत प्रस्ताव स्वीकार करने पर भी शराब की दुकाने ज्यो की त्यो चालू रहती हैं। क्या यह लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण है ? क्या जिस राज्य ने सबसे पहले विकेन्द्रीकरण का कदम उठाया वही राज्य सबसे पहले इसको दफनाना भी चाहता है ?

बीगोद का बच्चा बच्चा चाहता है कि बीगोद से शराब की दुकान तथा वेयर हाउस हटाये जायें। बीगोद की भूमि पर जहाँ पूज्य बापू की भस्मी का अश प्रवाहित किया गया है वहाँ शराब की दुकान तथा वेयर हाउस लोगों के न चाहने पर भी चलते रहे यह नही हो सकता । अत ता 6 अप्रैल से बीगोद में सत्याग्रह चालू किया जाएगा।

भारत की प्रधानमत्री श्रीमति इन्दिरा गाधी के नाम खुला पत्र

दिनाक 31 1 66

आदरणीय महोदया

ससार मे यह पहला अवसर है कि इतने बडे देश की महिला प्रधानमत्री बनी हैं।

जहाँ एक ओर स्त्री माता का हृदय रखती है वहाँ दूसरी ओर स्त्री पर होने वाले जुल्मो को भी आसानी से समझ सकती है। इसलिए मे भारत के एक नागरिक के नाते आपको शराबबन्दी के सम्बन्ध में लिख रहा हूँ।

शराब की सब से अधिक चोट गरीब परिवारो पर पडती है। शराबियो की औरते रात दिन भयकर मुसीबतें उठाती है और उनके बच्चे बिना खिले ही मुरझा जात है।

यदि शराब समाज के लिये इतना भयकर राक्षस न होता तो बापू को यह नही कहना पडता कि "यदि मैं एक घटे के लिए भी भारत का डिक्टेटर बना दिया जाऊ तो सब से पहला काम यह करुगा कि तमाम शराब खानो को बिना मुआवजा दिये ही बन्द करवा दूगाँ।" बापू ने कितने गर्व से कहा था कि "कांग्रेस ने अपने राज्य काल में और कोई काम किया हो या न किया हो एक काम सदा स्वर्ण अक्षरो में लिखा

जायगा कि शासन की बागडोर सम्हालते ही शराब को सदा के लिए समाप्त कर दिया।"

उन्हें क्या मालूम कि उनके चेले शराब की आय को कामधेनु मान कर उत्तरोतर शराबखोरी बढाने में लग जायेंगे, और गारण्टी सिस्टम जैसी घृणित प्रणालियाँ अपना कर घर-घर शराब पहुंचायेंगे और शराब की इतनी प्रतिष्ठा बढा देंगे कि वह बाजार के बीच में आकर बैठ जायगी। शराब बन्दी की बात करने वाले मूर्ख और जिद्दी माने जायेंगे।

स्व बापू को क्या मालूम कि उनके चेले न केवल भारत वर्ष को ही शराब में डूबोदेंगे बल्कि ससार के अन्य देशो में यहाँ का बना शराब भेजेंगे और गर्व से कहेंगे कि अमुक ब्राड का शराब बनाने में हम विश्व विख्यात हैं। वैसे शराब को उत्तरोत्तर बढावा देना सविधान के निर्देशन के विपरीत तो है ही देश को मिट्टी म मिलाने वाला भी है।

आपने उत्पादन बढाने और गरीबी को दूर करने के लिए राष्ट्र को सदेश दिया है,लेकिन जिस देश में शराब उत्तरोत्तर बढता रहेगा उसकी तो यादवो की सी हालत होगी। अत आपसे सादर अनुरोध है कि तुरन्त शराबबन्दी की और कदम बढाये और हर हालत में गाधी शताब्दी के पूर्व सम्पूर्ण देश में शराबबन्दी लागू करदें। यदि हमारे देश में शराबबन्द नहीं होगी तो फिर देश को खुशहाल बनाने की कल्पना वम्बूल का पेड बोकर आम के फल प्राप्त करने के समान होगी।

आशा है मेरी प्रार्थना पर आप तुरन्त ध्यान देगीं।

प्रदेश के समाचार पत्रो मे छपा पत्र
क्या अकाल निवारण के लिए शराब तथा लाटरी रामबाण दवा है ?

दिनाक 11 12.72

एक ओर राजस्थान राज्य के कर्णधार बडे जोरों से भयकर अकाल का प्रचार कर रहें हैं और दूसरी ओर नित नई शराब की दुकानें खोल रहे हैं। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उठता है कि क्य राजस्थान में सचमुच अकाल है ?

क्या अकाल का मुकाबला शराब की दुकानें बढाने से होगा ? क्या अकाल में शराब पीने की सूझती हैं ? क्या शराब से पुरुषार्थ बढता हैं ? क्या शराब से नैतिकता और कर्तव्य परायणता बढती है, जिनका कि आज़ादी के पश्चात् तेजी से लोप होता जा रहा हैं ?

यदि ऐसा नही है, तो क्या केवल आय बढाने के लिए ही शराब की नित नई दुकाने खोली जाकर वचन भग का सब से बडा पाप तथा अपराध किया गया है ?

एक तरफ गरीबी मिटाने का जोरो से प्रचार किया जा रहा है और दूसरी ओर शराब की धधकती भट्टी में गरीबो को झौका जा रहा है तो क्या यह मानना चाहिए कि राजस्थान सरकार ने गरीबी को नही गरीबों को ही समाप्त करने का निश्चय कर लिया है ? राज्य ने शराब तथा लॉटरी की आय को तो विकास का प्रमुख साधन मान ही लिया है ऐसी हालत मे क्या यह विश्वास करना चाहिए कि राज्य सरकार वैश्यावृत्ति का काम भी जल्दी ही हाथ में लेने वाली है ?

शराब की ही तरह वैश्यावृत्ति के लिए सरकार यह दलील तो आसानी से द ही सकती है कि लोग चुपके चुपके तो इधर उधर जाते ही हैं फिर सरकार अपनी आय क्यो खोयें ? सुरा सुन्दरी और सट्टा तीनो का अटूट सम्बन्ध है। तीनो प्रकार के व्यापार हाथ में लेन से राज्य की आय का अटूट मार्ग खुल जायगा। जो भी काम करना हो हिम्मत से करना चाहिए ताकि दूसरे प्रान्तों के लिए उसी प्रकार रास्ता खुल सके जिस प्रकार मध्य प्रदेश सरकार ने जुए के व्यापार को जायज करके मार्ग खोला है।

वित्त मत्री माननीय श्री बैद को भूतपूर्व विधायक मनोहर सिंह महता का खुला पत्र

दिनाक – 20.3.73

माननीय वित्त मत्री श्री बैद साहब

राजस्थान राज्य

ता 17-3-73 की राजस्थान पत्रिका मे विधान सभा में दिया गया आपका वक्तव्य पढने को मिला।

कथनी और करनी में इतना भारी भेद पढकर बहुत दुख हुआ। एक तरफ तो आप कहते है कि आप की तीन पीढी में किसी ने सिगरट तक नही पी और दूसरी और आप पूरे प्रान्त को शराब की धधकती भट्टी में झोक कर यह सिद्ध कर रहे हैं कि राजस्थान को आप अपना परिवार नहीं मानते और किसी भी तरह धन कमाना चाहते हैं।

वैसे गरीबी मिटाने का यह भी एक रास्ता है कि जब सब गरीब शराब पी कर नष्ट हो जायेंगे तो गरीबी आप ही मिट जायेगी। क्योंकि कोई गरीब बचेगा ही नहीं।

आपने यह कहा है कि यदि भारत सरकार 12 करोड रुपये दे दे तो आप शराब बन्द करने को तैयार हैं। मैं आपसे अत्यन्त नम्रता से पूछना चाहता हूँ कि क्या शराब बन्द करना भारत सरकार का ही काम है आपका काम नही हैं ?

होना तो यह चाहिए था कि सुखाडिया सरकार ने 1 अप्रैल सन् 72 तक पूर्ण नशाबन्दी करने का जो वादा किया था उसका आप पालन करते। पर वह तो दूर आपने तो शराब के धन्धे में इतना कमाल हासिल कर लिया है कि 6 जिलों तथा 6 तहसीलो में पूर्ण नशाबन्दी होने पर भी आपने करोडो की आय बढा ली है, और साधारण से नियम को भी भूल गये हें कि वचन भग सब से बडा पाप है। पर लगता ऐसा है कि आपके कार्यकाल की समाप्ति तक आप आय बीस करोड तक पहुँचा देंगे।

आपने नशाबन्दी का काम करने वालो को यह सलाह दी है कि वे उन जिलो मे काम करें जहा शराब बन्दी की गई है। आप अपने आपको कार्यकर्ताओ से अलग क्यो मानते है ? आप भी तो कार्यकर्ता हैं। आपने भी तो अग्रेजों के समय में पिकेटिंग किया होगा ? क्या उस समय शराब जहर था और अब अमृत बन गया है। यह काम हमारे साथ साथ आप क्यों नहीं करते ?

क्या आप गाधीजी के वे शब्द भी भूल गये कि "सुधारक कितना भी प्रयास करे जब तक राज्य शराबी को शराब पीने की इजाजत और सुविधा देती रहेगी सुधारको को सफलता मिल ही नहीं सकती।"

आपने यह भी कहा है कि जिन-जिन जिलो में शराब बन्द किया गया है वहा खूब नाजायज कशीदगी हो रही है और गोकुल भाई के गाव में तो खूब जोरो से नाजायज शराब चल रहा है और गुन्डे तथा असमाजिक तत्व बढ रहे हैं। आपके डिपार्टमेन्ट में अधिकरी तथा कर्मचारी इतने अकर्मण्य तथा निकम्मे हो गये हैं कि वे फर्ज को ही अदा नही कर रहे हैं यह आपकी भी तो असफलता हैं। ऐसी स्थिति मे आप असफल सिद्ध हुये हैं आप त्यागपत्र क्यों नहीं दे रहे हैं ?

क्या आप यह मान रहे हैं कि हम केवल सत्याग्रह ही कर रहे हैं और पीने वालो को नही समझाते ? हम खूब समझाते हैं पर वे खुद कहते है कि "जब तक रग बिरगी बोतलें नजर आयेगी शराब नहीं छूट सकता।

हम आपकी मजबूरी को समझ कर ही तो सत्याग्रह कर रहे हैं। राजस्थान राज्य की वित्तीय हालत अत्यन्त खराब है और भयकर अकाल भी है। इस कारण शराब

तुरन्त बन्द होना ही चाहिए। हम आपके हितैषी हैं इसी कारण सत्याग्रह कर रहे हैं और गोकुल भाई से बढ कर तो आपका कोई भी हितैषी नहीं है।

हमें अत्यन्त प्रसन्नता और गौरव है कि राजस्थान विधानसभा में सत्ताधारी पार्टी सहित सब ही पार्टियों के विधायकों ने जो पूरे राजस्थान का प्रतिनिधित्व करते हैं एक स्वर से शराबबन्दी की बात जोरों से उठाई है। पर आप शराब की आय के लोभ में इस प्रकार चकाचौंध हो गये हैं कि उनकी नेक सलाह का भी आप पर कोई असर नहीं होता और जनतंत्र को भी आपने ताक में रख दिया है।

कृपा करके सदैव इस बात का ध्यान में रखें कि किसी भी कल्याणकारी राज्य को व्यसन करने का कोई अधिकार नहीं है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि राजस्थान को सर्वनाश से बचाने के लिए आप तुरन्त शराबबन्दी का साहसिक कदम उठायेंगे।

राजस्थान को सर्वनाश से बचाने के लिए कांग्रेसी विधायकों को खुला पत्र

दिनांक 14-1-73

आप लोगों की असाधारण बैठक तारीख 17 जनवरी, 1973 को हो रही है। यह सही है कि आप में से अधिकांश मंत्रिमंडल में नहीं है पर आप में मंत्रियों से भी अधिक शक्ति है। यदि समय रहते आप सब राज्य के कर्णधारों को सावधान नहीं करेंगे तो राजस्थान का सर्वनाश निश्चित है।

अन्न, जल तथा घास का भारी अभाव है। काम के अभाव में महंगा अनाज खरीदने की ताकत जनता में नहीं है जिसके फलस्वरूप भूख से मरना स्वाभाविक है। इतना सब जानते हुए भी राज्य के कर्णधार नित नई शराब की दुकाने खोलते जा रहे हैं। स्थिति यहाँ तक पहुँच गई है कि खाने को अन्न तथा पीने को पानी भले ही न मिले पर हर गली में शराब आसानी से मिल सकती है। पर क्या बापू के रामराज्य की कल्पना को सबसे पहले राजस्थान में ही दफनाया जायेगा ?

यदि इस भयंकर संकट के समय आप एक स्वर से पूर्ण शराबबन्दी के लिए विवश करेंगे तो आज भी राजस्थान पूरे देश का मार्गदर्शन कर सकेगा। आप कृपा करके हुंकार करिये और राजस्थान को सर्वनाश से बचाइये। समाजवाद लाने तथा गरीबी मिटाने के लिए साधन भी शुद्ध तथा पवित्र होने चाहिए। सर्वनाश के रास्ते से समाजवाद आ ही नहीं सकता।

यदि एक द्रोपदी के चीर हरण से ही महाभारत हुआ तो फिर राजस्थान में तो लाखों द्रोपदियों के चीर हरण शराबी पतियो के द्वारा हो रहे हैं। ऐसी दशा में महाभारत होना निश्चित है।

यदि समय पर आप अपनी शक्ति का प्रयोग नहीं करेंगे तो आप सबके लिए भी यही कहा जायेगा कि सर्वनाश के लिए विधायक भी मंत्रियों जितने ही जिम्मेदार हैं। ऐसी स्थिति में इतिहास आपको क्षमा नहीं करेगा।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री बहुगुणा को लिखा गया खुला पत्र

दिनाक 20-7-74

एक समय समाचार पत्रो में उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा मदिरालय खोलने के समाचार ने श्री महता को विचलित कर दिया था तब आपने 20 जुलाई 1974 को राज्य के मुख्यमंत्री श्री बहुगुणा को एक पत्र लिखा जो कई पत्रों में प्रकाशित हुआ। इस पत्र का शीर्षक था "उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री बहुगुणा को राजस्थान के भूतपूर्व विधायक एव रचनात्मक कार्यकर्ता का नगर-नगर व डगर-डगर में मधुशालाएँ खोलने पर खुला बधाई पत्र।"

उत्तरप्रदेश में चाहे खाने को अन्न,तन ढकने को वस्त्र चूल्हा जलाने को कोयला, रोशनी करने को केरोसिन, पीने को दूध दही छाछ, खाने को घी तेल न मिलता हो पर गम भुलाने के लिए गली गली में शराब की अच्छी और सुन्दर व्यवस्था करदी है। इसके लिए मुख्यमंत्री जी तथा उनकी सरकार को हार्दिक बधाई देता हुआ अत्यन्त नम्रता से निवेदन करना चाहता हूँ कि कृपा करके आने वाले 2 अक्टूबर को उत्तरप्रदेश मे जहाँ जहाँ भी गाधी की प्रतिमाएँ लगी हो उन्हें शराब से स्नान कराएँ।

लाटरी जुआ की व्यवस्था तो गुजरात को छोडकर हर राज्य मे पहले से ही चल रही हैं। सुरा, सुन्दरी तथा सट्टा तीनों को मिलाकर देश का जो सुन्दर चित्र बनेगा उससे गाधी की आत्मा को बडी शान्ति मिलेगी।

विनोबा भावे को लिखा गया पत्र

दिनाक 19 7 75

परम पूज्य बाबा,

समाचार पत्रों में यह देखने को मिला है कि आपात स्थिति को आपने "अनुशासन पर्व" कहा है।

क्या अनुशासन पर्व में सत्ताधीश पूरे देश के करोड़ों परिवारों को शराब की धधकती भट्टी में झोंक कर ही अनुशासन का पालन करवायेंगे ?

21 सूत्री कार्यक्रम का (जिसमें कहीं भी शराब बन्दी और लाटरी बन्दी का जिक्र नहीं है) बड़े जोरो से प्रचार तथा प्रसार किया जा रहा है।

क्या बिना शराब बन्दी और जुआबन्दी के यह कार्यक्रम सफल होने वाला है तथा गरीबी बेकारी और भूखमरी मिटने वाली है ?

आजादी के पश्चात शराब शराबी तथा शराब के व्यापारी की इतनी इज्जत बढी है कि गाव गाव गली-गली और बाजार के बीच शराब की दुकानें प्रतिष्ठित लोगो द्वारा खोली जा रही है और गाधी की जय बोल कर राज्य चलाने वालों में शराब द्वारा आय बढाने में होड सी लगी हुई है और इस पतित आय को कामधेनु मान लिया गया है।

अक्सर यह सुनने को मिलता है कि भारत की प्रधानमत्री इन्दिरा जी आप पर बडी श्रद्धा रखती है। यदि यह सही है तो परीक्षा के लिये इससे बढकर उपयुक्त समय आया ही नही।

वैसे इन्दिरा जी आसानी से कह सकती हैं कि शराब बन्दी राज्यो का विषय है। पर यदि सब ही राज्यों को यह आभास हो जाए कि इन्दिरा जी हर हालत में शराब बन्दी चाहती है तो फिर सब ही राज्यों में जिस प्रकार आज शराब को बढावा देने की होड लगी हुई है उसी प्रकार जल्दी से जल्दी शराब बन्दी की भी होड लग सकती है, क्योकि सब ही मुख्यमत्री इन्दिरा जी की कृपा के लिये तरसते हैं।

यदि इदिरा जी के आदेश की अवहेलना की शका हो सकती है तो केवल दो राज्यो से जहा गैर काग्रेसी मत्रीमडल है। पर इन दोनो राज्यों में तो न केवल पूर्ण नशा बन्दी ही हे वरन लॉटरी और होर्सरेस भी बन्द है।

यदि अविलम्ब पूरे देश में शराबबन्दी नही होगी तो भारत के करोडो दीन हीन परिवार शराब की धधकती भट्टी में भस्म हो जायेंगे देश का सर्वनाश होगा और 21 सूत्री कार्यक्रम तो पूरी तरह असफल होगा ही पर आने वाला जमाना आप जेसे महान सत पर भी उसी प्रकार दोष लगायगा जिस प्रकार गुरु द्रोण तथा भीष्म पितामाह पर चीर हरण के समय मौन धारण कर लेने के कारण लगाया था।

देश को सर्वनाश से बचाने का यह उपयुक्त समय है। अत आपसे सादर अनुरोध है कि महान सत और गाधी के प्रथम और प्रमुख शिष्य होने के नाते अपना निर्णय सुना दीजिये कि हर हालत में लोकसभा के चुनावो के पूर्व पूरे देश में शराबबन्दी न होने पर आप कडा कदम उठाने वाले हैं। आपके चरणो में सादर प्रणाम।

राज्य सरकार के विरोधाभास को देखकर लिखा गया पत्र

प्रिय श्री कल्ला साहब,
सचिव,
प्रदेश नशाबन्दी मण्डल
जयपुर

राज्य ने शराब चालू कर दिया है और 100 करोड रु की आय का अनुमान लगाया है। यह युग बापू (गाधी) का नही है। यह युग है इन्दिरा गाधी का।

जिस प्रकार शराब बन्द करने के लिये राज्य ने शराब चालू किया है उसी तरह एक दिन बलात्कार व्याभिचार बन्द करने के लिये वैश्यालय तथा जुआ बन्द करने के लिये जुआघर भी खोलेगी।

जब केवल शराब से ही 100 करोड की आय होगी तो सुरा के साथ ही साथ जब सुन्दरी तथा सट्टे की आय भी जुड जायेगी तो तीन सौ करोड के लगभग आय होगी।

नशाबन्दी मण्डलो को अब अर्थ का सकट नही उठाना होगा और कई स्वयसेवी सस्थाओ को भी आर्थिक मदद देने मे आसानी रहेगी।

राज्य का काम होगा शराब पिलाते रहना और नशाबन्दी मण्डल तथा स्वय सेवी सस्थाओ का काम होगा निरन्तर प्रचार करते रहना।

इन्दिरा गाधी के रास्ते में आगे बढने वालो का मैं यह बडपप्न ही मानता हू कि अभी उन्होने बापू की प्रतिमाओ को हटाना प्रारम्भ नही किया है पर एक दिन वह भी आयेगा जब एक एक करके सब ही प्रतिमायें गहरे कुएं मे डाल दी जायेगी।

मैं बापू के बताये हुवे मार्ग पर ही जन्म भर चलने की चेष्टा करता रहा हू, और मेरा अटूट विश्वास है कि यह पतित आय एक दिन सर्वनाश करके ही रहेगी।

इस सर्वनाशी निर्णय के बाद आज 15 अगस्त के महान पर्व पर, जो हजारो की कुर्बानी के बाद आया था, व्रत रखकर जिला भीलवाडा के नशाबन्दी मण्डल के अध्यक्ष पद से तथा प्रदेश नशाबन्दी मण्डल से त्याग पत्र प्रस्तुत कर रहा हूँ सो स्वीकार करे।

प्रदेश के विभिन्न समाचार पत्रो मे छपा पत्र

दिनाक 28.9.81

आपके मारफत गाधी जयन्ती के सम्बन्ध मे राज्य के कर्णधारों के पास अपनी भावना पहुचाना चाहता हू।

गाधी के मन भावना कर न सके थू काम।
कॉलवे हर बात मे जद गाधी को नाम।।

एक तरफ गाधी जयन्ती सप्ताह शुरु होते ही राजस्थान राज्य ने शराब बन्दी समाप्त करके शराब की नयी प्रारम्भ कर दी और दूसरी और गाधी जयन्ती भी मनाई जा रही है। पूरे राजस्थान मे छुट्टी भी रहेगी तथा खादी पर छूट शुरु होगी। एक साथ दोनों काम कैसे होगे ? जब शराब बन्दी को समाप्त किया है तो गाधी जयन्ती मनाना भी समाप्त करिये। यदि जयन्ती मनाना ही हो तो फिर 2 अक्टूबर को सब से अच्छा काम यह होगा कि जितनी भी गाधी की प्रतिमाये हे उन्हें उखाड कर पुष्कर झील में प्रवाहित कर दे। शराब की आय राज्य के विकास के लिये कामधेनु है और अभी तो केवल मुर्गा और सट्टा का व्यापार ही शुरु हुआ है। जब शराब के सब ही बेटो पोतों का व्यापार प्रारम्भ होगा तो राज्य को अरबो रुपयो की आय होगी तथा विकास के लिये अमृत सिद्ध होगा।

राज्य के कर्णधारो को इस बात का भय नही खाना चाहिये कि बुड्ढे गाधी का क्या होगा और गोकुल भाई जैसे पागल लोग मरते हे तो उनका क्या होगा ? जब साहस के साथ शराब खोला है तो फिर उन सब कामो को भी समाप्त करिये जो गाधी के नाम पर चल रहे है।

राज्य के कर्णधारो के लिये इन्दिरा गाधी के पथ पर अग्रसर होना ही चहुमुखी विकास के लिये अत्यन्त आवश्यक है। राजस्थान ने यदि पहले शक्ति भक्ति तथा त्याग बलिदान का पाठ पढाया है तो बुड्ढे गाधी के सब कामो को समाप्त करके भी पूरे देश को विकास का मार्ग दिखाईये।

भयकर अधकार के बाद निश्चय ही सुनहरा प्रभात होगा और वह दिन भी आयेगा जब गाधी की कल्पना का सच्चा भारत बन कर पूरे ससार का मार्ग दर्शन करेगा।

लेकिन यह सब पूर्ण अधकार के बाद ही सभव होगा जिसे लाने में राज्य के कर्णधार तेजी से अग्रसर हो रहे है।

राज्यपाल श्री रघुकुल तिलक को लिखा गया पत्र

दिनाक 28-3-80

राजस्थान में पूर्ण शराबबन्दी हो यह आपका सपना था। राजस्थान के राज्यपाल श्री रघुकुल तिलक के बजट भाषण में पूर्ण शराबबन्दी की घोषणा थी। यह सर्वाधिक प्रसन्नता का क्षण था। श्री महता ने 28 मार्च को श्री तिलक को एक पत्र भेजा।

"जनता पार्टी सरकार के शराबबन्दी के निर्णय को आपने अप्रेल 80 से पूरा करने का जो साहसिक कदम उठाया है उसके लिए राजस्थान की आने वाली पीढियाँ आपको श्रद्धा से याद करेंगी। आपने सिद्ध कर दिया कि आप गाधी के पथ के सच्चे पथिक हैं।

जहा एक और कई सरकारें शराबबन्दी के कदम से पीछे हट रही है वहाँ आपने पूर्ण शराबबन्दी करके बडा काम किया है।

इस देश में शराब ने इतनी इज्जत पाली है कि शराबबन्दी की बात करने वालों की हँसी भी उडाई जाती थी और इस पतित आय को कामधेनु मान लिया गया था।

मैं सन् 31 से ही इस क्षेत्र में काम कर रहा हूँ और लोगों की आदत छूटे यह प्रयास करता रहा हूँ। मैं यह जानता हू कि सिर्फ कानून से शराबबन्दी नहीं होगी इसके लिये कार्यकर्ताओ को प्रचार कार्य के लिए आगे आना होगा।

आपके साहसिक निर्णय के बाद मैंने सकल्प किया है कि जिस तरह मैंने अपने 50 साल शराब मुक्ति व अन्य सामाजिक कुरीति निवारण में लगाए हैं अपना शेष जीवन राजनीति व चुनाव से दूर रहकर शराब, तिलक दहेज, मृत्युभोज जैसी भयकर बुराईयो के निवारण में लगाउगा।

स्थानीय पत्रो मे लेख

सरकार, शराब और गाधी जी

दिनाक 2-10-86

2 अक्टूबर 1986 को एक लेख लिखा जो स्थानीय पत्रों में छपा था। जिसका शीर्षक था – "सरकार, शराब और गाधी जी" लेखनी में तीखा व्यग्य है और अपनी बात में अटूट आस्था।

गाधी जी ने कहा था कि यदि मैं एक घण्टे के लिए भी भारत का डिक्टेटर (निरकुश शासक) बना दिया जाऊतो सबसे पहला काम यह करूगा कि तमाम शराब खानो को बिना मुआवजा दिए ही बन्द करवा दूगा।

उन्होंने यह भी कहा था कि यदि बच्चों को पढाना बन्द करना पडे तो यह मूल्य चुकाकर भी शराब को सदा के लिए समाप्त करूँगा क्योंकि यह सब पापो की जननी है।

सरकार की इस दलील में कोई वजन नही है कि यदि वह दारुबन्द भी कर देगी तो लोग नाजायज शराब बनाते रहेंगे और राज्य भी आय से वंचित रहेगा। क्या इस पतित आय से विकास के काम होगे ? राज्य और राम को तो बराबर माना है परन्तु अत्यन्त आश्चर्य खेद तथा शर्म इस बात की है कि राज्य इस पतित आय से विकास के सपन देख रहा है। लाखो परिवारों को शराब की धधकती भट्टी में झौक कर विकास के काम करना सबसे बडा घृणित काम है। क्या विनाश के रास्ते से विकास सम्भव है ?

राजस्थान में भयकर अकाल है। गावो में न खाने को अन्न न दूध न दही न छाछ है न घी है पर राज्य ने पूरे राजस्थान में शराब की दुकानें उसी प्रकार खोल रखी है जिस प्रकार धर्मात्मा लोग गर्मी के दिनों में ठण्डे जल की प्याऊ खोला करते हैं। शराब का व्यापार गाधी की छाती में छुरा भोकने से कम नही है।

सरकार नाजायज शराब बनाने वालो को पकडती है और सजा भी देती है पर क्या राज्य द्वारा बनाया गया शराब जायज है ? वेश्या तो वेश्या है चाहे वह लाईसेंस शुदा हो या बिना लाइसेन्स वाली। इसी प्रकार शराब तो शराब है चाहे वह राज्य सरकार द्वारा बनाया गया हो या अन्य लोगों द्वारा। ■

सहकारिता के क्षेत्र में कार्य

सेवा सघ के कार्यक्रम के विस्तार के साथ ही साथ श्री महता को अनुभव हुआ कि समाज के गरीब तबके को शोषण से रोकने के लिए जनता में आपसी सहकार की भावना जागृत करना आवश्यक है। मित्रों से वे ार विमर्श हुआ और सन् 1944 में "किसान वृहत बहुधन्धी सहकारी समिति" नामक सगठन का उदय हुआ। इसको व्यापक रुप देने के लिए उसके शेयर का मू य केवल 5 रु रखा गया।

उन दिनो दैनिक उपयोग की सामान्य वस्तुएं नमक कैरोसिन, शक्कर, कपडा आदि नियन्त्रित थी और जनता तक नही पहुच पाती थी। सस्था ने माडलगढ क्षेत्र में इन वस्तुओ के वितरण की व्यवस्था जिला प्रशासन के सहयोग से अपने हाथ में ली। श्री महता ने कुछ ही समय में इस सहकारी सस्था को अपने सतत प्रयासों से इतना सुदृढ और समर्थ बना दिया कि क्षेत्र के प्राय सभी बडे बडे गावों में उसकी शाखाएं स्थापित हो गई। द्वितीय युद्ध के दौरान और उसके बाद भी इस सस्था ने बडी मुस्तैदी और ईमानदारी से आम जनता की सेवा की। इसके फलस्वरुप यह सस्था पूरे क्षेत्र में अत्यन्त लोकप्रिय बन गई। इसका अनुमान इस तथ्य से आसानी से लग जायेगा कि सन् 1954 तक उसके 82,000 से अधिक शेयर बिक चुके थे। सम्पूर्ण मेवाड खेत्र में यह पहली सहकारी समिति थी। राजस्थान सरकार समिति की प्रगति से इतनी प्रभावित हुई कि सरकार ने सन् 1955 में इसे "पायलट योजना" में ले लिया।

राजस्थान निर्माण के कई वर्ष बाद भी माडलगढ क्षेत्र में आवागमन के साधनो की भारी कमी थी। इस अभाव को दूर करने के लिये नये मार्ग खुलवाकर समिति की बसें चलाई। ये बसें भीलवाडा बिजौलिया और बेगू – बरुन्दनी मार्ग पर चलाई गई। ये बसें लगभग 50 से अधिक गावों को छूती थी।

क्षेत्र के किसानों को अपनी ऊपज का कपास बेचने के लिए 40-50 किलोमीटर दूर भीलवाडा ले जाना पडता था। इस प्रक्रिया में किसान के ऊपर यातायात का भार तो पडता ही था पर साथ ही भीलवाड़ा के कपास के व्यापारी भाव ताव आदि में किसानों की अज्ञानता और मजबूरी का लाभ उठाकर उनका शोषण करते थे।

किसानों की इस समस्या का समाधान करने के लिए सहकारी समिति ने सन् 1958 में सरकार स स्वीकृति प्राप्त कर एक जिनिंग फैक्ट्री लगाई। इससे क्षेत्र की कपास की अधिकतर पैदावार समिति के कारखाने में आने लगी। इससे न केवल किसानो का शोषण बन्द हुआ और उन्हें घर बैठे अपनी पैदावार की उचित कीमत मिलने लगी बल्कि क्षेत्र के लोगों को रोजगार भी मिला।

सन् 1948 में ही मेवाड में ही नहीं देश में भी कपड़े का भयकर सकट पैदा हो गया था। लोगों को तन ढकना भी मुश्किल था। समिति ने जगह जगह सहकारी भडार खोल कर घर घर उचित मूल्यों पर कपडे का वितरण किया और सकट को पार किया।

सन् 1947–48 में अनाज की कमी के कारण सरकार ने लगान नकद के बजाए "लेवी" के रुप में अनाज लेना शुरु किया। इसमें जौ का भाव प्रति रुपया बारह सेर व गेहूँ का प्रति रु आठ सेर रखा गया। लेकिन स्थानीय अधिकारियों ने अपनी मरजी से जौ अठारह सेर से बीस सेर तथा गेहू 10 सेर प्रति रुपया लेना शुरु कर दिया। इससे किसानो में असतोष फैल गया। वे अपनी शिकायत लेकर श्री महता के पास आये। श्री महता ने तत्काल सम्बन्धित अधिकारियो से मिलकर उनकी शिकायत दूर कराई। यही नही सहकारी समिति के कार्यकर्ताओ ने बडे व्यवस्थित तरीके से किसानो से लिया हुआ अधिक अनाज वापिस करवाया। इससे सेवा सघ ओर सहकारी समिति की प्रतिष्ठा और प्रभाव बढे।

सहकारी समिति का कार्यक्रम नियन्त्रित वस्तुओ के वितरण बसे अथवा जिनिंग फैक्ट्री चलाने तक ही सीमित नही था समिति ने ग्रामोद्योग का भी विस्तार किया। उन्नत किस्म की तेल घाणियाँ लगाई गई जिनसे न केवल स्थानीय तेलियो को लाभ हुआ बल्कि उपभोक्ताओ को शुद्ध और सस्ता तेल मिलने लगा। गृह उद्योगो को प्रोत्साहन दिया गया और उनके उत्पादन की उचित मूल्य पर बिक्री की जिम्मेदारी स्वय समिति ने ली। समिति ने किसान को निर्धारित मूल्य पर खाद व उन्नत किस्म के बीज समिति द्वारा वितरित करने की जिम्मेदारी उठाई। उसने पशु–नस्ल सुधार के लिए अच्छे साडो की व्यवस्था का काम भी अपने हाथ में लिया।

माडलगढ क्षेत्र के किसान साहूकारों के कर्जों से सदियों से दबे हुये थे। सारे क्षेत्र को कर्ज मुक्त करना समिति की शक्ति के बाहर था। पर उसने पायलट प्रोजेक्ट के रुप में दो गाव खटवाडा व धाकडखेडी को हाथ में लिया। दोनों गावो के किसानों को मामूली ब्याज दर पर कर्जा देकर समिति ने किसानों को साहूकारों के चगुल से मुक्त करवाया।

सहकारी समिति से क्षेत्र के कर्जदार किसानो का बहुत भला हुआ। कितने ही किसानो ने गिरवी रखे हुए बच्चो को छुडवाया एव खेत,कुए व पेडो को मुक्त करवाया। नए कुए भी बनवाए। समिति के कारण लोगो की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ।

माडलगढ क्षेत्र पत्थर की खानो के लिए प्रसिद्ध रहा है। धीरे –धीरे यहा के पत्थर की माग बढती जा रही थी। इससे यहा की गरीब जनता को काम तो मिला पर खानो के ठेकेदार श्रमिको को समुचित मजदूरी नही देते थे। समिति ने स्वय ने सरकार से कुछ खानें ठेके पर ली और उन्हें चलाई। इन खानो में काम करने वाले श्रमिको को उचित व नियमित मजदूरी दी जाने लगी। इसका निजि क्षेत्र की खानो पर भी प्रभाव पडा और ठेकेदारों को मजदूरी में वृद्धि करनी पडी।

माडलगढ क्षेत्र में राजस्थान के अन्य भागो की तरह कभी–कभी अल्प अथवा अनावृष्टि के कारण सूखा पडता रहता था जिससे क्षेत्र के पालतू पशुओ के लिये घास की व्यवस्था करना कठिन हो जाता था। ऐसे समय मे सहकारी समिति क्षेत्र मे जगह जगह डिपो कायम कर सस्ते भावो पर घास बेचती थी और समिति के द्वारा ठेके पर लिए गए चरागाहो मे मवेशियो को चरने की सुविधा प्रदान करती थी।

श्री महता के अथक प्रयासो से समिति किसानो के जीवन का केन्द्र बिन्दु बनती गई। वह गावो मे जो भी समस्या आती उसी के अनुसार नए–नए कार्यक्रम अपने हाथ मे लेती जाती। सेवा सघ व सहकारी समिति के माध्यम से जन कल्याण होने लगा।

■

भूदान, ग्राम स्वावलम्बन गांधी घर योजना व अन्य कार्य

अप्रेल, 1949 में राजपूताना प्रदेश का 19 रियासतों के विलयीकरण द्वारा वृहद राजस्थान का निर्माण हुआ और उसके साथ प्रदेश में दलगत राजनीति का प्रवेश हुआ। स्वतत्रता आन्दोलन के साझीदार रचानात्मक कार्यकर्ताओ में निराशा की भावना पैदा होने लगी। इन परिस्थितियों में सन् 1953 में सत विनोबा द्वारा देश भर में चालू किए गए भूदान और ग्रामदान आन्दोलन का ऐसे कार्यकर्ताओ पर भारी प्रभाव पडा । अनेक लोग दलीय राजनीति से अलग हटकर लोकनीति के पक्षधर बने, और भूदान ग्रामदान एव सर्वोदय आन्दोलन में रम गए। श्री महता उनमें अग्रणी थे।

श्री महता ने अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक भूमि दान में प्राप्त करने का सकल्प लिया। उन्होनें सेवा सघ के कार्यकर्ताओ को साथ लेकर भूदान यात्रा प्रारम्भ की। उनके इस भागीरथी प्रयासों में इस क्षेत्र में सर्व श्री शकरराव देव, श्री कृष्णदास जाजू, ठक्कर बापा एव विनोबा भावे की यात्राओ ने जबरदस्त प्रेरणा का काम किया। इन यात्राओ से समस्त गावो से यथेष्ट भूदान व सम्पतिदान प्राप्त हुआ।

सन् 1956 तक श्री महता माडलगढ क्षेत्र में लगभग 27,000 बीघा भूमि भूदान में प्राप्त करने में सफल हो गये। देश में भूदान इतिहास में किसी एक परगने से इतनी अधिक भूमि प्राप्त करना अपने आप में एक कीर्तिमान था। गावो में जमीन वितरण का कार्य भी साथ साथ चलता रहा जिससे भूमिहीन किसान तत्काल फायदा उठा सके। यह कार्य पूरी ग्राम सभाओ के निर्णय से सम्पन्न किया गया था। इन गावों में 10 गाव ऐसे थे जहा एक भी व्यक्ति भूमिहीन नही रहा। श्री महता ने स्वय ने अपनी जमीन का 1/6 हिस्सा भूदान में दिया।

सन् 1957 में माडलगढ तहसील के "कुडालिया" व बिजौलिया तहसील के 'हेम निवास' गाव का ग्रामदान करवाया। ये दोना गाव भीलो के थे। सेवा सघ ने दोनों गॉवो के आर्थिक स्वावलम्बन के कार्यक्रम हाथ में लिए और उन्हें शिक्षा से जोडा ।

खादी उद्योग

श्री महता की मान्यता थी कि जनता में गरीबी का मुख्य कारण सता और उद्योगों का केन्द्रीयकरण है। जब से भोजन व वस्त्र के मामले में गाव परावलम्बी हुए हैं, बेकारी बढी है और गाव कगाल हो गए हैं। धीरे धीरे गाव के सब धन्धे समाप्त होते गए हैं।

श्री महता ने ग्रामोद्योगों की परम्परा को बढाने के लिये सबसे पहले सूताञ्जलि व कताई का कार्य हाथ में लिया। सेवा सघ द्वारा सचालित पाठशालाओ मे कताई का एक घण्टा निर्धारित कर दिया। बीगोद, बडलियास, धाकडखेडी में तीन कताई मण्डल खोले गए। इन मण्डलो ने त्रिवेणी सगम पर 12 फरवरी, 1951 से ही सूताजलि मेले का आयोजन करना प्रारम्भ किया। स्मरण रहे उक्त तारीख को 1948 में त्रिवेणी सगम पर 12 फरवरी, 1951 से ही सूताजलि मेले का आयोजन करना प्रारम्भ किया। उक्त तारीख को 1948 में त्रिवेणी सगम पर महात्मा गाधी की मस्मि प्रवाहित की गई थी। इस अवसर पर हर वर्ष पूरे क्षेत्र के स्कूलो के बच्चे एव अध्यापक व साल भर का कता हुआ सूत आने लगा। इस प्रकार सूताञ्जलि एक प्रेरणादायी कार्यक्रम बनता गया। कई लोगों ने प्रण लिया कि वे अपने हाथ के कते सूत के ही वस्त्र पहनेंगे। वस्त्र स्वावलम्बन का प्रयास बढा।

दुर्भाग्य से गत कुछ वर्षो से यह कार्यक्रम प्राय समाप्त होता गया। स्कूलो में कताई समाप्त हो गई।

स्थानीय वस्तुओ का उपयोग

सेवा सघ के कार्यकर्ताओ ने भोजन व वस्त्र के मामले में सिर्फ गाव की बनी हुई चीजें ही इस्तेमाल करने का तेजी से प्रचार किया। श्री महता ने इस समबन्ध में कई नाटक व गीत तैयार करवाए एव उनका प्रदर्शन किया। गरीबी के कारणो पर चोट की जाने लगी। इसके साथ ही हजारो की सख्या में लोगो ने यन्त्रो से उत्पादित वस्तुओ के बहिष्कार सम्बधी सकल्प पत्र भरे। श्री महता न वनस्पति घी को गायमार घी के नाम से विख्यात कर दिया। इससे हजारो व्यक्तियो व कई जातियो ने किसी भी भोज के अवसर पर वनस्पति घी काम मे नहीं लेने का निश्चय किया। इससे पशु सरक्षण बढा गाव मे घी दूध उपलब्ध होने लगा। ग्रामोद्योगो का प्रचार प्रसार हुआ।

श्री महता ने स्वय ने गाय पाली और हमेशा मोटी सूती खादी ही पहनी, चर्मकार के बने हुए जूते पहने। ज्यादा से ज्यादा ग्रामोद्योगी वस्तुओ का प्रयोग किया। अपने जीवन के अतिम क्षणो में भी उन्होंने जो विचार प्रकट किये उसमें गाव की

अर्थ–व्यवस्था पर गहरी चिन्ता व्यक्त की। वे इस पर बल देते रहे कि गाव के काम गाव में हो और गाव के झगडे गाव में निबटे। उन्हें इस बात से अत्यन्त पीडा थी कि एक ओर मेहनतकश किसान भूखा है और दूसरी ओर शोषक वर्ग दिनों दिन धनी हो रहा है। वे सदैव किसानों व गाव वालों के बीच ही रहना अधिक पसन्द करते थे। शहर में उन्हें घुटन महसूस होती थी।

समग्र ग्राम रचना केन्द्र

सन् 1954 में केन्द्रीय गाधी स्मारक निधि ने निश्चय किया कि देश में 5 गाव चुनकर उनके समग्र विकास की योजना हाथ में ली जाए। भीलवाडा में जून 1954 में आयोजित रचनात्मक कार्यकर्ताओ की सभा में राजस्थान में भी इस प्रकार का एक गाव चुनने का विचार–विमर्श हुआ। इस सभा में श्री महता ने बीगोद से 7 मील दूर धाकड खेडी गाव को इस प्रयोग के लिए चुनने का प्रस्ताव रखा। सभी कार्यकर्ताओं ने सर्व सम्मति से श्री महता के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। इस गाव का प्रारम्भिक सर्वे करके योजना बनाने का भार श्री छीतरमल गोयल को सौपा गया। कार्यक्रम के सयोजक स्वय श्री महता बने।

धाकडखेडी इस क्षेत्र का आचलिक गाव था। वहा पहुचने के लिए पहले बीगोद जाना जरुरी होता था। बीगोद से दो नदिया पार करके 7 मील पार धाकडखेडी स्थित था।

श्री महता के अथक प्रयासो व गाव वाला के सहयोग से धाकडखेडी में कई कार्यक्रम हाथ मे लिए गए। एक गाव में बदलाव लाना इतना आसान नही होता है फिर भी धाकड खडी म जो कुछ कार्य हुआ उसका यहा उल्लेख करना महत्वपूर्ण है।

इस गाव में सतुलित कृषि कुरीति निवारण शिक्षा प्रसार, वस्त्र स्वालम्बन ग्रामोद्योग की दिशा मे श्री महता के मार्गदर्शन में कई कदम उठाए गए। गाव में सहकारी समिति के जरिये पचायती दुकान चलाई गई और ग्राम विकास समिति द्वारा गाव के झगडे आपस मे निपटाने का प्रयत्न हुआ। सर्व सेवा सघ की ओर से अम्बर चर्खे के प्रयोग के लिये यह पहला गाव चुना गया। गाव में सतसग मनोरजन और सफाई के कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। गाव मे गाववालो के सहयोग से पनघट पशुओ के बाडो का निर्माण भी हुआ।

कृषि उन्नति

किसान साथियो के साझे में कृषि प्रयोग का काम हाथ में लिया। इस कृषि प्रयोग मे मक्की तथा कपास के अलावा मिर्च हल्दी मूगफली तथा साग सब्जिया बोई गई इनमें से हल्दी मूगफली व टमाटर की खेती सफल हुई। एक अनुभवी बागवान को

नर्सरी के लिए बुलाया गया। फलों के पौधे लगाने के लिए लोगों को प्रेरित किया और उन्हें सिखाया। इसका परिणाम अत्यन्त ही सुखद रहा । आसपास के गावो ने भी लाभ उठाया। कृषि सुधार केन्द्र हैदराबाद के सचालक श्री बाला प्रसाद धूत स्वय घाकडखेडी आए। फिर यहा से कृषकों का एक समूह हैदराबाद गया। इस प्रकार आदान प्रदान चलता रहा।

शिक्षा

एक प्राथमिक पाठशाला प्रारम्भ की गई। ज्यादातर बच्चे ढोर चराने जाते हैं, इस कारण रात्रिशाला चलाई गई। पाठशाला के पाठ्यक्रम में उद्योग शिक्षण जैसे कताई आदि को ज्यादा महत्व दिया गया। बालवाडी भी चलाई गई।

सफाई

श्री महता के प्रयत्नो से सफाई कार्यक्रम को हाथ में लिया गया। केन्द्र के कार्यकर्ताओ द्वारा प्रतिदिन एक महिने तक एक घण्टे रोज के कार्यक्रम से पूरे गाव की एक बार सफाई की गई, जिसका उद्देश्य सफाई के प्रति गाव वालो के विचार जानना व दिलचस्पी जागृत करना था। सफाई के सम्बन्ध में राजस्थान गाधी निधि की ओर से श्री केशव कुमार जी यहा आये और यहा की समस्याओ का अध्ययन किया और दो कार्यकर्ताओ को टट्टी पेशाब घर बनाना सिखाया।

सहकारी समिति

गाव के आर्थिक जीवन को मजबूत करने के लिए वहा पर होने वाले शोषण को बन्द करना जरुरी था। इस हेतु यहा पर किसान बहुधन्धी सहकारी समिति बनाई गई। किसानों को कृषि कार्यों के लिए कर्ज मिल सके तथा किसानो को सुविधा के कार्य हाथ में ले सके। तीन तरह के काम हाथ में लिए गए

(1) पचायती दुकान (2) कर्ज वितरण तथा कर्ज निवारण (3) खादी ग्रामोद्योग व्यवस्था

पचायती दुकान का काम शहरो से आवश्यक वस्तुए लाकर ग्रामीणो को मुहय्या करने का रहा। साथ ही गाव वालो का माल आडत पर शहरों में ले जाकर उचित मूल्य पर बेचना था।

कर्ज मुक्ति के काम से काफी किसानो को राहत मिली। इससे कई परिवारो ने अपने अधेरे घरो में खिडकियाँ खुलवाई। कुओ को रहन मे छुडवाया और कुओ का निर्माण करवाया। चमडा खरीद कर जूते बनवाए मशीने खरीदी गई।

वस्त्र स्वावलम्बन तथा रोजगार बढाने की दृष्टि से सहकारी समिति ने गाव के कपास को बाजार मे बिकने से रोका। उसकी ओटाई तथा धुनाई के लिए सरजान

खरीदे। आस पास के गाव में भी कताई का काम प्रारम्भ किया। बुनाई सीखने के लिए खारीतट सर्वोदय सघ से बुनकर भाई को मय फटका शाल के बुलाया जिसने तीन स्थानीय व्यक्तियों को फटका शाल पर रेजी धोती आदि बनाना सिखाया। गाव में नए चर्खे दिए गए तथा पुराने चर्खों का सुधार किया गया। इसी के साथ अन्य ग्रामोद्योगों का भी विस्तार किया। चर्मकारों व तेलियों के काम को आग बढाने में मदद की। खादी ग्रामोद्योग बोर्ड से बैल चक्की प्राप्त करके फिट कराई गई। हाथ चक्की को हल्का करने के लिए बाल बियरिंग भी लगाए गए।

निर्माण

केन्द्र द्वारा पचायत घर का निर्माण किया गया, और उसमें गाव वालो ने श्रमदान किया।

गो पालन

गाव की गो नस्ल सुधार की दृष्टि से राजस्थान गो-सेवा सघ की पर्याप्त मदद ली गई। पशु चिकित्सकों को बुलाकर गाव वालो को प्रशिक्षण दिया गया। पशुओ के टीके भी लगाए गए।

अम्बर चर्खा

सर्वसेवा सघ ने धाकड खेडी ग्राम को अम्बर चर्खा प्रयोग के लिए प्रथम गाव के रुप में चुना। वर्धा से कार्यकर्ता यहा चर्खा सीखाने आए। इसका बडा व्यापक प्रभाव पडा।

महिला जागृति तथा चिकित्सा

कस्तूरबा ट्रस्ट की ग्राम सेविका द्वारा रोगी सेवा तथा महिला कार्य प्रारम्भ किए गए। सन् 1953 में गेगा का खेडा मे महिला जागृति शिविर काफी महत्वपूर्ण रहा। इसमें 30 बहिनों न भाग लिया। यह महसूस किया गया कि कार्यकर्ताओ की पत्नियो व परिवारो की अन्य महिलाओ में जागृति आना जरुरी है। इसके बाद ही ग्राम चेतना के कार्य सक्षम हो सकते हैं। इस शिविर का सचालन डॉ चन्द्रकला ने किया। पर्दा प्रथा व अन्य सामाजिक बुराईयो पर गहन चर्चा प्रारम्भ हुई। इस क्षेत्र में इस शिविर के बाद बालिकाओ को पढाना प्रारम्भ किया। स्त्रियों द्वारा स्टेज पर आकर गीत, नाटक नृत्य में भाग लेने का यह पहला मौका था।

इस प्रकार श्री महता के नेतृत्व में धाकडखडी में एक प्रयोग शुरु हुआ और अन्य गावों में भी इसका प्रभाव पडा। ■

अन्याय का प्रतिकार
जागीरदारों के विरुद्ध संघर्ष

राजस्थान की अन्य रियासतों की तरह मेवाड में भी जागीरदारों का बोलबाला था। राज्य में हर जागीरदार अपने आप में एक रियासत थी। जागीरदार मनमाने कर और लगान वसूल करते और बिना मेहनताना दिए लिए जनता के विभिन्न वर्गों से बेठ बेगार लेते। वे सामाजिक दृष्टि से भी अपनी रियासत पर तरह तरह के जुल्म ज्यादतियाँ करते थे। यू तो राज्य का पूरा जागीरी इलाका सामन्तो के जुल्म से पीडित था पर माडलगढ क्षेत्र के जागीरदार तो इस बारे में विशेषतया कुख्यात थे।

जागीरदारी क्षेत्र में जागीरदार के मेहमान या बडे राव अथवा ठाकुर शिकार खेलने आते तो सारे गाव वालों को शिकार के समय हाका देने जाना पडता था। व्यापारियो को "बलैठ" अर्थात रसद का सामान अनिवार्य रुप से देना पडता था जिसकी कीमत या तो दी ही नही जाती थी और दी भी जाती थी तो नाम मात्र की। पशुपालको को साग दूध शिकार दल को मुफ्त में पहुचाना पडता था। परगने के हाकिम भी बडे जालिम होते थे। वे भी जागीरदारो की तरह बैठ बेगार और "बलैठ" लेते।

श्री महता ने सदा न्याय प्राप्त करने के लिए लोगों को प्रेरित किया। श्यामपुरा गाव में एक किसान को अपनी पैदावार का नाज बेचते समय स्थानीय ठाकुर बिशनसिंह ने बन्दूक से मार डाला। श्री महता तत्काल ही श्यामपुरा पहुच गये। उनके आगमन की सूचना हवा की तरह गाव में फैल गई। लोग बडी सख्या में इकट्ठे हो गये। श्री महता ने ठाकुर के इस जघन्य अपराध क विरुद्ध लडने के लिए लोगों को तैयार किया। जन आक्रोश इतना उमडा कि तत्काल सरकार ने भयकर खूखार समझे जाने वाले उक्त ठाकुर को गिरफ्तार कर लिया और मृतक के परिवार को मुआवजा दिलाया।

इसी श्यामपुरा में एक मीणा जाति के व्यक्ति के पालतू पशु ठाकुर के खेत में घुस गए। इस बात पर ठाकुर ने उक्त व्यक्ति को गोली से मार दिया। श्री महता पुन श्यामपुरा पहुच गये और गाव के भयभीत लोगो में साहस भर दिया। उन्होंनें मृत मीणा

की शहादत में तत्काल एक चबूतरा बनवा दिया उसे शहीद माना गया। ठाकुर यह सब देखता रहा पर लोगों का साहस देख कर कुछ नहीं कर सका। इससे लोगों में अन्याय का मुकाबला करने का साहस पैदा हुआ।

ठाकुर लोग अपने गावों में रात्रि शालाओ व स्कूलों के चलाने के खिलाफ थे। वे कहा करते थे कि महताजी ने गाव के लोगों को बिगाड दिया है। इन ठाकुरों, जागीरदारो का विरोध करने में सेवा सघ के एक अध्यापक जगरुपजी ने बहुत साहस दिखाया था। वे लालटेन लेकर पढाते तो जागीरदार के आदमी लालटेन और किताबें पेन्सिलें आदि उठाकर ले जाते।

क्षेत्र के निवासी जागीरदार के सामने बौने मात्र थे। गाव में कोई दूल्हा घोडी पर बैठकर नही निकल सकता था। बारात में बैण्ड बाजे नहीं बज सकते थे न बारात के भोज मे शक्कर ही काम ली जा सकती थी। जागीरदारी वर्ग इन रिवाजों पर अपना एकाधिकार मानता था। गाँवों में पिछडे वर्ग की तो और भी बुरी हालत थी। उन पर जागीरदार ही नही सवर्ण वर्ग भी ज्यादतिया करता था। पिछडी जाति के लोग चादी के कडे पाव मे नही पहन सकते थे। चमार जाति के एक दूल्हे ने चादी का कडा पहन रखा था। जागीरदार को यह बात बर्दाश्त नही हुई और उसी समय सबके सामने उसका अपमान करते हुए कडा खुलवा कर अपने पास रख लिया। इसी प्रकार ये लोग गावाई कुये से पीने के लिए पानी नहीं भर सकते थे। श्री महता ने इस तरह के भेदभाव के खिलाफ लोगों में जागृति पैदा की।

देवलिया गॉव में बलाई (अनुसूचितजाति) परिवार में माँ को भाभा कहना भी अपराध था क्योकि वहा के रिवाज के अनुसार भाभा (मा) शब्द सिर्फ ठाकुर व अन्य सवर्ण परिवार को इस्तेमाल करने का अधिकार था। बलाई परिवार के एक बालक ने अपनी मा को भाभा कहकर पुकार लिया तो वहा के जागीरदार ने उस बालक का हाथ तोड दिया। उसने कहा कि तू ही अपनी मा को भाभा कहेगा तो फिर हम क्या कहेगे। श्री महता उसी दिन देवलिया पहुचे। उन्होंनें सारे गाव वालों की सभा बुलाई और उसमें निश्चय किया गया कि आज से सारे गॉव वाले उक्त बालक की मा को भाभा ही कहेंगे। जागीरदार मन मसोस कर रह गया। उस दिन के बाद जागीरदार ने फिर कभी ऐसा दुस्साहस नही किया।

श्री महता और सेवा सघ के कार्यकर्ताओ की बदौलत लोगों में धीरे धीरे जागृति पैदा हुई और उनमें जुल्मों का सामना करने की हिम्मत पैदा हुई। फलस्वरुप धीरे धीरे ये सामन्तवादी कुरीतियाँ खत्म हुई।

लेवी की जबरदस्त वसूली को रोकना

आजादी के बाद किसानों का शोषण दूसरे रुप में बढने लगा। देश की आजादी के साथ ही राजस्थान में राजा लोग समाप्त हुए। रियासतों के एकीकरण द्वारा विशाल राजस्थान का निर्माण हुआ। नई सरकार गठित हुई। राज्य में अन्न की कमी पूर्ति के लिए सरकार ने खाद्योत्पादन का एक अश किसानों से निर्धारित मूल्य प" खरीदने के लिए अधिकारी और एजेन्ट नियुक्त किये।

कुछ लोग किसानों को गुमराह करने लगे। ऐजेन्ट भी पूरा तौल और मोल नही दे रहे थे। जगह जगह झगडे होने लगे। इसी प्रकार का एक मामला धार्मणिया गाव का सामने आया। श्री महता को जब यह पता लगा तो वहा पहुचे। किसानो की शिकायत पर सारा अनाज फिर तौला गया। सारा घपला सामने आया। किसानो को पूरा पैसा मिला। श्री महता की समन्वय शैली से सारा मामला निपटा। सरकार व किसानों के बीच होने वाला एक बडा सघर्ष टल गया।

परगने के अधिकारी किसानों से लगान के एवज में राज्य द्वारा निर्धारित भाव में सस्ता अनाज खरीद लेते थे। सेवा सघ ने ऐसे मौकों पर किसानो को अपने उत्पाद का उचित मूल्य दिलवाया और कर्मचारियों द्वारा किये जाने वाले शोषण को रोका।

सरकार लेवी के भाव तय करती थी। यह भाव कई बार किसानो की मेहनत को देखते हुए काफी कम होते थे। श्री महता ने इसके विरुद्ध विधानसभा व विधानसभा के बाहर आवाज उठाई। किसानों को सगठित किया। उनमें अपनी बात को भाषणो व पर्चों के माध्यम से पहुचाया। उनके कुछ पर्चे यहाँ दिये गये हैं। वस्तुत इनमें किसी बडे आन्दोलन की जरुरत ही नहीं पडी सरकार ने लेवी वसूली के भावो में वृद्धि की और किसानों को राहत मिली।

लेवी वसूली के सम्बन्ध मे जिलाधीय को लिखा गया पत्र

श्री मान् जिलाधीश महोदय, दिनाक 26.5 75

भीलवाडा

लेवी वसूली तथा वितरण के तरीके इतने दोषपूर्ण हैं कि उत्पादक तथा उपभोक्ता दोनों पर भीषण प्रहार हो रहा है। इस सम्बन्ध में कई सुझाव दिये थे पर राज्य सरकार का उस पर ध्यान जाना तो दूर, विधायकों तथा मत्रियों ने सुविधा अलाउन्स तथा दैनिक भत्ता बढा कर जले हुए पर नमक छिडका है।

वोट लेते समय जिसे मालिक कहते हैं वह भूखों मर रहा है तथा नाना प्रकार के कष्ट झेल रहा है और चाकर बन कर जाने वाले विधायक (चाहे वे किसी भी दल के हो) तथा मत्री गुलछर्रे उडा रहे हैं।

मैं अपने आपको उन निर्जीव तथा स्वाभिमान रहित प्राणियों में नही मानता। अत राशन कार्ड के जरिये मिलने वाली सब सुविधाओ के त्यागने के लिए राशनकार्ड इसी के साथ आपकी सेवामें पेश करता हुआ निवेदन कर रहा हूँ कि मैं उस समय तक लेवी जमा नही कराऊगा और न कोई सुविधा ही लूगा जब तक कि नहर और कुए की सिंचाई के बहुत बडे अन्तर को सामने रख कर लेवी की तादाद व भाव तय नही किये जाते। खरीद व बिक्री का अन्तर कम नही हो जाता, तथा मंत्रियो व विधायकों द्वारा अकाल के वर्ष में ली गई सुविधायें वापस नहीं की जाती।

राज्य के हाथ लम्बे हैं। लेवी जमा न कराने पर कई प्रकार के कष्ट झेलने पड सकते हैं पर अन्याय का दृढता के साथ मुकाबला करना तथा कष्ट झेलना ही तो धर्म तथा आनन्द की चीज है।

माडलगढ क्षेत्र के अन्न उत्पादकों से नम्र निवेदन

दिनाक 27 6 73

जिस माडलगढ क्षेत्र के पचासो गावों की जनता के लिये दवा और यातायात तथा गोवटा तालाब को छोड सिचाई का कोई साधन नहीं उसी तहसील को जिले भर में सरप्लस घोषित की जाकर चारो और पुलिस ने बाड़ा बन्दी कर दी है और गेहू की खेती को अफीम की खेती बनादी है।

एक तरफ जहा पूरे जिले में लोग गेहू सवासौ से लेकर डेढ सौ रुपये क्विन्टल तक बेचे वहा केवल माडलगढ के अन्न उत्पादकों को 76 रुपये क्विटल पर बेचने के लिए मजबूर किया जाये इससे बढकर आश्चर्य तथा दुख की बात क्या हो सकती है ?

मक्की खुले आम सवासौ रुपये क्विन्टल पर बिक रही है पर गेहू छियोत्तर रुपये क्विटल पर बेचने के लिये मजबूर किया जा रहा है जब कि मक्को के मुकाबले कई गुनी अधिक पिलाई अधिक खाद और कई गुनी अधिक मेहनत करनी पडती है। और भयकर ठड में पाणत करनी पडती है। यदि पूरा हिसाब लगाया जाये तो किसी भी हालत में गेहू सवासौ रुपया क्विटल से सस्ता पूर खाता ही नहीं है।

सब से बडे खेद की बात तो यह है कि अनाज का भाव वे उच्च अधिकारी तय करते हैं जिन्हें दो हजार से लेकर तीन हजार तक मासिक वेतन के अलावा बगला, बिमारी मे दवा रिटायर होने पर पेन्शन तथा ग्रेच्यूटी के रुप में लगभग एक लाख रुपये मिलते हैं।

क्या ये सब सुविधायें कठोर श्रम करने वालो को पाने का अधिकार नही ? फिर मजे की बात यह है कि ये जनता के नौकर कहलाते हैं और मालिक कहे जाने वाले किसान को भूखो मार कर गुल छर्रे उडाते है।

जिस प्रकार अन्न का भाव कुर्सी पर बैठे बैठे अधिकारी तय करते हैं ठीक उसी प्रकार अधिकारियो के वेतन का निर्धारण श्रम जीवियों द्वारा होना चाहिये। ऐसा होने पर ही बुद्धि जीवियो की आखें खुलेगी और श्रम तथा बुद्धि का भेद मिटेगा।

क्या अधिकारी इस बात को भी नही जानते कि इस भयकर महगाई में गेहू इस प्रकार सस्ते भाव में बेच कर किसान बाजार से जरुरत की चीज कैसे खरीद पायगा ?

सकट के समय में जरुरत वाले क्षेत्र में अन्न भेजना सबका कर्तव्य व धर्म है पर अपने बालबच्चो को भूखो मारकर तथा राज्य के दबाव में विवश होकर सस्ते भाव पर बेचना अधर्म है। राज्य द्वारा किये गये इस अपमान का डट कर सामना करना चाहिये। और गेहू के भाव बढाने के लिये राज्य को मजबूर करना चाहिये। लेकिन भाव बढ जाने पर उन क्षेत्रो में अनाज भेजना अपना फर्ज समझना चाहिये जहा गेहू की सख्त जरुरत है।

कृपा करक सदैव इस बात को ध्यान मे रक्खे कि जुल्म करने वाले से सहने वाला अधिक दोषी होता है। अत अन्याय का डट कर अहिंसक ढग से सामना करते हुये हर प्रकार का कष्ट झेलने के लिये तैयार रहना ही सब का कर्तव्य व धर्म है ।

कृषि व खाद्य मत्री श्री शिवचरण माथुर को

मनोहर सिंह महता, अध्यक्ष सेवा सघ बीगोद

(क्षेत्र माडलगढ) का खुला पत्र दिनाक 17.6 74

प्रिय श्री माथुर साहब

आपके खाद्य मत्री बनने पर यह आशा जगी थी कि अब किसानो का बडा हित होगा पर आपका माडलगढ से विधायक होत ही कुओ का लगान करीब करीब दो गुना हो गया और आपके मत्री बनते ही मक्की लेवी के रुप मे सत्तर रुपये क्विंटल से ली गई। जब बाजार में आज एक सो सत्तर रुपये से बिक रही है।

आपने पहले यह घोषणा की थी की लेवी व्यापारियो से ली जावेगी। लेकिन इसका नुकसान भी तो किसानो को ही उठाना पडा क्यों कि व्यापारियों ने लेवी का हिसाब लगाकर ही सस्ते भाव से गेहू खरीद लिये।

अब आपने तरियालीस किलो प्रति बीघा 105 रु क्विंटल से लेवी लगादी है और फर्टिलाइजर के भाव दो गुने कर दिये हैं। किसानो के कठोर परिश्रम पर जितना भीषण प्रहार आपके मत्री बनने पर हुआ पहले कभी नही हुआ था।

आपने यह आदेश भी दिया है कि जिनके घर में गेहूँ हो उनसे हर हालत में लेवी ली जावे। यदि आपने यह आदेश भी दिया होता कि जिन जिन नेताओ ने आजादी के बाद धन कमाया है उनसे भी सब ले लिया जाये तो बात समझ में आती लेकिन आपने तो भीषण प्रहार उन पर किया है जिन्हें वोट लेते समय मालिक तथा अन्नदाता कहा करते हैं।

जो भी हो सकट के समय मदद करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है पर क्या राजस्थान पर सकट है ? यह मैं आपसे पूछना चाहता हूँ।

एक तरफ भीषण सकट बताया जा रहा है और दूसरी ओर मत्री तथा विधायक गुलछर्रे उडा रहे हैं। विधायक प्रथम श्रेणी में यात्रा कर रहे हैं। अनावश्यक रुप से कमेटियो की बैठके चलती रहती है। और दो दो दिन हाजिर रह कर नो नो दिन का इकतीस रुपया प्रतिदिन के हिसाब से भत्ता उठा रहे हैं। कमेटिये गूलछर्रे उडाने के लिये भारत यात्रा कर रही है। नाना प्रकार की सुविधाओ का उपयोग करके इस कहावत को सिद्ध कर रहे हैंकि "जब रोम जल रहा था नीरो बशी बजा रहा था"

जो भी हो आप समाजवादी होने के साथ ही आत्मवादी भी है अत पूर्ण विश्वास है कि आपकी आत्मा जगेगी और यह कहने के बजाय कि खाद के भाव तथा लेवी के भाव भारत सरकार तय करती है आपकी आत्मा अन्याय का विरोध करेगी और आप घेराव के पहले ही मत्री पद से त्याग पत्र देकर अपने क्षेत्र के मालिक (मतदाता) की पूरी पूरी मदद करेंगे तथा इस अन्याय का डट कर विरोध करने में हमारा पूरा-पूरा सहयोग करेंगे।

अन्याय पूर्ण लेवी वसूली का डटकर मुकाबला करो
जन सघर्ष समिति, जिला भीलवाडा की किसान भाईयो से अपील

सयोजक – मनोहरसिंह महता

जिलाधीश महोदय भीलवाडा को ता 2-5-75 को इस आशय का ज्ञापन दिया कि 5 बीघा तक सिंचित भूमि पर लेवी न लें गाव में ही लेवी तुलवायें और ग्राम द्वारा चुन गये पचो की राय से ही लेवी लें लेकिन जब जिलाधीश महोदय ने सहयोग

के निमित बढाये गये कदम पर कोई ध्यान नही दिया तो हम किसान भाईयों से नीचे लिखा निवेदन करना चाहते हैं ।

किसान के अत्यन्त कठोर श्रम से पैदा किये अनाज का भाव तय करने का बिना किसान की सलाह के किसी को अधिकार नही है। भीलवाडा में अकाल है, खाद के भाव दो गुणे हो गये हैं, बिजली की रेट बढ गई है, लगान बढा दिया गया है। नहर और कुए के सिंचाई में बडा भारी अन्तर है। इन सबको देखते हुये गेहू किसी भी हालत में 150 रु क्विन्टल से कम पर खरीद करना किसान के कठोर श्रम पर भीषण प्रहार और अन्याय है। अत लेवी नही देना और अहिंसक ढग से दृढता पूर्वक विरोध करना ही धर्म है। इतना होते हुये भी यदि, लेवी वसूल करनी ही है तो-

(1) दस बीघा सिंचित तथा 20 बीघा असिंचित भूमि से अधिक जिन लोगो ने गेहू बोया हो उनसे ही लेवी ली जानी चाहिये।

(2) ग्राम सभा द्वारा चुने हुये पचो की राय से ही लेवी ली जानी चाहिये।

(3) हर हालत में लेवी तोलने किसी को भी दूसरे गाव नही जाना पडे ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये।

(4) शहर अथवा गाव में वितरण व्यवस्था में किसी प्रकार का अन्तर नही होना चाहिय।

(5) चुकारा उसी समय तुरन्त होना चाहिये।

यदि उपरोक्त बातों पर राज्य ध्यान न दें तो हिम्मत के साथ न्याय सगत अहिंसक ढग से अन्याय का मुकाबला करिये और इसे सदा ध्यान मे रखिये कि अन्याय को चुपचाप सहते रहने से बढकर पाप नही है। ■

हिन्दू मुस्लिम एकता

बीगोद मेवाड का एक ऐसा ग्राम था जहाँ हिन्दू व मुसलमानों की जनसंख्या लगभग बराबर थी। पर पुराने जमाने में यहाँ पर किसी प्रकार का साम्प्रदायिक तनाव होना नहीं सुना गया। सन् 1940 में जब मुस्लिम लीग ने साम्प्रदायिकता के आधार पर देश के विभाजन की बात उठाई तो यहाँ भी वातावरण में कभी-कभी तनाव पैदा होना शुरू हुआ। श्री महता को भी इस सम्बन्ध में अहसास हुआ। उन्होंने स्थानीय लोगों में साम्प्रदायिक सद्भाव और भाईचारे का वातावरण बनाया। हिन्दू और मुसलमानों के मुख्य त्यौंहार दोनों कौमें मिलकर मनाने लगी। श्री महता ने यह भी प्रयत्न किया कि गाव में हिन्दुओ अथवा मुसलमानों की साम्प्रदायिक सस्थाएं न पनपे। वे इस प्रयत्न में सफल हुए। फल यह हुआ कि जब सन् 1947-48 में देश के विभिन्न भागो में साम्प्रदायिकता की आग भडक रही थी बीगोद में पूरी तरह हिन्दू मुस्लिम भ्रातृभाव बना रहा। वहाँ से कोई मुसलमान परिवार या व्यक्ति पाकिस्तान ही नहीं गाव छोड कर भी नहीं गया।

देश के अन्य गावो की तरह बीगोद के मुसलमान भी अपने बच्चों को सार्वजनिक पाठशालाओ मे न भेजकर काजियों (मुल्लाओ) द्वारा चलाने वाले मदरसों में भेजते थे। श्री महता को यह चिन्ता थी कि यदि मुस्लिम बालक-बालिकाएं अब भी मदरसों तक अपनी शिक्षा सीमित रखेंगे तो मुसलमानों की भावी पीढियाँ आजाद भारत की मुख्य धारा से अलग थलग चलती रहेंगी। मुसलमानों को अपने रूढिवाद से हटाकर, उनके बच्चों को मदरसों से हटाकर सार्वजनिक पाठशालाओ में लाना आसान काम नहीं था पर श्री महता इस कठिन कार्य में भी एक सीमा तक सफल हुए। लगभग 50-60 बच्चे "मदरसा" छोडकर सार्वजनिक पाठशाला में जाने लगे।

सन् 1980 में निकट के नन्दराय गाव में एक ऐसी घटना हुई जिसने न केवल नन्दराय बल्कि बीगोद सहित जिले के अन्य गावों में भी साम्प्रदायिक तनाव पैदा कर दिया। उसी वर्ष देश में आम चुनाव हुए। माडलगढ क्षेत्र में वोटों की राजनीति ने इस तनाव में घी का काम किया। फलस्वरूप बीगोद के इतिहास में पहली बार साम्प्रदायिक दगा भडक उठा। इसमें कई मकान व दुकानें जला दी गई। कई दुकानें व घर लूट लिए गए। अनेकों व्यक्तियों को चोटें आई। परन्तु देवयोग से किसी व्यक्ति की जान नहीं गई। स्मरण रहे श्री महता लगभग सात आठ वर्ष पूर्व ही बीगोद छोडकर

अपने पुश्तैनी निवास सागानेर आ चुके थे। अत जब उन्हें बीगोद दगे के समाचार मिले तो वे अस्वस्थ होने के बावजूद बीगोद पहुँच गए और कस्बे में शान्ति स्थापना का प्रयत्न किया। पर बीमारी के कारण उनका वहाँ अधिक ठहरना सम्भव नही हुआ। इस प्रकार उनका मिशन प्राय अधूरा ही रहा। सागानेर आकर उन्होंने इस सम्बन्ध में अपने साथियो, राजनैतिक प्रतिनिधियो एव नेताओ को, जिनमें मुख्यमन्त्री श्री शिवचरण माथुर आदि भी शामिल थे पत्र लिखे। इन पत्रो में उन्होंने अपनी व्यथा जाहिर करते हुए प्रार्थना की कि वे दलगत राजनीति से ऊपर उठकर बीगोद में पुन हिन्दू मुस्लिम सद्भाव स्थापित करें। परन्तु दुर्भाग्य से दोनों कोमों में सन् 80 में जो जहर फैला उसकी झलक 10 वर्ष बाद आज भी कायम है। और स्व श्री महता यह व्यथा अपने साथ ही ले गये।

इस सम्बन्ध मे श्री महता द्वारा श्री माथुर को लिखा गया अन्तिम पत्र इस प्रकार है।

दिनाँक 9 4 1988

प्रिय श्री माथुर साहब

जब कोई भी व्यक्ति चुनाव की राजनीति से दूर हो जाता है तो द्वेष का स्थान स्नेह ले लेता है। आज उसी स्नेह की भावना से प्रेरित होकर आपको यशस्वी देखने के लिए कुछ बातें निवेदन कर रहा हूँ।

बीगोद सन् 30 से ही मेरा कर्म क्षेत्र है उसी समय से मैने तथा अन्य साथियों ने पूरे माडलगढ क्षेत्र के सैकडों गावों में रचनात्पक काम प्रारम्भ किए जिनमें हिन्दू मुस्लिम एकता, हरिजन कार्य, सामाजिक कुरीति निवारण तथा शराबबदी प्रमुख थे।

बीगोद की हिन्दू मुस्लिम एकता राजस्थान में एक उदाहरण रही है। लेकिन वोटों के खातिर नन्दराय के उस स्थान पर जहाँ वर्षो से अनबन थी रात्रि के 12 बजे राज्य की सामग्री से उस स्थान पर मस्जिद का दरवाजा बनाना चाहा जिसे हिन्दू शकर का स्थान मानते हैं। जिस प्रकार शराबी को होश नहीं रहता उसी प्रकार वोट का लोभ भी बेहोश कर देता है। ज्योंही निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया दगा भडक उठा और सन् 30 से प्रारम्भ की गई हिन्दू मुस्लिम एकता मिट्टी में मिल गई तथा जो बीगोद हिन्दू मुस्लिम एकता में राजस्थान में प्रमुख स्थान रखता था अब इतना सवेदनशील हो गया है कि दगो में प्रमुख हो गया है।

मैं आपसे अत्यन्त आग्रह के साथ निवेदन कर रहा हू कि जिस सरपच व उसके साथिया ने वोटो के खातिर एकता को चोट पहुचाई है उसकी जॉच करके अपराधी का पता लगाएँ।

मै भी सर्वनाश का नजारा बोगोद जाकर देख आया हूँ। वे भी फूट-फूट कर रो रहे थ। और मैं भो खूब फूट फूट कर रोया। जहॉ बाग था वहॉ आग भभक रही थी और मरघट का दृश्य नजर आता था।

आप न सिर्फ मुख्यमन्त्री है बल्कि उस क्षेत्र के विधायक भी हैं। अत आपसे मेरा आग्रह है कि स्थिति को सभाले ताकि मरघट बने हुए माव में थोडी राहत आ सके। फूट से जो गहरे जख्म बन गए हैं उनमें मल्हम लग सके।

यह सब साथी के नाते आपको यशस्वी देखने के लिए ही लिख रहा हूँ। मैंने यह कभी सोचा भी नही था कि 78 वर्ष की आयु में मुझ उसी बोगोद मे जिसमे मैंने पूरा जीवन बिताया था, ऐसा भयकर दृश्य देखना पडेगा। ■

प्राकृतिक विपदाओं में राहत कार्य

श्री महता ने अपनी सामान्य रचनात्मक प्रवृत्तियो को जारी रखते हुए क्षेत्र में समय-समय पर आने वाली प्राकृतिक विपदाओ के समय जनता की वडी सेवा की। उनकी इन सेवाओ के लिए माडलगढ क्षेत्र आज भी मुक्त कठ से प्रशसा करता है। ऐसे ही कुछ प्रसगो की यहाँ चर्चा करना उपयुक्त होगा।

मेवाड मे सन् 1939 में भयकर अकाल पडा था। इसके बाद भी कई बार छोटे मोटे अकाल पडते रहे। इन अकालो मे श्री महता ने माडलगढ क्षेत्र के लोगो को भूखमरी से बचाने के लिए अनेक प्रकार के रचनात्मक काम प्रारम्भ किए।

क्षेत्र मे सेवा सघ के अन्तर्गत जगह-जगह कताई, बुनाई केन्द्र खोल और उनके द्वारा पिंजारो, कतवारियो, बुनकरो आदि को काम में लगाया। इससे हजारो लोगो को अकाल से राहत मिली।

माडलगढ क्षेत्र में बडे जगल थे। वहाँ से सूखी लकडी लाकर गावों में बेचने की स्वतन्त्रता थी। अकाल के समय जब लकडी लाने वालो की सख्या बढ गई तो उपभोक्ता लोग उनका शोषण करन लग। लकडी अत्यन्त सस्ते भावो मे खरीदने लगे। श्री महता ने सेवासघ के अन्तर्गत एक लकडी का डिपो खोला और अकाल पीडित लोगो से लकडी खरीदकर उचित कीमत देना शुरू किया। इसका प्रभाव उपभोक्ताओ पर भी पडा। इस प्रकार लकडहारो का शोषण बच गया।

सेवा सघ ने अकाल के दिनो में जरूरतमद किसान लोगों को कर्ज देकर नए कुए खुदवाये एव पुराने कुओ को गहरा करवाया। इससे एक ओर कई लोगों को मजदूरी मिली तो दूसरी ओर सिचाई के साधन भी बढे।

अकाल के दिनो में माडलगढ क्षेत्र में अनाज स्थानीय व्यापारियो द्वारा भीलवाडा मडी से मगाया जाता था। यातायात के साधन नही होने के कारण यह अनाज क्षेत्र में बहुत महगा पडता था। अत सेवा सघ ने भीलवाडा से अनाज मगवाना शुरू किया और अपनी दुकानो पर घाटा उठाकर बेचना प्रारम्भ किया। इससे हजारों गरीब लोगों को लाभ हुआ। सेवा सघ ने इन सब कामों से हुए घाटे को लोगो से नकद सहायता प्राप्त कर पूरा किया।

क्षैत्र के लोग वैसे भी गरीब थे। अकाल में तो इनकी हालत और भी दयनीय हो जाती थी। लोगो के लिए खाने पीने के अलावा सर्दी से बचने के लिए साधन भी नहीं होते थे। सेवासघ की ओर से इन परिस्थितियों में सरकार और सार्वजनिक सस्थाओ से सहायता प्राप्त कर गॉव गॉव में ओढने बिछाने व पहनने के वस्त्रों का वितरण किया जाता था।

अकेले सेवा सघ के लिए क्षेत्र के गरीब लोगो को अकाल के समय मजदूरी आदि की व्यवस्था करना सभव नही था। श्री महता ने अपने व्यक्तिगत प्रभाव को काम मे लकर सरकार द्वारा क्षेत्र में अनेक राहत कार्य खुलवाये और विभिन्न राहत कार्यो पर अपने कार्यकर्त्ताओ को भेजकर मजदूरो को उचित पारिश्रमिक दिलवाने की व्यवस्था की। अनेक स्थानो पर जागीरदारो ने राहत कार्यो पर बाधा डालने का प्रयत्न किया, इसके खिलाफ सेवा सघ ने आवाज उठाई और राहत कार्य जारी रखाये।

सन् 1943 में भीलवाडा जिले में भयकर बाढ आई। बेडच, बनास कोठारी एव अन्य नदियों की बाढ से भारी तबाही मच गई। जन धन की भारी हानि हुई। श्री महता ने सेवा सघ और मेवाड की अनेक बाढ पीडित सस्थाओ के सहयोग से माडलगढ क्षत्र मे अनाज, नमक, तेल आदि आवश्यक सामग्री पहुचाकर जनता को सहायता पहुचाई।

सवाईपुर गॉव मे भयकर तूफान आया और पूरा गॉव का गॉव चौपट हो गया। तूफान की चपेट मे आस पास के कई अन्य गॉव भी आ गए। तब श्री महता ने चन्दा इकट्ठा किया और सेवा सघ के साथियो सहित गॉवो के पुनर्निर्माण में लग गए। देखते ही देखत इन गावों का कायाकल्प हो गया।

21 अप्रेल सन् 1948 को बरून्दनी में एक बहुत बडा अग्निकाड हो गया। लगभग 60 परिवार पूर्णतया तबाह हो गये। उनके पास न खाने को बचा और न पहनने को। खबर मिलते ही श्री महता वहाँ पहुँचे और प्रयत्न करके सरकार से तुरन्त घर बनान की सामग्री एव नकद व क्रय में सहायता उपलब्ध करवाई। भीलवाडा के मिल मालिको से कपडा दिलवाया। सेवा सघ ने भी अन्न वस्त्रो से यथा सभव मदद की। इसस बरून्दनी के अग्नि पीडित परिवार शीघ्र हो अपने पैरो पर खडे हो गये।

आज तो हैजा प्लेग आदि महामारियो के प्रकोपो को रोकने के लिए अनेक प्रकार के वैज्ञानिक साधन व चिकित्सा सुविधा उपलब्ध है। लेकिन आजादी से पहले इस तरह की बीमारियो व महामारियो को देवी विपत्तियाँ मानकर बिना इलाज

के लोग अपने प्राणों से हाथ धो बैठते थे। सेवा सघ की ओर से इस दिशा में सतत जानकारियाँ दी जाती थी। परन्तु साधन सुविधा का नितान्त अभाव था।

अक्टूबर 1948 में माडलगढ क्षेत्र के गावों में हैजे के प्रकोप से त्राहि त्राहि मच गई। प्रतिदिन 40-50 व्यक्ति हैजे के शिकार होने लगे। उदाहरणत सोपुरा नाम के छोटे से गाव में 25 व्यक्तियों के प्राण चले गये। आम लोग अपने घर बार छोडकर भागने लगे। इस भयकर दैवीय प्रकोप की सूचना जिलाधिकारियों को दी गई पर उनमें से न तो कोई घटनास्थल पर पहुचा और न कोई दवा दारू की व्यवस्था की।

श्री महता ने सूचना मिलते ही सेवा सघ के कार्यकर्ताओ को महामारी से पीडित क्षेत्रों की ओर रवाना किया और वे स्वय चिकित्सा व्यवस्था करवाने के लिए भीलवाडा पहुचे। उस समय सयुक्त राजस्थान बन चुका था। श्री माणिक्यलाल वर्मा राज्य के प्रधानमत्री थे। भीलवाडा में सभागीय आयुक्त मदनलाल राठी और कलक्टर डूगरसिंह महता थे। कलक्टर उस समय भीलवाडा में नहीं थे। अत श्री महता सभागीय आयुक्त श्री राठी से मिले और उन्हें अपने क्षेत्र में हैजे के भीषण प्रकोप के हालात से परिचित कराया। सहृदय आयुक्त राठी ने तत्काल ही आदेश दे दिए कि सरकारी जीप द्वारा चिकित्सकों का एक दल आवश्यक औषधियों के साथ अविलम्ब माडलगढ क्षेत्र में पहुचे। यह दल जिले के मुख्य कार्यालय की जीप से क्षेत्र में पहुचा। जब कलक्टर दौरे से लौटे और उन्हें पता चला कि उनकी जीप बिना उनकी स्वीकृति के कही भेज दी गई है तो उन्होने सबधित वाहन चालक (ड्राईवर) के विरुद्ध जीप चोरी की पुलिस में प्रथम सूचना रिपोर्ट करवा दी। पुलिस अधीक्षक सह दलबल आवश्यक कार्यवाही के लिए मौके पर पहुच गए। पुलिस ने ड्राईवर को गिरफ्तार करना चाहा तो श्री महता ने पुलिस अधीक्षक को कहा कि जीप लाने की जिम्मेदारी मेरी है। इसमें ड्राइवर की कोई गलती नहीं है अत मुझे गिरफ्तार करिये। पुलिस ने श्री महता को 6 अक्टूबर सन् 1948 को गिरफ्तार कर उनसे जमानत मागी। पर उन्होंने जमानत पर रिहा होने से इनकार कर दिया। भीलवाडा के सार्वजनिक कार्यकर्ताओ व अधिकारियों में हडकम्प मच गया। उच्चाधिकारियों ने सलाह दी कि यदि श्री महता क्षमा माग लें तो उन्हें रिहा कर दिया जाये। श्री महता ने ऐसा करने से स्पष्ट इकार कर दिया। उन्होने कहा कि डॉक्टरो का दल भीलवाडा के आयुक्त के निर्देश पर सरकारी जीप में आया है। इसमें मेरा क्या कसूर है जिसके लिए में क्षमा मागू। दूसरे ही दिन सरकार को यह मामला उठा लेना पडा और श्री महता को बिना शर्त रिहा करना पडा। इस काण्ड को लेकर समाचार पत्रों में सरकार की व अधिकारियो की तीव्र भर्त्सना हुई।

श्री महता ने अकाल, बाढ, महामारी व अन्य विपत्तियों के दौरान क्षेत्र के लोगों की बहुत सेवा की जिससे सैकडो आदमियों को जीवनदान मिला। इन बडी बडी विपत्तियो के अलावा जनता की हर छोटी मोटी तकलीफो में भी श्री महता सहायता हेतु तत्काल पहुच जाते थे और जो भी उनसे बन पडता था करते थे। असल में तो सेवा ही उनके जीवन का मुख्य ध्येय व मिशन था। जिस सेवा कार्य को हाथ में लेते, वे उसे पूरा करके ही रहते थे। ऐसे कार्यों से पीछे हटना उनके जीवन में ही नहीं था। ■

रचनात्मक कार्यो से राजनीति की ओर

देश के स्वतन्त्रता सग्राम में भाग लेने वाले कार्यकर्ताओ की स्वराज्य की अपनी कल्पना थी। पर सत्ता मे आने के बाद हमारे कर्णधारों ने महात्मा गाधी के भारत की कल्पना को ही भुला दिया। वे अपने ही ढग से देश को चलाने लग गये। इससे देश के विभिन्न वर्गों में असतोष बढता गया। फलस्वरूप रचनात्मक क्षेत्र में काम करने वाले कई साथियो को यह लगा कि समय आ गया है जब उन्हें राजनीति में उतर कर देश को एक नया मोड देना चाहिए।

सन् 1967 के शुरूआत में माडलगढ क्षेत्र के मतदाता मडल ने त्रिवेणी सगम पर एकत्रित होकर निश्चय किया कि क्षेत्र की ओर से इस बार श्री महता को ही भेजा जाऐ। श्री महता जनता के जबरदस्त आग्रह को नही ठुकरा सके। जब श्री महता ने जन प्रतिनिधियो को बताया कि चुनाव लडने के लिए आवश्यक आर्थिक व्यवस्था कहाँ से होगी तो लोगो ने एक स्वर से कहा आपको तो बस चुनाव में खडा होना है बाकी सब काम हमारा है हम पैसे इकट्ठे कर लेगें। हुआ भी यही। श्री महता निर्दलीय उम्मीदवार की हैसियत से विधानसभा में खडे हुए। क्षेत्र के युवक व वृद्ध सभी लोग कोने कोने में बिखर गये और श्री महता के लिए धूआधार प्रचार किया। चुनाव के लिए आवश्यक साधन भी आम जनता ने जुटाये। श्री महता को पता भी नहीं चला कि कहाँ से यह पैसा आया और कैसे ये साधन जुटे। उन्हें तो नामाकन पत्र के साथ जमा कराये जाने वाली राशि की व्यवस्था भी नहीं करनी पडी। उनकी टक्कर क्षेत्र के पुराने विधायक श्री गणपतलाल वर्मा से थी जो गत दो चुनावों में लगातार काग्रेस के टिकिट पर जीत कर आ रहे थे। इस बार उन्हें श्री महता ने भारी बहुमत से हराकर काग्रेस के सुदृढ किले को तोड दिया। सारे मेवाड में श्री महता ही एक मात्र निर्दलीय उम्मीदवार जीत कर विधानसभा में पहुचे थे।

सन् 1967 के चुनावो के फलस्वरूप जो विधानसभा बनी उसमें काग्रेस को 184 स्थानों में से केवल 89 स्थान प्राप्त हुए। इस प्रकार चार चुनावों में पहली बार काग्रेस अल्पमत में रह गई। स्वतन्त्र दल, जनसघ एव अन्य दलों तथा निर्दलीय सदस्यों ने मिलकर महारावल लक्ष्मणसिंह (डूगरपुर) के नेतृत्व में एक सयुक्त मोर्चे का निर्माण किया जिसकी सख्या 95 थी। निर्दलियों में श्री महता भी शामिल थे। काग्रेस दल विधानसभा में सबसे बडा दल होते हुए भी सरकार बनाने की स्थिति में नही था क्योकि उसके पास केवल 89 सदस्य थे। उसने पूरा प्रयत्न किया कि श्री

महता जो कि आजादी के पूर्व स्वय कांग्रेसी थे पुन कांग्रेस में आ जायें। पर महता ने दृढतापूर्वक बिना किसी प्रलोभन में आये सयुक्त मोर्चे में बने रहने का निश्चय किया।

कांग्रेस के अल्पमत में होने के बावजूद राज्यपाल ने कांग्रेस दल के नेता श्री मोहनलाल सुखाडिया को विधानसभा में सबसे बडे दल के नेता के नाते सरकार बनाने का निमत्रण दिया। राज्यपाल ने यह कदम, इसके बावजूद उठाया कि महारावल अपने 95 समर्थक विधायको को उनके सामने प्रस्तुत कर चुके थे। राज्यपाल के इस निर्णय की राज्य में ही नहीं सारे देश में कटु आलोचना हुई। राजधानी जयपुर में जबरदस्त प्रदर्शन हुये जिसमें पुलिस की गोली से 9 निर्दोष व्यक्ति मारे गये और कई घायल हुए। इन परिस्थितियो में श्री सुखाडिया स्वय विचलित हो गये और सरकार बनाने से इन्कार कर दिया। राज्य में पहली बार राष्ट्रपति शासन लागू हो गया। और विधानसभा निलम्बित कर दी गई। इसी बीच श्री सुखाडिया सयुक्त दल के 6 विधायको को अपनी ओर मिलाने में कामयाब हो गये। फलस्वरूप कांग्रेस का बहुमत बन गया। भारत सरकार ने 38 दिन बाद राजस्थान से राष्ट्रपति शासन उठा लिया और राज्य मे दल बदल के फलस्वरूप एक बार पुन कांग्रेस की सत्ता स्थापित हो गई। कुछ ही दिनो के बाद विरोधी दल के 13 और सदस्य कांग्रेस विधायक दल मे शामिल हो गये। उस वक्त देश में यह सबसे बडा दल बदल था। कहने की आवश्यकता नही कि श्री महता श्री सुखाडिया के नजदीक होते हुए भी विरोधी दल में बने रहे और सरकार के जन विरोधी कार्यों की डटकर आलोचना करते रहे।

जब सयुक्त मोर्चा टूट गया तो विधानसभा के 10 निर्दलीय सदस्यों ने सब सम्मति से श्री महता को अपना नेता चुन लिया। वे विधानसभा की विशेषाधिकार समिति के अध्यक्ष भी नियुक्त किये गये।

श्री महता के इस विधानसभा काल में उन्होंने मुख्यत राजस्थान मे पूर्ण नशाबन्दी की पुरजोर माग उठाई। सरकार ने राज्य में क्रमश नशाबदी लागू करने का निर्णय किया। और राज्य के 26 जिलो मे से 7 जिलो में नशाबदी लागू भी कर दी गई। पर श्री सुखाडिया के मुख्यमत्री पद से हटते ही नये मुख्यमत्री श्री बरकतुल्ला खान के मत्रिमण्डल ने पद ग्रहण करते ही शराबबन्दी पर प्रहार किया एव राज्य की विषम आर्थिक स्थिति के नाम पर सारे राज्य में शराब बन्दी समाप्त कर दी। ।

इससे श्री महता को घोर निराशा हुई। उनके अथक प्रयत्नों पर एक प्रकार से पानी फिर गया। पर हठधर्मी सरकार के सामने कोई चारा नहीं था। इस सबध में विधानसभा में स्थगन प्रस्ताव रखा वह आगे प्रस्तुत है।

श्री महता रचनात्मक गाधीवादी कार्यकर्ता थे। उन्होने 1972 का चुनाव नही लडा। 1975 मे आपातकाल की घोषणा हुई। जयप्रकाश नारायण सहित सभी गाधीवादी कार्यकर्ता जेल में डाल दिये गये। श्री महता भी जेल में थे।1977 में आपातकाल समाप्त कर चुनाव की घोषणा हुई। इस बार क्षेत्र के लोगों ने पुन श्री महता पर चुनाव लडने का दबाव डाला। यह चुनाव जनतन्त्र बचाने की दृष्टि से सब दलो ने एक झण्डे व एक चुनाव चिन्ह पर लडा था। जनता पार्टी का गठन हुआ। श्री महता ने भारी बहुमत से श्री शिवचरण माथुर को हराया। इस विधानसभा में याचिका समिति का अध्यक्ष बनाया गया। जनता पार्टी की सरकार बनी। श्री महता ने पूर्ण नशाबन्दी का प्रयास पूरे जोर शोर के साथ किया। सत्याग्रह भी किया, तीन जिलों को छोडकर पूरे राज्य मे नशाबन्दी लागू हो गई और पूर्ण नशाबन्दी की घोषणा भी कर दी गई। यकायक बीच में ही विधानसभा भग हो गई और पूर्ण शराबबन्दी का कार्य अधूरा रह गया। राज्य में मध्यावधि चुनाव हुए। काग्रेस की सरकार बनी। श्री महता ने राजनीति से पूर्ण सन्यास ले लिया। पुन पूरे जोश के साथ रचनात्मक कार्यों में तल्लीन हो गये।

अपने दोनो विधायक काल में श्री महता ने अपने क्षेत्र में पाठशालायें औषधालय खुलवाये। कई गाँवो में पेयजल की स्थाई व्यवस्था करवाई। देवलिया व जेतपुरा बाध का निर्माण करवाया जिनसे क्षेत्र की भारी बहबूदी हुई। उन्हीं के विधायक काल में कोठारी नदी पर नन्दराय के पास बाध बनवाने की स्वीकृति हुई थी। यह बाध अब बनकर तैयार हो चुका है। इस बाध के बन जाने से क्षेत्र की पैदावार कई गुणा बढ गई है।

श्री महता ने क्षेत्र की हर समस्या पर अपने विचार खुलकर रखे। और विकास की हर धारा को अपने क्षेत्र की तरफ मोडने का प्रयत्न किया।

श्री महता के विधायक बनने पर एक महत्वपूर्ण कार्य खानों के आवटन में प्रारम्भ हुआ। यह क्षेत्र पत्थरों की खानो के लिए प्रसिद्ध है। इसमें लाटरी व्यवस्था को प्रारम्भ किया। इसके अलावा अन्त्योदय योजना के तहत भूमिहीन व्यक्तियो को भूमि ग्रामसभा के सामने सबकी स्वीकृति से देने की व्यवस्था चालू की जिसका व्यापक प्रभाव पडा। कोई व्यक्ति किसी भी योजना का अनुचित लाभ न उठा सके और भ्रष्ट तरीको पर रोक लग सके यह प्रयास किया गया।

श्री महता ने विधायकों के नैतिक आचरण पर सदैव बल दिया। वे विधायकों को सदैव आग्रह करते थे कि जिस दिन वे विधानसभा में पूरा समय न दें उस दिन भत्ता न उठायें। जिस दर्जे में सफर न करें, उसका किराया न उठायें। अकाल के कारण उन्होने अपनी समिति के भ्रमण के सभी कार्यक्रम रोक दिये। समिति के कई सदस्यो ने वडी नाराजगी जाहिर की। पर श्री महता अपनी बात पर दृढ रहें।

इस सदर्भ में राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष को 18 जून 1969 को लिखा गया पत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण हे। पत्र यहाँ प्रस्तुत है।

श्रीमान् माननीय अध्यक्ष महोदय
राजस्थान विधानसभा
जयपुर

निवेदन है कि लगभग एक डेढ वर्ष पूर्व मैंने विधानसभा के खर्च से प्रथम श्रेणी में रल यात्रा न करने और बिजली पानी के खर्च म किसी भी प्रकार की रियायत न लेने का जो निर्णय लिया था उसका ठीक तरह से पालन कर रहा हूँ। न प्रथम दर्जे मे सफर ही करता हूँ, न प्रथम दर्जे का किराया ही लेता हूँ और न बिजली पानी की रियायत ही ले रहा हूँ।

जहाँ तक रेल मे प्रथम दर्जे में सफर करने का सवाल है में किसी भी माननीय सदस्य से यह निवेदन नही कर रहा हूँ कि वे भी तीसरे दर्जे में ही सफर करें। हालाकि उचित तो यह ही है कि विधानसभा का सदस्य बनने के पूर्व जिस दर्जे में हम सफर करते थे उसी मे करें। लेकिन इतना होते हुये भी मैं यह नहीं चाहता कि वे प्रथम दर्जे में सफर न करें पर यह अवश्य चाहता हूँ कि तीसरे दर्जे में सफर करके पहले दर्जे का चार्ज न करें।

यह सही है कि हमने ऐसा नियम बना रखा है कि किसी भी दर्जे में सफर करके भी प्रथम दर्जे के अधिकारी हैं। कानून की दृष्टि से यह सही होते हुए भी नैतिक दृष्टि से यह एकदम अनुचित है इसलिए इसमें तुरन्त परिवर्तन होना ही चाहिए और जिसमें सफर करें उसी दर्जे का किराया लेना चाहिये। यदि परिवर्तन न भी हो तो जहाँ तक मेरा प्रश्न है इसमें मुझे आनन्द तथा सन्तोष अनुभव हो रहा है। अत अन्त तक इसका पालन करूंगा।

जहाँ तक बिजली पानी का प्रश्न है विधायकों के लिए एक सीमा तक बिजली पानी की रियायत होनी ही चाहिये लेकिन अढाई-अढाई रूपया प्रति माह देकर अढाई सौ अढाई सौ रूपये बिजली प्रति माह जलाना और हिटर पर स्नान का पानी

गर्म होना, अकारण दिन को भी बिजली जलाना और पखा आदि का हवा लेने वालो के अभाव में भी चलते रहना आदि ऐसी घटनाएं हैं जिनमे परिवर्तन अत्यन्त जरूरी है और परिवर्तन जल्दी आये इसी दृष्टि से मैं बिजली और पानी की रियायत को इसी माह से इस बन्दिश के साथ स्वीकार कर रहा हू कि हर माह बिजली तथा पानी पर 20 रूपये से अधिक रियायत स्वीकार नही करूगा और 20 रूपये प्रतिमाह से जितना भी अधिक व्यय आयेगा हर माह चुकता रहूगा।

मैं दूसरो के लिये इतना अनुदार भी नही बनना चाहता कि मेरी तरह अन्य सज्जन भी केवल 20 रूपये प्रतिमाह की बन्दिश स्वीकार करे लेकिन कही न कही तो सीमा बाधे।

मुझे पूर्ण आशा तथा विश्वास है कि सभी ही विधायक जिसमें मत्री तथा उपमत्री भी आ जाते हैं मेरी प्रार्थना पर ध्यान देगें और यही समझ कर कि हम अपने घर पर ही बिजली तथा पानी खर्च कर रहे हैं सीलिंग की बात स्वीकार करेगें ताकि प्रतिमाह हजारो की बचत हो सके।

भ्रष्टाचार पर सदैव गहरी वेदना प्रकट की ओर विधानसभा में इसको बार-बार उठाया इस सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव रखा वह यहा प्रस्तुत है।

सेवा में,

श्रीमान् अध्यक्ष महोदय

राज विधानसभा

जयपुर

स्थगन प्रस्ताव

राजस्थान में भ्रष्टाचार चरम सीमा पर पहुंच गया है। इसका मुख्य कारण अधिकाश मत्रियो का भ्रष्ट आचरण है। कई मन्त्री आजादी के पूर्व फटे हाल रहते थे और दोनों समय सतुलित आहार भी एक समस्या थी लेकिन आज अधिकाश मत्रियो के अच्छे बगले हैं, नहरी जमीन है, घर के बाहर कार खडी है, बैंक बेलेन्स है, कई लोगों ने घर के कारखाने खडे कर दिये है, कुछ ने सिनेमा घर बना दिये है और भूतपूर्व राजा महाराजाओ की तरह एश्वर्य भोग रहे हैं और यही सब भ्रष्टाचार को चरम सीमा पर ले गई है। अत अनुरोध है कि विधानसभा की प्रक्रिया तथा कार्य सचालन नियमो के नियम 51 के अन्तर्गत स्थगन प्रस्ताव पेश करता हू सो विधानसभा की पूर्व निश्चित कार्यवाई स्थगित कर सबसे पहले सुखाडिया मन्त्री मण्डल से निवृत्त हुए मत्रियो तथा मौजूदा मत्रियो के आचरण तथा जायदाद का लेखा-जोखा

रखने का अवसर दे और तुरन्त एक निष्पक्ष जाच कमेटी बिठायें ताकि भ्रष्टाचार पर काबू पाया जा सके।

श्रीमान् अध्यक्ष महोदय
राज विधानसभा
जयपुर

शराब बन्दी के सम्बन्ध मे स्थगन प्रस्ताव

राजस्थान राज्य सरकार सन् 72 तक पूर्ण नशाबदी के लिए वचनबद्ध है। लेकिन राज्य के कर्णधार यह जानते हुए भी कि वचन भग सबसे बडा अपराध है अपने वचन स पीछे हट रहे हैं।

देश पर युद्ध के बादल मडरा रहे हैं। और राजस्थान की लम्बी सीमा पर युद्ध का खतरा सामने दिखाई दे रहा है। फौजे आमने–सामने खडी हैं, इसलिए होना तो यह चाहिये था कि जनता के होश हवास ठीक रखने के लिए तुरन्त शराबबन्दी के काम को हाथ मे लेती ताकि राजस्थान दृढता मे इस सकट का मुकाबला कर पाता। लेकिन राजस्थान सरकार आय के लोभ मे सर्वनाश का रास्ता अपना रही है।

ऐसे वक्त मे शराबबन्दी सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। अत विधानसभा की प्रक्रिया तथा कार्य सचालन नियमो के नियम 51 के अन्तर्गत स्थगत प्रस्ताव पेश करता हू सो विधानसभा की पूर्व निश्चित कार्यवाही को स्थगित कर सबसे पहले शराब बन्दी पर विचार करें ताकि इस सकट की घडी में दृढता से दुश्मन का सामना कर विजय प्राप्त कर सकें। ■

समसामयिक प्रश्नों पर पत्रों व लेखों में व्यक्त मुक्त विचार

श्री महता नियमित रूप से डायरी लिखते थे। उसमें दिन भर के कामो का ब्यौरा होता था। डायरियो के पनो को उलटने पर ऐसा अहसास होता है कि ऐसा कोई सामाजिक मुद्दा नही जिस पर श्री महता ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त न की हो। गावो की हर छोटी से छोटी और बडी से बडी समस्या एव लोगो की व्यक्तिगत समस्याओ पर सम्बधित अधिकारियो को लिखे गए पत्रों एव उनसे हुई मुलाकातो का भी दिलचस्प ब्यौरा डायरियो मे दिया गया है।

श्री महता की डायरी के कुछ अश एव उनके द्वारा सार्वजनिक मुद्दो को लेकर लिखे गए कुछ खुले पत्र व समाचार पत्रो मे छपे कुछ लेखो को यहाँ दिया जा रहा है।

ग्राम स्वावलम्बन के सन्दर्भ मे श्री सिद्धराज जी ढड्ढा को लिखा गया पत्र

दिनाक 2 6.53

मैं इस तहसील मे लगभग 20 वर्ष से हू। मेर देखते देखते यन्त्रोद्योग के जो भयकर परिणाम सामने आये हैं उनसे दिल काप जाता है।

माडलगढ तहसील पुराने मेवाड राज्य के उन जिलो मे स है जो अन्न और वस्त्र के मामले में न केवल स्वावलम्बी ही था वरन् घी तेल कपडा, अनाज आदि शहरो को भी काफी मात्रा में भेजता था – तीन चीजो का याने अनाज घी और तेल का तो यह हिस्सा भण्डार माना जाता था लेकिन देखत ही देखते यह हालत हो गई है कि घी और तेल के लिये भी अब भीलवाडा की ओर याने शहर की ओर देख रहा है और प्रतिवर्ष काफी मात्रा में भीलवाडा से आ रहा है।

इस हिस्से मे अनाज काफी होता था और पैदावार भी प्रति बीघा अच्छी थी। इसका मुख्य कारण यह था कि यहा गाये काफी तादाद में थी लेकिन वेजिटेबल घी ओर मशीन के तेल का यह परिणाम आया है कि न अच्छे बैल है न अच्छी गाय देखने को मिलती हे और साथ ही मवेशियो की तादाद भी दिन 2 कम हो रही है। जिससे खाद के अभाव में पैदावार भी काफी कम हो गई है। ओर ऐसा लगता है जिस प्रकार

घी और तेल के लिये शहर की ओर देखते हैं, उसी प्रकार अनाज के लिये अमेरिका की ओर देखना पडेगा।

भीलवाडा में मिल बनने के पश्चात् धीरे–धीरे वस्त्र के लिये शहर की ओर पहले स ही देख ही रहे थे। इस तरह पाच दस वर्षो में यदि यही सिलसिला जारी रहा तो हम पूर्ण रूप से दरिद्र और काल हो जायेंगे।

सौभाग्य से हम लोग रेल्वे स्टेशन से 30 40 और 50 माइल की दूरी पर हैं। इस लिये अभी सर्वनाश की ओर नही गये हैं और अन्य जिलों के मुकाबले में जल्दी ही सम्हल सकते हैं।

मेरा यह पक्का विश्वास है कि ग्राम स्वावलम्बन ही समस्या का हल है और विकेन्द्रित ग्रामोद्योग ही सर्वनाश से बचाकर सुख की ओर ले जा सकते हैं। इस लिये मैने जान बूझकर यह जिम्मेवारी अपने ऊपर ली है।

मैं तो यह निश्चित कर चुका हू कि गाधी घर की ओर से इस ओर केन्द्र खुले या न खुले मुझे अपनी पूरी शक्ति ग्राम स्वावलम्बन के काम में लगाना है।

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि गाव गाव मुझको काफी समर्थन मिल रहा है और काफी तादाद में यन्त्रोद्योग बहिष्कार के प्रतिज्ञा पत्र भरे जा रहे हैं।

पूज्य झवर भाई के पत्र की नक्ल भी मिल गई है। उसका उत्तर भेज रहा हूँ।

भीलवाडा जिलेमेप्रारम्भ किये जाने वाले ग्राम स्वावलम्बन के कार्य का विवरण

सन् 1953–54

प्राकृतिक कारणो से व भीलवाडा जिले की कई तहसीलो के रेल्वे स्टेशन से काफी दूर होने व वर्षो से इस जिले मे चल रह रचनात्मक कामो के फलस्वरूप भीलवाडा जिले में ग्राम स्वावलम्बन का काम हाथ मे लिया जा सकता है और मफलता प्राप्त की जा मकती है।

वैसे तो अन्न ओर वस्त्र के मामले में ग्रामों को पूर्णरूप से स्वावलम्बी बनाना है। लकिन प्रारम्भ में केवल दो चीजो शुद्ध घी और घानी के तेल को ही हाथ में लेते हैं। और इसके पश्चात् एक एक करके सब ही चीज हाथ में लगे।

एक एक पचायत जिसम कि लगभग आठ दस गाव जिनकी कि आबादी 8000 से 10000 की जनसख्या की होती है एक केन्द्र माना जायगा। सबसे अधिक याने तीन केन्द्र माडलगढ तहसील में होगे जिसका मुख्य कारण यह है कि लगभग 20 वर्षो से यहा रचनात्मक काम हो रहा है। जनता स कार्यकर्ताओ का काफी सम्पर्क है व

उन कार्यकर्ताओ में उनका विश्वास है। रेल्वे स्टेशन से काफी दूर हैं। अभी पूर्ण या परावलम्बी नही हुए हैं। अत अन्य स्थानों के मुकाबले में कम कठिनाई से ही स्वावलम्बी बनाया जा सकता है।

कुल मिलाकर पाच केन्द्र खोले जायेगे –

माडलगल तहसील में 3 महुआ, बीगोद माडलगढ, बेगूं तहसील में भीचोर, माडल तहसील में बावलास ।

इस तरह कुल मिलाकर पाच केन्द्र होगें – और पाचो केन्द्रो पर पाच कार्यकर्ता रहेगे।

प्रधान कार्यालय बीगोद में रहेगा जहा एक कार्यकर्ता उन पाच कार्यकर्ताओ के अलावा ऑफिस का काम करने के लिये रहेगा। इस तरह कुल मिलाकर 7 कार्यकर्ता होगे।

कार्यकर्ताओ का परिचय इस प्रकार है –

1 महुआ क्षेत्र (तहसील माडलगढ)

श्री नन्दकुमार वैद्य – य आयुर्वैदिक के आचार्य हैं। और सेवा सघ बीगोद में वर्षों तक रचनात्मक काम कर चुके हैं। इनका अच्छा असर है। ये चरित्रवान व्यक्ति हैं। और इनकी इस तरह के कामो में पूरी रूचि है। इस समय ये गाधी घर योजना के अन्तर्गत महुआ खेत्र में ही बैठे हुये हैं।

2 बीगोद (तहसील माडलगढ)

श्री बशीधर श्री वैष्णव–साहित्यरत्न, ये सेवा सघ द्वारा चलने वाली पाठशाला में अध्यापक का वर्षो से काम कर रहे हैं। इनकी रचनात्मक कामों में अच्छी रूचि है। अपन खेत्र में इनका अच्छा असर है। ग्राम पचायत में उप सरपच हैं और उत्साही व लग्न वाले हैं।

3 माडलगढ(तहसील माडलगढ)

श्री भवरलाल जोशी – ये लाडपुरा के रहने वाले हैं। और सेवा सघ द्वारा चलने वाली पाठशाला में वर्षो से अध्यापक का काम कर रहे हैं। ये दवा सम्बन्धी ज्ञान भी रखते हैं। माडलगढ क्षेत्र में इनका अच्छा असर है। उत्साही युवक हैं। और अपने गाव की पचायत में सरपच भी हैं।

4 भीचोर (तहसील बेगूं)

श्री सुन्दरलाल – बेगूं में प्राईवेट स्कूल चला रहे हैं। वर्षों तक काग्रेस के

कार्यकर्ता रहे लेकिन एक वर्ष से अलग हो गये हैं। और समाजवादी पार्टी के सदस्य हैं। किसानों में इनका अच्छा असर है। काफी उत्साही व लग्न वाले हैं।

5 बावलास (तहसील माडलगढ)

श्री जयसिंह राणावत – जिला क्राग्रेस के भीलवाडा के अध्यक्ष व मत्री रह चुके हैं। और अब तक भी काग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में काम कर रहे हैं। ये चरित्रवान व्यक्ति है। इनका अपने क्षेत्र में अच्छा असर है। इनका रचनात्मक कामों में विश्वास है। और अब अपनी सारी शक्ति इस तरह के कामों में ही लगाना चाहते हैं।

प्रधान केन्द्र पर कार्यकर्ता

प्रथम वर्ष का कार्यक्रम

1 सबसे पहले अपने अपने क्षेत्र की सर्वे करना जिससे सारा पता लग सके कि आबादी कितनी है खाद्य पदार्थ व वस्त्र का खर्च कितना है । खर्च को देखते हुये तेल घानियाँ मवेशी, बुनकर आदि कितने हैं, तिल कितना होता है अन्न की क्या स्थिति है – गाव–गाव भूमिहीन तथा बेकार कितने हैं ।

2. अपने अपने क्षेत्र में यन्त्रोद्योग बहिष्कार के प्रतिज्ञा पत्र भरवाना जिसमे मुख्य स्थान शुद्ध घी तथा घानी के तेल का है।

3 यन्त्रोद्योग के फार्म भरवाने के पश्चात् गाव गाव से इस आशय के प्रस्ताव पास कराके भेजना कि तेल और घी पर रोक लगाये।

4 सारे परगने के तेलियो से व ग्राम पचायतों से प्रस्ताव पास कराके भेजना।

5 गाव गाव यन्त्रोद्योग बहिष्कार कमेटी बनाना।

6 कार्यकर्ता को ट्रेनिंग में भेजकर घानियों में सुधार करवाना।

7 यदि गामोद्योगी वस्तुओ की प्राप्ति करने में कठिनाई हो तो सहकारी समिति द्वारा ग्रामोद्योग भण्डार खोलना।

8 सभा सम्मेलन डाइलोग ड्रामा आदि द्वारा प्रचार करना ।

धाकडखेडी के कार्य पर सिद्धराजजी ढड्ढा को लिखा गया पत्र

श्रद्धेय भाई साहब दिनाक 21.2.55

सादर प्रणाम ।

धाकड खेडी के लोगो में उत्साह भी है और लग्न भी। कई साथी ऐसे हैं जो निश्चय ही योजना को सफल बनाने में बडा योग देंगे। कुछ ऐसे लोग जिनका सदा जागीरदारों से सबध रहा है, जिनकी प्रतिष्ठा भी कम हो रही हे और जो मन माने बेजा

काम जेसे – शराब कशीद करना आदि नही कर सकते अवश्य थोडे से नाराज रहते हैं। लेकिन हम उन्हे भी प्रेम से जीतने का प्रयत्न कर रहे हैं।

इसमे कोइ शका नही है कि काम बडा कठिन है। और सैकडा वर्षो की पडी हुई आदतो को बदलना आसान नही हैं। फिर भी निराश होने का कोई कारण नही है और काम आगे बढ रहा है एसा लगता है।

मैं नही मानता कि यहा क लोग ढोलदू और गोरड़ हो गये हैं। यहा क लोगो म जीवन है और कई युवक एसे हें जो हर समय मदद देगें।

आपन मेरी प्रार्थना स्वोकार करक धाकड खेडी को यह मोका दिया हे सबसे अधिक यदि किसी व्यक्ति की जिम्मदारी इस योजना को सफल बनाने की है तो वह मनोहर सिह की है। में मानता हू कि यदि यह सफल नही होती हें तो आप सबको धक्का लगता हे। लेकिन में तो किसी को मुह नही दिखा सकता। मरे लिए तो जीवन मरण का प्रश्न है। में आपको विश्वास दिलाता हू कि इसको सफल बनाने का कोई प्रयन्त बाकी नही छोड़गा।

श्री बशीधर श्री वैष्णव का जन सम्पर्क अच्छा है। और वह ऐसा व्यक्ति है जो रात दिन इसी काम के बारे मे सोचता है। अन्य साथी जो कार्यकर्ता क रूप में काम कर रहे हैं लग्न से काम कर रहे हें। मैं आपसे एक बार फिर निवेदन करता हू कि इस काम की जिम्मेदारी स मरने पर ही मुक्त हो सकता हूँ। आपकी सलाह मानकर श्रद्वेय धोत्रे जी ओर अण्णा साहब ने यहा योजना चालू की। उस कृपा और अहसान को मैं भूल नही सकता।

अन्त में एक बात अवश्य निवेदन करना चाहता हू कि कृपा करके धाकड खेडी के साथ ग्राम गगाकाखेडा का नाम और जोड दें। धाकड खेडी योजना के लिए गाधी स्मारक निधि ने जो बजट मजूर किया है उससे एक भी पाई अधिक नहीं चाहता। उसी बजट मे दोनो ग्रामो का काम चलेगा। एक रूपये में स बारह आने धाकड खेडी में खर्च होगे और चार आने गेगाकाखेडा मे। यदि गाधी स्मारक निधि धाकड-खेडी योजना की रकम में से एक भी पाई गेगाकाखेडा के लिए न लगाना चाहे तो न लगाये। लेकिन देश को यह मालूम हो जाय कि योजना इसी क्षेत्र के दो गावो मे चल रही है।

जब हम किसी खेत मे नया बीज डालते हें तो एक स्थान पर दो बीज इस ख्याल से डालते हैं कि एक किसी कारण से खराब या नप्ट हो जाय तो भी दूसरा तो उग ही जाये। यही भावना गेगाकाखेडा का नाम जुडवाने में भी है। आप को श्रद्वेय धोत्रे

जी और अण्णा साहब जी भारी जिम्मेदारी को समझ कर ही ऐसा लिख रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरे दोनों पूज्यनीय नेता गर्व से लोगों को गाँव दिखाने ला सकें। लोगों को यह तो मालूम होगा कि गांधी स्मारक की दो-दो गावों में योजना चल रही है। अब यह ख्याल होना स्वाभाविक है कि दो गावों को लेने से शक्ति बिखर जायगी। लेकिन ऐसी बात नहीं होगी। दो गावों को लेने से दोनों गावों में आपस में होड और अधिक उत्साह तथा लगन से काम होगा। अब थोडा सा हाल गैगाकाखेडा का निवेदन करना चाहता हूं।

गैगाकाखेडा ग्राम धाकड खेडी से उत्तर पश्चिम दिशा में 5 या 6 माइल के फासले पर है। इस गाँव में 150 घर और मनुष्यों की आबादी 800 के लगभग है। इस गाव में एक वर्ष से सेवा संघ का स्कूल चल रहा है। जिसमें 85 बालक और 25 बालिकाएं हैं। सारे गाव में एक भी घर महाजन का नहीं है। सारे गाँव पर 4 हजार रूपये का कर्ज है। और सारे गाव में दो व्यक्ति भूमि हीन हैं, जिन्हें वहीं से लोग भूमि देने को तैयार हैं। जमीन अच्छी उपजाऊ है और बनास नदी आ जाने से कुओं में अच्छा सेजा है। सारे गाव में लगभग 300 पेड आम के हैं। और हर साल लोग लगाते रहते हैं। पपीता के पेड भी लगाना प्रारम्भ हुआ है। बेर के झाड भी आम ही की तरह काफी मात्रा में हैं। और एक बागवान भी बुलाया गया है जो इसी साल से उन बेर के झाडों के पेमली बेर के झाड बनायगा। ग्राम स्वावलम्बन की बात उनके समझ में आ गई है। इसलिए एक आदमी को बुनाई का काम सीखने शाहपुरा भेज दिया है। चर्खे काफी तादाद में मंगवाये जा रहे हैं। कंघा भी मंगवा लिया है। गाव में एकता अच्छी है। गाव के झगडे गाव में ही निपटाने की दृष्टि से उन्होंने अपनी पंचायत भी बना ली है। इस गाव को योजना में लेने का अनुराध कर रहा हूं। दोनों गावों में से एक गाव में भी सफलता मिल जाती है तो हमारी मेहनत, आप सबका मार्गदर्शन व गांधी स्मारक निधि का प्रयोग सफल हुआ माना जायगा। पत्र बहुत लम्बा हो गया है जिसके लिए क्षमा।

पंचायती राज के संदर्भ में श्री भगवत सिंह महता को लिखा गया पत्र

श्रद्धेय भाई साहब

पावाधीक

दिनांक 9-10-59

कई दिनों से आपको पत्र नजर करने का विचार था। सुनने में आया है कि आप किसी प्रतिनिधि मण्डल के प्रमुख बन कर बाहर विदेश यात्रा को पधार रहे हैं। मुझे अत्यन्त प्रसन्नता और गर्व अनुभव होता है। मेरी भी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। आप कब पधारेंगे। कृपा करके सूचना बतायें।

वलवन्त राय समिति की सिफारिश को कार्यरुप मे परिणित करने की आपको बडी धुन थी। आप सारा विकास का कार्य जनता के द्वारा होते हुये देखना चाहत हें। उसी धुन ने आपको इतना बडा कदम उठाने के लिये प्रेरित किया। जो लोग ग्रामीणो की योग्यता म शका करक निराशा के भाव व्यक्त करते थे उनको आपका जवाब मिलता था कि जब सेंकडो वर्ष कार्य करने के पश्चात् भी हम पूरी सफलता प्राप्त नही कर सके है तो वे भी असफल हो सकते हें आदि। इसी प्रकार कुछ ही दिनो पूर्व आपका एक लख देखन को मिला था जिसमे ये भाव दखने को मिले थे कि "जहा तक सभव हो निर्णय मर्व-सम्मति से किये जाये और यदि सर्व सम्पति किसी भी तरह मुमकिन न हो तो दो तिहाई से तो कम बहुमत होना ही नहो चाहिय। मर्व सम्पति, पुवानुमति या प्रवल बहुमत के अभाव मे कुछ समय तक अच्छ काम भी रुके रहे तो कोई हर्ज नही जब सदियो तक काम पूरे नही हुये हें तो थोडे समय तक और नही होगे आदि। " आपकी भावना का पूरा दर्शन करने का अवसर मिला। यदि यह सारा कार्य आपको इच्छानुसार करने का मोका मिल तो राजस्थान का चित्र ही बदल सकता हे। और सारे देश के लिय प्रेरणादाई हो सकता है।

राष्ट्रपति जी के शब्दा में राजस्थान ही एसा राज्य हे जिसन भारत म सवस पहले इतने बडे पैमाने पर विकेन्द्रीकरण का परीक्षण करने का साहस किया हे। निश्चय ही सुखाडिया साहव और आप बधाई क पात्र हैं।

किसी ने भी यह कल्पना नही की होगी कि महता साहब भगवत सिहजी एसा वडा कदम उठाने मे पहल कर सकते हैं। जिनको जन्म क समय से राज्य करने की घुटकी मिली वे ही राज्य को झोपडी झोपडी तक पहुचाने की पहल करें यह कम वात नही हें। आप पर गर्व होता है और में अपने आपको भाग्यशाली मानता हूँ कि आप मुझ पर इतनी कृपा व स्नेह रखते हें।

इतना वडा कदम उठाने के पश्चात् शासन करने वाली पार्टी का फर्ज हो जाता हे कि इसको सफल बनाने का पूरा पूरा प्रयास करे। लेकिन प्रारम्भ से ही विकेन्द्रीकरण को पार्टी का साधन वनाने का प्रयास हो रहा हे। सबसे पहला प्रहार तो सन् 1961 तक चुनाव स्थगित करने से हुआ। दूसरा प्रहार पचायत समितियो मे एम एल ए का बेठना है। वोट देने का अधिकार होना या न होना महत्व की बात नही है। एम एल ए का तो बेठना ही सारी समिति को विषाक्त बनाने के लिये प्रर्याप्त है। पचायत समति में भी एम एल ए जिला परिषद में भी और असेम्वली मे भी एम एल ए एक तरह से पार्टी हावी हो गई।

तीसरा प्रहार चुनाव के समय हुआ। भीलवाड़ा जिले में चुनाव में जो नजारा देखने को मिला उसमें कोई भी व्यक्ति जिसके मन में विकेन्द्रीकरण के लिये उल्लास तथा उमंग थी निराश हुए बिना नहीं रह सकता। एक एक वोटर को फोड़ने के लिये पूरी शक्ति लगाना तरह तरह के प्रलोभन देना सारी तहसील के पंचों के न चाहने पर भी जिला कांग्रेस में किसी को नामजद करके भेज देना, और जिला कांग्रेस के आदेश के विपरीत निर्णय होने पर जिला परिषद में न केवल हार हुए व्यक्ति को उप प्रमुख और पत्नी नाना को ले लेना आदि सब ऐसी बाते हैं जो विकेन्द्रीकरण चाहने वाले को व्यथित किये बिना नहीं रह सकती।

भगवान करे इन लोगों में सद्‌बुद्धि आ जाये और अब भी पार्टीबाजी से ऊंचे उठकर काम करें वरना कहीं ऐसा न हो कि पीड़ित जनता और अधिक पीड़ित हो जाय और विकेन्द्रीकरण से प्यार करने के बजाये नफरत करने लगे।

इस समय तो इतना ही निवेदन करूंगा। शेष फिर।

ग्रामदान के सन्दर्भ में श्री गोकुल भाई भट्ट को लिखा गया पत्र

पूज्यवर भाई साहब दिनांक 24 9 66

मेरी आपने इन्तजार की होगी लेकिन मैं नहीं आ पाया इसलिये आपने यही समझा होगा कि चुनाव में उलझ रहा होगा या मतदाताओं से मिन्नतें कर रहा होगा।

मेरे मन या शरीर पर उसका कहीं भी असर नहीं है लेकिन मेरे मन में तेजी से एक बात वर्षों से घर करती जा रही है कि आज रचनात्मक कार्य करना मणि रहित अश्वत्थामा की तरह हो गया है।

एक एक करके सब ही रचनात्मक कार्यकर्ता राज्य चलाने वालों पर आश्रित हो गये हैं। और जी खोलकर हरिजन समाज कल्याण भारत सेवक समाज साधु समाज खादी ग्रामोद्योग ग्रामदान भूदान आदि के मारफत करोड़ो रुपये उधार और अनुदान देकर हम तेज हीन बना रहे हैं।

आपको राजस्थान के दो या पौने दो करोड़ लोगों में मैं पहला त्यागी मानता हूँ। नहीं मिलने पर त्याग करने को तो बहुत हैं लेकिन भोग भोगने के सब साधनों पर लात मारने वाले तो विरले ही होते हैं। आपकी कलम में भी जादू है लेकिन आप भी ग्राम दान के काम मे ऐसे उलझे कि मंत्री को बुलाना ही पड़ा और मैंने भी कहा कि सुखाड़िया साहब को बुलाये और सुन्दरजी भी कहते हैं कि हमारे यहां तो आना ही होगा। आदि।

एक तरफ पूर्णिमा है और दूसरी और अमावश्या की कालीरात लेकिन पूर्णिमा भी काली रात को यह कहने की हिम्मत नही कर रही है कि तुमने बहुत अन्धकार क्यो फैला रखा है।

यदि ग्राम दान होने के पश्चात ही अधकार दूर होने वाला हो तो फिर यह 100 वर्षाय योजना है एसा मानना होगा।

भाई साहब पहले तो एक ही राजा था लेकिन अब तो चारो और राजा ही राजा है और उस राजा से अधिक स्वार्थी दुराचारी शराबी कबाबी व्यभिचारी और नाना प्रकार के कुकर्म करने वाले ।लेकिन आप जैसे व्यक्ति भी ग्राम दान को सफल देखने के लिए इन्हे बुलाना आवश्यक मानते हैं। मुझे क्षमा करे लेकिन यह कहूगा कि आपकी शक्ति का अपव्यय हो रहा है। जो व्यक्ति इन सबको हिलाने की शक्ति रखता है वह मौन है और राजस्थान डूब रहा है।

मैं तो समझता हू कि हमारा स्थान ही इनकी जेलो मे होना चाहिये। इसके बजाये इन्होने ऐसा उलझाया कि बोलना ही भूल गये और गुरुद्रोण और भीष्म पितामह की स्थिति मे आ गये हैं।

बाबा का इन्दिराजी के साथ फोटो आ गया जिसमे हम सब छोटे पुरोहितो को भी आनन्द हो गया कि बडे पुरोहित से प्रेरणा लेने चली गई।

भाई साहब आपके हुक्म को मानने के लिये और आपके प्रति श्रद्धा तथा असीम भक्ति होने से ही वहा हाजिर होता रहा हूँ लेकिन मुझे क्षमा करे पहले भी अर्ज किया और आज फिर अर्ज कर रहा हॅू कि प्रखड की स्थिति वहाॅ नही है । जब तक ग्रामदान करने वालो के मन मे उत्साह न हो और स्थानीय अभिक्रम जागृत न हुआ हो सफलता मिलना कठिन ही है।

मुझे सबसे बडी चोट तो तब पडी जब चित्तौड में भी ग्रामदानी गाॅव के लोग नही मिले और न बस्सी तथा बेगूं मे ही मिले जबकि हमारा सबसे बडा नेता राजस्थान के सबसे बडे नेता के साथ आया हुआ था।

मैं कभी भी यो ही विनोद मे कह देता था कि सुन्दरजी तथा भ्रमरजी ने हाथी से मचेडा खाया है जबकि तैयारी बकरी से मचेडा खाने की भी नही है।

इस तरह अच्छा असर होने के बजाये बुरा ही होता है और इससे ग्राम दान आन्दोलन को बल मिलने के बजाय नुकसान ही होगा।

मै तो आपसे प्राथना करता हू कि अब आप बगावत का झण्डा लेकर हमारा मार्ग दर्शन करिये। राज्य द्वारा होने वाले पाप कर्म पर चोट करना ही हमारा धर्म है। आपके जेल जाने से राजस्थान के सैकडो कार्यकर्ताओ में प्राणो का सचार होगा।

शराब वन्दी सबसे अच्छा कार्यक्रम है और इसके द्वारा आपको सैकडो कार्यकर्ता मिलेगे। आज भी त्याग करने वालो की कमी नही है लेकिन चाहिये उन्हे अगुआ। आपसे बढकर कौन व्यक्ति मिलेगा।

ये गारन्टी सिस्टम अपना कर और पूरे प्रान्त को मदिरालय बना कर भी जो राज्य शराबबन्दी की ओर तेजी से बढना बताते हैं और 20 वर्षीय शराब बन्दी की योजना बनाते है उन पर करारी चोट होनी ही चाहिये। मैं कल चित्तौड होता हुआ बेगू जाऊगा। और परसो वहा से लौटते समय चन्देरिया उपस्थित होऊगा। और कुछ समय ठहरकर लौट जाऊगा।

सन् 1971 के चुनावो मे श्री महता का घोषणा पत्र

दिनाक 9 2 7।

यह सामान्य सिद्धान्त है कि तवे से रोटी नही फेरोगे तो रोटी जल जायेगी, अगर से बाटी नहा फेरोगे तो बाटी जल जायेगी खेत में फिरती हुई फसल नहीं बोओगे तो पदावार कम हो जायगी तथा खेत खराब होगा। ठीक इसी प्रकार बार बार एक ही प्रतिनिधि को भेजोगे तो वह मदहोश हो जायगा और लम्बे समय तक एक ही पार्टी का शासन रहेगा तो जनतन्त्र ही खतरे मे पड जायेगा।

आजादी के पश्चात स्वर्गीय शास्त्रीजी के गौरव मय डेढ वर्ष के शासन को छोड पूरे इक्कीस वर्षो तक अखण्ड रूप से नेहरु परिवार ने ही देश पर राज्य किया है और अब भी जिस प्रकार इन्दिरा जी के हाथ मजबूत करने का नारा लगाया जाता है उससे लगता है कि महत्व काग्रेस का नही व्यक्ति का है और वह तानाशाह बनना चाहती है।

मैं उन्हे दोष भी नही देता क्योकि इतने लम्बे समय तक एक ही पार्टी तथा एक ही परिवार को इतने बडे देश पर राज्य करने का मौका मिले तो सत्ता में मद से मदहोश होना स्वाभाविक है क्योकि सत्ता मे शराब की बोतल से सौगुना अधिक नशा होता है।

एक कवि ने अपने दोहे में सही कहा है।

सत्ता माहि है नशो, तोल बोल कतरोक।
दारु की सो बोतला, घटकाव जतरोक ।।

नेहरु परिवार का भारतीय सस्कृति में किंचित मात्र भी विश्वास नही है। और बिना परिस्थिति और सस्कृति का ध्यान किये इस देश को इग्लैण्ड तथा अमेरिका बनाने का स्वप्न देखा। उसका परिणाम यह हुआ कि न तो भारतवर्ष इग्लैण्ड अमेरिका बना और न त्याग तपस्या बलिदान की भारत की मूल पूजी ही रही। परिणामस्वरुप पूरे देश में अनुशासन हीनता, पापाचार भ्रष्टाचार अनाचार, दुराचार अनैतिकता दलबदल आदि तेजी से फैलने लगा। देश भिखारी हो गया और विदेशो में प्रतिष्ठा भी नही रही।

कौन कहता है कि इन तेईस वर्षो मे बाध, सडक स्कूल, कॉलेज बिजली और सुन्दर-सुन्दर भवन नही बने हैं ? और राजधानी दिल्ली की शान शोकत देखकर कौन यह कह सकता है कि वैभव नही बढा है ? ये सब खूब बढे है लेकिन भारत की मूल पूजी नैतिकता सदाचार कर्तव्य परायणता और सच्चाई का तजी से लोप हुआ है।

कवि श्री छापर वालजी ने अपने दोहे मे सत्य ही कहा है कि-

बाध बधा बणवा सडक, भली मदरसा खोल।
नैतिकता बिन देश को, नी कोडी रो मोल।।

बिना नैतिकता तथा सच्चाई के बाध सडक स्कूल कॉलेज तथा सब वैभव मनुष्य के शव के मानिन्द है।

इदिराजी बार बार गरीबों की दाता बनती है। और गरीब तथा अमीर का भेद मिटाने की बात कहती है। लेकिन यह छोटी सी बात उनकी समझ मे क्यो नही आती है कि शराब की सब से अधिक चोट गरीब तथा मजदूर परिवारों पर ही होती है और करोडों गरीब तथा मजदूर परिवार इसी कारण पूरी तरह बर्बाद हो गये हें और उनके बच्चे बिन खिले ही मुरझा रहे हें।

यह सही है कि शराब पहले भी लोग पीते थे लेकिन अग्रेजो के अलावा किसी ने भी इसका व्यापार नही किया था। और आज तो स्थिति यहा तक पहुच गई है कि राज्यों द्वारा अधिक से अधिक शराब बेचने की गारन्टी करने वालो को शराब के ठेके दिये जाते हैं। और जो गारन्टी से कम बेचते हें उनस हर्जाना लिया जाता है। सबसे जो बुरी बात हुई है वह यह है कि नेहरु परिवार के इस लम्बे शासन ने शराब को बहुत ऊचें स्थान पर बिठाकर प्रतिष्ठित कर दिया है।

इस देश में श्रम का सदा महत्व तथा इज्जत रही है लेकिन आजादी के पश्चात भी ऐसी शिक्षा को केवल चालू ही नही रखा वरन बढावा भी दिया जिसका नतीजा यह हुआ कि श्रम करने वाला हेय समझा जाने लगा। स्थिति को यहा तक ले गय

किश्रम की कमाई से हटा कर मुफ्त की कमाई की ओर पूरे देश का ध्यान मोड़ा। जुआ लाटरी प्रारम्भ करवाई और गली गली में एक रुपये से दस लाख कमाने की आवाज गूजने लगी। यह आप अच्छी तरह जानते हैं कि किस प्रकार मुस्लिम लीग ने भारत माता की छाती में छुरा भोक कर देश के टुकडे करवाये लाखो के घर बार लूटे लाखो मौत के घाट उतरे और अरबो खरबो की सम्पत्ति नष्ट हुई। और आज भी हालत वैसी ही है। सकट के बादल मडरा रहे है फिर भी केवल अपनी कुर्सी के लिये इन्दिरा जी मुस्लिम लीग को बढावा दे रही हैं। उसका परिणाम यह हो रहा है कि पूरे देश में फिर मुस्लिम लीग की शाखाये स्थापित हो रही है जो आगे जाकर फिर देश का विभाजन करा सकती हैं।

मद्रास राज्य में डी एम के (द्रविड मुनत्र कडगम) ने न केवल अलग झड की माग की है वरन झड का नमूना भी प्रकाशित कर दिया है, और आगे जाकर अलग राष्ट्र की माग कर सकते हैं। दिनाक । फरवरी के दैनिक हिन्दुस्तान के सम्पादकीय में आपने देखा ही होगा कि किस प्रकार धर्म निरपेक्ष राज्य में भगवान राम के चित्र का जुलूस कई व्यक्तियो द्वारा चप्पले मारते हुये दिखाया गया और और अन्त में उनके चित्र को जलाया गया।

इन्दिरा जी डी एम के को अपना प्रबल समर्थक मान कर एक भी शब्द इनके विरोध में नही बोली है। और यहा तक अपने आपको समर्पित कर दिया है कि विधानसभा की एक भी सीट नई काग्रेस को नही दी फिर भी उनसे सम्बन्ध विच्छेद नही किया है।

यह भी आप सब जानते हैं कि इन्दिरा जी ने अपने ही सुपुत्र को मोटर के कारखाने का परमिट दिलवाया। जिसका परिणाम यह हुआ कि जगह जगह अन्य भी अपने लडको तथा रिश्तेदारो को परमिट लाइसेंस आदि दिलाने मे लगे हैं। आप यह भी अच्छी तरह जानते हैं कि राष्ट्रपति के लिये रेड्डी की इन्द्राजी ही प्रस्तावक बनी और बाद मे आत्मा जगा कर उनके ही विरुद्ध प्रचार किया और बाट दिया। इससे बढकर अनुशासन हीनता का उदाहरण देखने को नही मिलेगा।

आपको यह भी देखना होगा कि आप जिन सदस्यो को लोक सभा तथा विधानसभा मे भेजते हैं उन्होने वहा स्थानीय प्रान्तीय तथा अखिल भारतीय समस्याओ पर कब कब अपने विचार रखे। यदि रखे हैं तो भाषणो की प्रतिये प्राप्त कर देखिये और यदि नही रखे है तो भूल कर भी ऐसे सदस्यो को वोट न दीजिये। सत्ताधारी काग्रेस के पाच स्तम्भ हैं–

(1) महाजन (2) महत्तर (3) मुसलमान (4) महिला (5) मुलाजिम।

में निर्दलीय सदस्य हूँ। अतएव पाचो ही प्रकार तथा सब ही मतदाताओ से अत्यन्त आग्रह के साथ नम्रता पूर्वक निवेदन करना चाहता हू कि वोट के महत्व को समझिये और बहुत सोच समझ कर वोट दीजिये।

यदि आप इसी कारण वोट देत हैं कि आपके यहा स्कूल कॉलेज बाध सडक बिजली आदि आई है तो केवल इस कारण भूल कर भी वोट न दीजिये।

वोट देने का अधिकार उसी प्रकार अत्यन्त मूल्यवान हथियार है जिस प्रकार रण क्षेत्र मे जाने वाले योद्धा के लिय तलवार या बदूक का।

यदि आपके यहा उपरोक्त सब काम हुये हें तो इसमे अहसान की कोनसी बात है। जो भी आता उसे करना ही होता। क्या जनता के टक्स को कोई अपने घर पर ले जाता हे ? कोई भी अपने घर के पैस नही लगा रहे है। सब पेसा राष्ट्र का है और जो देश पर अरबो का कर्ज है उस आपको या हम सबको ही चुकाना है। कभी कभी नेतागण यह भी कहते हैं कि हम लगान के अलावा लेते ही क्या है? वे इस बात को क्यो भूल जाते हैं कि कोनसी चीज ऐसी हे जिस पर टैक्स नही लगता और जो कर्जा करके ला रहे हैं उसे कोन चुकायेगा ?

वोट देते समय आपको यह भी सोचना होगा कि राज्य मे अराजकता तो नही बढी है ? रिश्वत खुले रुप मे तो नही चलने लगी हे। विदेशो मे इज्जत बढी है या नहीं। ग्रामोद्योग बढे हें या नही ? घर घर गाय भेंस नजर आने लगी हे या नही? महगाई बढी तो नही है ? रुपयो का मूल्य कम तो नही हुआ हे? कही पाकिसतान या अन्य देशो क होसले इस कदर तो नही बढे हैं कि हमारे विमान को ही उडा कर ले जाये और बम्ब से उडाने की हिम्मत करले और अपराधियो को मागने पर भेजने को भी मना कर दें ? देश में नित्य गोलीकाण्ड तो नहीं हो रहे हैं ?

सोच समझकर देवणो,घणो कीमती वोट।
हाडी परखे लेवण्यो, दे उगली की चोट।।

जब आप पच्चीस पैस की हडिया भी बिना पूरी तरह परखे नही लेते हें तो फिर अपना प्रतिनिधि चुनत समय तो पूरी तरह जाच करके ही बिना किसी प्रलोभन या दबाव के वोट देना चाहिये।

पूरा भरोसा है कि आप अपने अत्यन्त मूल्यवान वोट का उपयोग इस प्रकार करेंगे जिससे भारत फिर अपने गोरव को प्राप्त कर सके और गाव गाव ग्राम स्वराज्य के दर्शन हो सके।

कृपा करके इस बात को अवश्य ध्यान मे रखे कि अभी अपना राज्य नही आय है।

गाय कटे मदिराजटे, भाषा वो ही आज।
कुण के वे माके अठे,हुयो आपणो राज।।

श्री मान् चव्हाण साहब वित्त मत्री भारत सरकार को सन् 71-72 के बजट पर खुला पत्र

(व्यग्यात्मक शैली मे)

श्री मान्

(1) सन् 71-72 के बजट मे आपने छोटी से छोटी चीज पर टेक्स बढाकर भी विदेशी शराब पर टक्स नही बढाया जिसके फलस्वरुप कन्द्र सहित सब ही प्रान्तो के अधिकाश मत्रियो तथा उच्च अधिकारियो को अर्थ भार से बचा लिया। उसके लिए धयवाद।

(2) देश के एक 'नासमझ' प्रात गुजरात को छोड भारत के सब ही राज्यो ने शराब के साथ ही साथ नाजायज जुवे की रोक के लिय जायज जुआ (लाटरी) चालू करके पूरे दश को श्रम क काम स हटाकर मुफ्त मे ही लखपति बनाने की जो शानदार योजना चलाई है उसक लिय किन शब्दो म सराहना की जाये?

(3) रेजगी क अभाव मे जनता व्यर्थ ही सरकार को कोसने में लगी हुई है और यह भी नही सोचती कि इससे पेदल चलन पान बीडी तथा सिगरेट पर खर्च न करने की वृति का निर्माण हो रहा है। और कई होटल वालो ने तो सिक्के के रुप में अपने कूपन ही चला दिये है जो बड ठाठ से चल रहे है। बादशाह हुमायु ने तो भिश्ती को केवल अढाई घटे के लिये ही सिक्का चलाने की आज्ञा प्रदान की थी लेकिन आपने हर व्यक्ति को अपना अपना सिक्का चलाने का मोका देकर समाजवाद की ओर बढने का जा सुअवसर दिया है उसके लिये बहुत बहुत बधाई।

(4) भारत देश की अधिकाश जनता गावो मे बसती है और केरोसिन प्रकाश का केवल मात्र साधन है लेकिन इस पर टेक्स बढाकर चद्रमा तथा तारो के प्रकाश को अनुभव करने तथा ब्लेक आऊट के अभ्यास का जो अवसर प्रदान किया है उसके लिय आपकी तारीफ किय बिना रहा नही जाता।

(5) चाहे भारत ससार के हर दश के सामने हाथ पसार कर भिक्षा ग्रहण करता हो पर मत्रियो के ऐश्वर्य ठाठबाट तथा शान शोकत देखकर तो बडे से बड राजा का एश्वर्य भी फीका लगता है। और नई दिल्ली को दख कर यह कल्पना भी नही हो सकती कि इस देश के करोडा लोगो को भर पट भोजन भी नही मिलता होगा।

लेकिन आपके बल पर सब ही मत्री तथा उच्च अधिकारी निश्चिन्त हैं। इसके लिये बधाई।

आपके समाजवादी बजट से देश तेजी से आगे बढ रहा है जिसके लिये बधाई देता हुआ आपसे सादर अनुरोध करता हू कि जिस प्रकार नाजायज शराब को रोकने के लिये जायज शराब तथा नाजायज जुआ को रोकने के लिये जायज जुआ (लाटरी) प्रारम्भ की गई उसी प्रकार नाजायज वैश्यावृति को रोकने के लिये यदि आप जायज वैश्यावृति चालू करने के लिये प्रान्तो को प्रोत्साहित करे तो सुरा सुन्दरी तथा सट्टा तीनो से ही समाजवाद का निखरा हुआ रुप प्रकट होगा।

अन्त मे इस दोहे के बाद इस पत्र को समाप्त करता हूँ।

केरोसिन पर कर धरयो, दारु दीनो छोड ।
करॅ क्रोड चव्हाण सू,नमस्कार कर जोड।।

20 अप्रेल सन् 73 को श्री महता द्वारा माडलगढ के सब डिविजनल अधिकारी को भ्रष्टाचार के सम्बन्ध मे लिखे गए पत्र के अश

"आप ज्यूडिशियरी से माडलगढ सब डिवीजन अधिकारी पद पर आए थे इसलिए आशा तो यही थी कि आप पूर्ण रुप स निष्पक्ष रह कर इस प्रकार कार्य करेंगे जिससे गरीबो को राहत मिलगी तथा राज्य के प्रति लोगो का विश्वास बढेगा। पर खेद है कि आपन यहां आते ही अपने आपको पूरी तरह पचायत समिति के प्रधान एव विधायको को समर्पित कर दिया।

'गरीबो का हक मारकर राजगढ (काछोला) के श्री जगदीश चन्द्र शर्मा के नाम गलत तरीके से तालाब की जमीन अलोट कर देना माडलगढ कचहरी के सामने बनी होटल वाले गरीब व्यक्ति की झोपडी को गिरा देना, नेताओ को खुश करने के खातिर रिहायशी भूमि अलोट करने, बिजोलियाँ के गरीब व्यक्तियो के दस वर्ष पूर्व अलोट की हुई जमीन को खारिज करने पर और नेताओ के गलत आदेश न मानने वाले कर्तव्य परायण पटवारियो के तबादले करना आदि ऐसे कार्य है जिनकी चारो और चर्चा फैल रही है। आपने माडलगढ आने के पश्चात् यह अनुभव हो रहा है कि उप जिले के अधिकारी आप न होकर नेता गण है जो पूरी तरह से आप पर छाए हुए है।

यह तो आपको मालूम हो ही गया होगा कि माडलगढ उपजिले मे लगभग 40 वर्षो से रचनात्मक काम कर रहा हूँ। और जीवन भर अन्याय का प्रतिकार करता रहा हूँ।

आपसे नम्रता पूर्वक निवेदन करना चाहता हूँ कि कृपा करके भगवान को सामने रखकर इस प्रकार के काम करें जिनसे निष्पक्षता और सच्चाई की खुशबू निकले आपका तथा राज्य का गौरव बढे और जनता को राहत मिले।

जय प्रकाश बाबू का सिंहनाद
(ग्राम समाज पत्र मे प्रकाशित लेख – मार्च 1974)

जब कोई भी गलत पुत्र गलत राह पर लगकर घर को बर्बाद करने लगता है तो माता–पिता उसे सहन नही कर सकते और उसे सावधान करते हुए कठोर कदम उठाते हैं।

यही बात जयबाबू के लिए कही जा सकती है। वे सत्ताधारियो को सावधान कर रहे हैं। पर सत्ता के मद मे मदहोश उन पर नाना प्रकार के इल्जाम लगा कर उन्हें जनतन्त्र का शत्रु बता रहे हैं। पर वे यह नही सोचते कि कडवी वही कहता है जो हित चिन्तक होता है।

कडवी वो ही केवसी,जो हित चाण्यो होय।
खीर न काडे तापने, काडे नीम गिलोय ।।

सत्ताधारी भयकर ज्वर से पीडित है, इसलिए जयबाबू उन्हें नीम गिलोय खिला रहे हैं। पर सत्ताधारियो के इर्द गिर्द लगे लोग भयकर ज्वर मे खीर पिला रहे हैं। परिणाम क्या होगा यह आसानी से समझ मे आ सकता है।

जयप्रकाश का कथन मे, सकट को सकेत।
तुरता सभलो शासकों, मत रो पड्या अचेत ।।

आजादी के पश्चात् इतना पापाचार दुराचार भ्रष्टाचार अनाचार फैला है कि आजादी ही खतरे मे पड गई है। अत आजादी की रक्षा करनी है तो सबसे पहले घर को शुद्ध करना होगा क्योकि पापाचार विधानसभा तथा लोकसभा से ही प्रारम्भ होता है।

यदि नेता चरित्रवान होते और त्याग तपस्या का जीवन व्यतीत करते तो आज देश का चित्र ही दूसरा होता। पर यह स्पष्ट रुप से देखने मे आ रहा है कि आजादी के पूर्व जिन नेताओ के घर खाने को अन्न तथा पहिनने को पूरे वस्त्र भी नही थे आज उन नेताओ के बगले बन गये हैं, घर बाहर कारें खडी हैं नहरी जमीन बन गई है बैंक बेलन्स बढ गया है औरतें जेवर से लद गई है तथा लडको और रिश्तदारो के लाखो के कारखाने बन गये हैं। ऐसी स्थिति मे राज्य अधिकारियो तथा कर्मचारियो पर इनके उपदेश का असर कहाँ होगा ? जब नेतागण एक गलत काम

अपन लिये करवाते हैं तो अधिकारी और कर्मचारी अपने लिए दस-दस गलत काम करेगे। यही कारण हे कि देश मिट्टी मे मिल रहा है और चारो तरफ भयकर रुप से भ्रष्टाचार फैल गया है।

यह अत्यन्त प्रसन्नता तथा गर्व की बात है कि 27 वर्षो बाद जीर्ण और कई बिमारियो के होत हुए भी स्मक 72 वर्ष का व्यक्ति 27 वर्ष का युवक बनकर सब को ललकार रहा है और जहा एक ओर वह सत्ताधारियो को सावधान कर रहा है, वहा दूसरी ओर कुम्भकरण की नींद मे पडी जनता को भी जगा रहा है। लगता ऐसा है कि शरीर जयप्रकाश का और आत्मा गाधी की बोल रही है।

आशा ही नही पूर्ण विश्वास है कि 26 जनवरी के महान पर्व पर जनता अन्याय का दृढता पूर्वक अहिंसक ढग से मुकाबला करने के लिए जायेगी और आजादी की रक्षा में तत्पर हो जायेगी। साथ ही यह विश्वास है कि सत्ताधारियो की आखे भी खुलेगी और व भी जो कुछ उन्होन इन 27 वर्षो म अर्थ लाभ उठाया हे राष्ट्र के समर्पित कर फिर स आजादी के पूर्व वाली स्थिति मे आकर सवा के मार्ग पर लग जायेंगे। ओर इस बात को भली प्रकार समझ जायेंगे कि त्याग तपस्या तथा बलिदान की भावना से ही लाखो के खून से प्राप्त की गई आजादी की रक्षा हो सकती है।

चुनाव पद्धति पर राजकीय महाविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी में श्री महता द्वारा प्रकट किए गए विचार दि 29 1 74

मैं अपने विचार प्रकट करने से पूर्व सबसे पहले गाधी क महान् शिष्य पूज्य जय प्रकाश बाबू को प्रणाम करता हू कि जिन्होने आजादी के सत्ताईस वर्षो के बाद लोकतत्र को बचाने क लिए इस वर्तमान चुनाव पद्धति की भयकरता की ओर सारे देश का ध्यान खीचा है और एक जबरदस्त आन्दोलन खड़ा किया है।

भारतवर्ष में सदा त्याग तपस्या को ही महत्व मिला है। इसी कारण यहाँ चुनाव न होकर मनाव होता था और पच बनाने के लिए सब ग्रामवासियो को किसी सेवाभावी व्यक्ति को मनाना पडता था। पर देश की सस्कृति परिस्थिति और जनसख्या की ओर देखे बिना ही जो चुनाव प्रणाली अपनाई गई है उसने देश को सर्वनाश के कगार पर खडा कर दिया है। फलस्वरुप आज हम चारो ओर भयकर रुप से पापाचार दुराचार भ्रष्टाचार अनाचार जातिवाद भाई-भतीजावाद आदि देखने को मिलता है।

शिक्षा का भारी अभाव है। सत्ताधारी पार्टी ने ग्रामीणो को सदा अज्ञानी रखने का प्रयत्न किया है ताकि वोट आसानी से नाना प्रकार के प्रलोभनो से खरीदे जा सके। जो

शराब से राजी होता है, उसे खूब शराब पिलाई जाती है। जो धन से राजी हो उसे धन दिया जाता है। गॉव स्कूल कालेज दवाखाना आदि से राजी हो वहॉ विना जरुरत के ये सब खोले जाते हैं। जिस व्यक्ति के हाथ मे जितने अधिक वोट होते हैं उस व्यक्ति को आसानी से परमिट, कोटा आदि मिल जाता है। जो ठेकेदार सब से अधिक चन्दा देता है उसे उतनी ही अधिक सीमेन्ट और चूने में रेत मिलाने की छूट होती है। जो अधिकारी और कर्मचारी सत्ताधारी पार्टी को जितनी अधिक मदद देता है उसे मनमाने ढग से लूटने की छूट मिल जाती है। काले धन का खुल कर उपयोग चुनावो मे होता है इसी कारण काले धनवाले निश्चिन्त हैं।

अब तो सीमेन्ट डालडा शक्कर और कपडा मिल वालो से चुनावों के लिए धन प्राप्त करने का एक अत्यन्त सुगम तरीका हाथ आ गया है। मिलो के मालिक लाखो देकर करोडो रुपऐ आसानी से कमा लेते हैं।

यह देश का दुर्भाग्य है कि एक ही पार्टी और एक ही परिवार के हाथ मे आजादी के बाद से आज तक सत्ता है जो जनतत्र के लिए सब से बडा खतरा है।

आप और हम सब यह अच्छी तरह जानते हैं कि आजादी के पूर्व नेताओ को त्यागी तपस्वी माना जाता था। उनके न रहने को मकान न दो वक्त खाने को सतुलित आहार और न पूरे वस्त्र थे। आज उन्ही नेताओ के बगले बन गये हैं। घर के बाहर कारे खडी है। उनके पास बेंक बेलन्स और नहरी जमीन और उनके लडको के बडे–बडे कारखाने खडे हो गये है। ये सत्ताधारी नेता जनता का ध्यान खींचने के लिए कभी प्रीविपर्स की समाप्ति बेंको का राष्ट्रीयकरण तथा तस्करो की धरपकड आदि नाटक करते रहते हैं जिससे ये अपनी तथाकथित "प्रगतिशीलता" का परिचय दे सके। मतदाता इनके प्रचार से इतना बहक जाता है कि उसके समझ में यह नही आता कि नेतागणो का किसी भी राजा से वैभव कम नहीं है। ऐसी परिस्थिति मे यदि जनतत्र को बचाना है तो निम्न उपायो पर न केवल ध्यान देना होगा वरन् उन पर अमल कराने के लिए व्यापक जनमत जागृत करना होगा।

(1) चुनावो के छ महिने पूर्व केन्द्र तथा प्रान्तो के मत्रीमण्डल भग करना। इससे चुनावो के पूर्व सत्तारुढ दल सत्ता का दुरुपयोग नहीं कर पायेंगे। जरुरत बेजरुरत बिजली बाध सडके स्कूल कालेज आदि का जाल बिछा नही पाएगें।

(2) जिस जनता को वोट देकर अपना प्रतिनिधि भेजने का अधिकार है उसे वापस बुलाने का अधिकार भी होना चाहिये। ऐसा होने पर वे सावधान रहेंगे और कर्तव्य पथ से विचलित नहीं होंगे।

(3) किसी भी व्यक्ति को दो बार से अधिक चुनावो में खडा होने का अधिकार नहीं होना चाहिए।

(4) जो भी चुनाव मे खडा हो उसे और उसके पूरे परिवार को चल-अचल सम्पत्ति का पूरा विवरण सरकार को लिखित रुप से देना अनिवार्य होना चाहिए।

(5) दल-बदल पर पूरी तरह रोक लगनी चाहिए। कोई भी विधायक, सासद दल बदलना चाहे उसे पहले अपनी सीट खाली कर पुन चुनाव लडना चाहिये।

(6) विधायक तथा लोकसभा के उम्मीदवार अपने अपने क्षेत्र के निवासियो में से ही होना चाहिए। ऐसा होने पर ही वास्तविक प्रतिनिधित्व हो सकेगा।

(7) विधायक तथा लोकसभा सदस्य का पद शान-शौकत और भोग का न होकर त्याग का होना चाहिए। उन्हें जो विशेष सुविधाएँ मिली हुई है उनको तुरन्त समाप्त करना चाहिए। ताकि बार बार वहाँ पहुचने की भूख जागृत न हो।

(8) जब तक कोई व्यक्ति विधानसभा या लोकसभा का सदस्य है उसे तथा उसके परिवार के किसी भी सदस्य को कोटा परमिट ठका, जमीन का अलोटमन्ट आदि नही होना चाहिये।

(9) चुनाव के दिन के एक माह पूर्व ही चुनाव मे लाउडस्पीकर तथा वाहनो का प्रयोग बन्द कर देना चाहिये।

(10) चुनाव के एक माह के पूर्व शराब क ठेके बन्द हो जाने चाहिये।

(11) चुनाव प्रचार के दौरान मत्रियो अथवा लोकसभा एव विधान सभा के सदस्यो को शिलान्यास और उद्घाटन समारोहो मे भाग नही लेना चाहिये।

(12) चुनाव में खडा होने के लिए जो अयोग्यताए है उनमे शराबी शराब का व्यापार करने वाला तथा कालाधन कमाने वाले व्यक्ति अयोग्य माने जाने चाहिए।

(13) चुनाव याचिकाओ की हाईकोर्ट से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक की पूरी कार्यवाही 6 माह के भीतर-भीतर समाप्त हो जानी चाहिए। इसक लिय आवश्यक हो तो कानून का सरलीकरण होना चाहिए।

मैं राजनीतिशास्त्र पर बोलने का अधिकारी नही हूँ। पर 18 वर्ष की आयु से ही अन्याय के विरुद्ध जूझता रहा हू और जब तक जीवित रहूगा जूझता रहूगा। निर्दलीय रुप से विधायक बनने के बाद मैंने कई बातो को अपने जीवन म उतारने की पूरी-पूरी चेष्टा की है। अपने इन्हीं अनुभवो के आधार पर मैंने अपने ये विचार रखें हैं।

मेरा दृढ मत है कि यदि श्रद्धेय जय प्रकाश नारायण द्वारा सचालित आन्दोलन से हम उदासीन रहे और गाँव गाव पहुच कर जन जागरण नही किया तो हमारे देश मे जनतंत्र का अन्त निश्चित है।

राज्य की स्थिति के बारे मे मुख्यमत्री को ज्ञापन

श्री मान् मुख्यमत्री जी
राज राज्य जयपुर दिनाक 6 4 75

भारत पाक युद्ध की समाप्ति के चार वर्ष बाद भी सकट कालीन स्थिति बनाये रखना सविधान की आत्मा पर भीषण प्रहार है। भारत रक्षा कानून आन्तरिक सुरक्षा अधिनियम तथा नाना प्रकार के अध्यादेशो द्वारा नागरिको की स्वतन्त्रता के अधिकारो पर योजनाबद्ध तरीको से भीषण प्रहार किया जाकर हजारो स्वतन्त्रता प्रेमियो को इन कानूनो के तहत जेल मे डाल दिया गया और आजादी की रक्षा के लिये किये जाने वाले शान्तिपूर्ण आन्दोलनो को निर्ममता पूर्वक कुचला जा रहा है जिसके बिहार तथा गुजरात प्रत्यक्ष प्रमाण है।

पचायत राज की अन्त्येष्टि जिस राजस्थान राज्य ने लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण की पहल की थी वही राज्य चार चार टर्म तक चुनावो को टाल कर क्या पचायत राज की अन्त्येष्टि नही कर रहा हैं ?

शराब बन्दी का वचन भग

1 अप्रेल सन् 72 तक पूर्ण नशाबन्दी की घोषणा के बाद गाव गाव और गली गली मे शराब की दुकाने खोल कर जो वचन भग कर भयकर पाप किया है और पूरे प्रान्त को शराब की धधकती भट्टी मे झोका है क्या इससे बढकर कोई बुरा काम हो सकता है ?

निष्पक्ष चुनावो का अभाव

चुनावो पर सत्ता और सम्पत्ति का इतना असर है कि करोडो रुपये गलत ढग से चुनावो के लिये इक्ट्ठ किये जाते हैं जिससे चारो ओर भ्रष्टाचार तथा गलत तत्व उभर रहे है।

उद्देश्यहीन शिक्षा तथा बेकारी

आजादी के 27 वर्षो के पश्चात् ज्यो की त्यो वही शिक्षा दी जा रही है, जिससे श्रम तथा बुद्धि मे भयकर भेद बढ गया है। सब नोकरी करना चाहते हैं इस कारण चारो ओर बेकारी बढ रही है।

हर स्तर पर भयकर भ्रष्टाचार

विधानसभा तथा लोकसभा से ही प्रकाश आ सकता है। पर मत्री तथा विधायक अधिकारियो तथा व्यापारियो से इतने गलत काम करवाते हैं कि फिर वे अपने लिये ही स्वार्थ साधन से काम करते हैं जिन्हे मत्री तथा विधायक रोक नही पाते क्योकि वे उनसे पहले ही दबे हुये होते हैं।

रोलेट एक्ट के काले कानून सा नजारा

स्वतत्रता सग्राम के इतिहास में ता 6 अप्रेल का अत्यन्त महत्व रहा है , क्योकि उस दिन पूरे देश मे इस काले कानून के विरोध में तूफान आया था जिसमें सैकडो व्यक्ति शहीद हुये थे। आज फिर वही दृश्य उपस्थित हो रहा है। अत आज ता 6 अप्रेल के महान पर्व पर मैं अत्यन्त आग्रह के साथ पुरजोर शब्दो में निवेदन करुँगा कि –

1 सकट कालीन स्थिति तुरत समाप्त करिये।
2 पचायतो तथा पचायत समितियो के चुनाव तुरत कराइये।
3 पूर्व घोषणा के अनुसार तुरन्त शराब बन्दी करवाइये।
4 स्वतन्त्र और निष्पक्ष चुनावो के लिये चुनाव कानूनो मे परिवर्तन करवाईये।
5 देश में प्रत्येक स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिये कारगर उपाय कीजिये।
6 उद्देश्य हीन प्रचलित शिक्षा मे सुधार कीजिये।
7 बढती हुई महगाई व बेकारी रोकिये।

पूर्ण आशा तथा विश्वास है कि उपरोक्त प्रार्थना पर तुरन्त ध्यान देकर हजारो और लाखों के सघर्ष से प्राप्त की गई आजादी की रक्षा के लिये आपात कालीन स्थिति तुरत समाप्त करेंगे।

राजस्थान के पशुपालन मत्री के नाम एक खुला पत्र

शराब मासाहार के कारखाने बन्द हो

प्रिय श्री माथुर सा
पशुपालन मत्री
राजस्थान

दिनाक 15 4 75

मानमीय विधायक श्री गोटेवालाजी के शूकर कारखाने सम्बधी प्रश्न के उत्तर में आपने जो कुछ कहा उसे ता 22.3 75 को राजस्थान पत्रिका में पढ कर भारी चोट पडी। "राज्य सरकार शूकर कारखाने को सब ही प्रकार का मास तैयार करने के

कारखाने में बदल कर प्रतिवर्ष 30 हजार भेड, बकरे, एकलाख कुक्कुट तथा चार हजार सूअर का मास तैयार करने का निर्णय ले चुकी है। साथ ही मास को निर्यात करने का भी।" जिस प्रकार शराब की आय राज्य के लिये कामधेनु बन गई है उसी प्रकार मास का निर्यात का व्यवसाय भी कामधेनु बनने वाला है और शराब की दुकानो की ही तरह मास के कारखाने भी जगह जगह खुलने वाले हैं और आबकारी मत्रीजी तथा पशु पालन मत्रीजो में धन कमाने की होड लगने वाली है। अब तक तो सरकार ने केवल दलाली का व्यवसाय ही हाथ मे लिया था पर अब कसाई का व्यवसाय भी हाथ में लेने वाली है।

एक तरफ भगवान महावीर की 25 वी शताब्दी के कारण अहिंसक वर्ष की घोषणा तथा दूसरी और लाखो पशु–पक्षी प्रतिवर्ष काटने का निर्णय ? इतना बडा अन्तर देखकर भारी वेदना होती है।

मुझे पूर्ण आशा तथा विश्वास है कि राज्य इस घृणित तथा विनाशकारी व्यवसाय को हाथ में नही लेगा। साथ ही आपको भी इस बात का भान हो जायगा कि आप "पशु मारण मत्री न होकर पशु पालन मत्री" है।

गरीब किसानो के हित चिन्तक

खाद्य मत्री के नाम खुला पत्र 21 10 75

मे अपन आपको उन लोगों में मानता हू जो देश मे राम राज्य तथा ग्राम स्वराज्य देखने के लिये प्रयत्नशील हैं। और समय समय पर खरी बात कहते रहते हैं चाहें परिणाम स्वरूप कितना ही कष्ट क्यो न उठाना पडे।

इस कथन को सही बताने के लिए एक उदाहरण उपस्थित कर रहा हूँ। आपको याद होगा कि मैं जब विधानसभा मे था, आप लोगो ने सस्ती ख्याति के लोभ में फसकर छोटी जोतो पर लगान बन्द करके राजस्थान राज्य को करोडो रुपयो की पवित्र आय से वचित किया था। तब पूरी विधानसभा में केवल मैं ही एक व्यक्ति था जिसने डटकर इस निर्णय का विरोध किया था।

आपको यह भी याद होगा कि सद्बुद्धि आते ही जब आप लोगो ने फिर से लगान लगाया तब सब ही विरोधियो ने इसके विरोध स्वरुप महामहिम राज्यपाल के भाषण का बहिष्कार किया, तब केवल मैं ही एक व्यक्ति विरोधी बैंच पर बैठा हुआ था। विरोध तथा बदनामी की परवाह नही की थी।

यह पत्र मैं अनाज की लेवी के सम्बध में लिख रहा हूँ। मैं लेवी देना अपना कर्तव्य मानता हूँ लेकिन जब गलत ढग से लेवी वसूल की जाये तो गलत तरीको का विरोध करना भी अपना फर्ज मानता हूँ।

मैने पहले भी आपसे कुछ बातों का स्पष्टीकरण चाहा था पर उसके नहीं मिलने से इस वर्ष इच्छा होते हुये भी लेवी जमा नहीं कराई है। मैं नें राशन कार्ड भी लौटा दिया, जिसके फलस्वरुप मुझे 5 रु प्रति किलो की शक्कर खानी पड रही है, और कन्ट्रोल की शक्कर का लोभ छोडना पडा है।

मुझ पर लेवी जमा न करानें का मुकदमा लगा है। अत मैं पुन नीचे लिखी बातों का स्पष्टीकरण चाहता हूँ। यदि आपका सतोषप्रद उत्तर मिला तो मैं विश्वास दिलाना चाहता हू कि मैं बाजार से गेहूँ खरीद कर लेवी जमा करा दूगा।

(1) जब अधिकारियों, कर्मचारियों तथा विधायको का वेतन तय करने का अधिकार किसानो को नही है तो किसानों द्वारा पैदा किये हुवे अन्न का भाव तय करने का अधिकार किसानो की बिना राय के दूसरो को कैसे है ?

(2) जब किसी भी व्यापारी द्वारा 5 रु प्रति सैकडा से अधिक मुनाफा लेना आप अनुचित मानते हैं तो फिर 105 रु क्विंटल पर खरीद किये गेहूँ को 130 रु क्विंटल पर बेचकर 30 रु प्रति सैकडा मुनाफा क्या राज्य के लिये उचित तथा न्याय सगत है ?

(3) नहर द्वारा सिंचित की हुई भूमि पर जिन्होनें गेहूँ पैदा किया है उन्हें पिलाई पर केवल 7 रु प्रति बीघा ही देना पडता है। पर जिन्होनें चडस द्वारा कुवे से पिला कर अन्न पैदा किया है उन्हें केवल पिलाई पर ही 300 रु प्रति बीघा खर्च करना पडता है। ऐसी स्थिति में नहर तथा कुओ वालो से समान रुप से लेवी लेना तथा एक ही भाव से लेना कहाँ तक न्याय सगत है ?

(4) आजादी के पश्चात् गाय, बैल तथा बछडे बडी तादाद में कटे है, कम्पोस्ट खाद की बडी कमी आ गई है, और फर्टीलाइजर ही केवल मात्र आधार बन गया है।जिसके भाव एक ही रात में दो गुने कर दिये हैं। ऐसी हालत में इतने सस्ते भाव में गेहूं लेना क्या किसान पर भारी प्रहार नही है ?

(5) यह भी सुनने में आया है कि लेवी देने वाले किसानो को बोनस दिया जायेगा। पर राजस्थान सरकार बोनस किसानों को न देकर पचायत समितियों को दे रही है।, क्या यह लेवी देने वाले किसानों पर अन्याय नही है।

मुझ पर लेवी न देने का मुकदमा लगा है जिसकी सुनवाई अदालत में दिनाक 10 11 75 को है। आशा है इससे पूर्व ही आप सतोषप्रद उत्तर भेज देंगे ताकि बाजार से खरीद कर भी लेवी जमा करा सकू। यदि सतोषप्रद उत्तर नही मिला तो मैं यह बता

देना चाहता हूँ कि मैं लेवी जमा नहीं कराऊगा चाहे मुझे इसके लिये कितना ही कष्ट उठाना पडे।

माडलगढ नगर पालिका क्षेत्र मे 17 गाँवों को शामिल करने के विरोध मे श्री महता द्वारा ता 11 जनवरी 1978 को जिलाधीश भीलवाडा को लिखा गया पत्र।

नगरपालिका बनने पर ही क्षेत्र का विकास हो तो फिर यह मॉनना होगा कि माडलगढ उप जिल में केवल माडलगढ का ही विकास होगा और इस कस्बे को छोड पूरा उप जिला अधकार में डूब जाएगा, तथा अविकसित रह जायेगा।

यदि गाधी के सपने को साकार करना है तो हर पचायत में अच्छे से अच्छे तथा चरित्रवान सेवाभावी व्यक्तियो को ढूढ–ढूढ कर लाना होगा और वे व्यक्ति विकास के लिए उत्तरोत्तर कार्य करेंगे।

यदि विकास के लिए नगरपालिका टेक्स लगा सकती है तो पचायतें भी लगा सकती है। जनता टेक्स का विरोध तब करती है जब उसका दुरुपयोग होता है।

माडलगढ की नगर पालिका में सतरह गावो को मिलाया गया है। ये गाव उसमें नहीं मिलना चाहते हैं। पर माडलगढ मे नगरपालिका रखने के लिऐ उनका बलिदान किया जा रहा है। ग्रामवासियो को जमीन का माता पिता तथा पुत्र–पुत्रियों से भी अधिक लगाव होता है और नगरपालिका मे आने के बाद न केवल इनकी जमीन की समस्या वरन् बाडो प्लाटो,मकान के पट्टे आदि की समस्या उनके सामने खडी हो जायेगी। गाव के लोग जब नगरपालिका नही चाहते हैं तो इस पर पुनर्विचार करें।

सघन परियोजना के सचालक को लिखा गया पत्र

अन्याय के विरुद्ध लड़ने की क्षमता *दिनाक 15 4 78*

मैंने जब खादी ग्रामोद्योग मडल द्वारा सचालित सघन क्षेत्र परियोजना का अध्यक्ष पद स्वीकार किया था तो दो बातें स्पष्ट रुप से स्वीकार की थी।

(1) मैं न चुनाव लडूँगा न लड़ाऊँगा और न किसी प्रकार का प्रचार करुँगा।

(2) मैं महिने में 20 दिन क्षेत्र में लगाऊँगा।

इन दोनों बातो का मैं पूरी तरह पालन करता हुआ सघन कार्य करता रहूगा। पर बचे हुये समय में अपने स्वधर्म के अनुसार वे काम करुँगा जिन्हें मैंने जन्म भर किया है।

बचपन से ही मैंने मृत्यु भोज, गगोज, तिलक, दहेज, शराब आदि के विरुद्ध आवाज बुलन्द की है । और जागीरदारो व राजाओ के जुल्मो के विरोध में कड़ा सघर्ष किया था। और गाव गाव जाकर खूब जन जागरण कर अन्याय के विरुद्ध बोलने की जनता में शक्ति पैदा की थी।

स्वराज्य प्राप्ति के बाद यह आशा जगी थी कि अब सच्चा समाजवाद आयेगा और राम राज्य के दर्शन होंगे। पर दुर्भाग्य से जहा एक और सत्ताधारियों ने घोषित नीतियो तथा गाधी के बताये मार्ग के विपरित काम किया , वहा दूसरी और जनता ने मृत्युभोज, गगोज, तिलक, दहेज और शराब तक को बहुत प्रतिष्ठा दे दी जिसका परिणाम यह हुआ कि चारों ओर नैतिक मूल्यों का तेजी से लोप हो गया, जिससे लाखो के बलिदान से प्राप्त की गई महगी आजादी ही खतरे में दिखाई देने लगी। ऐसी स्थिति में भारत की सोई हुई शक्ति आजादी की रक्षा के लिये फिर से जागृत हुई। और जगह जगह जन सघर्ष समितियाँ स्थापित होने लगी ।जिनमें भीलवाडा जिला जन सघर्ष समिति भी एक है।

इसका सर्व सम्पति से में सयोजक बनाया गया। इस समिति ने ता 6 अप्रेल को मुख्यमत्री जी को ज्ञापन दिया। इस ज्ञापन में उन्हें उन नीतियों का भान कराया गया है जिन्हें वू पूरी तरह भूल बैठे हैं।

मैं चुपचाप केवल मात्र इस आधार पर अन्याय को बर्दाश्त करता रहूँ कि में सघन क्षेत्र परियोजना का अध्यक्ष हूँ । तो क्या इससे बढकर भी मेरे लिये कोई पाप कर्म हो सकता है ?

जो भी हो मेरे कारण आपको कही से कुछ सुनने को मिले यह मैं नही चाहता। अत निवेदन है कि यदि जन सघर्ष समिति का सयोजक रहने के कारण अध्यक्ष पद छोडना हो तो फिर मुझे आप सकेत कर दें सो तुरन्त त्याग पत्र भेज दूगा।

भू पू मुख्यमत्री श्री शिवचरण माथुर ने सन् 1977 मे सरकार बदलते ही सीधी कार्यवाही करने का आवृहमकिया। इस बारे मे श्री महता द्वारा किसान पचायत बिजौलियॉ को लिखा गया पत्र। दिनाक 14 8 79

सीधी कार्यवाही वाली पर्चियो को पढकर बहुत दुख हुआ। भेड समस्या पैदा करने वाले ही अब सीधी कार्यवाही करवा रह हैं। इसका आश्चर्य है। जिन नेताओ ने जनता को इतना भडकाया यदि वे स्वय आगे रहते तो मुझे यह विश्वास हो जाता कि इनके मन मे भी दर्द है। पर वे लोगो को भडका कर पीछे रह गए और निर्दोष लोगों को मरवा दिया।

मैं ज्यो ही विधानसभा में गया भेड समस्या के समाधान के बारे में आवाज उठाई। जिसका परिणाम यह हुआ कि मुख्यमंत्री ने विधानसभा में ही समस्या हल करने का विश्वास दिलाया। और चरागाह बनवाने भी प्रारम्भ कर दिए। जब इस समस्या का समाधान निकाला जा रहा था ऐसे समय में कांग्रेस के लोगों ने भेड समस्या को अपना अधिकार जमाने को साधन बनाया, यह दुख की बात है। भेड को कही भी ले जाना और उन्हें उकसाना घास की बागर में आग लगाने के बराबर है।

मैं आपको भरोसा दिलाता हूँ कि वैधानिक तरीकों से भेड समस्या हल करवाने का पूरा-पूरा प्रयत्न करूँगा। और जो दु खप्रद घटना घटी है उसमें भी मुझसे जो मदद हो सकेगी मैं करूँगा। पर कभी भी न तो आपको सीधी कार्यवाही के लिए भडकाऊंगा और न ही आमरण अनशन के लिए कहूँगा।

भेड समस्या को राजनीति का हथियार बनाना ठीक नहीं है। इन नेताओ ने जो जनता को भिडाकर और मृत्यु के मुख में पहुचा कर भाग गए हैं बड़ा ही पाप किया है।

इसी सन्दर्भ में श्रीमहता ने पुलिस अधीक्षक व जिलाधीश महोदय से मुलाकात की और उसी दिन उनको एक पत्र भी भेजा।

"कानून हाथ मे लेने व हिंसा भडकाने व लोगों को मरवाने की प्रवृति को कम करना है तो जिन लोगो ने सीधी कार्यवाही के लिए विज्ञप्ति निकाली, लोगों को कसमें दिलाई उन्हे मजबूर किया और मरवाया उन पर सख्त कार्यवाही होनी चाहिए। लोगो के मरने की जिम्मेदारी उन्हीं लोगों पर है।"

बिहार के मुख्यमंत्री को खुला पत्र

मान्यवर दिनाक 4.3.81

उत्तर प्रदेश तथा बिहार राज्यो ने शराब की आय को कामधेनु मानकर जब शराब बन्दी समाप्त की तब ही से यह साफ हो गया था कि इन राज्यों में अब पापाचार, दुराचार भ्रष्टाचार और अनाचर खूब बढेगा। पतित आय का यही परिणाम आना था।

भागलपुर जेल में जिस प्रकार कैदियों की आँखें फोडने का जघन्य पाप हुआ उससे पूरे देश की आत्मा हिल उठी। पर आपने त्याग पत्र नहीं दिया और यही सुनने को मिला कि वे बडे अपराधी थे। अपराधी को सजा तो ज्यूडिशियल कोर्टो से हुआ करती है। क्या बिहार में सजा भी अब पुलिस ही देगी और उच्च न्यायालय से लेकर छोटे से न्यायालय बिहार राज्य में समाप्त कर दिये जायेंगे ?

स्वर्गीय शास्त्रीजी ने रेल दुर्घटना के कारण रेल मत्री पद से त्याग पत्र दे दिया था, पर आप टस से मस नहीं हुये। जिससे पूरे देश को वेदना होना स्वाभाविक था।

बिहार में बुद्ध के समय में अगुलीमाल नित्य मनुष्यों की हत्या करके उनकी अगुलियों की माला गले में पहिनता था और महावीर के समय में अर्जुन माली नित्य 7 हत्यायें करके भोजन करता था। पर बुद्ध और महावीर की त्याग, तपस्या, करुणा तथा प्रेम से इन दोनो का न केवल हृदय परिवर्तन ही हुआ वरन् अगुलीमाल और अर्जुन माली महान सत बन गये।

इसी बिहार ने जय बाबू जैसे महान् व्यक्ति पैदा किये जो सदा पद से दूर रहकर ससार में अमर हो गये। इस जघन्य काड के होते ही यदि आप त्याग पत्र दे देते तो बडा अच्छा होता। लेकिन आप यह नहीं कर सके।

अब मैं आपके सामने निम्न सुझाव पेश कर रहा हूँ।

आप और आपके मत्रीमडल के सब ही सदस्य अपनी एक एक आख उन सबको दे दें जिनकी आँखें फोडी गई है, तो इस त्याग का न केवल भारत के बच्चे बच्चे पर असर होगा वरन् जिनकी आखे फोडी गई है और जिन्होने फोडी है उन सबका हृदय ही बदल जायेगा।

इससे एक चमत्कार यह भी होगा कि पूरे देश में मत्री बनने की जो भूख पैदा हो गई है उसमें बडी कमी आयेगी। और मत्री बनने के इच्छुक लोगों के मन में यह भावना जागृत होगी कि त्याग, तपस्या, तथा बलिदान के मार्ग पर चलने की इच्छा रखने वाला ही इस पद पर आ सकता है।

मुझे पूरा भरोसा है कि आप अपनी एक आँख का बलिदान देकर सदा के लिये अमर हो जायेंगे।

साथ ही यह भी विश्वास है कि फिर से शराब बन्दी करके सारे देश को इस और अग्रसर करेंगे और सबके हृदय में यह बात अच्छी तरह जगह कर लेगी कि विनाश के रास्ते से विकास असम्भव है।

मन की वेदना –स्वतत्रता की 34 वीं वर्षगाठ पर
क्या, पन्द्रह अगस्त हमें आत्म चिन्तन के लिये प्रेरित करेगा ?

आजादी के लिए देश के लाखों आदमियो ने हथकडियाँ व बेडियाँ पहनी। कितने ही लोग फाँसी के तख्ते पर लटके। कितने ही काले पानी भेजे गये। कितने ही देश भक्तो ने गोलियाँ खाई और कितने ही परिवार त्याग तपस्या करते हुये पूरी

तरह मिट गये। तब कहीं महगी आजादी के दर्शन हुऐ। खादी की टोपी तथा खादी के वस्त्र, त्याग, तपस्या और बलिदान का बाना बन गया था। पर आज आजादी के 30 वर्ष बाद ज्योंही चमचमाती खादी टोपी और खादी वस्त्र पहिने व्यक्तियो को देखते हैं तो उनके प्रति एकाएक नफरत के भाव पैदा हो जाते हैं। क्यों ? क्या गाधी की जय जयकार करके शासन चलाने वाले गाधी को पूरी तरह भूल गये हैं ?

बापू चाहते थे कि राज्य शराब का व्यापार तुरन्त बन्द करे। गाधी की जय जयकार करने वाली सरकारों ने शराब की आय को ही विकास का मुख्य आधार मान लिया है। गली–गली में शराब की दुकानें खुली हुई है। और शराब पीना इज्जत की चीज मानी जाने लगी है। स्थिति यहा तक पहुच गई है कि राजस्थान के एक प्रमुख अधिकारी बुढापे में अपने विवाह की वर्ष गाठ मनाते हैं जिसमें खुलकर शराब पी जाती है। और राजस्थान के राज्यपाल तक उस अवसर पर जाम टकराने में सम्मिलित होते हैं। इससे बडा राज्य का क्या दुर्भाग्य होगा ?

एक एक करके सब ही ग्रामोद्योग नष्ट हो गये हैं। और करोडो लोग ग्रामोद्योग के अभाव में शहरों में जाकर रिक्शा चलाते हैं या अन्य मजदूरी करते हैं। गाँव पूरी तरह विरान नजर आने लगे हैं। गाँवो में कही भी दूध, दही, घी आदि के दर्शन नही होते हैं। सारा दूध खिंच–खिंच कर डेयरी में चला जाता है और परिणाम यह हो रहा है कि कहीं छाछ तक के भी दर्शन नहीं होते। देखिये इस दोहे मे कितना वजन है.

दाल परीगी, तेल ग्यो, घी तो कोसाँ दूर।
झाके मत खाले परी, रोटी जल मे चूर।।

रिश्वत की शिकायत करना तो अब व्यर्थ है। वह तो अब शिष्टाचार का रुप ले चुकी है। कवि ने ठीक ही कहा है

काम सरे नी बात सू, सरे न करिया रीस।
काम सरे दे दो जदी, बिना रसीदी फीस।।

जो मार्ग गाधी जी ने बताया था और जिस आजादी के लिये लाखो ने कुर्बानी दी थी वह सब मिट्टी में मिला दिया गया है। देश तेजी से सर्वनाश की ओर बढ रहा है। खुशबू और बदबू लोक सभा तथा विधानसभा से ही शुरु होती है। पर जब इनमें जाने वाले अधिकाश सदस्य त्याग व तपस्या का मार्ग छोडकर भोग में लग जाते हैं और कुछ ही समय में करोडपति बन जाते हैं तो फिर अधिकारी तथा कर्मचारियों को ये रोक ही कैसे सकते हैं ?

समाचार पत्र मे छपा पत्र अगरत 1982

जन प्रतिनिधि जनता के कितने शुभचिन्तक ?

समाचार पत्रो मे यह देखने को मिला कि सचिवालय में सेन्ट्रल कूलिंग की व्यवस्था तो है, पर उसमे मत्रियो को असुविधा होती है। बीमार होने का डर बना रहता है। इस कारण मत्रियो के कमरे पूर्ण वातानुकूलित बनाये जा रहे हैं। जिसके लिये वित्तीय स्वीकृति दी जा रही है। विधानसभा की कई समितियाँ भी काश्मीर, नेपाल ओर फूलो की घाटी मे अध्ययन करने गई थी जो अकाल के वर्ष में बहुत जरुरी था। राजस्थान में तीन वर्षो से भयकर अकाल है और इस वर्ष भी वर्षा के अभाव में स्थिति अत्यन्त भयकर हो गई है। चारो तरफ हा हा कार मचा हुआ है। घास एक रुपया किलो मिल रहा है। फिर भी जन प्रतिनिधि गुलछर्र उडा रहे हैं। इन परिस्थितियो में हमारे मुँह से अनायास ही यह उक्ति निकल जाती है कि –"जब रोम जल रहा था नीरो बशी बजा रहा था। मेरे "मित्र और आशुकवि श्री मोतीलाल छापरवाल ने इस सम्बन्ध में ठीक ही कहा है

> जाओ घर ने साथ ले, काश्मीर नेपाल।
> चिन्ता करो न ओर की, माण्डया जावो माल।।

25 सितम्बर 1986 को राजीव गाधी को लिखा गया खुला पत्र

आपके पास हजारो पत्र पहुचत हैं इस कारण यह सम्भव नही लगता कि आपके पास मेरी भावना पहुँच सकेगी। इसी कारण यह खुला पत्र भेज रहा हूँ।

मैंने अपने जीवन के 75 वर्ष पूरे कर लिऐ हैं। आपके स्वर्गीय पिता फिरोज गाधी ने जिस दृढता से जीवन भर अन्याय के विरुद्ध लडाइयॉ लडी उनको मैं सदैव स्मरण करता हूँ। आज भी मेरे मन मे उनके प्रति श्रृद्धा बनी हुई है।

आपने प्रधानमत्री बनते ही जब दलबदल जैसे घृणित काम पर रोक लगाई तो मुझे पूरा विश्वास हो गया था कि आपमें आपके स्वर्गीय पिताजी के गुण विद्यमान हैं।दल बदल से बढकर कोई घृणित काम नही है इसका अनुभव मुझे सन् 67 मे ही हो गया था। राजस्थान मे में निर्दलीय विधायक था और काग्रेस को राज्य बनाने में केवल एक विधायक की जरुरत थी। पर बडे से बडा प्रलोभन भी मुझे अपने पथ से विचलित नही कर सका था। पर मैंने विधायक को बिकते हुए देखा।

आपके 20 सूत्री कार्यक्रम के विभिन्न सूत्रो का मैने अध्ययन किया। हनुमान ने सीता माता के दिए हुए मूल्यवान कठे के मणियो को तोड तोड कर इसलिए फैंक दिया था क्योकि उन मणियो में कहीं भी "सीताराम" के दर्शन नही हुए थे। इसी प्रकार मुझे भी आपके इस कार्यक्रम में कहीं दरिद्रनारायण की सेवा के दर्शन नहीं हुये हैं।

आपके इन 20 सूत्रो को तोड–मोड कर देखने पर मुझे कहीं भी बापू के दर्शन नही हुए। गाय बैल ज्यों के त्यों कट रहे हैं। गुजरात को छोडकर देश के सब ही राज्य शराब की पतित आय से विकास की धुन में लगे हुए हैं। और लाखो परिवारो को शराब की धधकती भट्टी में झोक दिया है। एक एक करोड की आय का प्रलोभन देकर लॉटरी द्वारा लाखो व्यक्तियों को जुआरी बना दिया है। एक एक करके सब ही ग्रामोद्योग उजड रहे हैं। गावों में न दूध है, न दही है और न छाछ है न काम। इन 20 सूत्रो में बापू के बताए हुए काम नहीं है। वस्तुत मार्ग तो हमें बापू का ही अपनाना पडेगा।

श्री शोभाग सिंह बापना की पत्नी श्रीमती कचन देवी द्वारा 21 उपवास करने के उपलक्ष्य मे आयोजित भोज के निमन्त्रण पर श्री महता का पत्र

दिनाक 26 9 86

"कचन देवी ने 31 दिन की तपस्या की । यह हम सब के लिए गर्व की बात है। मैं तो उन सबको प्रणाम करता हूँ जो इतनी बडी तपस्या करते हैं , क्योंकि मुझसे तो एक उपवास भी आसानी से नहीं होता। पर तपस्या का परिणाम तो यह होना चाहिए कि अपरिग्रह, करुणा सेवा, नम्रता और त्याग की भावना न कवल तपस्या करने वालो के ही मन में आए वरन् हम सबके मन में भी आये। परन्तु इसके बजाए बडे–बडे भोज आयोजित होते हैं। यदि आप सभी भोज नही करते तो मैं अवश्य उपस्थित होता। इस बडी तपस्या की यादगार में अस्पताल में एक वार्ड बना देते तो समाज में उदाहरण प्रस्तुत होता।

लीक लीक गाडी चले, लीक ही चले कपूत।
ये तीनों ही नहीं चले, शायर, सिंह सपूत।।

हरिदेव जोशी के 66 वे जन्म दिन पर श्री महता द्वारा भेजा गया पत्र।

दिनाक 18 12.86

"अभी–अभी राजस्थान पत्रिका में आपके 66 वें जन्मदिन की सुखद सूचना पढकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। भगवान से इस अवसर पर प्रार्थना करता हूँ कि आप सदा स्वस्थ और सुखी रहकर राज्य को त्याग, सच्चाई, और नैतिकता के पथ पर उत्तरोत्तर आगे बढाते हुए फिर से सबको प्रेरणा देने योग्य बनाएँ। पर यह तब ही सम्भव है जब लाखों परिवारों को शराब की धधकती भट्टी में झौंक कर पतित आय को विकास का मुख्य आधार मानने के पूर्व निर्णय को आप बदल दें। बागड के बापू के पुत्र से यही आशा है।

जैन साधु, साध्वियों द्वारा बीरवाल साधु साध्वियों के साथ किये जाने वाले भेदभाव के सम्बन्ध में श्री महता का जैन श्रावक सघ सागानेर को ता 8 मई, 1987 का पत्र।

समाज के सामने व्यक्ति बहुत छोटा होता है। इसी भावना से प्रेरित होकर मैं आपके सामने कुछ निवेदन कर रहा हूँ। सागानेर गॉव में ओसवाल समाज क घर थोड़े हैं पर हृदय विशाल है। इसका परिचय कई बार सागानेर का जैन समाज दे चुका है। अब एक उदाहरण उपस्थित करने का भगवान महावीर हमें अवसर दे रहा है। कहीं ऐसा न हो कि यह अवसर हमारे हाथ से निकल जाए और हमें बाद में पश्चाताप करना पडे।

बीरवाल–समाज सही माने में भगवान महावीर का अनुयायी है। अत पूज्यनीया बीरवाल साध्वियो का सागानेर में चातुर्मास कराना ही चाहिए। यह पत्र मै केवल मेरी तरफ से ही नहीं, मेरी पत्नी की तरफ से भी लिख रहा हूँ। हम सबको मालूम है कि रैदास चमार जाति के थे और भक्त मीरा के गुरु थे। हमें भी अनायास ही यह सुअवसर मिल रहा है जिसे हाथ से नहीं जाने देना चाहिए।

नोट – स्मरण रहे कि "बीरवाल" जैन साधु साध्वी वे होते हैं जिन्होनें जन्म हरिजन आदि जातियो मे लिया हो। जैन श्रमण सघ उन्हें दीक्षा तो दिला देता है, पर जैन साधु साध्वी उनके साथ अछूतों की तरह ही व्यवहार करते है।

श्री महता द्वारा अपने एक अन्तरग मित्र को सगाई व विवाह के अवसर पर लिये गये तिलक आदि स्वीकार करने के सम्बन्ध में लिखे गये पत्र के अश।

आप राजस्थान के उन इने गिने लागों में से हैं जिनके काम में से महक निकलती है। जिस प्रकार खादी के काम में कट्टर से कट्टर विरोधी भी आप पर कोई इल्जाम नहीं लगा सकता उसी प्रकार सामाजिक कामों में भी आपको उदाहरण उपस्थित करना चाहिए।

गावो में किसान मृत्युभोज से बरबाद हो रहे हैं। मजदूरी करने वाले राज्य द्वारा चलाए जा रहे शराब से बरबाद हो रहे हैं। और महाजन वर्ग तिलक दहेज से बरबाद हो रहा है। लडकी की शादी में लाखो रुपए खर्च करने होते हैं और उसे कमाने के लिए अनैतिक काम करना पडता है और विवाह सौदेबाजी में बदल जाता है जो रुकना चाहिए।

मैं जन्म भर तीनो बुराईयों, मृत्युभोज, शराब व तिलक दहेज पर प्रहार करता रहा हूँ। कौन मेरी बात सुनता है और कौन नहीं इसकी चिन्ता छोडकर मैं अपने जीवन

में उतारने की पूरी चेष्टा करता हूँ। यही कारण है कि सगाई विवाह में जहा रुपयों का लेन देन होता है मैं नहीं जाता हूँ। यही कारण कि आपके पुत्र की सगाई व शादी के अवसर पर उपस्थित होने का निमत्रण स्वीकार नही कर सकू गा। पर हम दोनों बाद में वर-वधू को आशीर्वाद देने अवश्य उपस्थित होंगे।

बढे हुए वेतन भत्ते के सम्बन्ध मे विधायको को खुला पत्र

जनता पार्टी की सरकार ने देश में सब से पहले गाधी का महान कार्य अन्त्योदय तेजी के साथ पूरे उत्साह से हाथ में लिया। और हर पचायत क्षेत्र में ग्राम सभा की राय से समाज में आर्थिक दृष्टि से सबसे अन्त में खडे पाँच-पाँच व्यक्तियों का चयन किया जाकर हर तरह से उन्हें ऊँचा उठाने का प्रयत्न किया गया। लेकिन जनता पार्टी का राज्य समाप्त होते ही काग्रेस सरकार ने अन्त्योदय के बजाय उच्चोदय का काम प्रारम्भ किया जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण मत्रियों तथा विधायकों की सुख सुविधा व वेतन भत्ते आदि बढाना है।

मत्री तथा विधायक तो सब से ऊचे माने जाते हैं। सारा खजाना इनके ही हाथ में है। कहा यह जाता है कि भूखे को भण्डार में नही भेजते। इसी कारण क्या सबसे पहले ये धाप कर खाना चाहते हैं ?

यह सही है कि विधायको का वेतन कम है। लेकिन इसकी पूर्ति तो हर माह पन्द्रह से बीस दिन तक चलने वाली समितियो द्वारा 51 रु. प्रति दिन भत्ते से हो जाती है। अब कमेटी की बैठकें भी ज्यों की त्यो चलेगी और वेतन भते, सुख सुविधा आदि भी खूब मिलेगी।

वैसे कत्थक नृत्य तथा मधुर गान सबको अच्छा लगता है और खूब भीड उमड पडती है। पर जब किसी जवान की मृत्यु पर सब शोक में डूबे हुये हो तो क्या नाच गान अच्छा लगेगा ?

यही हाल इस समय राजस्थान का है। भयकर अकाल है। पीने का पानी नही है। और अपने जीवन के मूल आधार गाय भैंस तथा बैल को बचाने के लिये घास नहीं है। जिसकी गूज विधानसभा में भी खूब हुई है। ऐसा लगता था कि सब विधायक अत्यन्त दुखी है। पर दूसरे ही क्षण जब इस प्रकार सब सुविधा, वेतन तथा भत्ते बढाये जाते हैं तो लगता है कि कथनी करनी में कितना बडा अन्तर है। और यही कहावत चरितार्थ होती है कि "जब रोम जल रहा था नीरो बशी बजा रहा था।"

इस बिल का विरोधी दलो ने विरोध किया होगा पर उस विरोध का मतलब ही क्या है जब सब ही विरोधी भी बढा हुआ भत्ता तथा सुविधा उठायें।

मुझे पूरा भरोसा है कि अकाल की छाया रहने तक तो जो नई सुख सुविधा तथा वेतन भत्ते मे बढोतरी की गई है उसे विधानसभा के सदस्य नहीं लेंगे। और अन्त्योदय का काम तेजी से आगे बढायेगे।

यदि, भयकर अकाल के बावजूद बढी हुई सुविधा भत्ता आदि लेना महगाई के कारण जरुरी हो तो फिर अधिकारी तथा कर्मचारी को अपनी माग रखने से कैसे रोक पायेगे ? क्योकि महगाई तो उन्हे भी बहुत परेशान कर रही है।

आशा है मेरी प्रार्थना पर ध्यान देकर जनता के सामने उदाहरण उपस्थित करेंगे।

कही ऐसा न हो कि जनता को इस दोहे का उच्चारण करना पडे।

भूखा मरिया गाव का, बिन रोटी अर दाल।
मोज्या करो विधायका, थॉंकि कस्यो अकाल।।

क्या हमे गाधी जयन्ती मनाने का अधिकार है ?

2 अक्टूबर को देश भर मे गाधी जयन्ती धूम धाम से मनाई जायेगी जिसकी खबरें सब ही समाचार पत्रो में बड़े बडे अक्षरो मे प्रकाशित हुई है। पर क्या हमारा इस ओर भी ध्यान जायेगा कि गोडसे ने तो गाधी के शरीर को ही छेदा था पर आजादी के पश्चात् उसके नाम पर राज्य चलाने वालो ने उसकी आत्मा को इतना छेदा है कि वह छलनी बन गई है?

आज देश मे चारो ओर भयकर रुप से पापाचार दुराचार भ्रष्टाचार, अनाचार बेकारी तथा कमरतोड महगाई फैली हुई है और इन सब का मूल कारण है गलत शिक्षा, मौजूदा गलत चुनाव प्रणाली कुर्सी मोह तथा शराब और जुवे का व्यापार। जिन नेताओ को आजादी के पूर्व त्यागी, तपस्वी तथा सदाचारी कहा जाता था। आज उन्ही तपस्वियो के बडे बडे बगले चमचमाती मोटरें, नहरी जमीनें बैंक बेलेन्स और रिश्तेदारो तथा पुत्रो के नाम पर बडे बडे कारखाने दखने को मिलते हैं। तथा गद्दी प्रम इस कदर बढ गया है चाहे एक एक सीट के लिए पाच पाच लाख रुपया ही क्यो न खर्च करना पडे उनसे कोई गद्दी छीन ही नहीं सकता।

राज्य के कर्णधार तस्करों की धर पकड मे आज कल बड़ा गौरव अनुभव कर रहे हैं। पर उनका ध्यान इस ओर नही जाता कि चुनावो में पाच पाच लाख रुप्ये खर्च करके दस दस हजार का हिसाब पेश करने वाले तस्करो के सामने वस्तुओ की तस्करी करने वाले व्यक्ति कीडो मकोडो के मानिन्द हैं।

देश में चाहे खाने को अन्न पहिनने को वस्त्र खाना पकाने को कोयले, रोशनी करने को केरोसिन खाने को दूध दही घी तेल तथा दालें आदि न मिलती हो पर

गाधी के नाम पर राज्य चलाने वालो ने गली गली में शराब की दुकानें उसी प्रकार खोल रखी है जिस प्रकार धर्मात्मा लोग बैसाख जैठ में ठडे जल की प्याऊ खोला करते थे।

लॉटरी का जो कि जुवे का ही एक अत्यन्त शर्मनाक रुप है, गली गली में माईक पर प्रचार हो रहा है और पूरे देश को शराब के साथ ही साथ जुवे की भट्टी में भी झौंका जा रहा है।

खेती के केवल मात्र आधार गाय, बैल और बछडों को आजादी के पश्चात् इतनी बडी तादाद में कत्ल किया गया हैं कि न केवल दूध, दही और घी की ही भयकर रुप से कमी आई है वरन् अन्न की भी बहुत कमी आ गई है।

बेकार बनाने के लिए कॉलेज रुपी कारखाने बहुत चल रहे हैं। पर जिस प्रकार की उन्हे शिक्षा दी जाती है उससे श्रम तथा बुद्धि का भयकर भेद बढा है। और बेकारी बढ गई है। बिना इस बात को सोचे कि देश में एक अरब हाथ हैं।

भारत को इग्लैण्ड तथा अमेरिका बनाने की धुन में स्वचालित यन्त्रो के इतने बडे बडे कारखाने खोले गये हैं और खोले जा रहे हैं कि ग्रामोद्योग बडी तेजी से नष्ट हो गये हैं। और सारी ग्राम व्यवस्था जिसे अग्रेज भी नष्ट नहीं कर सके थे अब नष्ट होती जा रही है।

जो भी हो जहा एक और गलत काम करने वाले दोषी हैं वहाँ दूसरी ओर गलत कामो को सहन करने वाले भी उतने ही या उससे अधिक दोषी हैं।

अत 2 अक्टूबर हमारे लिये आत्म चिन्तन का दिन है कि हमें गाधी जयन्ती मनाने का अधिकार भी है या नही ?

प्रौढ शिक्षा के बिना आजादी खतरे मे

देश के आजाद होते ही गाधी ने कहा कि कॉग्रेस का काम समाप्त हुआ। अब इसे लोक सेवक सघ में बदल दो और गाव गाव में जाकर काम करो।

यदि हमने गाधी की बात मान ली होती तो देश का चित्र ही दूसरा होता। लेकिन पद लिप्सा ने हमें गाधी के मार्ग से हटा कर दूसरे ही मार्ग पर लगा दिया जिसका परिणाम यह हो रहा है कि देश में चारों ओर पापाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार अनाचार आदि फैल गये हैं। और ऐसा लगता है कि सदाचार के अलावा देशवासियों ने सब चार पकड लिये हैं।

उसी सेवा भावना से प्रेरित होकर सब ही काग्रेस जन जो गाधी के समय में सेवा के प्रतीक माने जाते थे यदि देश के पाच ही लाख गावों में फैल जाते तो अपने चरित्रबल से प्रौढों को शिक्षण देते तो उनमें अन्याय का प्रतिकार करने सबही

ग्रामोद्योगों को फिर से जीवित करने, रात दिन श्रम में लगने तथा श्रम को प्रतिष्ठित स्थान पर बिठाने, गाव के झगडे गाव में मिटाने तथा सामाजिक कुरीतियो को मिटाने की ताकत आती तथा भारत पूरे ससार के लिये मार्ग दर्शक बन जाता। पर आज तो हालात यह है कि सब को अपनी चिन्ता है और देश रसातल की ओर तेजी से बढ रहा है।

प्रौढ शिक्षा का मतलब केवल अक्षर ज्ञान से नहीं है। प्रौढ शिक्षा का मतलब यह है कि ग्राम वासियों को आर्थिक, सामाजिक, सास्कृतिक शैक्षणिक तथा राजनैतिक स्थिति का पूरा पूरा ज्ञान हो तथा किसी भी प्रकार का अन्याय करने का प्रतिकार करना सीखें।

प्रसन्नता की बात है कि प्रौढ शिक्षा की ओर फिर से ध्यान जाने लगा है। भगवान हमें वह शक्ति और प्रेरणा दे कि हम फिर से लौटकर उसी गाधी मार्ग पर आ जायें जहा से हमने मार्ग छोडा था।

हालात एकदम विपरीत हैं। चारों और भयकर निराशा है पर दृढता के साथ गाधी के बताये हुये मार्ग पर आना ही केवल मात्र उपाय है।

अत बिना इसबात की चिंता किये कि सफलता मिलेगी या नही हनुमान बनकर उस ओर अग्रसर होना तथा अपने आप को गाव में खपाने के लिये तैयार हो जाना ही केवल मात्र उपाय है, क्योंकि भयकर अधकार में टिमटिमाते चिराग का भी महत्व होता है।

सेवा सघ बीगोद के सस्थापाक चन्दनसिंह जी साहब भरकतिया के प्रति श्रद्धा सुमन।

चन्दनसिंह जी साहब में न केवल उनके स्वर्गीय पिताजी के गुण ही कूट कूट कर भरे थे वरन् सेवा के क्षेत्र में उनसे ही सवाये सिद्ध होकर उन्होनें उनके पिता की आत्मा को शान्ति पहुँचाई।

मरना अनिवार्य सत्य है पर उसी का मरना धन्य है जो खुद हँसता हुआ जाये और सब आँसू बहाये। ये ऐसे ही व्यक्ति थे। एक क्षण भी बिना सार्वजनिक काम के नही रह सकते थे। इन्होंनें अपने जीवन की शुरुआत आर्थिक सकट में की। लेकिन आर्थिक सकट इनके जीवन निर्माण में वरदान सिद्ध हुआ और ये उत्तरोत्तर आगे बढते रहे।

राजस्थान रचनात्मक काम की दृष्टि से अगुआ प्रान्तों में रहा है। लेकिन सब बिखरे हुये थे इस कारण तेज प्रकट नहीं हुआ। इन्होंनें धागे का काम किया और बिखरे हुये रचनात्मक कामों को एक धागे में माला की तरह पिरो दिया। राजस्थान

सेवक सघ की स्थापना मूलतया इनके ही कारण सभव हो पाई।और इसक अध्यक्ष रहे पूज्य ठक्कर बापा श्री कृष्णदास जी जाजू और जय बाबू।

भारत वर्ष की ऐसी बडी हस्तियो को राजस्थान सवक सघ के लिये अध्यक्ष पद पर बिठाना राजस्थान के लिये अत्यन्त गोरव की बात रही है। इसके सदस्यो को दलगत राजनीति स दूर रखा गया था। इस कारण राजस्थान में रचनात्मक काम निरन्तर आगे बढता रहा है।

साधारण से साधारण रचनात्मक काम में लग कार्यकर्ता इनसे बहुत सम्मान पाते थे। और उनके परिवार को आर्थिक कष्ट न हो इसका निरन्तर प्रयत्न करते थे और जो मदद पहुचाते थे वह इतनी गुप्त होती थी कि किसी को मालूम तक नही होती थी। ये साधारण स्थिति मे बहुत ऊँचाई तक पहुँचे पर इनकी सरलता सादगी और नम्रता तथा सेवा भाव मे कही भी अन्तर नही आया। छोटे से छोटे व आर्थिक स्थिति से अत्यन्त कमजोर रिश्तेदार के यहा किसी भी अवसर पर जाने में नहीं चूकते और ऐसे घुलमिल जाते जैसे ये भी उसी परिवार के विनम्र सदस्य हैं।

एक मर्तबा इनके निवास इन्दोर में मेवाड से ऐसे सज्जन अपने बालक का इलाज कराने आये जिसे हूपिग कफ (हडकी खासी) हो रही थी। इन्होने यह जानते हुये भी कि यह बिमारी उड कर लगने वाली है फिर भी न कवेल उनके मकान पर ही रखा वरन् उस बच्चे की खूब सेवा की। इन्हें भी वह खासी हो गई और बीमारी इस सीमा तक बढ गई कि इन्हें इलाज के लिये बाहर जाना पडा और खूब कष्ट भोगा पर इन्हें प्रसन्नता इस बात की थी कि वह बच्चा ठीक हो गया।

यह विनोदी भी खूब थे और ये जहा भी चले जाते हसी का फव्वारा छूट पडता था।

मैं अक्सर विनोद मे कई लोगो की हसी उडाया करता था। हम एक मर्तबा राजस्थान सवक सघ की बैठक मे खीमेल गये हुवे थ। इन्होंने मेरी मजाक उडाने का निश्चय करके कहा कि "इन्दौरी लाल जी बडजातिया स्वावलम्बी सस्थाओ को चन्दा दिया करते हैं। वे मेरी कमजोरी जानते थे कि मैं जगह जगह जाकर सेवा सघ बीगोद के लिय चन्दा इक्ठ्ठा किया करता हूँ।

मैंने उसी समय एक अर्जी तैयार की जिसमे लिखा था कि "सेवा सघ बीगोद स्वावलम्बी सस्था है। इस कारण आर्थिक मदद दीजिये।" अर्जी लिखकर मैंने उन्हें दे दी। उसी अर्जी पर इन्होने उसी समय लिख दिया 'चूकि सस्था स्वावलम्बी है इस कारण किसी प्रकार की मदद नही दी जा सकती है।' फिर उस अर्जी को लेकर सब के सामने कहा कि " मनोहर सिंह सब की मजाक करता है आज मैंने इसे इस प्रकार

लिख कर दिया है।" सब सदस्य खूब हँसे और आज भी जब मुझे वह बात याद आ जाती है तो मैं अपने आप हस जाता हूँ और उनकी मूरत मेरी आखो के सामने आ जाती है।

मेरे क्षेत्र माडलगढ मे सन् 67 मे चुनाव के लिये बाकायदा मतदाता मण्डल तो नही बना था। पर मेरे कार्यक्षेत्र माडलगढ मे करीब करीब सब ही गावो के प्रतिनिधि त्रिवेणी सगम बीगोद पर इकट्ठे हुवे और मुझे विधानसभा के चुनाव में खडा होने के लिये मजबूर किया और चन्दा भी उन्होने ही इकट्ठा किया।

जिस प्रकार सन् 77 मे जनता पार्टी की लहर थी उसी प्रकार सन 67 मे काग्रस की लहर थी। लेकिन जब गाव गाव से सैकडो व्यक्ति चुनाव प्रचार के लिये निकल पडे तो बहुत प्रभावशाली व्यक्ति के मुकाबले मे भी मैं चुन लिया गया। पूरे उदयपुर डिविजन मे मैं ही एक निर्दलीय व्यक्ति विधानसभा मे पहुँचा था।

यह सब राजस्थान सघ के काम का ही नतीजा था जिसके भरकतिया साहब मुख्य आधार थे। एक एक गाव स व व्यक्ति से जीवित सम्पक हो सका और उनकी सेवा सघ के मारफत हस्तक्षेप मे सेवा हो सकी यह राजस्थान सेवक सघ के कारण ही सभव हुआ जिसके वे सस्थापक थे।

भरकतिया साहब अपनी अमिट छाप छोड कर गये हैं। यह कभी कल्पना भी नहीं हो सकती थी कि वे इतने जल्दी चले जायेगे। उनके जाने से जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति होना असम्भव है।

मुख्यमत्री श्री बरकत उल्ला खान को भूतपूर्व मत्रियो को आवटित किये गये बगलो के सम्बन्ध मे पत्र

प्रिय श्री बरकत साहब

आपने मुख्य मत्री बनते ही मत्रियो की तादाद कम की और इम्फाला गाडियो का प्रयोग बन्द करके खर्च म कमी करने की ओर ध्यान दिया। उसस सब के मन में प्रसन्नता होना स्वाभाविक था। लेकिन ज्यो ही यह सुनने को मिला कि जितने भी मत्री निवृत हुय हैं उन सब पर करुणा दिखाकर आपने उन्हें नाम मात्र 80 रु माहवार पर व ही बगले किराय पर दे दिय हैं जिनमे व रहत थे, मैं स्तब्ध रह गया।

जब कोई भी व्यक्ति मत्रीमण्डल से अलग हो जाता है तो उसकी स्थिति अन्य विधायकों की ही तरह हो जाती है। इसलिये ऐसे लोगो को बगले छोडकर तुरन्त राजकीय प्रवास भवन मे आ जाना चाहिये और यदि वहाँ स्थान न हो तो अन्य विधायको की तरह 200 रु प्रति माह भत्ता लेकर अपनी स्वय की व्यवस्था करनी चाहिए।

इन्हें बगले देकर आपने गलत उदाहरण उपस्थित किया है और राज्य के खजाने पर भी गहरी चोट की है। अत अनुरोध है कि तुरन्त इनसे बगले खाली करवा कर उसी प्रकार व्यवस्था करायें जिस प्रकार अन्य विधायकों के लिये होती हैं।

यदि आप किसी भी तरह बगले खाली कराने की स्थिति में न हो तो फिर इन बगलो के किराये का अनुमान सार्वजनिक निर्माण विभाग से करवायें और 200 रु प्रतिमाह से जितना भी अधिक बनता हो उनके वेतन में से हर माह काट लें, साथ ही बिजली, पानी का व्यय और फर्नीचर का किराया प्रतिमाह अलग वसूल करें और टेलीफोन के कनेक्शन तुरन्त काट दें।

यदि आप मेरी प्रार्थना पर ध्यान नहीं देंगे तो विधानसभा में मैं इसका पूरा विरोध करुंगा क्योकि यह राज्य के खजाने पर डाका है। ■

प्रेरक प्रसंग

श्री महता का सदैव यह प्रयास रहता था कि जहां तक हो सघर्ष को टालकर समन्वय बिठाया जाए। लेकिन आवश्यक होता तो वे सघर्ष करने को भी तत्पर रहते थे। उनके व्यक्तित्व का एक महत्त्वपूर्ण आयाम निम्न कुछ घटनाओ व प्रसगों के माध्यम से उजागर होता है।

बड़लियास का झण्डाकाण्ड

बडलियास में सेवा सघ की ओर से एक स्कूल चलता था। यहाँ के जागीरदार मेघसिंह मेवाड़ में अपने जुल्मों के कारण विख्यात थे। वे अपने और पड़ौस के इलाके में डाके डलवाते थे। इससे यहां की जनता परेशान थी। उन्होंने बडलियास में क्षत्रिय परिषद का भी गठन किया। इस सगठन के बन जाने के कारण क्षेत्र में जागीरदारों के जुल्म और भी बढ गए। इस ग्राम में 22 नवम्बर 1947 को ठाकुर के हथियारबन्द गिरोह ने सेवा सघ की स्कूल पर लगे राष्ट्रीय तिरगे झण्डे को हटाकर क्षत्रिय परिषद का केसरिया झण्डा लगा दिया। फिर यह गिरोह हैडमास्टर के घर पर पहुंचा और उन्हें घसीट कर बाजार में ले गया। उनके घर से सामान बाहर फिंकवा दिया। क्षत्रिय परिषद ने यह प्रयास शुरु किया कि यदि फिर से स्कूल पर राष्ट्रीय ध्वज लगाया गया तो राजपूत अपनी राजपूती दिखाएगे। यह खबर श्री महता के साथ ही साथ सारे क्षेत्र में फैल गई। यहाँ के जागीरदार ने क्षेत्र के सभी जागीरदारों को बुलाया। फलस्वरुप तारीख 25 दिसम्बर को लगभग 500 जागीरदार बडलियास में इकट्ठे हो गए। इससे पूरे क्षेत्र में भारी भय व आतक छा गया।

सेवा सघ व मेवाड प्रजामण्डल ने ता 28 दिसम्बर को बडलियास के स्कूल में पुन तिरगा झण्डा फहराने का निश्चय किया। श्री महता व उनके साथियों ने गाँव गाँव में यह सूचना पहुचा दी कि सबको नियत तारीख पर बडलियास में तिरंगे झण्डे की रक्षा करने हेतु एकत्रित होना है। ता 28 दिसम्बर को दोपहर तक ग्राम में जनमानस उमड पडा। मेवाड़ प्रजामण्डल के नेता सर्व श्री माणिक्यलाल वर्मा, *रमेशचन्द्र व्यास, रुपलाल सोमाणी, भवरलाल भदादा के अलावा जयपुर से लोकवाणी* के सम्पादक श्री सिद्धराज ढड्ढा व अन्य व्यक्ति वहा पहुचे। सभा का सचालन श्री महता ने किया। नेताओ के प्रेरणादायी भाषण हुए। लोगो में राष्ट्रप्रेम का सचार हुआ। घण्टों सभा चलती रही। जनता में जोश देखकर शस्त्रधारी जागीरदार धीरे धीरे वहा से

खिसकते गए। जनता ने शान से स्कूल पर राष्ट्रीय ध्वज पुन फहरा दिया। तभी स यह गॉव झण्डानगर के नाम से विख्यात हो गया।

मवेशियो की चोरी

सन् 1947–48 मे माडलगढ, कोटडी और जहाजपुर परगने में पालतू पशुओ की चोरियॉ इतनी बढ गई कि कितने ही किसान अपने बैलों की चोरी चले जाने के कारण कृषि कार्यो से और गाय भैंस के चले जाने के कारण दूध दही आदि स मोहताज हो गए। एक भी ऐसा घर नही बचा जहॅं से मवेशी चोरी नही गए हो। श्री महता की स्वय की भैंस भी चोरी चली गई। सारे क्षेत्र में पशुधन की चोरी से निराशा छा गई। लोग इस समस्या को लेकर श्री महता के पास पहुँचे। उन्होंने इस भीषण समस्या की ओर नवगठित सयुक्त राजस्थान के प्रधानमत्री का ध्यान आकर्षित किया। इस समय श्री माणिक्यलाल वर्मा राज्य के प्रधानमत्री थे। सरकार ने तत्काल ही विशेष पुलिस दल गठित किया और जगह जगह शिविर लगाए। साथ ही सेवा सघ के कार्यकर्ताओ ने पशु चोरो को समझाने का प्रयत्न किया। बडी सख्या में अपराधियो ने सकल्प किया कि वे अपने जीवन में फिर कभी भी चोरी नही करेंगे। हजारा की तादाद मे मवेशी अपने पूर्व मालिको के पास पहुचने लगे। किसानो ने राहत की सास ली।

काछोला का तालाब

सन् 52 में अल्पवृष्टि के कारण काछोला के तालाब का पानी निरन्तर सूखता जा रहा था। इससे तालाब की मछलियॉ तडप तडप कर मरने लगी थी। सरकार ने मछलियो के ठेके की निलामी की घोषणा कर दी ।गाव के लोगो ने इसका जबरदस्त विरोध किया। और कहा हम यह ठेका नही होने देगे। बडी अजीब स्थिति पैदा हो गई। तब गाव वालो को समझाने का काम श्री महता को सोपा। सारा गाव एक जगह एकत्र हो गया। इस अवसर पर श्री महता ने अपने भाषण में कहा कि मुझे बडी ही प्रसन्नता है कि गाव के लोगो के मन में इतनी जीव दया है कि ये मछलियो को बचाना चाहते हैं। अगर आप मछलियो की रक्षा ही करना चाहते हैं तो हमे एक दो लाख रुपए एकत्रित कर तुरन्त दो चार बडे कुण्ड बनवाने होगे। और तालाब की मछलियो को उनमें डालना होगा। इस प्रकार यदि हम मछलियो को बचा सके तो हमारे लिये यह एक पुण्य की बात होगी पर अगर हम ऐसा नही कर सकत हैं तो मछलिया के ठेके की रकम से बच्चो का स्कूल बना सकते हैं। ये मछलिया हमारी पूर्वज है जो स्वय आत्मोत्सर्ग कर हमारे गॉव में शिक्षा का मदिर खुलवा देगी। अब आप ही बताइए कुण्ड बनवाए या स्कूल बनाए। सारा गाव इस तर्क से सन्तुष्ट हो गया और शान्ति से

ठेका उठ गया। ठेके से प्राप्त एक लाख रुपए से गाँव में एक स्कूल बन गया, जो आज भी श्री महता की याद को ताजा करता है।

जैतपुरा बाध

श्री महता ने 15 वर्ष बाद सन् 1967 मे पुन सक्रिय राजनीति मे प्रवेश किया। वे माडलगढ क्षेत्र से काग्रेस के प्रत्याशी को हराकर निर्दलीय विधायक के रुप में विधानसभा मे पहुँचे। श्री मोहनलाल सुखाडिया राजस्थान के मुख्यमत्री थे। राजनैतिक मतभेदो के बावजूद भी श्री महता के उनके साथ मधुर सम्बन्ध थे। अत वे अपने विधानसभा काल मे क्षेत्र मे कई महत्वपूर्ण विकास कार्य करवाने मे सफल रहे। उसी काल में जेतपुरा बाध बनवाने की मजूरी हुई। इससे सारे क्षेत्र में खुशी की लहर दौड गई। स्थानीय काग्रेसी नेताओ ने इस योजना का इस आधार पर विरोध करना शुरु कर दिया कि श्री महता के एम एल ए काल में बाध क बन जाने से क्षेत्र मे उनका प्रभाव और अधिक बढ जायगा। फलस्वरुप अचानक बाध का शिलान्यास रोक दिया गया। सेवा सघ द्वारा बाध के उद्घाटन के अवसर पर छपाए हुए निमन्त्रण पत्र काग्रेस कार्यकर्ताओं ने जला दिए। श्री महता ने इस अवसर पर श्री सुखाडिया को जो स्टाम्प पर एक "इकरार" लिख कर दिया, जिसके अश नीचे उद्धरत किए जाते हैं।

'अब मू आपके सामने या इकरार करु हूँ कि इ बाध को पूरो पूरो श्रेय काग्रेस सरकार का मुख्यमत्री माननीय सुखाडिया साहब तथा सिचाई मत्री श्री रामप्रसाद जी लड्ढा ने है। तथा मारी आद औलाद ई बाध का श्रेय की रति भर भी अधिकारी नही हे। और अगर कोई मने श्रेय देवेगा तो उ राज पचा में झूठो है।

यह अखर मारी राजी खुशी अक्ल हूशियारी बिन नशे पते लिख कर मजूर करु हूँ सो वक्त जरुरत काम आवे और अगर हुकम होवे तो इ इकरार नामों की हजारो प्रतिया छपवा कर बटा सकु हू। यो बाध मॉडलगढ के लिऐ वरदान है। इस वास्ते काग्रेस ने तथा आपने सैकडा वर्षों तक लोग याद करेगा। और आप सबकी जय जय कार करगा। आशा है कि आप जल्दी ही हुक्म बक्षोगा ताकि दुख पाछो सुख मे पलट सकेगा। सम्वत् 2025 का सावनी सुदी। ता 26 7 68 विनीत मनोहर सिह महता।यह हास्य भरा पत्र पाकर श्री सुखाडिया ने तत्काल ही बाध का काम चालू रखने के आदेश द दिये और स्वय ने बाध का शिलान्यास किया। सारे क्षेत्र मे खु ी की लहर दौड गई। अन्ततोगत्वा श्रेय तो श्री महता को ही गया।

व्यक्तिगत प्रसग

श्री महता का जीवन अत्यन्त सादगी पूर्ण रहा। उन्होंनें सन् 1938 में ही राजकीय सेवा से त्याग पत्र दे दिया था, और अपने आपको पूरी तरह रचनात्मक कार्य में झौंक दिया था। उन्होंने सेवा सघ जैसी शक्तिशाली सस्था खडी कर दी थी। पर उनके सेवा सघ से जीवन यापन के लिए निर्वाह भत्ता लेने का प्रश्न ही नहीं था। लगभग 8 वर्ष तक उन्होंने अपने गुरु एव सुप्रसिद्ध जनसेवी डॉ मोहनसिंह महता से साधारण सा निर्वाह भत्ता प्राप्त किया। सन् 1946 में राजस्थान सेवा सघ बना। उसके तत्कालीन अध्यक्ष ठक्कर बापा ने श्री महता को लिखा कि उनको निर्वाह के लिये कितने रुपए मासिक की आवश्यकता होगी। श्री महता ने उत्तर दिया कि उनके परिवार में 6 सदस्य है अत उनके लिए 75 रुपये प्रतिमाह पर्याप्त होंगे। राजस्थान सेवक सघ ने तत्काल ही यह राशि स्वीकृत कर दी। इसके साथ ही श्री महता ने डॉ महता से आर्थिक सहायता लेना बन्द कर दिया। यह राशि धीरे धीरे 175 रुपए प्रतिमाह हो गई थी। श्री महता ने बाद में स्वेच्छा से इस राशि को घटाकर 150 रुपये कर दिया और अध्यक्ष को लिखा कि जब अन्य कार्य कर्ता 150 रुपये में काम चला सकते हैं तो मैं भी उतने ही भत्ते से काम चला लूँगा।

मुआवजे का प्रसग

सन् 1936 में श्री महता के एक साथी ने बोगेद के निकट कोठारी नदी के तट पर 16 बीघा जमीन स्थानीय तहसील द्वारा श्री महता के हक में आवटन करवा ली। श्री महता को इसकी तनिक भी जानकारी नहीं थी। उक्त सज्जन लगभग 20 वर्ष तक उस जमीन पर खेती करते रहे और उससे लाभ उठाते रहे। वे ही लगान भी भरते थे। यह भूमि जून 1983 में कोठारी नदी पर बनाए जाने वाले बाध के सम्बन्ध में अवाप्त कर ली कई। अवाप्त अधिकारी ने उस समय श्री महता को लिखा कि वे उक्त भूमि के बदने दूसरी भूमि ले ले अथवा उसके बदले नकद मुआवजा ले लें। श्री महता आश्चर्यचकित हो गए। क्योकि उन्हें तो इस भूमि के आवटन का पता ही नहीं था। उन्होंने तत्काल ही जिलाधीश व सम्बन्धित अधिकारियो को लिखा कि न तो उन्होंनें कभी भूमि आवटन करवाई और न ही उसके बदले जमीन या नकद मुआवजा चाहिए। उन्होने लिखा कि मुआवजे की राशि राज्य कोष में ही समायोजित कर ली जाए और यही हुआ।

जेल के प्रसग

14 सितम्बर 1975 को कई राजनैतिक पार्टियो के सदस्यों के अलावा सर्वोदयी कार्यकर्ता व जयप्रकाश नारायण के अनुयायी के रुप मे श्री महता व उनके

अन्य साथियो को भी आपातकाल में गिरफ्तार किया गया था। और उन्हें भीलवाडा जेल में रख दिया गया था। वहाँ उन्होंने जेल के समस्त नियमों का पालन किया। सरकार ने उन्हें जेल में सुविधा देना चाहा जिसे उन्होंने लेने से अस्वीकार कर दिया। जेल में अन्य राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि छोटी छोटी सी बात के लिए अधिकारियो से उलझ जाया करते थे। तब श्री महता उन्हें समझाया करते थे कि हम यहाँ बडे उद्देश्य के लिए आए हैं। हमें छोटी छोटी बातों पर बखेडा खडा नहीं करना चाहिए। श्री महता व अन्य सर्वोदयी साथियों को एक बार हथकडी लगाकर मजिस्ट्रेट के सामने प्रस्तुत किया गया। इसकी समस्त राज्य में जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई और गृहमत्री व मुख्यमत्री ने आदेश दिए कि यह नहीं होना चाहिए।

श्री महता से स्थानीय मजिस्ट्रेट ने पूछा कि आप पर पुलिस ने यह इल्जाम लगाया है कि औज पूर्ण नारे लगाए और शान्ति भग की। क्या यह जुर्म स्वीकार है? उत्तर में श्री महता ने कहा कि मैं सत्य अहिंसा व सयम में विश्वास करता हू अत मुझे यह जुर्म स्वीकार नहीं है।

हाजिर जवाबी

श्री महता हाजिर जवाबी के लिए मशहूर थे। सन् 52 की बात है वे एक रात्रि को रैल में यात्रा कर रहे थे। वे थोडे अस्वस्थ थे। अत पूरी सीट पर सो गए। ट्रेन में अधेरा था। एक स्टेशन पर एक यात्री उनके कम्पार्टमेन्ट में आया और श्री महता को उठाने लगा। श्री महता ने कहा "अनदाता मैं तो महतर हूँ।" बस इतना कहते ही वह आदमी श्री महता की पटरी छोड कर खडा हो गया। अब जो भी उस डिब्बे में चढते, उनको वह कह देता कि अमुक पटरी पर मत जाना उस पर महतर सोया हुआ है। इस प्रकार न तो वह आदमी स्वय सोया और न ही किसी को श्री महता के पास बैठने दिया। श्री महता ने रात्रि भर आराम से नींद निकाली।

भीलवाडा में होली से होली के नहावण तक अर्थात 13 दिनों तक होली खेली जाती थी। एक बार जब श्री महता 16-17 वर्ष के थे सफेद चूडीदार पाजामा व शेरवानी पहनकर निकले रहे थे कि रग छाटने वाले उनकी तरफ दौडे। तभी वे तपाक से बाले " अल्ला की कसम, रग डाला तो गजब हो जायगा।" बस इतना सुनना था कि लोगों ने समझ लिया कि यह तो मियाँ (मुसलमान) है । उन दिनों हिन्दू मुसलमानों पर रग नही डालते थे क्योंकि मुसलमानों के अनुसार यह उनके मजहब के खिलाफ था। श्री महता ने अपने कपडों को होली के रग से बचा लिया।

सन् 1951 में प्रदेश कॉंग्रेस कमेटी के चुनाव के समय माडलगढ क्षेत्र में श्री महता की तरफ 15 सक्रिय सदस्य व उनके प्रतिद्वन्द्वी श्री तेतमल बापना के पक्ष में 12

थे। श्री वापना ने लाडपुरा के एक सक्रिय सदस्य को तोडकर अपनी तरफ कर लिया। वह सदस्य पिछडी जाति का था। जब कि श्री तेजमल वापना सवर्ण थे। श्री वापना ने उक्त सदस्य को पिछडी जाति का होने के कारण नीचे बैठा दिया और वे स्वय कुर्सी पर बैठ गए। श्री महता ने अवसर का लाभ उठाया। उन्होने उक्त सदस्य के स्वाभिमान को जगाया। वह लौटकर पुन श्री महता के खेमे में आ गया।

बागी लक्ष्मण सिंह का हृदय परिवर्तन

अजमेर जिले के खरवा ग्राम मे जन्मे अपने समय के कुख्यात बागी लक्ष्मण सिंह को सन्यासी व गाधीवादी लक्ष्मण सिंह बनाने में श्री महता का महत्वपूर्ण योगदान रहा। ठाकुर लक्ष्मण सिंह जिस दिन से श्री महता के सम्पर्क में आए उसी दिन से परिवर्तन की शुरुआत हो गई। श्री महता ने विनोबा भावे व जयप्रकाश नारायण को पत्र लिखकर उनसे समर्पण करवाया। राजस्थान सरकार से आग्रह कर सारी स्थिति को सभाला। उसी क्षण से उनका गाधीवादी जीवन प्रारम्भ हो गया। वे नियमित सूत कातते थे। जीवन भर खादी वस्त्र धारण किए। जगलो में रहे। अहिंसा का प्रण लिया। अपना जीवन दीन हीन की सेवा में बिता दिया। सारे क्षेत्र के लोगो से उनका घनिष्ठ परिचय होता गया। वे मृत्यु तक श्री महता के क्षेत्र में ही रहे। रिश्ता अत्यन्त गहरा था। चुनाव मे इस रिश्ते को उछाला गया पर कही कोई फरक नही पडा। ■

डॉ. मोहन सिंह महता के साथ विचारों का आदान प्रदान

स्व डॉ मोहनसिंह महता के पत्र श्री महता के नाम

सन् 1928 से ही मनोहर सिंह महता भाई साहब डॉ मोहनसिंह महता के सम्पर्क में आए। यह सम्पर्क धीरे धीरे गुरु शिष्य में बदल गया जो मृत्युपर्यन्त बना रहा। सन् 43 स सन् 85 तक भाई सा द्वारा श्री महता को लिखे गए कतिपय पत्रो का साराश यहा दिया जाता है। ये पत्र न केवल श्री महता के लिए प्रेरणा स्त्रोत थे वरन् भावी पीढियो के लिए श्री चिन्तन शील होगे।

1 15 10 46 बम्बई

तुमने अपने चरित्र बल निजी प्रभाव और सलग्न परिश्रम से बीगोद म हिन्दू मुस्लिम झगडा बचा लिया यह जानकर मुझे वडी ही खुशी हुई। हम लोगों को ऐसी ही वृति रखनी चाहिए। यह काम तुमने अभी के लिए ही नही किन्तु हमेशा के लिए किया है। तुमने समाज को बडी भारी आफत से बचाया है मुझे इसकी बहुत ही खुशी है। तुम्हे बहुत बहुत मुबारक बाद।

2 14 1 47 बम्बई

तुम्हार सवा सघ की उन्नति ओर सफलता से मेर मन को बडा आनन्द है। समाज निर्माण का वहुत ही सच्चा रास्ता चुना है। ऐसी लगन व जोश से वहुत कम लोग काम करने को तैयार है।

3 16 9 48 बम्बई

तुमको मेरी सलाह है कि भावुकता मे अपने आपको बहा मत लिया करो। इस दोषपूर्ण समाज मे निर्दाष ओर सर्वोच्च श्रेष्ठ स्थिति अथवा व्यक्ति आसानी से नही मिलते हैं। तुम एक समाज सेवी हो तुम्हें धीरज नही त्यागना चाहिए। बराबर सविनय ओर अपनी खुद की सच्चाई रखते हुए प्रयत्नशील रहना चाहिए। तुम्हारे चरित्र क लिए मुझ बडी श्रृद्धा है। इसस तुम्हें तो यह सयम सीखना ही चाहिए।

4 5.5 1955 उदयपुर

धाकड खेडी मे जो उच्च और महत्वपूर्ण प्रयोग तुम करने जा रह हो, उसमे तुम्हें सोलह आने सफलता मिले, यह मेरी हार्दिक अभिलाषा है। तुम सद्भाग्य वाले हो कि तुम्हारे सामने ऐसा अच्छा अवसर आया है। सारे देश में चार ही ऐसे केन्द्र हैं, इसलिए यह तो बडी ही विलक्षण और अपूर्व महता वाली बात है।

5 1.5.56 आस्ट्रिया

भीलवाडा क्षेत्र में तुम्हारी प्रतिष्ठा बढ रही है यह जानकर बहुत खुशी होती है। तुम्हारे मागने पर सब सेवा सघ को चन्दा देते हैं, यह बहुत महत्वपूर्ण बात है। सच्चे व शुद्ध रचनात्मक कार्य का यह चमत्कार है। तुम्हारी समाज सेवा स्वर्ण अक्षरों मे लिखने योग्य होगी।

6 12 7.56 रोम

धाकड खेडी का काम अच्छा चल रहा है यह जानकर बडी खुशी हुई। उसमे खूब गहराई से चतुर्मुखी विकास कार्य होना चाहिए। उसको आदर्श गाव आर्थिक ही नही बल्कि नैतिक दृष्टि से बना दो तो सारे चौखले में उसका व तुम्हारे कार्य का प्रकाश फैल जायेगा, तुम्हारा जीवन सार्थक है कि ऐसा अच्छा सामाजिक कार्य कर रहे हो।

7 22 1 57 बम्बई

तुम्हारे विचार जो गाव के सामाजिक कार्य के बारे में है उनके पीछे दीर्घ काल का अनुभव परिश्रम व त्याग है। मैं अपनी राय तुम्हें सदा देता रहा हूँ। तुम्हारे स्नेह व विश्वास के लिए मैं तुम्हारा उपकार सदा मानूगा। मैं अपनी ओर से तुम्हारे प्रति जो स्नेह रखता आया हूँ उसे निबाहने का सदा ध्यान रखूगा।

8 22 10 66 नई दिल्ली

वैसे तो चुनाव के पचडे मे तुम्हारा फैसला मुझको बहुत अच्छा नही लगा। तुम्हारे जैसे सच्चे, त्यागी, सेवाभावी पुरुष के स्वभाव के अनुकूल नहीं दीखता। परन्तु यदि खडे भी होवोगे तो मुझको विश्वास है तुम्हारा सारा व्यवहार तथा कार्य शुद्ध होगा। तुम कभी भी अनुचित बात हरगिज नहीं करोगे।

9 29 7 71 उदयपुर

राजस्थान सरकार में भ्रष्टाचार की जो बातें सुनने को मिलती थी वे तो वास्तव में बडी दर्दनाक थी। अब देखना यह है कि स्थिति में सुधार होता है या नही ।

10 16 11 उदयपुर

जिस समाज में आज हम बैठे हैं सास लेते हैं उसका बहुत बुरा हाल है। सम्पूर्ण ससार में राजनैतिक जीवन विषैले हैं। अत उसे बहुत दुखी होकर अपनी शक्ति को क्षीण मत करो। यह दुनिया बडी विचित्र है। हम हँसते हैं तो जग हसी में साथ देता है। हम दुखी होते हैं तो रोते हैं हम अपने आपको अकेले पाते हैं। दुनिया की चाल ही ऐसी है पर हमारी आशा नहीं टूटनी चाहिए।

11 2.8.73 बगलोर

शराब बन्दी के आन्दोलन में तुमने सराहनीय परीक्षण किया है। तुम अपने पत्र पर सच्चाई तथा साहस से डटे हुए हो। तुम्हारी सार्वजनिक सेवा सदा ही निष्ठा त्याग और सच्चाई पर आश्रित रही है। तुम धन्य हो।

12 20.8 75 उदयपुर

तुम्हारे जन्म दिन पर मेरी हार्दिक बधाई व शुभकामना स्वीकार करना। तुम शतायु हो तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा रहे और समाज की इसी लगन सच्चाई तथा निष्ठा से सेवा करते रहो। मैं तुमको अपने स्नेह व साथ में अत्यन्त निकट मानता हूं। मैं तुम्हें चरित्र, निस्वार्थ भाव, व्यक्तिगत गुणों व सार्वजनिक हित की चिन्ता में बहुत ऊंचा और आगे मानता हूँ। मैं तुम्हारे लिए मन में बडी प्रतिष्ठा रखता हूँ। तुम मेरे लिए बहुत ही प्रिय हो यह तुम अच्छी तरह जानते हो। तुम्हारे लिए मेरे मन में श्रद्धा है। आस्था है प्यार है।

तुम्हारे चरित्र की सैकडों स्त्री पुरुषों पर अमिट छाप पडी है। इसको देखकर गर्व होता है।

13 22 1 78 उदयपुर

आज कल विधाभवन को लेकर जो कुछ यहाँ हो रहा है मेरे ऊपर व्यक्तिगत कीचड उछाला जा रहा है। उसके लिए तुम किसी से बिगाड मत करना। तुम्हारी सहानुभूति तथा ऐसा उदार भाव का मुझमें विश्वास मेरे लिए बडा बल है। मैं तुम्हारी कृपा, सवेदना तथा तुम्हारे स्नेह के लिए बहुत आभारी हूँ।

जो काम महाराणा साहब की सरकार और ब्रिटिश पोलिटिकल अफसर कई वर्षों की नाराजगी के उपरान्त नहीं कर सके वह स्वतन्त्र भारत मे हमारे साथ होरहा है । राजस्थान सरकार ने हमें नीचा दिखाया। हमारे खिलाफ उन्होंने अन्यायपूर्ण और अनैतिक आदेश दिया। विधाभवन जिये या मरे अन्याय और आतक के सामने सिर नही झुकाना चाहता हूँ। मैं नम्र रहूँगा पर गिरुँगा नही। आज हम कैसी परिस्थिति में

भिन्न है जरा मार्ग बहुत कठिन हो गया है। पर हमारे चरित्र और धैर्य की परीक्षा है। हम धैर्य रखना तो प्रयास करते रहेंगे।

14 1.4.81 उदयपुर

समाज की वर्तमान स्थिति के बारे में हम सब लोग दुखी हैं और समझ में नहीं आता क्या करें? चारों ओर स्वार्थ लोभ और पाप का बोलबाला है। जो कुछ भी थोडी बहुत अच्छी बातें हो रही हैं उनमें संतोष करना चाहिए।

15 20.8.1992 उदयपुर

तुमसे पिछले 40 वर्षों में जो प्रेम और विश्वास मुझको मिला है उसके लिए मैं किन शब्दों में अपना धन्यवाद तुमको दूं। जो पहले बहुत निकट थे जिनके साथ और सहयोग का सार्वजनिक कार्य में पूरा और खुला आश्वासन था वे आज दूर हो गए हैं। इस अनुभव के बाद तुम्हारी कृपा की मैं जितनी सराहना करूँ वह थोडी है।

16 17.9.84 उदयपुर

तुम्हारे पत्र का मुझे सदा इन्तजार रहता है। तुम्हारी बोली तुम्हारी ठेठ मेवाडी तुम्हारी कहावतें और तुम्हारे गीत सुनकर बडा मजा आता है। अपने आपको स्वस्थ रखने के लिए काम करते रहना अच्छा होता है। हम समाज की वेदना मिटाने में यथा शक्ति लगे रहें यही धर्म है।

वैचारिक स्तर पर श्री महता डॉ मोहन सिंह महता को हर विषय पर पत्र लिखा करते थे। उनसे मार्गदर्शन लेते थे और काम को नई दिशा देते थे। भाई साहब को लिखे गए कतिपय पत्र यहां प्रस्तुत है।

पूज्य भाईसाहब
सादर प्रणाम ।   दिनाक 21.4.53

आपका पत्र मिला। गोयल साहब भी लौट आये हैं। मैं भी दो दिन धाकड खेडी रहकर परसो ही लौटा हूं। सादिक अलीजी के धाकड खेडी आने के पश्चात् ही हमें नये सिरे से फिर विचार करना चाहिए। अच्छा है वे चले आये।

कल मैं सहकारी समिति भादू के उत्सव में गया था मुझे विनोबा का विचार फैलाने में इतना आनन्द आता है कि जहाँ कही भी जाता हूँ उसी बात को जनता के सामने रखता हूँ। मेरे सामने मेरा मकसद और ग्राम का चित्र स्पष्ट है।

कल सभा में जहाँ मेरी कई बातों को पसन्द किया वहाँ कुछ बातें अटपटी लगी। लेकिन मुझे वह बात इतनी जरुरी लगती है कि कहे बिना नहीं रहा जाता। इसलिये आपसे मार्गदर्शन चाहता हू कि हमें कहनी चाहिये या नहीं।

आपको यह तो मालुम ही होगा कि कँग्रेस ने पार्टी आधार पर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चुनाव लडन का निश्चय किया है। और तहसील पचायतों का चुनाव भी पार्टी के आधार पर ही हुये हैं। जब तहसील और डिस्ट्रिक्ट के चुनाव पार्टी के आधार पर लडे जाते हैं तो पचायतों के चुनाव भी पार्टी के आधार पर ही लडे जाने जरुरी हो जाते हैं। यदि ये लोग पार्टी का नाम न भी दे तो जो जिस जिस पार्टी से सहयोग रखते हैं और सदस्य होते हैं उन्हें ही खडा किया जाता है।

परिणाम यह आ रहा है कि एक ही गाँव में काँग्रेस, प्रजा समाज वाद जन सघ और कम्यूनिस्ट अपने अपने झण्डे गाडते हैं। और सब ही पार्टियो के सदस्य चुने हुये आते हैं जो बुरी तरह लडते हैं और ग्राम में कोई भी काम नही हो पाता।

जहाँ हम यह चाहते हैं कि सारा गाँव एक ही प्रेम की रस्सी में बधा हुआ हो वहाँ पार्टियो के कारण स्थिति बदल जाती है और निर्णय सर्व सम्मति से नही होते।

गाँवो में आज कल यह रोग तेजी से प्रवेश कर रहा है। और इसको रोकना अत्यन्त जरुरी है। लेकिन जब हम भूदान का प्रचार करने जाते हैं तो काग्रेस प्रजा समाजवादी और अन्य किसी दल के लोग भी हमारे साथ होते हैं, यदि हम यह कहते हैं कि ग्राम वासियो को किसी भी प्रकार राजनैतिक दल का सदस्य नहीं बनना चाहिये तो सब ही पार्टी वालों को बहुत बुरा लगता है। और नहीं कहतें हैं तो मन को लगता है कि जिस खराबी से हमें गाँव को सावधान करना चाहिये हम नही कर रहे हैं। मुझे तो पूर्ण रुप से लगता है कि ग्राम में सर्वोदय लाना है और गाँव को सुखी बनाना है तो गाँव से पार्टियो को दूर ही रखना होगा। कृपा करके प्रकाश डालें कि क्या करें क्या, हम इसी कारण से कि राजनैतिक दलों के लोग हमें सहयोग देते हैं यह बात न कहें?

भाई साहब की अन्तिम वर्षगाठ पर उनके पुत्र श्री जगत महता को लिखा गया पत्र

दिनाक 17 4 85

प्रिय श्री जगत

कर्मयोगी पूज्य भाई साहब के सम्पर्क में मैं आज से लगभग 58 वर्ष पूर्व आया था। इनके वचनों का मुझ पर ऐसा असर हुआ कि मैं बापू के बताये हुये मार्ग पर निरन्तर आगे बढता रहा। भाई साहब की शिक्षा ने मेरा जीवन ही बदल दिया। और

इस कहावत को अपने मन में उतार कर कि "भाले से बाटी नहीं सेकी जा सकती" गा ँव में ही जाकर बैठ गया जिसके फलस्वरुप सैकडों गाँवों से मेरा जीवित सम्पर्क हो गया और वे सब मुझे अपने परिवार का ही मानने लगे।

सामाजिक कुरीतियों का तथा राज्य द्वारा होने वाले अन्याय का दृढता से सामना करना, गाँव गाँव दैनिक तथा प्रौढशालायें चलाकर उनसे ही आर्थिक मदद प्राप्त करना, जगह जगह स्कूल भवन बनाना, हिन्दू मुस्लिम एकता को दोनों समुदायो ने इस प्रकार मन में उतारा कि एक भी मुसलमान माडलगढ क्षेत्र से पाकिस्तान नहीं गया। शराब बन्दी के लिये निरन्तर प्रयत्न करते हुये लोगों को शराब तिलक दहेज, मृत्युभोज जैसी भयकर कुरीतियों से छुटकारा दिलाने का प्रयत्न किया।

भाई साहब की शिक्षा का ही परिणाम था कि वहा ँ की जनता ने अपने ही साधन तथा शक्ति से मुझे सन् 1967 तथा 77 में विधानसभा में भेजा।

यह भाई साहब की शिक्षा का ही परिणाम था कि बडा से बडा प्रलोभन भी मुझे विचलित नहीं कर सका और अन्त तक सन् 67 में जिस तरह निर्दलीय बनकर गया था अपने उसी स्वरुप से वापस आया।

इस समय हालात एक दम विपरीत हैं और यह दोहा पूरी तरह लागू हो रहा है।

मद्य चले, जूआ चले, गाया कटे अपार।
काढ दियो गाधी अठु, गाधी ने ललकार।।

इदिरा गाधी के परिवार ने मोहनदास गाधी को पूरी तरह निकाल दिया है। पर यदि देश को बचाना है तो बापू का पथ ही केवल मात्र आधार है। अत इस बात को पूरी तरह समझना होगा कि इस देश की तो मूल पूजी ही नैतिकता है।

कर्मयोगी भाई साहब लम्बी आयु प्राप्त करके बराबर मार्गदर्शन करते रहे ईश्वर से यह प्रार्थना करता हुआ उनके चरणों में प्रणाम करता हूँ।

यदि आप उचित समझें तो उनके शिष्य के श्रद्धा के सुमनों को सभा में पढकर सुना दें। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि मेरा शेष जीवन पूरी तरह बापू के बताये हुये मार्ग पर लगा रहें। भाई साहब का आशीर्वाद सम्बल है।

डॉ मोहन सिंह जी महता को श्रद्धा सुमन दिनाक 25.5.85

भाई साहब के नाम से प्रसिद्ध शिक्षाविद् डा मोहनसिंह महता जैसे कर्मयोगी से आज से लगभग 58 वर्ष पूर्व मेरा सम्पर्क हुआ और इनकी शिक्षा का मुझ पर ऐसा असर पडा कि मैं निरन्तर बापू के पथ पर आगे बढता रहा।

पूज्य भाई सा डा महता के दाह सस्कार के तुरन्त बाद सागोनर लौट आया। उनका शरीर तो जाता रहा पर इस समय अत्यन्त दु खी मन से यहा वैठा हूँ। मेरे तो पिता ही आज गये हैं। ऐसा अनुभव कर रहा हूँ। मैं यह अनुभव कर रहा हू कि मैं केवल मात्र दर्शन से ही वचित नही हुआ हूँ वरन् ममता मई माता तथा पिता के प्यार मे भी वचित हुआ हूँ। उनके मुझ पर इतने उपकार है और उन्होंने मुझे इतना दिया है कि उनसे उऋण होना असम्भव है।

जी करता है कि खूब रोकर अपने मन को हल्का करलू, पर दूसरे ही क्षण मैं यह अनुभव करता हू कि वे मर नही हैं। इन शब्दो मे कितना वजन है कि "मरा नही वही कि जो जिया न अपने लिये।" वे तो समाज के लिये ही जिये थे।

ऐसी मौत तो धन्य है जो खुद तो हसता हुआ जाये और हजारो की आखो मे आँसू बहे।

यदि मै उन पर सच्चे माने से श्रद्धा रखता हू तो मुझे यही व्रत लेना है कि उन्होने मुझे जो कुछ सिखाया है, उस पर पूरी तरह चलूँ।

मैं इस व्रत पर पूरी तरह चलने का पूरा पूरा प्रयत्न करूँगा। पर वे तो महान कर्मयोगी थे। और सब सहन करने की शक्ति रखते थे। पर मुझे तो उनकी याद बहुत सता रही है। और इस समय भी मेरे सामने खडे हैं। पीडा को कैसे कम करूँगा।

वे शिक्षा विद् थे। और बडे से बडे पदो पर रहे थे। यह सब बहुत महत्व की बात नही थी। पर अत्यन्त महत्व की बात तो यह थी कि उन्होंने सैकडो कार्यकर्ता तैयार किये थे। और हर क्षेत्र में होने वाले अन्याय का अहिंसक ढग से दृढता से सामना करना सिखाया था। और वे खुद जन्मभर कथनी तथा करनी को अलग नही होने देते थे। उनके बताये हुए मार्ग पर चलूगा इसी व्रत के साथ उन्हें शत् शत् प्रणाम।

■

अन्तिम सन्देश

श्री महता ने अपना 79 वा जन्म दिवस दिनाक 29 जुलाई 1990 को सवाई मानसिंह अस्पताल जयपुर के कॉटेज वार्ड में अपने परिवार व मित्रो के बीच मनाया। उन्हें वहा लगभग 5 सप्ताह पूर्व भर्ती कराया गया था। वे केन्सर जैसे असाध्य रोग से पीडित थे। पावो ने काम करना बन्द कर दिया था। इसके बावजूद उन्होने लम्बी बीमारी के दौरान बडे धैर्य का परिचय दिया। वे पूर्व की भाति मिलने आने वाले मित्रो व परिजनो से हसी मजाक पूरे जोश व उत्साह के साथ करते रहे। उन्होने अपनी तरफ स कभी यह आभास नही होने दिया कि उन्हें किसी प्रकार की पीडा है। उनकी इच्छा पर उन्हें ता 27 अगस्त को चिकित्सको ने अस्पताल से छुट्टी दे दी। वे वहा से अपनी पुत्री रेणुका क जयपुर स्थित निवास पर आ गए। उन्होनें वहा अपनी शैय्या से सामाजिक कार्यकर्ताओ क लिए एक सन्देश छोडने की इच्छा प्रकट की। यह सन्देश एक कैसेट में भरा गया। यह 3-4 बार में भरा जा सका क्योकि एक साथ इतना नही बोल पाते थे। थक जाते थे। जो सन्देश उन्होनें दिया वह अक्षरस नीचे दिया जाता है।

रोग शैय्या पर लेटे हुए आज मैं एक अनुदेशक के नाते विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों मे कार्यरत मित्रो को अपना सन्देश देना चाहता हूँ। मैंने निरन्तर 60 वर्ष की सामाजिक सेवाओ के बाद शायद यह सन्देश देने का अधिकार प्राप्त कर लिया है। ग्रामीण क्षेत्रों में काम करने वाले कार्यकर्ता ग्राम में स्वावलम्बन लाना चाहते हैं। वे चाहते हैं गाव में एकता हो बडे,बूढे बालक सभी पढ लिख जाएँ, मृत्युभोज बालविवाह जैसी कुरीतियाँ दूर हो। पर ग्राम विकास के इस महान यज्ञ मे उतरने के पूर्व कार्यकर्ता को अपने को एक ऐसे ढाँचे मे ढालना होगा जिससे उसकी कथनी व करनी में अन्तर न रहे। यदि वह कहता कुछ और है, और करता कुछ और है तो उसकी बातों का गाव में कोई असर होने वाला नही है। मरे मित्र कवि ने ठीक ही कहा है।

बात करे तू ओर अर, चाल चले तू ओर।
जनता तव सुनती नहीं, मती मचावे शोर।।
कथनी करनी मायने, जदी आतरो होय।
उ नर को मन सू कदी, आदर करे न कोय।।

अत हमें जो बात कहना है उसे स्वय के जीवन में उतारना है और समर्पित होकर काम करना है। कार्यकर्ता को बिना इसकी चिन्ता किए कि उसे जीवन यापन के लिए क्या मिलता है और क्या नहीं उसे गाव के लिए समर्पित हो जाना चाहिए। और गाव के लोगों में भगवान के दर्शन करने चाहिए। वह गाव से सेवा के आधार पर जुडा है न कि निर्वाह भत्ते से, यह बात उसे सदैव ध्यान रखनी चाहिए।

सामाजिक कार्यकर्ता जानता है कि मृत्युभोज के कारण गाँवों में परिवार के परिवार बर्बाद होते जा रहे हैं। अत वह ग्रामवासियों कोसमझाता है कि मृत्युभोज मत करिए पर यदि कार्यकर्ता स्वय मृत्युभोज में शामिल होता है तो भला उसके उपदेश को कौन सुनने वाला है। मृत्युभोज के सम्बन्ध में गाव वालों के प्रश्नो के जवाब हमें ठण्डे दिमाग से देने पडेगें। लोग कहते थे कि हम मृत्युभोज नहीं करें तो क्या हम अपने मा बाप को "शमशान में लौटने देत रहें" । मे उन्हें उत्तर देता था कि जब वे जिन्दा थे, मैं कहा करता था कि उनकी सेवा करो, बीमारी में दवा दारु करो और उन्हें दूध पिलाओ तो आपकहते थे कि हमारे पास पैसा नहीं है। जब पैसा नही है तो फिर मरने पर भोज क्यो ? मैं कहा करता था

जीता तो माँ बाप का, हीडा करिया न लाल।
मरियाँ कीदा मालपा, गगाजी मे गाल।।

जब वे जीवित हैं तब तो हम उनकी सेवा नही करते और जब मर जाते हैं तो मृत्युभोज में हजारों रुपये बर्बाद करते हैं और पीढियों तक कर्जदार हो जाते हैं। इस कुरीति को तोडना अत्यन्त जरुरी है।

सामाजिक कार्यकर्ता का हर घर से जीवित सम्पर्क होना चाहिए। किसी परिवार में कोई बीमार हो तो उसे सम्भालना चाहिए। गाँव के लोगो में अथवा किसी परिवार में स्वय मे आपसी मतभेद अथवा झगडे हो तो उसे सूझबूझ के साथ निबटाया जाना चाहिए। उसे गाव में निरक्षर लोगो को प्रौढ शाला में जाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इसके लिए ग्यारस व अमावस को जबकि किसान व मजदूर खेती वाडी अथवा मजदूरी से छुट्टी रखता है, भजन कीर्तन आदि का आयोजन कर उन्हें आकर्षित करना चाहिए। उसे चादनी रात में खेलों व नाटकों का आयोजन कर गाव वालो के साथ अपना घरोपा (सम्पर्क) बढाना चाहिए। इससे उसे अपनी बात गाव वालों के दिल तक पहुचाने के अवसर मिलेंगे।

ग्रामीण क्षेत्र में काम करने वाले को गाव में ही रहना होगा। अगर वह नहीं रहता है तो भाले से तो बाटी नही सिकेगी। बाटी सेकनी है तो झगरे (आग) के पास बैठना होगा। तभी गाव में काम होगा। गाव में काम करना अत्यन्त कठिन काम है। चट्टान से

सिर टकराने के समान है। यदि वह गाव में समर्पित हो जाए मीरा की तरह बावला हो कर काम करे, गाव के एक एक व्यक्ति से जीवित सम्पर्क हो तो वह क्या नहीं कर सकता ?

सामाजिक कार्यकर्ता का कर्तव्य है कि वह न केवल समूचे गाव की वरन् परिवार व व्यक्ति विशेष की भी आवश्यकता पडने पर सहायता करे। इसके लिए वह गाव का अपना एक फण्ड बना सकता है। इस फण्ड के लिए हर फसल पर हर परिवार को एक सेर अनाज देने के लिए तैयार कर सकता है। इस फण्ड के द्वारा वह सकट से पीडित परिवारो की सहायता कर सकता है। वह बीमार को पास के अस्पताल मे भेजकर उसकी दवा दारु की व्यवस्था कर सकता है। कोई स्कूल वाला बच्चा यदि स्कूल की फीस और किताबो की व्यवस्था नहीं कर सकता हो तो इस फण्ड के द्वारा ऐसे बच्चो की समस्या का समाधान हो सकता है। पूर्णयता निराश्रित वृद्धो की मदद की जा सकती है। इसी प्रकार गाव में छोटी मोटी विपदाएँ उपस्थित होने पर इस फण्ड का उपयोग किया जा सकता है।

गाँव को बर्बादी की ओर ले जाने वाली दूसरी प्रवृति है शराब की। यदि गाँव मे शराब की दुकान है तो गाव वालो का प्रबल मत तैयार कर उसे हटाने का प्रयास करना चाहिए। आज कोई भी सरकार गाँव वालो की इच्छा के विपरीत शराब की दुकान नहीं रख सकती।

गाँव के किसान व मजदूर बोहरो के शिकजे में फसकर पीढी दर पीढी कर्ज से दबे रहते हैं। उन्हें इस प्रकार के कर्ज से मुक्ति दिलाने के लिए सहकारी बैंक व इसी प्रकार की सस्थाओ से कर्ज दिलाना चाहिए। ऐसा करते हुए उसे यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कर्ज की पूरी रकम सम्बन्धित व्यक्ति को मिले। उसे सस्थाओ के कर्जे का समय पर अदायगी का भी साथ साथ ध्यान रखना चाहिए। ताकि एक और सस्था का पैसा भी न डूबे तो दूसरी और कर्जदार भी समय पर ऋणमुक्त हो सके। ध्यान रहे कार्यकर्ता केवल उपदेश मात्र देने वाला नही है। वह गाव का सेवक है सलाहकार है और गाव के विभिन्न परिवारों का अविभाज्य अग है।

मैंने अपने गुरु स्वर्गीय डा मोहनसिंह महता की प्रेरणा से गावो में काम करना शुरु किया। उन्होंने मुझसे कहा कि केवल मात्र बातो से व उपदेश से ग्राम सेवा नही हो सकती। मुझे गाव में जाकर बैठना चाहिए उनके बीच में रहकर काम करना चाहिए। उनकी सलाह का मेरे दिल पर गहरा असर हुआ। मैं गाव मे जाकर बैठ गया। कई बार गलत फहमियो के कारण मुझे गाव वालों के विरोध का सामना भी करना पडा पर मैं अपने मार्ग स विचलित नही हुआ। मैं गाँव मे ही खप गया। इसका परिणाम यह हुआ कि गाँव वालो से मुझे जीवन भर अपार स्नेह मिला। उन्होंने मुझे

बाध्य कर सन् 1967 व 1977 मे विधानसभा की सदस्यता के लिए चुनाव में खडा किया। उन्होंने ही पैसे की जुगाड बैठाई। वे स्वय ही प्रचारक बन गए। फलस्वरुप मैं आसानी से एक ऐसे क्षेत्र से पहली बार निर्दलीय व दूसरी बार जनता पार्टी की हैसियत से विधायक चुन लिया गया जो काग्रेस का सुदृढ किला माना जाता था।

मैंने वही कहा जिसे मैंने स्वय जीवन में उतारा। अन्याय का मुकाबला किया और अहिंसक ढग से लोगो को भी अन्याय का मुकाबला करना सिखाया। एक महत्त्वपूर्ण बात सदा याद रखनी चाहिए कि हमें अन्याय को कभी चुपचाप नहीं सहना चाहिए। यह दोहा अत्यन्त काम का है –

जगत माय सबसू बड़ो, एक भयकर पाप।
सहता रहणो जुल्म ने, आख मीच चुपचाप।।

मैंने रात्रिशालाओ का काम सन् 25 में कैसे प्रारम्भ किया ? में स्काउट था तब यह जरुरी था कि हर स्काउट प्रतिदिन एक अच्छा काम करें और उसे डायरी में लिखले। मैंने सोचा कि ऐसा काम करो जिसमें रोज रोज काम नही ढूढना पडे। मैं उदयपुर में एक पिछडे वर्ग की बस्ती में रहता था वहाँ मैंनें मोहल्ले के युवको को इकट्ठा किया। उनके साथ गाने गाना और खेल खेलना प्रारम्भ किया। उस समय मैं 8वीं कक्षा में पढता था। मैंने उन युवको को पढाना प्रारम्भ कर दिया। यह कार्यक्रम इतना प्रभावशाली रहा कि बहुत लोग इस काम को देखने आने लगे। जब मैं यहा से दूसरे मोहल्ले में चला गया, तो वहा भी मैंने यही काम प्रारम्भ किया। अन्य लोगो के मन में भी यह काम करने की इच्छा जागृत हुई।

मैं जब खटवाडे में काम करता था तो मैंने वहाँ बगार प्रथा को देखा। कोई 25 रुपए में और कोई 100 रुपये में गिरवी था और इसके बकायदा कागज बने हुए थे। एक कागज मे एक लडके के पिता ने एक साहूकार को लिखकर दिया था कि मैंने अपने लडके सेवा राम को 100 रुपये मे गिरवी रखा है। जब तक 100 रुपये नही चुकेंगे सेवा राम आपके यहा काम करता रहेगा। हमने सेवा सघ द्वारा साहूकार को रुपए चुका दिए और सेवाराम को गिरवी से मुक्त कराया। सेवा सघ ने उसे पढाया वह मैट्रिक पास हो गया। आज वह लडका कॉपरेटिव में बडे पद पर कार्यरत हैं।

गाँव के झगडे होते थे तो हम उन्हें वही निपटाते थे। गाव में छुआछूत के बारे में लोगों को समझाते भी थे और हरिजनो की पंक्ति में बैठकर खाना खाते थे। इससे धीरे धीरे बदलाव आने लगा। कोई बुराई केवलमात्र एक आध बार कहने से नही मिटेगी। बार बार हथोडा पटकने से चेतना आयेगी और समाज पर उसका प्रभाव पडेगा।

मैं सबसे अधिक बल पढाई पर देता था। जब तक पढाई नहीं होगी तब तक स्थिति का भान नहीं होगा और अन्याय का मुकाबला करना नहीं आएगा। उनमें हिम्मत नही आएगी। हालत नही सुधरेगी। इस तरह रात्रिशालाओ के साथ सेवा सघ के माध्यम से दिन की शालाए भी खोली। लोगों को यह भान होने लगा कि हमको पढना चाहिए। तभी हम अन्याय का मुकाबला कर सकेंगे। कई लोग आगे पढे और उनका झुकाव निरन्तर पढाई की तरफ बढता गया और चेतना का विकास हुआ।

मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि गाव में चेतना लाने के लिए महिलाओ और लडकियों को पढाना बहुत जरुरी है। माँ ही मूल आधार है चेतना का।

जब घर में हर व्यक्ति पढा लिखा होगा तो परिवार व गाँव का वातावरण बदलेगा। मैं तो यह मानता हूँ कि औरत का पढा लिखा होना पुरुष से भी ज्यादा जरुरी है। जहाँ माँ पढी लिखी होगी वहाँ घर का पूरा वातावरण ही बदल जाएगा।

मैं पेड पौधा के बारे में भी कहना चाहता हूँ कि पेड भगवान का दूसरा रुप है। 50 साल पहले जहाँ घने जगल थे वहाँ आज वीरान हैं। सब पेड काट लिए। भूल गए कि पेड ही जीवन का आधार है।

काट लिया सब रूखडा , बन का सेपट पाट।
क्यों झाँके बरसात को, जदी जीवडा बाट।।

जब पेड नही है तो फिर हम बरसात को इन्तजार क्यो करते हैं ? एक पेड लगाना और सौ मन्दिर निर्माण करना बराबर है।

पेड से बहुत फायदा है। पर्यावरण को बचाना है तो पेडों को बचाना होगा। पेड लगाएँ और उनको बचाने की भी सोचें। यह सकल्प लेना है कि हर साल कुए पर पेड लगाएँ, उन्हें बचाए। स्कूल में हर बच्चा पेड लगाए और उसके बचाने का भी प्रयास करें। तभी उसमें प्रकृति के प्रति प्रेम उत्पन्न होगा। यह तो हमें बच्चों को सिखाना है। मैं आज माडलगढ को देखता हूँ तो वह समय याद आता है जब यहाँ घना जगल था। शेरो का डर था। आज यहाँ पेडों का नाम निशान नहीं है।

ग्राम सभा गाव की रीढ की हड्डी है। ग्राम सभा की हर महीने बैठक हो गाव के निर्णय गाव मे हो। गाव की समस्याओ का समाधान गाव में हो। कोर्ट कचहरियो की अपेक्षा ग्राम सभायें सरलता से झगडे निपटा सकती हैं। ग्राम सभा में ताकत होगी तो गँव मे कोई जुल्म नही होगा।

मुझे वह समय याद है जब गाव में कोई मारपीट होती तो गाव वाले सब इकट्ठे होकर उसका समाधान ढूढ लेते थे। गाव में एकता होती थी। पर यह सब धीरे धीरे समाप्त हो रहा है। उसको पुन जीवित करना चाहिए। गाव में फूट फजीती को मिटाना

चाहिए। गाव की सगठित शक्ति उभर कर आनी चाहिए। गाव सभा कई सारे प्रशिक्षण के काम हाथ में ले सकती है। और खाद बीज आदि की उचित व्यवस्था के बारे में भी सोच सकती है।

बापू ने कहा था कि अन्न व वस्त्र में गाव को स्वावलम्बी होना चाहिए। दर असल एक समय था जब अन्न वस्त्र में गाँव स्वावलम्बी था। हर घर में गाय भैंस थी। दूध था, छाछ थी, घी था। बच्चे मक्खन खाते थे। पौष्टिक तत्व उन्हें मिल जाते थे। अब तो स्थिति यह है कि –

गाय परी गी, तेल परोग्यो, घी तो कोसाँ दूर।
नाले मत खाले परी, रोटी जल में चूर।।

गाव के किसानों में जब ज्ञान आएगा तभी स्थिति सही होगी। उनका स्वाभिमान जगना चाहिए। सगठित होकर अन्याय का मुकाबला करना चाहिए। यह चेतना से ही सम्भव है। शिक्षा से ही सम्भव है। गाँव में बडी ताकत है पर वह ताकत सोई हुई है।

हमें जाति पाँति छोडकर सगठित होना होगा। छूआ छूत मिटना चाहिए। खून सबका एक है हमने भेद पैदा किया है उसे मिटाना है।

एक बात और कहना चाहता हूँ कि साम्प्रदायिक तनाव से बुरी कोई बात नहीं है। हम हिन्दू मुसलमान सिख ईसाई के रुप में क्यों लडते हैं। हम सब एक ही ईश्वर के बन्दे हैं। हमें आपस में मिलकर रहना चाहिए लडना नहीं चाहिए। एक दूसरे के सुख दुख में काम आना चाहिए। मानवता को सीखना चाहिए।

मैंने अपने जीवन में बापू के विचारों को उतारने की कोशिश की है। जो कहा है वही करने का प्रयास किया है। गाँव वालों के बीच रहकर उनके दुख दर्द का भागीदार बना हूँ। जो लोग भी सच्चे मन से मानवता के काम में जुडे हैं उनको मेरा शत् शत् प्रणाम।

16 सितम्बर 1990
एस –5 बजाज नगर
जयपुर

■

भाई मनोहर सिंह जी सच्चे कार्यकर्ता

श्री सिद्धराज ढड्ढा

भारत के प्रमुख गाधीवादी, सर्वोदय कार्यकर्ता

भाई मनोहरसिंह जी महता के साथ मेरा सबध इतना आत्मीय हो गया था कि उनके व्यक्तित्व का विश्लेषण करके उसे लिपिबद्ध करना कठिन है। यही कारण था कि रेणुका बहन के बार-बार आग्रह करने पर भी मैं भाई मनोहरसिंह जी के बारे में लिखने की मन स्थिति नही बना पाया।

17 अक्टूबर, 1990 को भाई मनोहर सिंह जी ने देह छोडी। जहाँ तक मुझे स्मरण है, उनसे मेरा परिचय, या घनिष्ठ परिचय, सन् 1946 में जब पूज्य ठक्कर बापा, श्रद्धेय डॉ मोहनसिंह जी मेहता तथा भाई श्री चन्दनसिंह जी भरकतिया की प्रेरणा व उनके प्रयत्नों से राजस्थान सेवक सघ की स्थापना हुई, तब हुआ। राजस्थान सेवक सघ के सदस्यो की सख्या सीमित थी क्योकि उसके सदस्य ऐसे ही व्यक्ति हो सकते थे जो आजीवन समाज-सेवा के लिए समर्पित हों। शायद शुरू में राजस्थान सेवक सघ के सदस्य करीब एक दर्जन रहे होगे। यह सघ, सस्था से अधिक एक भाई चारा था। ठक्कर बापा, और डॉ मेहता इस परिवार के अभिभावक थे। सघ के सदस्यो की आपस में घनिष्ठता स्वाभाविक थी। इस प्रकार भाई मनोहरसिंह जी से जो भाईचारा कायम हुआ वह अत तक कायम रहा।

भाई मनोहरसिंह जी के व्यक्तित्व में एक सहज आकर्षण था। उनके साथ के सबधो मे कभी औपचारिकता महसूस नही हुई। इसका मुख्य श्रेय उनको स्वय को था क्योंकि वे स्वय औपचारिकता में विश्वास नही करते थे। औपचारिकता के बजाय आत्मीयता उनका सहज स्वभाव था।

भाई मनोहरसिंह जी से जब जब भी मिलना होता था तब-तब वह मिलन एक प्रकार के आनद और उल्लास का पर्व बन जाता था। आत्मीयता के साथ-साथ विनोद उनके स्वभाव का एक मुख्य अग था। उनके व्यक्तित्व में कटुता का दर्शन मैंने कभी नहीं किया। सामाजिक क्षेत्र में काम करने वालों के लिये दूसरे व्यक्तियों से मतभेद होना या उनकी नीतियो से विरोध होना कोई अस्वाभाविक बात नहीं है। यह बात खासकर ऐसे समाज-सेवियों के लिये और भी अधिक लागू होती थी जिनके अपने

कुछ निश्चित सिद्धात और मूल्य हो। मनोहरसिंह जी स्वय एक सच्चे और निष्कपट व्यक्ति थे। ऐसे व्यक्तियो का दूसरों के साथ मतभेद होना स्वाभाविक होता है। लेकिन जिनकी नीतियो से या क्रिया-कलाप से मनोहरसिंह जी का कोई मतभेद होता तो उसकी अभिव्यक्ति मे भी कटुता का अनुभव कभी नही हुआ। मेरे उनके विचारों में काफी साम्य था इसलिये उन विचारों से भिन्न विचार रखने वाले या भिन्न काम करने वाले लोगो के बारे में अक्सर हम लोग आपस में चर्चा करते थे। लेकिन भाई मनोहरसिंह जी में किसी के लिये व्यक्तिगत कडवापन मैने शायद ही कभी अनुभव किया हो।

भाई मनोहरसिंह जी का व्यक्तिगत जीवन बहुत सादा और सरल था। आडबर से वे हमेशा दूर रहते थे। मालूम नही क्यो शायद परम्परागत सेठ होने के कारण उन्हे उनके परिचित लोग "सेठ साहब" कह कर ही सबोधित करते थे। लेकिन उनका खुद का जीवन इस विशेषण से बिल्कुल भिन्न एक सामान्य नागरिक का सा था। इसलिये वे अपने लिये "सेठ साहब" जैसे विशेषण का खूब आनद लेते थे। खुद कैसे "सेठ" हैं इसका बहुत विनोदपूर्ण वर्णन करते थे। सेठ शब्द के साथ जो ठसक घमड, और दूसरो को नीचा समझने का भाव जुडा हुआ है उन सबसे वे कोसो दूर थे।

भाई मनोहरसिंह जी सिद्धात के पक्के थे। उनकी कथनी और करनी मे अतर बहुत ही कम दीखता था। उन्होंने जो मूल्य और सिद्धात अपनाये थे उनका दर्शन स्वय उनके जीवन में होता था। सच्चाई, ईमानदारी, निष्कपटता, सरलता विनोद - उनके चरित्र और स्वभाव के मुख्य अग थे। उनके व्यक्तित्व में सहजता भी पर्याप्त मात्रा में थी। वे बहुत अच्छा अभिनय भी करते थे। सेवक सघ के शिविरों या, अन्य सार्वजनिक सभा सम्मेलनो में अक्सर उनका अभिनय खूब मनोरजन करता था। पूज्य ठक्कर बापा के बाद स्व श्री कृष्णदास जी जाजू सेवक सघ के अध्यक्ष बने। जाजू जी के बारे में यह प्रसिद्ध था कि वे गभीर व्यक्ति थे, कदाचित् ही हसते या मुस्कुराते थे। लेकिन मनोहरसिंह जी के विनोद से हम लोगो को जाजू जी की दुर्लभ मुस्कुराहट के दर्शन अक्सर हो जाते थे। जाजू के बाद जयप्रकाश जी ने सेवक सघ की अध्यक्षता स्वीकार की। जे पी का खुद का व्यक्तित्व बहुत सरल था इसलिये मनोहरसिंह जी की उपस्थिति में वे और भी आनद का अनुभव करते थे।

भाई मनोहरसिंह जी की भाषण कला भी पर्याप्त आकर्षक थी। इसके अलावा वे अपने अगीकृत कामो को सातत्य और निष्ठा के साथ निभाते थे। इस प्रकार वाणी और कर्म दोनो ही बातों में वे समाज सेवक की सच्ची भूमिका को चरितार्थ करते थे।

कहना नही होगा कि समाज–सेवा उनके लिये बनावटी काम, प्रदर्शन की वस्तु या पेशा नही थी। समाज–सेवा उनके लिये जीवन का सहज कर्म बन गया था। अपने लिये उन्होंनें कभी कुछ नही चाहा – प्रशसा या लोकानुमोदन भी नहीं, जिसे रस्किन ने "लास्ट इन्फर्मिटी आर्फ द नोबल माइन्ड्स" चरित्रवान लागों की भी आखिरी कमजोरी कहा था।

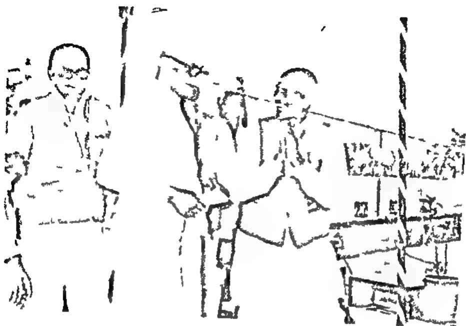
उनके स्मृति ग्रन्थ के निमित्त यह पक्तिया लिपिबद्ध करते समय उनके सहवास के से आनद की अनुभूति हुई उसका कुछ श्रेय प्रिय रेणुका को भी है। ■



चिकित्सा शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में



' 15 वें प्रौढ शिक्षा सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए



सन् 1977 में भीलवाडा में मोरारजी देसाई के साथ

अखिल भारतीय नशाबन्दी सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए

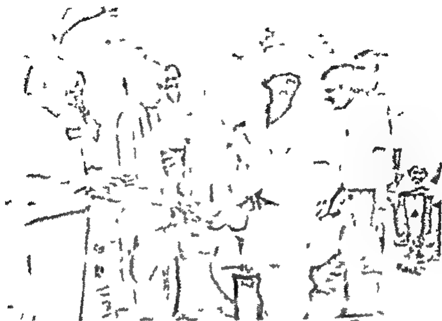


भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री मोहन लाल सुखाडिया के साथ

प्रौढ़ शिक्षा सम्मेलन के बाद जनता के बीच में



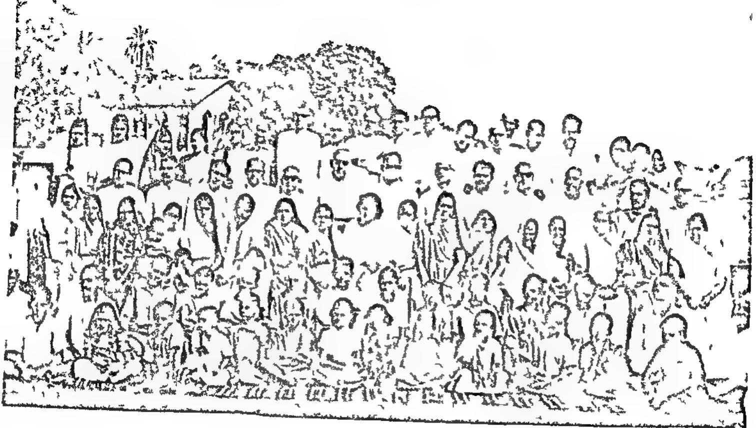
प्रौढ़ शिक्षा अनुदेशकों के साथ



ग्राम विकास योजनाओं में ग्रामीणों के बीच



भीलवाडा राजकीय महाविद्यालय द्वारा आयोजित गोष्ठी में



4 में माउन्ट आबू में आयोजित सर्वोदय सम्मेलन में लोकनायक जयप्रकाश नारायण, डॉ मोहन सिंह महता व अन्य सर्वोदय साथियों के साथ

भीलवाडा में विनोबा भावे की सभा में



खान अब्दुल गफ्फार खां (सीमान्त गाधी) के साथ भीलवाडा में



माता श्रीमती पिरोज कंवर व पत्नी श्रीमती विमला महता के साथ



बागी ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ (मध्य)   अनन्य साथी वैद्य नन्द कुमार (बाएँ)



100 वर्षीय माता को
तीर्थ यात्रा कराते हुए



विद्यार्थी जीवन के चार मित्र

श्री नवरत्न मल बोरदिया (बाँए)
श्री मनोहर सिंह महता (द्वितीय)
श्री दौलत सिंह कोठारी (तृतीय)
श्री सत्य प्रसन्न सिंह भंडारी (चतुर्थ)



प्रेरणा स्त्रोत बाबू साहब
श्री हुकमी चन्द जी सुराणा



अस्पताल में बीमारी के दौरान सामयिक समस्याओं पर लेखन कार्य करते हुए



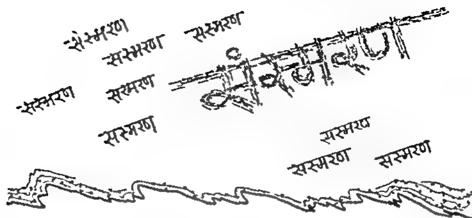
बीमारी के दौरान अस्पताल में मित्रों व परिजनों के मध्य (79वीं वर्ष गाठ मनाते हुए)



सागानेर जिला भीलवाड़ा में आवास



सागानेर गांव में जन सहयोग प्राप्त कर विद्यालय भवनों का निर्माण (स्थाई यादगार)


संस्मरण
सस्मरण
सस्मरण
संस्मरण
सस्मरण
सस्मरण
सस्मरण
सस्मरण
सस्मरण



मानवता को समर्पित

सरला बहन

गाँधी जी की शिष्या

गांधीजी की शिष्या एक अग्रेज महिला श्रीमती केथरीन मेरी, जिन्होंने भारत में काम किया अपना नाम सरला देवी रखा। उन्होंने आत्मकथा के रूप में अपने अनुभवों को एक पुस्तक में लिखा "व्यावहारिक वेदान्त एक आत्मकथा।" गाधी शान्ति प्रतिष्ठान ने इसे प्रकाशित किया। इस पुस्तक में आपने श्री महता के बारे में जो उल्लेख किया वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

"एक बार मुझे एक गाँव में मनोहर सिंह मेहता[1] के साथ कुछ दिनों तक रहने का अवसर मिला। वे डॉ मोहन सिंह मेहता के रोवर थे। उन्होंने आबकारी निरीक्षक के नाते रियासत की सेवा की थी। उन्होंने इस नौकरी को प्रौढ शिक्षा तथा मद्यनिषेध का साधन माना था। उन्होंने चन्दा करके एक सस्था स्थापित की। अपने निरीक्षण क्षेत्र में वे कई प्रौढशालाए भी चलाते थे। वे आबकारी नियमों का सही पालन कराने और शराब की खपत को कम करने की कोशिश करते थे।

रियासत के अधिकारी उनके ऐसे कामों को पसन्द नहीं करते थे इसलिए उन्हे आदेश मिला, कि वे यह सब करना छोड दे। उन्होंने इन सब कामों को छोड़ने के बजाए नौकरी छोड दी और एक गाव में जाकर बस गए, तभी काफी जोर का अकाल पडा। मनोहर सिंह ने यहा के आदिवासी भीलों के बीच राहत कार्य की व्यवस्था की। वे उनसे कच्ची लकडी खरीदते और सुखाकर उदयपुर में बेचने की व्यवस्था करते थे। इसमें से जो घाटा होता, उसकी पूर्ति वे चन्दे द्वारा किया करते थे। उन दिनों रचनात्मक कामों के लिए चन्दा इकठ्ठा करना कठिन काम नहीं था।

गाव जाते हुए मैं एक बार उनके घर ठहरी थी। एक बहन हाल ही में [illegible] हुई थी। ऐसे में रोज निश्चित अवसरों पर रोने की प्रथा थी। मुझे याद है, कि [illegible] प्रयत्नपूर्वक रोने की उस आवाज को सुनकर [illegible] आती थी। मनोहर सिंहजी उन औरतों को इस रिवाज को छोड़ने के लिए [illegible] समझाते रहते थे।

1 यह कथन सरला बहन द्वारा लिखित पुस्तक व्यावहारिक वेदान्त एक [illegible] 28-29 पर अंकित है ।

मनोहर सिंह के प्रति गाव वालो का प्यार देखकर बडा सुख हुआ। गाव के लोग उनके सुझावो को खुशी–खुशी मानने को तैयार रहते थे। गाव वालो ने उन्हें जमीन का एक टुकडा भी दे रखा था। तब उन्होने उसमें गोभी बोई थी। गाव के लोगों ने गोभी कभी नही देखी थी। जब गोभी तैयार हुई, तो उहाने एक बडा देग (बर्तन) मगवाया और गोभी का शाक बनाकर सबको भोजन के लिए बुलाया। गाव वालों ने जीवन में पहली बार हरी तरकारी खायी। यह भोजन उन्हें बहुत ही पसन्द आया। फिर उन्होने लोगो को गोभी तथा अन्य सब्जियो के बीज दिए। गाव के लोग सब्जियाँ पैदा करने लगे। पपीते का प्रचार भी उन्होने ऐसे ही किया। गाव के सभी लोग अपने हाथ से काते हुए सूत की मोटी खादी के कपडे पहने हुए थे। ये सब एक दूसरे को चाचा दादा, मामा इत्यादि कहकर सम्बोधित करते थे। कुछ दिन के बाद जब मैं उन्हें नाम से पहचानने लगी, तो मैंने पाया कि उसमें मुसलमान और हिन्दू दोनो थे। लेकिन उनमें ऐसा कोई बाहरी फर्क नही दिखता था। जिससे उन्हें पहचाना जा सके।

इलाके में अस्पृश्यता तो थी ही। मनोहर सिंह का एक लक्ष्य हरिजनो और आदिवासियो की सेवा करना भी था। लेकिन समाज उनके काम से रूष्ट न होकर उस काम मे सहानुभूति रखे इस ख्याल से वे अपनी एक नीति की तरह अस्पृश्यो के साथ खान पान में कुछ परहेज रखते थे।

उस समय वे भीलो के बीच नशाबन्दी का ठोस काम कर रह थे। एक रोज एक भील किसी बड समारोह मे नशाबन्दी का काम करने का निमत्रण देने आया। हमने पूछा गाव कितनी दूर होगा ? कितने बज रवाना होना चाहिए। उसने आकाश की ओर हाथ उठाकर कहा जब सूर्य उतना चढ जाए तब चलिए और सूरज के अमुक जगह पहुचने तक आप गाव पहुच जाएगें। वे घडी वाले समय तथा मीलो वाली दूरी से अनभिज्ञ थे।

हम ठीक समय पर पहुचे। सुबह शाम के लिए खाना बनाकर साथ ले गए थे। आसपास के गावो से खूब भीड इकठ्ठी हो गई। मनोहरसिंह बहुत देर तक लोगों को शराब की बुराइयो के बारे में समझाते रहे। अन्त मे उन्होंने एक गगाजली । उठाई लगभग सभी लोगो न बडी श्रद्धा एव प्रेम से उस पर हाथ लगाकर शराब छोडने का सकल्प लिया। उस अभियान में लगभग चालीस हजार भीलों ने शराब छोडने का सकल्प किया और उन्होने अपने वचन का पालन भी किया। वे अक्सर स्वय समारोह का प्रबध करके हम लोगो को वहाँ आने का निमन्त्रण देते थे।

एक ऐसे दौरे पर हमें रात को एक अनजान गाव में रूकना पडा। हम अधेरा हो जाने के बाद पहुचे थे। शायद दिसम्बर का महीना था। कही रोशनी दिखाई नही देती थी और कडाके की ठड थी। मनोहर सिंह पुकारते रहे, लेकिन किसी ने उत्तर नहीं दिया। मनोहर सिंह समझ गए कि लोग सरकारी-विशेष कर वन के अधिकारियो से आतकित हैं और रात को दरवाजा खोलने से डरते हैं। लेकिन हमें भी ठड से बचाव के लिए सिर पर छप्पर तो चाहिए ही था। आखिर उन्होने एक दरवाजे पर इतनी जोर से धक्का मारा कि निवासी को पूछना पडा कौन है ? बीगोद का मनोहर सिंह। दरवाजे एकदम खुल गए। कहा हमने आपका नाम बहुत सुना था। दर्शन कभी नही हुए थे।" चारो तरफ खबर फैल गई और लोगो ने हमें घेर लिया। अकाल के दिनो में मनोहर सिंह की सेवा ने उनके व बाल बच्चो के प्राण बचाए। हमने पाया कि उनकी झोपडियों में बिस्तर के नाम पर कुछ भी नही था। वे नगे बदन फर्श पर आग जलाकर उसके चारो ओर सो रहे थे। हम भीउसी प्रकार सोए। इसमें आनन्द भी आया और परिस्थिति देखकर दुख भी बहुत हुआ। ■

मानवीय गुणों के भण्डार

श्रीमती नगेन्द्र बाला

पूर्व विधायक समाज कल्याण बोर्ड की चेयरमेन

स्व मनोहर सिंह जी मेहता को हम प्रेम व आदर से पारिवारिक सम्बोधन सेठ साहब के नाम से ही बुलाते थे। सेठ साहब का जीवन सादा, सरल, अत्यत स्नेही एव कर्मनिष्ठ था।

मेरे जीवन पर उनके सदैव हसते रहना तथा अपने सकल्परत कार्य में लेश मात्र प्रमाद नही की ही छाप है। शराब जैसे भयकर अभिपाप से मानव को मुक्ति दिलाने के लिये ही उन्होंने नशाबन्दी को अपने जीवन का सर्वात्कृष्ट लक्ष्य बना लिया और आजन्म चाहे वे किसी भी स्थिति में हो नशा बन्दी में लग रहे।वे सदैव प्रसन रहते थे। विषाद की रेखायें विधाता ने उनके निर्मल, स्नेहमय जीवन में लिखने का साहस ही नही किया। सेठ सा का सानिध्य सुखद एव अपनत्व से पूर्ण था। ऐसे कर्मयोगी अपने आप में अपनी अहमियत रखते हैं। उनका परिचय वे स्वय थे।

मुझे ध्यान है अभी कुछ माह पूर्व ही जब वे रूग्णा–वस्था में अपने पुत्र के पास अजमेर थे। मैं और मेरी बडी बहिन साधना जी उनसे मिलने गये। सेठ साहब बाँह पसारकर इस मस्ती से गले मिले और ठहाका लगाकर हँसें कि कोई देखकर कह नहीं सकता कि वे इतने बीमार हैं। वे बहुत खुश थे उनके उसी दिन के वे शब्द कानों में गूँजते हैं – अरे ! मरणों तो भी हँसता हँसता। कई बार लोकोक्तियों अथवा सामयिक दोहे व छ्द सुनाते रहते। उस दिन भी सुनाए। पारिवारिक सेवा स वे बहुत सतुष्ट थे। पुत्र वधु को वरदान समझना सेठ साहब जैसे निर्मल मन की ही अभिव्यक्ति हो सकती है। ऐसे मधुर सानिध्य के अभाव का स्मरण मात्र पीडा का स्वर छोड कर मौन हो जाता है। ■

सफल व्यक्तित्व के धनी

प्रवर्तक श्री महेन्द्र मुनि "कमल"

डॉ रेणुका जी द्वारा यह ज्ञात हुआ तो हार्दिक सन्तोष की अनुभूति हुई कि स्वर्गीय श्रीयुत् मनोहर सिंह जी साहब मेहता के व्यक्तित्व और कृतित्व पर कुछ प्रकाशित होने जा रहा है।

किसी के व्यक्तित्व के अकन का जब जब भी प्रसग आता है, तो मन में बड़ी समस्या सी खड़ी हो जाती है। हर विद्या में, सहजता से लिखा जा सकता है, पर किसी भी व्यक्तित्व पर कुछ व्यक्त करना सर्वाधिक कठिन कार्य है। व्यक्तित्व का जो बाह्य पक्ष दिखाई देता है वहीं पूर्ण नहीं है, यह तो एक अश मात्र है। हॉ बाह्य पक्ष, अन्तर की गहराई तक पहुँचने में किंचित् सहायक जरूर हो सकता है।

स्वर्गीय मेहता साहब को कई बार मुझे निकट से देखने समझने का अवसर मिला है, उस आधार पर मैं यह साधिकार कहने की स्थिति में हूँ कि वे नैतिक एव धार्मिक जीवन जीने वाले प्रामाणिक व्यक्ति थे। सौजन्यता, विनम्रता, और सरलता की जीवित प्रतिमूर्ति थे वे।

स्वस्थ समाज की सरचना की तडफ उनके दिल दिमाग में जबर्दस्त थी। चरित्र निर्माण की जो विलक्षण क्षमता उनमें थी, मैंने बहुत कम व्यक्तियो में देखी।उनके असामयिक निधन से समाज एव राष्ट्र की एक महत्ती क्षति हुई है। उस सफल व्यक्तित्व के प्रति मैं पुन आदर प्रकट करता हूँ। ■

कर्मठ–निष्ठावान गांधीवादी जन सेवक

श्री बलवन्त सिंह मेहता

स्वतंत्रता सेनानी,समाज सेवी,पूर्व मंत्री

श्री मनोहरसिंह महता राजस्थान के उन इने गिने समर्पित जन सेवकों में थे जिनका सारा जीवन समाज व गरीबो की सेवा मे बीता। राजस्थान की कोई ऐसी रचनात्मक प्रवृत्ति नही है जिसमें उनका योगदान न रहा हो। गाधीजी की व बाद में विनोबाजी की अनेक रचनात्मक प्रवृत्तियो को मेवाड में आरम्भ कर सफलतापूर्वक चलाने का श्रेय उन्हें जाता है। ग्रामीण जनता में शिक्षा, प्रौढ शिक्षा, सहकारिता, स्वास्थ्य का कार्य बहुत व्यापक पैमाने पर आपने प्रारम्भ किया। कुरीति निवारण, हरिजन उद्वार, भूदान ग्रामदान के क्षेत्र मे उनका काम बहुत ही उल्लेखनीय है। इन सबसे भी ज्यादा उनका रूझान गाधीजी के शराब बन्दी के विचार के प्रति रहा। गाधीजी के शब्दो को वे बार बार दोहराते थे कि यदि "मुझे एक घण्टे के लिए भी भारत का डिक्टेटर बना दिया जाय तो मेरा पहला काम यह होगा कि मैं सम्पूर्ण भारत में शराब को बन्द कर दूगा।" महता साहब का मानना था कि शराब चोरी और व्यभिचार से भी ज्यादा निंद्य है। शराब की आदत मनुष्य की आत्मा का नाश कर देती है और इन्सान धीरे धीरे पशु बन जाता है जो पत्नि, मॉ और बहिन में भेद करना भूल जाता है।

राजस्थान मे भाई मनोहरसिंह जी पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने नशाबन्दी आन्दोलन का सूत्रपात किया। इसके लिए वे सदा स्मरण किये जायेंगे। उनका जुझारू जीवन प्रेरणा स्त्रोत रहा।

इस जुझारूपन के साथ साथ वे अत्यन्त विनोदी प्रवृत्ति के थे। सभा सम्मेलनो में जब कभी हम सब मिलते तो उनकी उपस्थिति की बडी प्रतीक्षा की जाती थी। उनके आने से सारा वातावरण हर्ष और उल्लास में बदल जाता था। वे विधायक भी रहे पर उनके चेहरे पर कभी अहम् दिखाई नही पडा। दल बदल के लिए उन्हें कई प्रलोभन दिये गये पर वे कभी विचलित नही हुए। वे निस्पृह, सरल ओर सादगी पसन्द थे। उनके निधन से राजस्थान के रचनात्मक क्षेत्र में जो क्षति हुई है वह कभी पूरी नही हो सकेगी। ■

एक सार्थक जीवन यथा नाम तथा गुण

श्री भगवान दास माहेश्वरी

वरिष्ठ सर्वोदयी एव खादी सेवक

मनोहरसिंह जी का शब्दार्थ मन–हरने वाले अग्रणी से मानता हूँ, श्री मेहता जी में शब्दश वे गुण विद्यमान थे। सभा में गाधीजी के निकट के साथ विराजमान हो या राजनेता, किंवा सर्वोच्च अधिकारीगण, जो किसी गभीर मत्रणा में निमग्न हो, या जहाँ कामकाजी विचारणा हो हो रही हो, वातावरण उत्साहवर्धक हो या निराशामय हो श्री महताजी निसकोच अपनी सहज स्वाभाविक भाषा या भाव भगिमा से सभी को अपनी तरफ मुखातिब करते देखे गये। सभा में उनकी उपस्थिति अद्भुत ताजगी का सचार करती थी। शराबबदी के लिये तो जैसे उनका जीवन ही समर्पित था। गाधी विचारों के विपरीत चलने वालो का पर्दाफाश करने के नाते वे शिविर सम्मेलनो में नाटक खेलकर जन–शिक्षण करते, उनके व्यग्य बाण तीखे व नुकीले रहते।

सर्वोदय आन्दोलन के अंतर्गत उनकी मेरी समीपता इतनी बढ गई थी, कि वे मुझे मुनीम कहकर विनोद करते, स्वय को सेठ कहलाने में उन्हें आनन्द अनुभव होता, और मित्र उन्हें सेठ जी कहा भी करते थे। लेकिन ठिठौली कभी किसी को नीचा दिखलाने की नहीं होती, वे अपने विषय का प्रतिपादन करते मित्रों या श्रावकों का मनोरजन भी करते रहते। "सादा जीवन उच्च विचार" की वे साक्षात् मूर्ति थे। मेवाडी भाषा में बोलते हुए वे गौरव का अनुभव करते। पद्य पाठ भी वे लहजे व मस्ती से किया करते। मुर्दानगी छाये वातावरण में मर्दानगी की लहर लाने के वे कलाविद् रह। उनकी – मेरी अंतिम मुलाकात जयपुर मानसिंह होस्पिटल कोटेज वार्ड में हुई, जब वे अधिक रूग्ण थे पर वही चिरपरिचित हसी, वहीं विनोद, वही लहजा, वही सबोधन, अपने पास बैठे परिवार जनो से हमारा परिचय कराया, गले मिले और मर्दुमी के साथ विदा किया।

"पान झडते यू कियो, सुण तरूवर बनराय,
अबके बिछुडे कब मिलें, दूर पडेगे जाय।
तब तरूवर उत्तर दियो, सुनो तात मय बात,
या घर या ही रीति है, इकआवत इक जात"।

जब बेटे-पोते-दोहिते के हम दादा-नाना हो गये, तो उसके आगे की पीढ़ी के लिये जगह खाली करना एक नैसर्गिक नियम है श्री महताजी अपने चारों तरफ सुरभित सुवासित सुरम्य वातावरण छोड गये यही उनकी महत्ता। "महता" अपभ्रंश है " महत्ता" का जिसे उन्होने सार्थक किया। उन्हें हमारा शतश प्रणाम। ■

विनोदी और समर्पित व्यक्तित्व

श्री जवाहरलाल जैन

प्रसिद्ध सर्वोदयी गाधीवादी चिन्तक

दुबला पतला, मझौला शरीर, गेहुँआ वर्ण, सिर के बाल आगे से उड़े हुए, मेवाड़ी विनय और शिष्टता की मूर्ति मनोहर सिंह जी मुझे छोटे भाई की तरह प्रिय थे। अपनी मित्र मण्डली में और जन साधारण में वे सेठ साहब के नाम से जाने जाते थे, पर उनमें सेठाई का एक भी सद्गुण या दुर्गुण नही था। उनकी आर्थिक स्थिति सामान्य थी, पर वे उसे कभी अपने बातचीत या रहन–सहन में प्रकट नहीं होने देते थे। मेवाड के राणा की तरह वे घास की रोटी खाकर भी अपनी ठसक छोडने को राजी नहीं थे। हर कठिनाई को हसते हुए झेल जाना उनकी विशेषता थी।

पिछले चालीस पैंतालीस वर्ष से मनोहर सिंह जी गाधी विनोबा के आन्दोलन तथा कार्यक्रम में हम सबके साथ जुडे हुए थे। खादी, भूदान, ग्रामदान तथा शराबबन्दी के आन्दोलनो में उन्होंने सक्रियता पूर्वक भाग लिया। शराबबन्दी के आन्दोलन में तो अत्यन्त सातत्य और जोश के साथ जुडे रहे। पुरानी लोक कथाओ के अनुसार शराबबन्दी में तो उनके प्राण सदा ही थे। इस मामले में वे श्री गोकुल भाई के अत्यन्त अन्यतम शिष्य तथा अनुगामी थे। सभाएं करने, रैलिया निकालने, सत्यागह करने, जेल जाने, उपवास करने मारखाने आदि आन्दोलन के सभी कार्यों में वे सबके साथ और सबके आगे थे। मजे की बात यह थी कि वे स्वय पहले आबकारी अधिकारी रह चुके थे। पर इसीलिए शायद वे शराब की बुराई से इतने अधिक परिचित थे और शराबन्दी के लिए इतने समर्पित थे।

मनोहर सिंह जी दो बार राजस्थान की विधानसभा में माण्डलगढ से जन प्रतिनिधि चुनकर भी गये। वहाँ भी उनका मुख्य विषय चर्चा और प्रयत्न का शराबबन्दी ही रहा। मनोहरसिंह जी अपने क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय थे और सबके सुख–दुख में वह हार्दिक रूप से भागीदार होते थे।

17 अक्टूबर, 1990 को उन्होने नश्वर शरीर छोड दिया। उनके देहावसान से राजस्थान के सर्वोदय समाज सेवको में जो स्थान रिक्त हुआ वह सदा रिक्त ही रहेगा।श्री गोकुल भाई और मनोहरसिंह जी के सर्वाधिक प्रिय–शराबबन्दी के काम को हम सफल बनायें – यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रृद्धा तथा प्रेमाजलि होगी।।

अनन्य लोक सेवक

श्री छीतर मल गोयल

खादी ग्रामोद्योग कार्यक्रम के अग्रणी प्रहरी

आदरणीय भाई श्री मनोहरसिंह जी महता राजस्थान के एक अनन्य लोक सेवक एव कर्मठ रचनात्मक कार्यकर्ता थे। वे आजादी के स्पाकाल से ही अपने क्षेत्र की आम जनता के दु ख-दद से सीधे जुडे हुए थे। उस समय गाधी के विचारो से प्रभावित होकर विभिन्न देशी रियासतो मे अनेक प्रतिभाशाली निष्ठावान कर्मठ लोक सेवक जन जागरण द्वारा लोक शक्ति के माध्यम से लोकतन्त्र की भावना पैदा करने में जुट पडे थे। उस दौर मे मेवाड के माडलगढ बीगोद क्षत्र म सेठ साहब के नाम से विख्यात श्री मनोहरसिह जी महता का भी जन सेवामे विशिष्ठ स्थान था। वे उनकी सेवा मे ही अपना जीवन खपाते रहे। वे अपनी इस निष्ठापूर्ण सेवा एव सादगी पूर्ण जीवन के फलस्वरूप बीगोद मॉडलगढ क्षेत्र की जनता का हृदय जीतने और अतिम स्वॉस तक उनका भावपूर्ण प्रेम सपादन करने मे अद्भुत सफलता प्राप्त कर सके थे। यह मेरा सौभाग्य है कि 45 वर्ष पूर्व उनसे मेरा सपर्क हुआ और जीवन भर उनसे निकट प्रेमपूर्ण सबध बना रहा। उनके अटूट स्नेह सबध को मैं अपने जीवन की अमूल्य निधि के रूप मे मानता रहा हूँ।

उस समय राजस्थान मे एक ओर अखिल भारत देशी राज्य लोक परिषद् की (राजपुताना की रियासतो की) प्रातीय सभा श्रद्धेय श्री गोकुल भाई जी की अध्यक्षता मे सक्रिय हुई और उसी समय श्रद्धेय श्री ठक्करबापा की अध्यक्षता में राजस्थान सेवक सघ की स्थापना हुई, जिसके मत्री श्रद्धेय भाई साहब श्री सिद्धराजजी ढड्ढा थे। इन दोनो सस्थाओ के कार्यालय मत्री एव सयुक्त मत्री का कार्यभार मुझे सौपा गया। इसी क्रम में राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रो के श्री मनोहरसिंह जी महता जैसे जन सेवकों से परिचित होने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ।

राजस्थान सेवक सघ के सदस्यो में उस समय प्रमुख स्थान मेवाड तथा बामवाडा डूगरगढ की उन विभूतियो को मिलना स्वाभाविक था, जो अपने-अपने कार्यक्षेत्र की जनता के कर्मठ सेवको के रूप में उनका दु ख दर्द दूर करने तथा उनको सगठित करके जनशक्ति खडा करने मे जुटे हुए थे। मेवाड के

भीलवाडा क्षेत्र में उस समय श्री मनोहरसिंह जी महता तथा श्री केशरपुरीजी गोस्वामी श्री रूपलाल जी सोमानी, श्री भवरलाल जी भदादा जैसे कर्मठ निष्ठावान कार्यकर्त्ताओ द्वारा विभिन्न प्रकार की रचनात्मक प्रवृत्तियों का सचालन किया जा रहा था। यद्यपि उनकी प्रवृत्तियां एव कार्यक्षेत्र भिन्न-भिन्न होना स्वाभाविक था, पर उनके बीच परस्पर सहयोग एव भाईचारे की प्रवल भावना से उनका उत्साह, कार्य क्षमता एव प्रभाव उत्तरोत्तर बढता जा रहा था।

राजस्थान सेवक सघ की मीटिंगो में उसके सदस्यो द्वारा अपने अपने क्षेत्र की परिस्थितियो में चलाये जा रहे विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों एव उनके अनुभवो की जानकारी दी जाती थी। इसके अलावा उनकी पारिवारिक स्थिति एव जीवन पद्धति पर भी प्रकाश डाला जाता था। इसके साथ ही उनसे चर्चा वार्ता एव सुझाव आदि का क्रम भी चलता था। ऐसे साथियों मे श्री मनोहरसिंह महता के त्यागमयी जीवन तथा उनके द्वारा सचालित प्रवृत्तियों की विशेषता तथा उनकी कार्यशैली का मेरे मन पर गहरा प्रभाव पडा था।

राज्य के बाद अधिकाश लोग राजनीति में गये और रचनात्मक कार्यकर्ता अलग रहकर अपने 2 कार्य क्षेत्र में काम करने लगे। उस समय स्वर्गीय श्री मनोहरसिंह जी महता का मुख्य कार्यक्षेत्र मॉडलगढ तहसील में प्रमुख रूप से बीगोद एव आसपास के गाव थे। ये सब क्षेत्र मेवाड रियासत के अग होने से उदयपुर चित्तौडगढ आदि क्षेत्रो से भी उनका निकट सपर्क बना हुआ था।

आजादी के साथ ही देश के विभाजन से उत्पन्न विकट परिस्थितियाँ एव महात्मा गाधी के निर्वाण के बाद देशी रियासतों के स्वतत्र भारत में विलय एव राजस्थान की स्थापना के साथ प्रदेश की राजनीति मे परस्पर विग्रह की स्थिति बनी। स्वतत्रता आन्दोलन के साझीदार रचनात्मक कार्यकर्ताओ में निराशा की भावना पैदा होने लगी थी। ऐसे समय मे सत विनोबा की प्रेरणा से देश भर में चालू किये गये रचनात्मक भूदान आन्दोलन का कार्यकर्ताओ पर काफी प्रभाव पडा और अनेक लोग दलीय राजनीति से अलग हटकर लोकनीति के पक्षधर बने और भूदान ग्रामदान सर्वोदय आन्दोलन में रम गये।

इसी समय केन्द्रीय गाँधी स्मारक निधि की ओर से देश में 5 गॉव चुनकर उनके समग्र विकास द्वारा बेरोजगारी निवावरण की योजना हाथ मे लेने का विचार रचनात्मक कार्यकताओ के समक्ष आया। राजस्थान म भी ऐसा कोई एक गॉव चुनकर वहा की योजना बनाने का विचार गाधी निधि की तरफ से भीलवाडा मे जून 1954 में आयोजित रचनात्मक कार्यकताओ की सभा मे रखा गया। उस सभा में श्री

मनोहरसिंह जी ने बडे जोश एव हिम्मत के साथ अपने कार्यक्षेत्र बीगोद से 7 मील दूर घाकडखेडी गॉव को इस प्रयोग के लिये चुनने का प्रस्ताव रखा। उनकी बात को मानने के लिए भाई पटेल ने एक शर्त रखी। वह यह थी कि उक्त गाँव का सर्वे करके योजना बनाने और उसके क्रियान्वयन करने की जिम्मेदारी लेने वाले किसी एक मुख्य कार्यकर्ता का नाम पहले प्रस्तुत किया जाय। सयोग से उस सभा में मैं भी उपस्थित था। अनेक साथियों ने मेरा नाम सुझाया और श्री मनोहरसिंह महता ने आग्रह पूर्वक मुझ से सर्वे करके योजना बनाने तक के लिए कम से कम 6 महीने का घाकडखेड़ी रहने का आग्रह किया। यद्यपि यह प्रस्ताव मेरे लिए सर्वथा अनापेक्षित था और मैंने अपनी लाचारी भी बताई पर श्री महता साहब के प्रेमाग्रह को टालना मेरे लिए सभव नही हो सका और मुझे "हॉ" करनी पडी। इसके बाद "घाकडखेड़ी" का इस प्रयोग के लिए चुनाव कर लिया गया और मैं वायदे के अनुसार 1 अगस्त 1954 को घाकडखेडी पहुचा। और वहा श्री महता साहब ने ग्रामवासियो से मेरा परिचय कराया। घाकडखेडी की इस योजना के प्रमुख सचालक की जिम्मेदारी तो उन्ही को सभालनी थी पर उनके सहयोगी का कार्य मुझे करना था। मेरा यह निर्णय यद्यपि पारिवारिक दृष्टि से मेरे लिए प्रतिकूल था। पर एक रचनात्मक कार्यकर्ता के कर्तव्य पालन के रूप में जिम्मेदारी ओढने से अपनी भावना के अनुरूप ग्राम आयोजन का काम करने का जो अवसर मुझे मिल सका और जिसके फलस्वरूप ग्राम आयोजन के जो नये–नये अनुभव हुए वे सब मेरे लिए श्री महता साहब की देन थी। उन्ही के प्रेमाग्रह से कर्तव्य पालन की दृष्टि से मैं वहा ढाई वर्ष रहा और इस अवधि में उस क्षेत्र के अन्य साथियो एव ग्रामवासियों का प्रेम सम्पादन करने के अलावा मैंने ग्राम आयोजन का जो अनुभव प्राप्त किया, वह मेरे जीवन की एक अमूल्य निधि है।

घाकडखेडी पहुचने के लिए पहले बीगोद जाना जरूरी होता था वहाँ से दो नदियाँ पार करके 6 मील पार घाकडखेडी जाना होता था। बीगोद कस्बा श्री महता साहब के कार्यक्षेत्र का केन्द्र–बिन्दु होने के अलावा उनका उस समय निवास भी वहीं था। इसलिये बीगोद में सचालित उनकी रचनात्मक प्रवृत्तियो की जानकारी भी सहजमिलती थी। इसके अलावा उनसे जुडे हुए कार्यकर्ता साथियो की जमात से भी निकटता एव प्रेम सबध बढना स्वाभाविक था। बीगोद मे महता साहब ने बीगोद सेवा सघ नाम की रचनात्मक सस्था स्थापित की थी। उसके द्वारा एक सहकारी समिति का गठन किया गया और उसके अन्तर्गत एक बडे भवन का निर्माण कराया गया। जिसके द्वारा क्षेत्र की जनता की बड़ी लगन के साथ सेवा की जा रही थी। उन्हीं के प्रयास से वहाँ राजस्थान बैंक की शाखा खोली गई और एक छोटा मेडिकल केन्द्र भी

चालू हुआ। बीगोद में उस समय जो परस्पर साम्प्रदायिक सद्भाव एव सेठ साहब के प्रति चारो तरफ जो प्रेम पूर्ण श्रद्धा भावना दखने को मिलती थी वह अनूठी थी, जो उनकी निष्ठा पूर्वक की जा रही समाज सेवा की गहरी छाप मेरे जैसे कार्यकर्ताओ के मन पर सहज छोडती थी। हर रचनात्मक कार्यकत्ता का कार्यक्षेत्र वास्तव में उसका "प्रेम–क्षेत्र" होना चाहिए और वैसा होने पर ही उसकी अपनी सेवा सबधी प्रवृत्तियो में सफलता मिल सकती है। इसके स्पष्ट दर्शन श्री सेठ साहब के साथ उस क्षेत्र के गाँवो मे जाने पर होते थे। वे प्रत्येक गॉव के हर व्यक्ति का नाम ही नहीं जानते थे, बल्कि उनके परिवार के सदस्यो की जानकारी भी रखते थे। जहॉं जो कोई व्यक्ति मिला उसका नाम लेकर ही उसकी बडे अपनत्व से पूछताछ करते थे। उनकी निजी समस्याओ की चर्चा भी स्वय चला कर करते और उनका हल निकालने के हर सभव उपाय करने में आगे रहते थे। उनकी बीमारी के इलाज के लिए भीलवाडा के डाक्टरों, बच्चो को और उनकी सरकारी विभागों से सबधित समस्याओ के निराकरण हेतु सरकारी अफसरो को पत्र लिखने में वे सदैव तत्पर रहते थे। इस प्रकार क्षेत्र के हर नागरिक के साथ उनके स्नेह सबधो एव परिवार–भावनाओ का अनूठा दृश्य देखने को मिलता था।

सेठ साहब की एक विशेषता सदैव याद रहेगी, कि वे किसी भी परिस्थिति मे निराशा का भाव व्यक्त नही करते थे। बल्कि कार्यकर्ताओ के बीच विचार–विमर्श में अथवा गॉव वालो के साथ चर्चा–वार्ता में सदैव आत्म–विश्वास की भावना व्यक्त करते थे और वातावरण को सदैव उल्लास पूर्ण बनाये रखने की उनमे अनोखी कला थी। गॉववालो के साथ उन्ही की भाषा में हँसी मजाक एव ठिठोली द्वारा आत्मीयता के भाव बनाये रखना उनकी सधी हुई जनसपर्क की अद्भुत पद्धति का द्योतक था। इन्ही सब गुणो के कारण ग्रामवासी उन्हे कभी भुला नही सके और उनके मन मे सदैव उनके प्रति अटूट प्रेमपूर्ण श्रद्धा की लहर बहती रही।

सेठ साहब की एक विशेषता जो बहुत ही कम लोगो में मिलती है – यह थी कि वे हर व्यक्ति की खूबियो को व अच्छाइयों को ही ढूढ कर उसकी प्रशसा प्रेमल भाषा मे करते थे, जिससे सुनने वाले का हौसला बुलद हो जाता था तथा वह सदैव उसे अपनी पूजी मानकर चलता था। उनके कार्यक्षेत्र मे जब कभी भी बाहर के विशिष्ट नेता कार्यकर्ता आते तो उनके विचारो एव भावना को जिस नपे–तुले स्थानीय भाषा के मृदुल शब्दो में, सक्षिप्त रूप से ग्रामवासियो को समझाते थे उससे न केवल ग्रामवासी बल्कि आगतुक महानुभाव भी भावविभोर हो जाते थे। दरअसल वे विद्वान विचारको नेताओ एव गाव की आम जनता के बीच अपनी अद्भुत भाषण शैली से

महत्वपूर्ण माध्यम का काम करते थे, जो सामान्य रूप से बडे बडे अनुभवी विद्वान लोगों के लिए भी सभव नही हो पाता।

सेठ साहब का मेरे प्रति एव मेरे परिवारजनो के प्रति अटूट स्नेह था। उनके अलावा आदरणीय भाभी साहबा तथा सभी परिवारजनो का भी अटूट स्नेह मुझ और परिवारजनो को मिलता रहा। यह भी सेठ साहब की परस्पर प्रमिल सपर्क शैली का ही फल है।

मैं धाकडखेड़ी से 1956 म जयपुर लौटा। उसके बाद उनसे सर्वोदय सम्मेलनो में, सेवक सघ की मीटिंगो में तथा नशाबदी आन्दोलना मे मिलना होता रहा। उन्होंने प्रातीय नशाबदी समिति के मत्री का कार्यभार भी सभाला और बडे जोश खरोश एव उत्साह के साथ श्रद्धेय श्री गोकुल भाई जी के साथ नशाबदी आन्दोलन को गतिमान किया। बाद में माँडलगढ क्षेत्र की राजनैतिक स्थितियो से मजबूर होकर वे राजनैतिक क्षेत्र मे उतरे और वे चुनाव मे जीतकर एम एल ए भी बने। किन्तु उन्होंने कभी अपने रचनात्मक कार्यकर्ता के स्वरूप में अतर नही आने दिया – जिसके फलस्वरूप जीवन के अतिम क्षण तक वे अपने कार्यक्षेत्र के लोगो का प्रेम सम्पादन करते रहे।

उनकी एक विशेषता यह देखने को मिली कि गहन बीमारी के समय भी उन्होंने अपने स्वभाव एव व्यवहार मे कभी निराशा एव जीवन से या ससार से निरपेक्षता की झलक नही आने दी। वस्तुत जीवन के अतिम क्षण तक ऐसा साहस देखने को प्राय नही मिलता। वास्तव मे ऐसा आत्म-विश्वास एव स्नेहपूर्ण सरल सादा जीवन पद्धति समाज के विभिन्न अगो को जोडने वाली कडी का काम करते रहना उनके व्यक्तित्वका अभिन्न अग बन गई थी। ऐसे अद्भुत समाज सेवी के निधन से होने वाली क्षति पूर्ति होना सहज सभव नही है। उनके साथ काम करने का अवसर प्राप्त करके मे अपने को बडा ही भाग्यशाली मानता हूँ। ऐसे स्नेही बधु की महान आत्मा के प्रति नतमस्तक हो मैं अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए भगवान से प्रार्थना करता हू कि इस देश के दु खी जन समुदाय को अपने विकट सकट से उबारने के लिए स्वर्गीय सेठ साहब जैसे निष्ठावान जन सेवको को इस धरती पर पुन अवतरित करते रहे। उनके चिरस्मरणीय अद्भुत्त व्यक्तित्व की छाप मेरे मन को सदैव प्रेरित करती रहेगी। ■

पौधों को सींचने वाला माली

डॉ महेन्द्र राय सक्सेना

प्रसिद्ध शिशु रोग विशेषज्ञ

मनोहर काका (सेठ साहब) से मेरी मुलाकात बीगोद जिला भीलवाडा में हुई, जब मैं अपनी सर्विस की पहली पोस्टिंग पर आया। जुलाई 1954 को वहाँ पहुचा। मैं एक छोटे से पौधे की तरह था। जिसको पनपने में माली की देखरेख बहुत जरूरी होती है। न सिर्फ उसको पानी की ही वरन् सूर्य के प्रकाश की भी अत्यन्त आवश्यकता होती हैं। मनोहर काका के जीवन के सादा जीवन, रहन सहन, विचार व कर्तव्य परायणता ने मेरे व्यक्तित्व को ढालने में सूर्य की रोशनी के मानिन्द काम किया। मैं शुरू से ही अपने चरित्र के प्रति जागरूक था क्योकि उसकी नीव एक साधारण व स्वच्छ परिवार में डाली गई थी। अच्छा खिलाडी होने के नाते मेरे जीवन में खेल भावना रोम-रोम में भरी हुई थी। मैं अपनी नौकरी पर अकेला ही पहुँचा था। काका ने मुझे वहाँ अपने पुत्र की तरह सरक्षण दिया। वे लोगो के दुख निवारण में हमेशा तत्पर रहते थे। उनमें जाति पाँति व ऊच नीच का कोई भेदभाव न था, जो कि मेरे विचारो से भी शत प्रतिशत मेल खाता था। अतएव मुझे अपनी कार्य कुशलता के लिये माग दर्शन मिलता रहा जिसकी कि इस नाजुक उम्र (टेडर ऐज) में बहुत जरूरत थी। मनुष्य के जीवन में बुरी आदतो का असर जल्दी ही हो जाता है, लकिन मुझे इस बात का गर्व है कि बीगोद गाव में ऐसी कोई बुराई न थी जो मुझ पर बुरा असर डालती, क्योकि इस गाव में काका सबको प्रेरणा देते रहते थे। भाई चारा व प्रेम भाव सारे गाव मे बहुत था। काका लोगो के सुख दु ख में हमेशा काम आते रहते थे।

उनको शराब से बहुत नफरत थी। उन्हें इस बात का गर्व था कि मैंने शराब पीने वाले परिवार में जन्म लेकर भी अपने को इस बुराई से दूर रखा। इसका असर मेरे छोटे भाइयों पर पडा। वे मृत्युभोज के बहुत खिलाफ थे। वे लोगो को इसके न करने का व न ही उसमे शामिल होने का प्रचार करते रहते थे। उनको खादी के प्रचार का बहुत ध्यान रहता था और इसी सिलसिले में उन्होने लक्ष्मण सिंह डाकू को भी गाधीवादी बनाया और उसके उपरान्त उनको चरखा कातकर सूत कातना सिखाया। काका की छाप उनके व्यक्तित्व पर इतना असर कर गई, कि उन्होने डकैती छोडकर लोगो में चरखा चलाने का कार्यक्रम चलाया। जब कभी किसी के फूलो की माला

पहनानें का अवसर आता था तो वह हाथ की कती सूतान्जलि पहनाते थे। काका जब तक बीगोद मे रहे हिन्दु-मुसलमान आपस में प्रेम से रहते थे।

मेरी पत्नी (शशि) जिसको वे सदैव शशि कहकर ही पुकारते थे, शादी के बाद पहली बार जब बीगोद गाव में मेरे साथ आई तो काका, जिनको पर्दा बिल्कुल पसन्द नही था को जानकार अति प्रसन्नता हुई कि वह पर्दा नही करती है किन्तु सत्कार सबका करती है। वे उसे हर घर में मिलाने के लिये ले जाते थे और एक दृष्टान्त के रूप में रखते थे कि आप लोगो को भी पर्दा छोडना चाहिये व समयानुसार बदलना चाहिये और इसका गॉव के लोगो पर असर भी पडा।

वह लोगो का सत्कार बडे मजे से खरखरी (मठरी) खिलाकर करते थे और पानी पिलाकर कभी कभी सौफ पान सुपारी की जगह खिलाते थे। उनको गाधी ग्राम धाकडखेडी से बहुत प्यार था तथा मुझे वहाँ गॉव देखने व मरीजो की सेवा करने के लिये कई बार बैलगाडी व कई बार पैदल भी ले गये। एक बार तो मैने तूबी बाधकर रात को दो बजे गाव जाते वक्त रास्ते में पडने वाली नदियाँ पार की। उनका व्यक्तित्व इतना स्वच्छ व राजनैतिक बुराई से इतना दूर था कि जिसकी छाप तत्कालीन भीलवाडा जिले के कलेक्टर श्री के पी मू मेनन पर भी पडी और समय समय पर पर वे बीगोद गाव में आकर वहाँ की समस्याओ का निदान करते थे। बीगोद मे मेरी पोस्टिंग करीब डेढ साल रही। तत्पश्चात् मैने खातोली डिस्पेन्सरी जिला कोटा में स्थानान्तरण करा लिया। उस पर काका ने कोई आपत्ति नही की क्योंकि मैं स्वय की इच्छा से होम डिस्ट्रिक्ट आना चाहता था। वे कहते थे कि पोस्टिंग की जगह कोई खराब नही होती। यदि आप स्वय सयम से अपना कर्तव्यपालन करते रहें तो लोग आपके अच्छे काम में हर प्रकार से सहयोग देने लगते है और एक स्वच्छ वातावरण बन जाता है जिसमें आपको भी काम करने में उत्साह रहता है।

मेरे ट्रान्सफर पर सारे गाव ने मुझे भावभीनी अश्रुपूरित विदाई दी थी। काका ने उस वक्त के हृदय के उद्‌गार उन्होने नवभारत टाइम्स हिन्दी के अखबार में दिये जिस पर न केवल उनको वरन् मुझे भी गर्व है। उन्होने लिखा था कि "महेन्द्र चाहता तो शशि (अपनी पत्नी) पर 10 20 तोला सोना लाद सकता था परन्तु उसको जो आसू भरे लोगो की भाव भीनी विदाई जो गाव के सारे लोगों बच्चो से बूढो तक की मिली उससे लाख गुना अधिक थी। "यह कमाई आज तक मेरे जीवन में मोजूद है क्योंकि 35 साल बाद भी मेरे सबध वहाँ के लोगों से आज भी उतने ही स्नेहयुक्त है न केवल पत्र व्यवहार से बल्कि सुख दु ख मे लोग उसे बाटते है। स्थानान्तरण के बाद काका कोटा समय-समय पर आते ही रहते थे क्योंकि तब तक तो हम उनके परिवार के

सदस्य ही बन गये थे, हर शादी में व हर दु ख सुख में वे परिवार सहित आते थे। उन्हें इस बात का गर्व था, कि जैसा वह चाहते थे और मेरे विचार भी उनसे मेल खाते थे, मेने बच्चों की शादियों में किसी प्रकार का दहेज नही मागा न लिया और बडे बेटे अखिल की शादी इन्टर कास्ट पजाबी लडकी से हुई तो उन्हें अपार हर्ष हुआ क्योंकि जात पात के भेद भाव को तहे दिल से मिटाना चाहते थे। जब मुझे दिल का दौरा पडा तो उन्हें बहुत सदमा लगा और वे फौरन कोटा आये और मुझे गले से लगाकर सान्त्वना दिलाई कि "तुमने सबके साथ अच्छा किया है, सुख दु ख मे लोगों की स्वच्छ मन से सेवा की है। अतएव ईश्वर सब अच्छा करेगा। जब मैं हार्ट के आपरेशन के लिये लदन गया तब भी उन्होंने कोटा आकर मुझे आशीर्वाद देकर सैकडों लोगों के बीच में स्टेशन से विदा किया। उन्ही के प्यार व आशीर्वाद से मैं हौसला पाता रहा।

वे बीमार पड गये। उन्हें लकवा हो गया तो हम लोगों को बहुत दु ख हुआ। बीमारी भी कैंसर हुई, जो कि हर प्रयत्न व इलाज के बाद भी लाइलाज ही होती है। हम लोग उन्हें देखने जयपुर गये। जब भी उन्होंने याद किया हम लोग गये। वह कहा करते थे कि "महेन्द्र के आने से मुझे शक्ति मिलती है" वह कहते थे "मैं ठीक हो जाऊगा तो कोटा तुम्हारे पास आकर दो माह रहूगा"। हम लोगो का प्यार तो उनके पूरे परिवार पुत्री यशवन्त, रेणुका पुत्र गजेन्द्र, जमाई चन्द्रसिंह जी व सुरेन्द्र सिंह जी बाई जी सभी से इतना घनिष्ठ है इसका हमे गर्व भी है। पुत्री रेणुका तो उन्ही की छवि है व उसमें समाज सेवा के गुण उन्ही के दिये हुए है। पुत्र गजेन्द्र भी उन्ही की तरह सेवा भावी व कर्तव्य परायण है – जमाई भी पुत्रो से कम नहीं है।

उन्हें जानवरों से भी बहुत प्यार था – अक्सर मोहन सिंह जी महता के कुतो की चर्चा करते थे तथा हमारे कुतों की सभाल पूछते रहते थे।

वे सच्चे अर्थों में व्यक्ति निर्माण करते थे। हर पौधे को सीच कर बडे पेड में बदलना उन्हें बहुत आता था। ■

राजस्थान के प्रमुख सर्वोदय सहकर्मी

श्री पूर्णचन्द्र जैन

राजस्थान गाधी स्मारक निधि के अध्यक्ष

रचनात्मक कार्यकर्ता लेखक और पत्रकार

सरल स्वभावी, मृदुभाषी विनोदी भाई श्री मनोहर सिंह महता मेवाड के सर्वोदय साथियो मे अग्रणी थ। ऊची शिक्षा और डिग्री उन्होने हासिल नही की लेकिन उदयपुर क सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री, राजनयिक डॉ मोहन सिंह महता और उनके द्वारा स्थापित राष्ट्रीय ख्याति के शिक्षा सस्थान-विद्या भवन से अपने विद्यार्थी काल में ही निकट सम्पर्क में आ जाने के कारण भाई मनोहर सिंह अपने बौद्धिक विकास, राष्ट्, समाज–मेवा भावना ओर विचार की गहराई में जा उसे जीवन शैली का आधार बना लेने की अपनी वृत्ति को चरितार्थ करने में, अपने हम उम्र साथियो खास तौर स भीलवाडा व उदयपुर क्षेत्र के समर्पित कार्यकताओ मे, वे किसी से पीछे नही रहे।

बस्सी गॉव में जन्में और सागानेर मे गोद आए ओर सेठ साहब की वशानुगत पदवी उन्हें मिल गई और वे सेठ सा॰ब के नाम से पहचाने जाने लगे। इनके बारे में महत्वपूर्ण बात यह है कि एक रियासती मध्ययुगीन सस्कार वाले परिवार स सम्बन्धित होत हुए भी गाधी जीवन दर्शन और सर्वादय विचार के प्रति आकर्षित हुए तथा उसमें ओतप्रोत हो समाज परिवर्तन के क्रान्ति प्रयोग में सक्रिय रूप से सहभागी रहे।

वे बहुत अच्छे स्काउट थे। आजीवन उन्होने भाई चारा और सेवा भावना क आधार पर काम किया।

खद है कि आजादी के बाद देश मे एन सी सी , एन एस एस आदि प्रवृतियाँ बढी लेकिन इनम सेवा भावना ओर सस्कारिता नही पनप पाई।

श्री महता शिक्षा समाप्ति क बाद मवाड रियासत की राजकीय सेवा म आयकारी महकमे के एक अच्छ पद पर नियुक्त हुए। मेवाड में शराब,भाग अफीम आदि नशीली चीजों का विशेष प्रचलन था। श्री महता ने पद पर रहते हुए ही लोगा

को व्यसन से मुक्त कराया। बाद मे उन्होने राजकीय सेवा का परित्याग कर दिया और पूर्ण समर्पण से रचनात्मक कार्यों में लग गए। शराबबन्दी उनके जीवन का प्रमुख लक्ष्य बन गया।

गाधी के वाक्य को श्री महता ने राजस्थान में श्री गोकुलभाई भट्ट के नेतृत्व में चले शराबबन्दी आन्दोलन के दौरान प्रदेश भर में गुजाया। गाधी का यह वाक्य वे बार-बार दोहराते थे "सरकारी तन्त्र एक दिन के लिए भी मेरे हाथ में आए तो मेरा पहला काम शराबबन्द करना व उसकी आमदनी को खत्म करना होगा।"

राजस्थान सरकार को एक बार तो शराबबन्दी के लिए मजबूर करने में श्री महता की प्रभावशाली भूमिका थी।

श्री महता सर्वोदय सगठन उसके बहुआयामी कार्यक्रमो से आजीवन जुडे रहे। गाधी, विनोबा, जयप्रकाश नारायण के सत्याग्रह आन्दोलन, भूदान, ग्रामदान द्वारा भूमि के व्यक्तिगत व राजकीय एकागी स्वामित्व के विचार को बुनियादी तौर पर बदलने तथा सम्पूर्ण क्रान्ति के कार्यक्रमो में भी श्री महता का सक्रिय योगदान रहा।

भारी बहुमत से राजस्थान विधानसभा में निर्वाचित हुए। वहाँ भी आर्थिक औद्योगिक, राजतन्त्र और सत्ता तथा गाव जिला प्रदेश राष्ट्र तक के क्षेत्र में विकेन्द्रित व्यवस्था कायम करने के नव क्रान्ति विचार के समर्थक रहे। साथ ही अस्पृश्यता-निवारण नशाबन्दी प्रौढ शिक्षा, महिला जागरण, सामाजिक सुधार वगैरह कार्यक्रम को अपने क्षेत्र मे काफी सफलता की मजिल तक पहूचाया। साधु-साध्वी व विभिन्न धर्माचार्य और समाज के अगुआ वर्ग को ऐसे कार्यक्रमो में अधिक दिलचस्पी लेने के लिए प्रयत्नशील रहे और स्वय भी प्रेरणा पाते रहे।

इन सबके साथ विनोदी स्वभाव और मीठी चुटकी रोचक दोहा बोलने की श्री महता की सूझबूझ ने उनको काफी लोकप्रिय बना दिया था। सभा विचार गोष्ठियो वगैरह में वे जाते तो "सेठ साहब आ गए" का उच्चार सहज सुनाई दे जाता था। सामाजिक कुरीतियो के खिलाफ जन चेतना के लिए वे भेरू, भोपा, पीर पेगम्बर आदि का अभिनय करने में भी माहिर थे।

राजस्थान सेवक सघ जैसी सस्था की बैठक या कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर जैसे कार्यक्रमो में गम्भीर चिन्तन और व्यवस्था सम्बन्धी चर्चाओ के साथ-साथ स्वस्थ मनोरजन के लिए समय निकाल लिया जाता तो श्री महता की मौजूदगी का सामयिक उपयोगी लाभ मिल जाता था। महता के अभिनय व चुटकले ऐसे सहज प्रभावी व विनोद भरे होते कि श्री कृष्णदास जाजू, श्री जयप्रकाश नारायण श्री शकररावदेव, श्री धीरेन्द्र मजूमदार जैसे बुजुर्ग वरिष्ठ व्यक्ति भी अपने-अपने

स्वभाव अनुसार केवल मीठी मुस्कान ही नही जाहिर करते बल्कि खिलखिला उठते थे।

उनकी सी जिन्दादिली समाज परिवर्तन में सहभागी होने की तडप और शुद्ध जीवन जीने की मजबूती सम्बन्धी यादें समाज को, कार्यकर्ताओ को प्रेरणा देती रहेगी। ■

'मनुष्यो ! तुम सिंह के सामने जाते समय भयभीत न होना, वह पराक्रम की परीक्षा है। तुम तलवार के नीचे सिर झुकाने से भयभीत न होना, वह बलिदान की कसौटी है। तुम पर्वत शिखर से पाताल में कूद पडना वह तप की साधना है। तुम बढती हुई ज्वाला से विचलित न होना, वह स्वर्ण परीक्षा है। पर शराब से सदा भयभीत रहना, वह पाप और अनाचार की जननी है।

—भगवान बुद्ध

क्षेत्र के भागीरथ

श्री पुष्कर लाल धाकड

धाकड खेडी गाव के रचनात्मक कार्यकर्ता

24 सितम्बर 1990 को श्री पुष्कर जी ने धाकडखेडी ग्राम के समस्त भाई बहिनो की भावना को व्यक्त करते हुए एक पत्र लिखा। यह वह गाव है जहाँ महता साहब ने गाव वालो मे चेतना के बीज फूँके थे। वह पत्र इस प्रकार है –
परम पूज्य सेठ साहब

सादर प्रणाम

कई दिनो से आपकी कुशलता के समाचार नही है। हम ग्रामवासियो को हर हफ्ते समाचार दिलाया करे तो मेहरबानी होगी।आपको कष्ट तो होगा पर हम लोगो की अभिलाषा का स्वप्न पूरा होगा।

हम लोग भगवान् प्रभु से यह कामना करते हैं कि आप स्वस्थ होकर एक बार यहाँ पधार कर हमें दर्शन दे और हम लोगो की तमन्ना पूरी करें। गाववासी आपके दर्शन के इच्छुक हैं। पर सबके लिए जयपुर आना सम्भव नही। हम लोग किसान है जिन्हे न फुरसत है और न जिनके पास पैसें हैं।

इस पत्र में मैंने आपकी जो सेवाएँ आँखो से देखी है, उसके कुछ अश लिखने जा रहा हूँ।

सन् 1931 के लगभग जब आप बीगोद वेयर हाउस के अफसर बनकर आए, तभी से आप इस क्षेत्र मे मानव सेवा में लग गए। उस वक्त यह क्षेत्र हर दिशा में पूर्ण रूप से अन्धेरे मे था।

सबसे पहले आपने बीगोद में सेवा सघ की स्थापना की जिसके मार्फत कई कार्यक्रम चलाए। बाद में किसान सहकारी समिति बनवाकर किसानों को हर तरह की मदद की। इस क्षेत्र के लोगो के बीच जाकर उनकी स्थिति को देखकर हर तरह का सहयोग दिया।

उसके बाद आप खटवाडा व धाकडखेडी ग्राम में पधारे। उन दिनो यह गाव पूर्ण रूप से अधेरे में था। गाव में सामन्तो का अधिकार व शोषण था। हर तरह से

पिछडे इस गाव पर आपकी निगाह गई। सचमुच हमारे गाव के लिए आप भागीरथ बन कर पधारे थे। उस समय यह गाव सामाजिक कुरीतियों, गगोज और बाल विवाह गरीबो, महाजनो के फन्दे व अशिक्षा के जाल में फसा हुआ था। आपने एक एक करके सबसे मुक्ति दिलाई। आप चाहते तो हजारों रूपये महीने के कमाने वाले अफसर या अच्छे उद्योगपति बन सकते थे, लेकिन ऐसा नहीं कर गरीबों के महामहिम बने। धाकडखेडी के ग्रामवासियों मं आपका नाम वैसे ही अंकित है जैसे हनुमान के मन मे राम का था। ■

जिन्दादिल इन्सान

श्री त्रिलोक चन्द्र जैन

प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्ता

यकायक यह विश्वास ही नहीं होता है कि श्री मनोहरसिंह जी महता अब हम लोगों के बीच नहीं हैं। वे ऐसे व्यक्ति थे जो हर मुलाकात में, बातचीत में छोटी बड़ी सभा व चर्चाओ में मुक्त हँसी से सबको आल्हादित कर देते थे। जो गम्भीर वातावरण को निर्दोष हास्य एव व्यग्य की मधुर वाक्-धारा से सहजता में बदलने की अद्भुत क्षमता रखते थे। ऐसे व्यक्ति को मृत्यु भी अपने आँचल में सिमेटते हुई जरूर मुस्कराई होगी। यमराज भी एक बार सहसा ठिठक गया होगा। उनकी ओर हाथ बढाने में। जब महता जी ने कहा होगा – जल्दी कर नजदीक आने में क्यो डरता है ? मैं क्या तुझे खा जाऊगा और वह भी हँस पडा होगा। महता जी से मिलते ही ताजगी महसूस होती थी। दूर से ही दोनो हाथ फैलाकर दौड़कर छाती से लगा लेने वाला मोहब्बत से भरा इन्सान अब नही मिल पायेगा। अब केवल हवाओ में केवल इस निखलिस इन्सान की गन्ध महकती रहेगी। उसकी निस्पृह व्यक्तित्व की प्रतिमा आँखों में चमकती रहेगी किन्तु उसकी याद गमगीन बना देगी। वह तो हँसता रहेगा और हम शोक में डूबे रहेगें।

श्री मनोहरसिंह महता जो हम लोगों में सेठ साहब के नाम से और परिवारजनों में "काका" के नाम से पुकारे जाते थे, सरलचित्त के भावुक व्यक्ति थे वे एक लोकप्रिय निस्पृह लोक सेवक थे। मोटी खादी की पोशाक पहिनने वाला, सर्दियों में रगीन रेजे का कोट, जेकट पहने रेजे का ही चादर ओढने वाला, सपाट चहरे, साफ तबियत के अपनी ही तरह के एक हर दिल अजीज मनुष्य थे। जो अपनी उक्तियो से भरी वातचीत से क्या ग्रामीण और क्या नगरवासी शिक्षित एव अशिक्षित स्त्री एव पुरूषों को प्रभावित कर लेते थे। वे ठेठ लच्छेदार मेवाड़ी में भाषण एव सवाद करते थे। उनको कहावतें और दोहे भी बहुत याद थे, जिनको मौके पर उद्धृत करने में उनको महारत हासिल थी। सेठ साहब ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत लोकप्रिय थे। ग्रामवासियों से सीधा सम्पर्क करने की कला में वे निपुण थे। लोक व्यवहार में कही

बनावटीपन नहीं था। उनकी आत्मीयता जीवन एव व्यवहार में समग्रता के साथ मुखर थी।

श्री मनोहरसिंह जी महता का कार्य क्षेत्र प्रमुखत भीलवाडा जिले की माण्डलगढ तहसील था। आजादी के पूर्व उन्होंने माण्डलगढ के बीगोद कस्बे में सहकारी समितियाँ गठित कर जागीरदारी जुल्मों से प्रताड़ित मूक किसानों के बीच उनकी माली हालत सुधारने, शिक्षित करने एव स्वाधीनता के लिए चेतना जगाने का कार्यक्रम चलाया था। उन्होंने मेवाड़ प्रजामण्डल के लिए चेतना जगाने का कार्यक्रम चलाया था। वे मेवाड़ प्रजामण्डल के सदस्य रहे तथा गाँव के किसानो को सगठित कर जुल्म तथा अन्याय के खिलाफ आन्दोलन किया। रचनात्मक काम द्वारा ग्रामीण जनता को जागीरदारी तानाशाही से मुक्त करने के लिए सगठित किया। गाँवों में काम करने के लिए कर्मठ कार्यकर्ता तैयार किये जो आजादी के बाद भी ग्रामीण क्षेत्र में ग्राम विकास के कार्यों से जुटे हैं। श्री मनोहरसिंह महता अपनी लोकप्रियता क कारण ही दो बार इसी क्षेत्र से राजस्थान विधानसभा के सदस्य चुने गए थे। उन्होने चुनावों में अपने मूल्य एव आदर्श रखे। एक प्रकार से वे लोक-उम्मीदवार की तरह ही विजयी हुए।

श्री मनोहरसिंह महता जी के जीवन पर प्रसिद्ध गाँधीवादी श्री ठक्कर बापा, श्री कृष्णदास जी जाजू, प्रसिद्ध शिक्षाविद् श्री डॉ मोहनसिंह जी महता, लोकनायक - जयप्रकाश नारायण का बडा प्रभाव था। उनकी गाधी के विचारो में निष्ठा थी। उन्होंने गाधी स्मारक निधि के सहयोग से धाकड खेड़ी ग्राम में समग्र ग्राम विकास का सघन प्रयोग भी किया था। स्वर्गीय-श्री गोकुलभाई भट्ट तथा सर्वोदय विचारक-श्री सिद्धराज जी ढड्ढा के परम सहयोगी रहे। श्री महता जी राजस्थान में शराबबन्दी के प्रबल समर्थक के रूप में प्रसिद्ध थे। विधानसभा में उनके कारण से शराबन्दी के लिए सदा आवाज गूजती रहती थी। उन्होने बीगोद शराब की डिस्टलरी को बन्द करवाया। प्रदेश में पूर्ण शराबबन्दी हो, इसके लिए सतत् प्रयत्न किया। शराबबन्दी आन्दोलनो में बराबरभाग लिया। राज्य में पूर्ण शराबबन्दी लागू हो इसी ही का चिन्तन करते हुए वे स्वर्ग सिधार गये। यही उनका जीवन लक्ष्य बन गया था। वे लोकतत्र के परम समर्थक थे। उन्होने आपातकाल मे जन विरोधी तानाशाही का विरोध किया इसके खिलाफ सत्याग्रहकिया और जेल यातनाएँ भुगती।

श्री महता जी सर्वोदय विचार के एक निष्ठावान लोकसेवक थे। उनकी गाधी विचार में गहरी आस्था थी। व सदा गावो की सेवा कार्यों में जुटे रहते थे। वे जिले की गाधी विचार की रचनात्मक सेवा सस्थाओ से जुडे हुए थ। वे अखिल भारतीय

नशाबन्दी परिषद् के भी सदस्य थे तथा प्रदेश नशाबन्दी समिति के वरिष्ठ नेता थे। उनका कार्यक्षेत्र प्रमुखत - ग्रामीण क्षेत्र था। जहाँ वेसहकारिता शिक्षा, चिकित्सा इत्यादि प्रवृत्तियो के द्वारा ग्राम विकास के कार्यों में निरन्तर लगे हुए थे। वे स्वय एक सस्था थे।ग्रामीण क्षेत्र से उन्हें सहज प्रेम था। उन्होन अपने विचारो के साथ सार्थक जीवन जीया। दीन-दुखी व्यक्तियो के साथ सदा खडे रहते थे। उनके जीवन में किसी प्रकार का बनावटीपन नही था। वे एक जिन्दादिल इन्सान थे और कार्यकर्ताओ से साथी भाव से जीते थे। परिवार में सबके व काका ही थे। विगत महीनो में रीढ की हडी की नस में रूकावट हो जाने के कारण उन्हें बडी तकलीफ हो गई। पैरो में शून्यता आ गई थी। इस परिस्थिति में भी उनके चेहरे पर सदा हँसी झलकती रहती थी। वे सेवा के प्रतीक थे। वे 17 अक्टूबर, 1990 को यकायक सदा के लिए हमारे बीच से उठ गए। दीपावली के दिन अन्तिम गति पुण्यात्माएँ ही प्राप्त करती है। वास्तव में श्री सेठ साहब एक पुण्यात्मा ही थे। परिवार एव साथियों का उनको पूरा स्नेह एव सम्मान मिला और बुजुर्ग लोगो का आशीर्वाद। वे एक जिन्दादिल इन्सान थे। जिन्होने बुलन्दगी के साथ जिन्दगी को जिया। एक लोक सेवी पुरूष को शत्-शत् प्रणाम। ■

निःस्पृह जन सेवक

वैद्य श्री नन्दकुमार

सेवा सघ बीगोद के अध्यक्ष

सेवा सघ के सस्थापक श्री मनोहर सिंह महता ने अपने जीवन का समस्त अमूल्य समय अपने प्यारे देशवासियो की सेवा के लिए पूर्ण रूप से समर्पित किया है। और इसके लिए माडलगढ उपखण्ड को सेवा क्षेत्र चुना। इस क्षेत्र में जो भी जन जागरण व चेतना आज दिखाई दे रही है वह सब श्री महता साहब द्वारा सेवा सघ के मार्फत जगाई गई ज्योति ही है। ऐसे पूर्ण समर्पित जन सेवक या लोक सेवा द्वारा लगाई गई ज्योति को हमें निरन्तर आगे बढाना है।

सेठ साहब का जीवन समग्र ग्राम सेवा का रहा है। इसमें कोई क्रम या विधि विधान बाधितनहीरहा।खादकेखडे से लेकर उत्पादन के समस्त साधनो के विकास से लेकर पशु पालन, वन सरक्षण, वन वर्धन, बाढ नियन्त्रण भूमि सुधार सामाजिक सुधार, कुरीति निवारण सहकारिता आदि समस्त विषय प्रतिदिन चलते रहते थे। जन शिक्षण का कोई भी पहलू अधूरा या अछूता बचा नही रहा। वे दिन भर शिक्षा स्वास्थ्य, उत्पादन वृद्धि, परिवार नियोजन मनुष्य के सर्वांगीण विकास से सम्बन्धित समस्त विषयो पर समझाते रहते थे। यहाँ तक कि खेलकूद विनोद मनोरजन को भी अपने दैनिक जीवन में उतना ही स्थान या महत्व देते थे जितना अन्य महत्वपूर्ण और अनिवार्य आवश्यक कामो को देना होता था।

सेठ साहब सदैव मेरे सामने खडे हैं। उन्होने जीवन भर दीन दुखियों के लिए काम किया। उनसे भूले भी हुई पर उन्होने निष्कपट, निश्छल, नि स्वार्थ पूर्ण समर्पित भाव से अपनी पूर्ण ईमानदारी से इस क्षेत्र की जनता की समग्र दृष्टि से सेवा की। सेवा धर्मो कठिन धर्म है। सेवा धर्मो परम गहनो यह उक्ति पुरानी और सही तथा खरी है। उनके द्वारा स्थापित सस्था के माध्यम से नएसन्दर्भों में सेवा के नए आयाम खडे करने होंगे।

सेठ साहब का नाम स्मरण आते ही एक ऐसे व्यक्ति की तस्वीर सामने उभर कर आती है जिसने अपने पूरे जीवन में माडलगढ उपखण्ड की जनता के साथ समरस

होकर जन सेवा में सारा जीवन नि स्पृह भाव से लगा दिया। इस तरह का जन सेवक पाना असम्भव नही तो कठिन अवश्य है।

वे सदा समन्वय सामजस्य बिठाने वाले व्यक्ति थे। उनके चेहरे पर कभी नाराजगी की सलवटें दिखाई नहीं देती थी। जीवन में वे शिक्षा को अत्यन्त महत्व देते थे। रूढिवाद एव कुरीतियो के कट्टर विरोधी थे। सर्वधर्म समभाव आपसी सौहार्दता के लिए वे प्रसिद्ध थे। देश के बटवारे के समय उन्होंने जो बीगोद में आदर्श वातावरण बनाया वह कभी नही भुलाया जा सकता। वे सच्चे ईमानदार समाज सेवक थे। उनकी अपनी शैली थी जो सदा सबको खुश मिजाज रखते हुए अपने और समाज के विकास के लिएसतत् प्रेरणा देती रहेगी।। ■

एक अनूठा व्यक्तित्व

श्री सत्यप्रसन्न सिंह भडारी

अवकाश प्राप्त प्रशासनिक अधिकारी

राजस्थान के विख्यात समाज सेवक, नशाबन्दी के कट्टर पोषक सर्वहित-रता, ऋतु-स्वभावी, विधायक तथा सर्वोदयी नेता, परम्परा से सॉगानेर (भीलवाडा) के नगर-सेठ परिवार के सदस्य दीपावली की पूर्व सध्या को चिर निद्रा में मग्न हो गए। जैसा सहज स्वभाव वैसी ही सहज निद्रा के भागी बन 80 वर्ष पूरे कर महाप्रयाण कर गए।

राज्य के मुख्यमत्री स लेकर भीलवाड़ा क्षेत्र के निर्वसन, नगे पैर चलने वाले भूमिहीन किसान के प्रिय मित्र, सदैव मुस्कुराहट और अधिकतर अट्टाहस के साथ मिलने वाले हर दिल अजीज सेठ साहब कितने लोगों के जीवन में रिक्तता छोड गए इसका आसानी से अन्दाज नही लगाया जा सकता। इतने सरल स्वभाव थे महता साहब कि जिस किसी से मिलते उसके गुणों को ही देखते थे। यदि कोई व्यक्ति किसी की कमियो की ओर इशारा करता, तो उनके दिल को वेदना होती और वे उसके गुणो का ही बखान करते रहते। यही कारण है कि भीलवाडा में हर पूर्व नियुक्त कलेक्टर, एस पी व अन्य अधिकारी उनके परम मित्र बने।

अजमेर और जयपुर के उनके अस्वस्थता के दिनो में उनसे मिलने वालो में जहाँ एक ओर सभी सर्वोदयी नेता दौडते थे दूसरी ओर देखे जा सकते थे श्री भैरोसिंह जी शेखावत ▪ उनके साथ श्री ललित किशोर जी चतुर्वेदी व सुश्री पुष्पा जैन व भँवरलाल जी शर्मा श्रीमति गगा मैनन (स्व के पी यू मेनन की पत्नि) श्री एम एल कालिया, श्री पी सी जैन, श्री जगत महता श्री एम एल महता, सगे सम्बन्धी मिस हेमलता प्रभु श्रीमती चौधरी, अजित कुमार जैन व अन्य शिक्षा शास्त्री, विधायक और भीलवाडा व उदयपुर से आये हुए अनेक व्यक्ति। बीगोद और सॉगानेर से तो बस, जीप मेटाडोर लेकर आते थे तबियत पूछने के लिए।

70 वर्ष पूर्व चित्तौडगढ जिले के बस्सी गॉव से, भीलवाडा के सॉगानेर जो अब नगरपालिका का एक "वार्ड" है गोद आए एक मेवाड राज्य के नायब हाकिम के परिवार में। उदयपुर से 10वीं कक्षा पास की। जब प लक्ष्मीलाल जी जोशी महाराणा

इन्टरमीजियट कॉलेज उदयपुर के प्रिंसिपल होते थे और परिवार की परिपाटी के अनुसार मेवाड राज्य के आबकारी महकमें में उनकी नियुक्ति हुई। बीगाद के डिस्टलरी आफिसर साहब बन गये। नशाबन्दी के सैनिक और आगे चलकर राजस्थान नशाबन्दी समिति के सचिव।

सरकारी नोकरी को छोड डॉ मोहनसह जी महता और केसरी लाल जी बोर्दिया को अपना मार्ग दर्शक मानन वाले पूरे जिले में सेठ कहलाने वाले व्यक्ति राजस्थान सेवक सघ के मामूली से मानदेय पर एक फक्कड ने उसी बोगोद क्षेत्र के समाज सेवक के रूप में कार्य शुरू कर दिया, जिसने वहाँ रात्रि प्रौढशालाओ तथा सहकारी आन्दोलन के जरिए गरीब, बेसहारा सर्वहाराओ में स्वावलम्बन और सम्मान जगाया। सामाजिक कुरीतियो जैसे मृत्यु-भोज, बाल विवाह पर्दाप्रथा तम्बाखू सेवन और मदिरा पान आदि के प्रचलन को बहुत कम करने में सफलता प्राप्त की। कितने ही अछूत माने जाने वाले बन्धक लोगो को छुडाया। उस समय सबसे बडा योगदान था हिन्दु-मुस्लिम सौहार्द बनाये रखने का। उस क्षेत्र में एक अजीब सुखद माहोल सेठ साहब के साथियो म घर कर गया था जिसकी बदौलत बीगोद का एक भी मुसलमान अपना कदीमी घर छोडकर पाकिस्तान नही गया।

परिस्थितियो ने जब सेठ साहब को राजनीति मे धकेला तो एक सिपाही की तरह उस काम म सहष शरीक होकर अपने क्षत्र की सेवा और उनके सबसे अधिक प्रिय कार्य नशाबन्दी म लग गए और एक समय ऐसा आया जब राजस्थान में पूर्ण नशाबन्दी का सपना भी साकार हुआ। 1967 व 1977 के दोनो चुनाव क्षत्र की जनता ने लडे। उन्होन ही चन्दा दिया व ही प्रचारक थे और वे ही मतदाता भी। आपने हमेशा अपने आपको क्षत्र के लोगो का सेवक माना। ये चुनाव सही अर्थो म जनता के चुनाव थे, जहाँ सेठ साहब उनके जन प्रतिनिधि थे। आपने विधानसभा में सर्वोदय गाँधी व विनोबा के विचारो की अमिट छाप छोडी। सच्चाई व ईमानदारी पर इतने दृढ थे कि अपने विधायक साथियो को अपने अनुसार बनाने के लिए खरीखोटी कहते रहते थे। वे जैसे झोला लटकाए विधानसभा मे गए वैसे ही अनासक्तभाव से वहाँ से निकल आए।

विधानसभा के अपने कार्यकाल में उनका निर्वाचन क्षेत्र सुदृढ हुआ तथा मित्रों का दायरा बढता गया और वे विधानसभा मे दलीय स्तर से ऊपर उठकर सच्चे अर्थों में मूल्यो की राजनीति के प्रतीक बन गए।

विवेक और सच्चाई की आँख से हर मसले पर अपने विचार व्यक्त करने वाले सेठ साहब ने सन् 1980 में सांसद का चुनाव लड़ने से इन्कार कर दिया और अपने पुश्तैनी गाँव की सेवा में लग गए जहाँ लाखों रूपयों का चन्दा कर लडकों व लडकियो के स्कूल भवन बनवाए। हर व्यक्ति की निजी समस्या को सुलझाने में सहायता की तथा साथ ही स्थानान्तरण के कार्य से लोगों के नाराज होने पर भी अपने को दूर रखा। गाव के लोग उनकी ईमानदारी और सदाशयता पर पूर्ण विश्वास रखते थे सेठ साहब का कथन उनके लिए नैतिक वचन था। निस्वार्थी इतने कि जब एक इंजिनियर ने उनके निवास के बाहर हैंडपम्प लगाने का प्रस्ताव रखा तो उन्होंने कहा कि पहले खटीकों के मौहल्ले में लगाइए उन्हें अधिक आवश्यकता है।

स्पष्ट वक्ता परन्तु खुश मिजाज उनकी खासियत थी। उनसे कडवी से कडवी बात सुनकर भी कोई व्यक्ति नाराज नही होता था क्योंकि वे निश्छल व्यक्ति थे और कपट लेशमात्र भी उनके विचारो में कभी नहीं आया।

उनके निधन पर शोक व्यक्त करने वालो में बडे से बड़ा राजनीतिक व अफसर तथा गरीब से गरीब व्यक्ति था। आचार्य तुलसी, महेन्द्र मुनि, साध्वी यशकँवरजी व सिद्ध कँवर जी महाराज साहब व अनेक भारतीय प्रशासनिक व राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारियो ने भावभीनी श्रद्धांजलियाँ भेजी। इसके अलावा बीगाद क्षेत्र के अनेक गाँवों में शोक सभाएं व स्मृति सभाएँ हुई। राजस्थान की सर्वोदय व खादी सस्थाओ ने शोक सन्देश भेजे। हर शोक सन्देश में उन्हें मानवता का पुजारी एव कर्मयोगी माना। एक इन्सान मे जितन मानवीय गुण होने चाहिए वे सब उनमें थे, जो भी उनस मिला वह उनका हो गया था इस कारण हर व्यक्ति के पास उनके लिए श्रद्धा-सुमन अर्पित करने के लिए अनेक अनुभव व स्मृतियाँ थी।

सर्वज्ञ की व्याख्या में जैन धर्म की गीता माने जाने वाले सर्वाधिक मान्य आगम आचरग सूत्र में लिखा है कि जिसने राग द्वेष को जीत लिया ।वह तीर्थंकर और सर्वज्ञ है। अपने जीवन के सायकाल में सबसे प्रेम रखने वाले महता साहब ने राग को जीत लिया,उनके पास तो "द्वेष" फटक भी नही सकता। वे स्वय को पहचान गये थे, अपनी आत्मा को पहचान गए थे। इसीलिए तो कहते थे "मैं तो स्वस्थ हू मेरे पैर आहत हो गय हैं।" मेवाड का यह समाज सेवक जिसने बचपन में स्काउटिंग के नियमो से भातृत्व व मन, वचन कर्म से शुद्ध रहने का सबक सीखा अपने विकास के क्रम मे चढता चढता सत बन गया। एसा अनूठा व्यक्तित्व था श्री मनोहरसिंह जी महता का जिनकी स्मृति ही शेष रह गई है। ■

11623
2/9/2002

जनता के अन्तरंग मित्र

श्री केसरी लाल बोर्दिया

उदयपुर के प्रमुख शिक्षाविदतथा समाज सेवक

श्री मनोहर सिंह जी महता से जो सेठ साहब के नाम से प्रसिद्ध थे, मेरा परिचय सन् थमधध–धन में हुआ, जब वे भाई सा मोहनसिंह जी मेहता के रोवर दल के सदस्य बने। में सन् थमदम से भाई साइब के रोवर दल का सदस्य था और इसी सपर्क और सहयोग से मनोहर सिंह जी मेरे घनिष्ट मित्र बन गये।वे उन दिनों बीगोद में शराब के भट्टीखाने (डिस्टलरी) की निगरानी के लिये राजकीय अफसर थे, गाव के सब नागरिक उन्हें अफसर साहब कहते थे। साथ ही उन्होंन एक वालीबाल क्लब चलाया था, जिसमें गाव के कई युवक शरीक हो गये थे। वे विभिन्न सामाजिक श्रेणियों तथा जातियों के थे परन्तु जातिपाति तथा ऊच–नीच सामाजिक स्थिति के आधार पर उनमें आपसी भेदभाव नहीं बरता जाता था। सेठ साहब ने मुझे पहली बार थमधप में बीगोद आमन्त्रित किया और अपने नये स्थापित माडलगढ प्रान्तीय सेवा सघ का अध्यक्ष चुना, सघ के अधिवेशन के बाद वे मुझे अपने कार्य क्षेत्र में ले गये, हम पहले खटवाडा गये जो उनका पारिवारिक गाव भी था। वहा रात्रि के समय हुई सभा में लगभग सभी गाव वाले शरीक हुए और सारा कार्यक्रम स्थानीय भाषा में ही हुआ, जिसमें वृद्ध विवाह के विरद्ध एक बहुत ही सजीव लोक प्रदर्शन भी रखा गया था। इसमें ग्रामीण महिलाओ ने भी बडी रूचि ली। जो व्यक्ति वृद्ध बना उसने एक गीत गाया जिसमें उसने नाटकीय ढग से कहा कि मैं तो विवाह करूगा। महिला समूह में से एक युवती ने कहा कि इसके तो लाय लागरी हैं।

खटवाडे से हम धाकड खेडी गये जो बेडच नदी के तट पर बसी हुई है। रास्ते में मनोहर ने एक महिला से पूछा कि मैं कूण हूँ। उसने उत्तर दिया "मन्दोर सिंग जी" रास्ते में जो भी लोग मिलते उन्हें जानते थे। धाकड खेडी गाँव में भी वे अत्यत लोकप्रिय थे।वहा से बडलियास होकर हम भीलवाडा आ गये। इस यात्रा के मेरा उनके प्रति स्नेह प्रगाढ मैत्री में विकसित हो गया। उनके व्यक्तित्व में स्काऊटिंग, रॉवरिंग की मूल भावना जनता के साथ अतरग एकता के रूप में अभिव्यक्त हुई थी। जीवन के इस गुण को मैं उनके व्यक्तित्व का मूलाधार मानता हूँ।

जन जीवन से एक रस होकर रहने से उनकी मेवाडी बोली इतनी प्राणवान हो गयी थी कि यह पहचानना मुश्किल था कि वे एक सम्भ्रान्त परिवार क सदस्य थे।

वे कलेक्टर तथा अन्य सरकारी अफसरों आदि से भी बराबरी और स्वाभाविक सौजन्य से मिलते थे और इसी से ग्राम जीवन के विकास में उन्हें सरकारी सहयोग भी प्राप्त होता रहा।

परन्तु इससे उन्हें कोई सरकार परस्त नहीं मानता था वे 1967 के चुनाव मे विधान सभा के लिये कांग्रेस के विरुद्ध शरीक हुए और जीत गये। उन्हें कांग्रेस के समर्थक बनाने की बहुत कोशिशें हुई, परन्तु कोई प्रलोभन उन्हें डिगा नहीं सका।श्रीमती इन्दिरा गांधी के शासन काल में आपातकाल के समय में भी वे जेल गये और उसकी समाप्ति पर चुनाव जीत कर विधान सभा के दुबारा सदस्य बने। उन्होंने अपना प्रभाव का प्रयोग कभी अपने व्यक्तिगत अथवा पारिवारिक स्वार्थ के लिय नहीं किया।

बीगोद खटवाडा क्षेत्र से अपने वर्तमान पारिवारिक स्थान सागानर (भीलवाडा) आकर रहने पर भी वहा के जीवन पर उनका बहुत प्रभाव रहा और वहाँ के युवक उनके नेतृत्व में समाज सुधार के कार्य में लगे रहे।

विनोदप्रियता उनके चरित्र का एक विशेष गुण था। वे सर्दियो में मोटे रेजे का कोट पहनते थे जिसे वे रेजिलिन कहते थे। उनकी पहली सह धर्मिणी का बहुत कम आयु में देहान्त हो गया था। उनका दूसरा विवाह नन्दराय में हुआ। जो कोठारी नदी के तट पर बसा हुआ है,बरात में मैं भी शरीक हुआ, और कई मित्र थे।

हम लोग विवाह सस्कार के बाद रात को ही नदी के किनारे "इकतालूपिकतालू" खेले। वे भी खेल में शरीक हुए। यह हास्य रस पूर्ण खेल है जिसमें एक दल के सदस्य घोडी बनते है और दूसरे सवार खेल में बिना देखे घोडी दल के सदस्य सवार वाले दल के सदस्य के द्वारा सकेत की सही अगुलिया बतला देने पर "घोडियाँ" सवार बनते जाते है और सवार घोडियाँ।

जीवन के अतिम कई वर्ष उन्होंने नशाबन्दी आदोलन में लगाये और गाँवगाँव में सभाओ तथा जुलूसों के द्वारा मदिरा पान के विरुद्ध अलख जगाया। उनके देहान्त से उनके गाँव सागानेर के निवासी ही नहीं बल्कि भीलवाडा मॉडलगढ आदि क्षेत्रो के लोग शोकाकुल हो गये। उनके मित्र तो उन्हें जीवन भर याद करेंगे ही। इतना ही नहीं उनके जीवन तथा राष्ट्र सेवा की छाप दीर्घकाल तक बनी रहेगी। ■

क्षेत्र का ज्ञान दीप : श्री सेठ साहब

श्री प्रतापधाकड ग्राम – धाकड़ खेड़ी
वरिष्ठ रचनात्मक कार्यकता

श्री मनोहर सिंह जी मेहता जो इस क्षेत्र में सेठ साहब के नाम से प्रसिद्ध रहे हैं तथा लोग उन्हें सेठ जी के नाम से जानते, वह सबोधन करते है व करते ही रहेंगे। श्री सेठ सा के निधन से यह क्षेत्र एक दम अपने आपको अनाथ महसूस करता है तथा हार्दिक सवेदना प्रकट करते हुये उनकी आत्मा की शाति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करता है।

सेठ जी इस क्षेत्र में उस वक्त चमके जब भारत आजाद तो हो गया लेकिन शिक्षा नाम से कोई भी परिचित नहीं था। अज्ञानता एव अशिक्षा से घिरे क्षेत्र में जहाँ एक भी विद्यालय नही था सेठ सा ने समिति का गठन करके धाकडखेडी में भी एक प्राईमरी स्कूल खोलकर जो इस क्षेत्र का उपकार किया उसका वर्णन करना सभव नही है। इस विद्यालय को चलाने में जो सबसे बडी दिक्कत थी, वह थी क्षेत्रीय जागीरदारो का दमन। क्षेत्रीय जागीरदारो द्वारा विद्यालय का सामान तोडना फोडना व अध्यापको को पीटना एक सामान्य बात थी। किन्तु सेठ जी हर दिक्कत का हँसते–हँसते सामना करते रहे तथा विद्यालय को बद नही किया। इसी विद्यालय से निकले विद्यार्थी आज कई पदो पर है तथा अपने जीवन की सफलता के लिये सेठ जी का आभार प्रकट करते हैं।

सरलता व सादगी की साक्षात मूर्ति सेठ साहब ने दूसरा जो मुख्य काम इस क्षेत्र में किया, वह था नशाबदी। वैसे तो जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नही है जहॉ सेठ जी ने काम नही किया हो लेकिन विद्यालय सचालन एव नशाबन्दी आदोलन ने सेठ जी को इस क्षेत्र में विशेष ख्याति दिलाई।

राजनीति में घुसकर सेठ जी ने जो त्याग दिखाया व जनता की निस्वार्थ सेवा की उसका उदाहरण इस क्षेत्र को अब देखने को कभी नही मिलेगा। जीवन में कई पारिवारिक समस्याओ को झेलते हुये भी समाज सेवा मे लीन रहना केवल सेठ साहब

के ही बूते की बात है। किसी और की नहीं। यह प्रकाश स्तभ जीवन भर निष्कलक रहा तथा अपनी अमिट छाप यहा के हर व्यक्ति के हृदय पर छोड गया।

इस क्षेत्र की जनता, अपने निस्वार्थ सेवाभावी त्यागी, हँसमुख, शिक्षा के प्रकाश स्तभ, दलितो व गरीबों के सरक्षक नेता श्री सेठ जी के निधन पर अश्रुपूरित नेत्रों से अपने श्रद्धा सुमनो से हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करती है। ■

हम कितना भी काम करें, दुनिया में फर्क पडने वाला नहीं है। दुनिया की समस्या कायम रहने वाली है। राम, कृष्ण बुद्ध, गाधी ये आये और गये, दुनिया जैसी है वैसी ही रहेगी लेकिन हमारा काम है – अपनी भूमिका अदा करना व कर्म करना है, मुख्य वस्तु है आत्म दर्शन। थोडी सेवा करनी है, क्योकि हम खाते हैं। काम के परिणाम की चिन्ता न करें। साथियो के दोष न देखें, गुण देखें। गुण गायें, गुण बढायें, दोष दीखेगें, उन्हें भूल जावें। नजदीक जाने से दोष दिखते हैं। मैंने लिखा है – सेवा नजदीक से, आदर दूर से ज्ञान अन्दर से।

विनोबा

सिद्धान्तों पर अटल

श्री विशन सिंह शेखावत

वरिष्ठ अध्यापक अध्यापक सगठन के अध्यक्ष

जब राजस्थान में काग्रेस सरकार बनाने के लिये विधायको को मत्री पद, मन चाहा धन खरीद की बोली में लगाया जा रहा था। उस समय एक ऐसे भी विधायक थे, जिन्होंने अपने सिद्धातो पर अडिग रहकर सत्ता के साथ जुडे हुए सभी प्रलोभनों को ठुकरा दिया। ऐसे ही अटल रहने वाले विधायक हैं मनोहर सिंह महता, जो राजस्थान में सर्वोदयी नेता के रूप मे वर्षों से जाने जाते रहे हैं।

हँस मुख, बनावट से दूर आगन्तुक को बाहों में जकड कर मिलन व सही काम की मदद के लिये हर समय तैयार रहने वाले मनोहर सिंह महता 67 वर्ष पूर्व बस्सी जिला चित्तोड में जन्मे, सागानेर में गोद गये, आबकारी में नोकरी की तथा गाव गाव में कन्धे पर रोटिया बाध कर अलख जगाया, रोवर स्काउट बन कर सवा की।

उदयपुर मे पढाई के दौरान इन्होने भीलो को पढाने के लिये रात्रि पाठशालाए चलाई। नौकरी छोडकर बोगोद सेवा समिति की स्थापना की। यह प्रथम सेवा समिति थी, जिसके दो हजार सदस्य थे। राज्य से कभी अनुदान नही लिया। 300 ग्रामों को अपना कार्य क्षेत्र बनाया। स्कूल, औषधालय खोले, रोजगार दिया एव बसें चलाई। फायदे को सदस्यो में नहीं बाटा, अपितु सेवा में लगाया।

मनोहर सिंह ने, अकाल पडा, तो किसानो को लकडी के बदले अनाज दिया-घाटा चदे से उठाया। बाढ आई हो अथवा हैजा वे हमेशा निर्भीक होकर पीडित जनता के बीच रहे। उनके द्वारा छुडाये बधको में से एक सहकारी विभाग में डिप्टी रजिस्ट्रार तक है। दहेज टीका, मृत्यु भोज के विरूद्ध इन्होने अनेक नाटक खेले। अपनी दूसरी शादी सिर्फ 175रु में की। अपनी पुत्री की शादी बिन घूघट के की तो सारा आसीन्द उमड पडा। इनकी 94 वर्षीय मा एव सम्पूर्ण परिवार तक को रूढिवादिता के विरूद्ध अपने सहज स्वभाव से सहमत कर लिया।

महता द्वारा मकराना में भैरोजी के भोपें बनकर आने, और उसी समय जयप्रकाश बाबू एव प्रभावती जी को सामने बुलाकर आखा देने की घटना आज भी चारो और चर्चित है। गिल्ली डण्डा खेलने एव नाटक का पात्र बनने में इनकी रूचि रही।

शराब बदी के लिये मेवाडी बोली में इनके बनाये दोहे जब ग्रामीण सुनाओ में गाकर सुनाते हैं तो लोग लट्टू हो जाते हैं। कन्धे पर थैला लटकाए, किसी गाव म जाकर खेलते बच्चों को गोदी में लेने, अपने क्षेत्र के प्रत्येक व्यक्ति को नाम से जानने एव उनके साथ बैठकर मक्की की रोटी एव छाछ खाने वाले मनोहर सिंह की लोकप्रियता से प्रभावित होकर सन 38 मे गाधीजी की जर्मन शिष्या कैथरीन मेरी उर्फ सरला देवी ने अपनी पुस्तक मे इनक कार्यों का उल्लेख किया है।लिखा है कि गाव सभा में गगाजली को सर पर रख कर हजारो भीलो एव आदिवासियो की शराब छुडवाई। पपीते, गोभी खुद ने पैदा कर गाव वालो को अधिक बोने के लिये प्रेरित किया। अब भी वे खेती करते है।

पचायत में 'चुनाव' की अपेक्षा 'मनाव' को अच्छा समझते हैं। शराब जुआ एव वेश्यावृत्ति के पैसो से सरकार चलाने को उचित नही मानते। आज भी इनका खपरैल का मकान है। विधान सभा से प्रथम श्रेणी का मिलने वाला किराया एव अपने परिवार का चिकित्सा भत्ता कभी नही लिया।महता का जीवन सर्वादय का जीता जागता उदाहरण है। आपातकाल में एक कविता –

"बुरो लागतो जी तरह हिरणाकश नै राम" – इदिरा जी ने बीतरह नारायण रो नाम" कहने पर इन्हें हथकडी डालकर पुलिस ने घुमाया। 5 माह तक जेल मे रखा।

विधायक होकर भी इनका अधिकाश समय अपने क्षेत्र के लोगो की रचनात्मक सेवा मे ही लगा रहता है। विधानसभा मे भी शराब बदी एव अन्य विषयो पर इनक विचार बिना किसी लाग लपेट एव पक्षपात के होते हैं।



नोट—यह लेख सन 78 में इतवारी पत्रिका में छपा था उसी रूप में यहाँ प्रस्तुत है।

दरिद्रनारायण के पुजारी

श्री बालू लाल पानगडिया

उच्च प्रशासनिक अधिकारी एव विद्वान लेखक

स्वर्गीय श्री मनोहरसिंह महता राजस्थान के उन इने गिने जन सेवकों में थे, जिन्होंने जीवन पर्यन्त दरिद्रनारायण की सेवा की। सन् 1911 में चित्तौड जिले के बस्सी ग्राम में एक सम्भ्रान्त परिवार में पैदा हुये श्री महता भीलवाडा जिले के सागानेर कस्बे के "सेठ" परिवार में गोद चले गये थेउन्होंने उदयपुर में शिक्षा पाई और वहीं मेवाड में स्काउट आन्दोलन के प्रवर्तक और सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री डाक्टर मोहनसिंह मेहता के सम्पर्क में आये। उन्हीं के सानिध्य में उन्होंने जन सेवा का पाठ पढा। वे हाई स्कूल पास करने के बाद मेवाड राज्य के आबकारी विभाग में एक अधिकारी नियुक्त हो गये। उन दिनों राजस्थान की रियासतों में खादी पहनना एक साहसपूर्ण कार्य माना जाता था। पर श्री महता सरकारी कर्मचारी होने के बावजूद खादी पहनते रहे। उन्होंने अपना यह व्रत अन्त तक निभाया चाहे फिर वे किसी दल से सम्बन्धित रहे अथवा न रहे।

सन् 1938 में बीजौलियाँ आन्दोलन के सूत्रधार श्री मा॰ि॰क्य लाल वर्मा ने मेवाड प्रजामण्डल की स्थापना की। श्री महता तभी उनके सम्पक में आ गये थे और प्रजामण्डल के कार्यक्रमों से सहानुभूति रखते थे। जब मेवाड में उत्तरदायी शासन स्थापित करने की माग ने जोर पकडा तो वे राज्य सेवा से इस्तीफा देकर प्रजामण्डल में शामिल हो गये। उन्होंने बीगोद को अपनी कार्यस्थली बनाया। उन्होंने वहा सेवा समिति की स्थापना की जो मेवाड में उस समय अपने ढग की एक अनूठी रचनात्मक थी। इस सस्था के माध्यम से उन्होंने माडलगढ क्षेत्र में घर-घर में प्रजामण्डल का सदेश पहुचाया। उन्होंने समिति के सीमित साधनों से गावों में पाठशालाए,प्रौढ शालाए और औषद्यालय खोले और खादी एव शराबबन्दी का प्रचार किया। उन्होंने धाकडखेडी को तो एक आदर्श ग्राम में परिवर्तित कर दिया। उनके रचनात्मक कार्यक्रमों से प्रभावित होकर वर्माजी ने उन्हें मेवाड प्रजामण्डल की कार्यसमिति का सदस्य बना दिया।वे सन् 1948 तक प्रजामण्डल की इस सर्वोच्च समिति के प्रभावशाली सदस्य रहे। कार्यसमिति के एक अन्य शीर्षस्थ नेता श्री

नरेन्द्रपाल सिंह चौधरी तो यदा कदा मजाक में कह दिया करते थे, कि महाराणा के राज में तो महताओ का प्रभाव रहा ही है, ऐसा लगता है कि प्रजामण्डल की हुकूमत आने पर भी मेहता लोग हावी रहेंगे। उनका इशारा कार्य समिति के एक अन्य सदस्य श्री वलवन्त सिंह मेहता और मनोहर सिंह महता की तरफ था।

वृहद् राजस्थान के निर्माण के साथ ही साथ प्रदेश काग्रेस में भयकर गृहयुद्ध शुरू हो गया। उसकी परिणिति स्व हीरालालजी शास्त्री के राज्य के मुख्यमत्री पद से इस्तीफा देने में हुई। कागेस की इस धडे वन्दी से दु खी होकर श्री सिद्धराज ढड्ढा आदि कई कार्यकर्ताओ के साथ साथ श्री महता ने काग्रेस से सम्वन्ध विच्छेद कर लिया। वे पूरी तरह सर्वादय आन्दोलन से जुड गये। उन्होंने अपने क्षेत्र में श्री विनोबा भावे के भूदान कार्यक्रम को आगे वढाया और शराव वन्दी का प्रचार किया।

सन् 1967 में उ होने माडलगढ क्षेत्र से एक निर्दलीय सदस्य के रूप में चुनाव लडा। उन्होने क्षेत्र के पूर्व विधायक श्री गणपतलाल वर्मा को भारी वहुमत से हराया। विधान सभा में विरोधी दलों के साथ वैठने के वावजूद मुख्यमत्री श्री सुखाडिया के साथ उनके अच्छे सम्व ध रहे।उन्होने राज्य में श्री गोकुलभाई भट्ट द्वारा सचालित शराव वन्दी आन्दोलन के पक्ष में विधान सभा और उसके वाहर अपनी आवाज वुलन्द की। फलस्वरूप सुखाडिया सरकार को झुकना पडा। सरकार ने पूरे राज्य के लिए समयवद्ध कार्यक्रम स्वीकार कर कुछ जिलों में तत्काल शराब बन्दी लागू कर दी। पर 1971 में श्री सुखाडिया के मुख्यमत्री पद से इस्तीफा देने के बाद नई सरकार ने "आर्थिक सकट" के नाम पर इस कार्यक्रम को स्थगित कर दिया। 1972 में श्री मेहता ने चुनाव नही लडा।वे पुन रचनात्मक कार्यो मे जुट गये।

सन् 1973 मो शराव बन्दी आन्दोलन ने राजस्थान में फिर जोर पकडा। श्री महता ने अपने आपको श्री भट्ट द्वारा सचालित इस आन्दोलन में झौक दिया सरकार को झुकना पडा। उसने एक बार फिर मार्च 1980 तक सार राज्य में शराब बन्दी करना स्वीकार कर लिया और साथ ही 3 और जिलों में ता 2 अक्टूबर 1974 से शराब बन्दी लागू कर दी। जून 1975 में भारत की प्रधानमत्री श्रीमती गाधी ने देश में "आपात् स्थिति" लागू कर दी। लगभग 27 सगठनो। को गैर कानूनी घोषित कर दिया। जयप्रकाश नारायण, मोरारजी भाई आदि कई विरोधी दलों के नेता और कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिये गये। भारत सरकार की इन नीतियों के विरोध में हजारो लोगो ने गिरफ्तारियाँ दी।

भारत सरकार ने जनवरी 1977 में "आपात स्थिति" उठाली। उसने लोकसभा भग कर मार्च में लोकसभा क चुनाव कराये। जनता दल ने काग्रेस को हरा कर केन्द्र में मोरारजी भाई के नेतृत्व में सरकार बनाई। उसने काग्रेस शासित राज्यो की सरकारो और

विधान सभाओ को भग कर जून में विधान सभाओ के चुनाव कराये। श्री महता ने जनता दल के सदस्य के रूप में इस बार फिर माडलगढ से चुनाव लडा। उन्होने जनता-आधी मे काग्रेस के प्रमुख नेता और योजनामत्री श्री शिवचरण माथुर को भारी बहुमत से हराया। इन चुनावो के फलस्वरूप राजस्थान में श्री भैरोसिंह शेखावत के नेतृत्व में जनता सरकार बन गई।

जनता सरकार ने भी भट्ट और श्री महता आदि के प्रयत्नो मे ता 1 अप्रैल 1979 से कुछ और जिलो में शराब बन्दी कर दी। इस प्रकार 13 जिलो में शराव बन्दी हो गई। सरकार ने वादा किया कि शेष 13 जिलों में ता 1 अप्रैल 1980 से शराबबन्दी कर दी जायगी। पर उक्त तिथि के पूव ही सरकार भग कर दी गई और राज्य मे राष्ट्रपति शासन लागू हो गया। जून, 1980 मे हुये चुनावो क फलस्वरूप राज्य में श्री जगन्नाथ पहाडिया के नेतृत्व में काग्रेस सरकार बन गई। उसने शराबबन्दी के बारे में यथास्थिति बनाये रखी। जुलाई, 1981 में श्री शिवचरण माथुर का मत्रीमण्डल बना। उसने समूचे राजस्थान में शराब बन्दी समाप्त कर दी। इस प्रकार श्री भट्ट और श्री महता के वर्षो के प्रयत्न एक कलम से बेकार हो गये। श्री महता ने इसके बाद राजनीति से पूर्ण सन्यास ले लिया। अब उन्होंने अपनी दत्तक भूमि सागानेर को ही अपनी प्रवृतियो का केन्द्र बनाया। उन्होंने जीवन के अतिम वर्षों में अपने प्रयत्नो से सागानेर में बालक व बालिका स्कूल का विशाल भवन खडा कर दिया जो सदा-सदा उनकी स्मृति को ताजा करता रहेगा।

श्री महता का दखल राजनीति सर्वोदय एव विभिन्न रचनात्मक प्रवृतियो तक ही सीमित नहीं था, वे समाज सुधारक भी थे। उनमे समाज में प्रचलित मृत्युभोज, बाल विवाह, दहेज आदि बुराइयो के प्रति बहुत पीडा थी। वे विभिन्न सामाजिक एव धार्मिक अवसरों पर एकत्रित समाज के बीच अपने धाराप्रवाह भाषणों से उन बुराइयों पर ऐसे तीखे प्रहार करते थे जिससे समाज के ठेकेदार और तथाकथित नेता धराशायी और शर्मिन्दा हो जाते थे। वे अपने भाषणो में अपने मित्र और आशु कवि श्री मोतीलाल छापरवाल के मेवाडी दोहों का इस प्रकार उपयोग करते थे कि उससे वे न केवल अपनी बात अनुदार से अनुदार श्रोताओ के गले उतारने में कामयाब हो जाते, वरन् सभा का माहौल ही बदल देते। एक सभा में समाज में समय-समय पर विवाहित युवतियो की संदिग्ध परिस्थितियो में होने वाली मौतो पर बोलते हुये उन्होंने श्री छापरवाल का निम्न दोहा उद्धृत किया तो सभा मे ठहाका मच गया।

"स्टोव जले, बहुवा बले, सासु बली न एक ।
देखो तो इण स्टोव में, कुण भरियो विवेक ।।

भावार्थ – स्टोव से जल कर कई विवाहित युवतियाँ झुलस कर मर गयी। पर आज तक एक भी सास नही जली आखिर इस स्टोव मे यह विवेक कहॉं से पैदा हो गया कि वह सास और बहू का भेद समझने लग गया।

श्री महता बडे स्पष्ट वक्ता, हाजिर जवाबी और व्यग कसने में माहिर थे। वे शुरू मे श्री माणिक्यलाल वर्मा के बडे भक्त थे। पर आजादी के बाद कई कारणो से वे उनके आलोचक बन गये। एक दिन एक केन्द्रीय मत्री दिल्ली से आते हुये उन्हें अजमेर स्टेशन पर मिल गये। ये मज्जन स्वाधीनता सग्राम के दौरान वर्मा जी के कटु आलोचक थे, पर जबसे वर्मा जी ने उनको मत्री पद पहुचाने में मदद की थी वे उनके चरण छूने लगे थे। उक्त मत्री महोदय ने श्री महता को उलहना दिया कि वे नाहक ही श्री वर्मा जैसे तपस्वी नेता की आलोचना करते हैं। श्री महता ने तुरन्त ही उत्तर दिया कि जब हम वर्माजी की पूजा करते थे, तो आप आलोचना करते थे और अब जब हम उनकी आलोचना करने लगे हैं तो आप उनकी पूजा करने लगे हैं। फर्क इतना ही है कि पूर्व मे वे आपको कुछ दे नही सकते थे और अब आपको उन्होने मत्री बना दिया है। बेचारे मत्रीजी पानी–पानी हो गये।

कुछ वर्षो पूर्व की घटना है। महता जी के निमत्रण पर हम लोग एक दिन धाकडखेडी पहुच गये। वहा चल रही विभिन्न प्रवृत्तियो को देखने के बाद हम एक स्थानीय व्यापारी के घर पर खाना खाने गये। थालियो में हमे रोटी और चने की दाल परोस दी गई। दाल मे दाने कम और झोल ही झोल था। उपर एक लाल मिर्च पूरी की पूरी तैर रही थी। महता जी मिर्ची खाने के अभ्यस्त नही थे। वे असमजस में थे, कि क्या किया जाय। महता जी को हक्का बक्का देखकर मेजबान सेठ ने कहा कि आप खाना क्यो नही शुरू कर रहे हैं। महता जी न कहा कि मैं दाल मे डुबकी लगाना चाहता हू, पर मगरमच्छ (पूरी मिर्ची) से डरता हू। मेजपान समझ गया कि महताजी मिर्ची वाली दाल नही खा सकते। वह रसोई घर मे गया और वहा से चन्दन की कटोरी के समान बर्तन में कोई डेढ दो छटाक दूध लेकर आ गया। पर महता जी इस तरह उसका पीछा छोडने वाले नही थे। उन्होने उसे कहा कि वह एक बडा कटोरा ले आवे। मेजमान ने वही किया। महताजी दूध बडे कटोरे मे डालकर पास ही पडे लोटे से पानी डालने लगे तो सेठ ने कहा कि अरे आप तो दूध मे पानी मिला रहे हैं ? महताजी ने कहा कि मैं दूध मे पानी नही पानी में दूध मिला रहा हू, वरना इतने से दूध से मैं रोटी कैसे खा सकूगा। शर्मिन्दा सेठ जल्दी जल्दी में दूध का बडा कटोरा भर कर लाया। अब महता जी ने कहा कि वे दूध में शक्कर डाले बिना रोटी नहीं खा सकते। अब बेचारा मेजपान शक्कर भी ले आया। इस प्रकार महताजी तो दूध–रोटी खाकर मस्त हो गये और हम लोग मिर्ची वाली दाल से रोटी खाते रहे और उसे पानी

के साथ पेट में उतारते रहे। महताजी की होशियारी और हाजिर जवाबी के हम कायल हो गये।

श्री महता श्री भैरोंसिंह शेखावत के अनन्य मित्र थे। 1977 में जब श्री शेखावत राजस्थान के मुख्यमंत्री बने, तब श्री महता माडलगढ से विधानसभा के लिये चुनकर आये थे। जब कभी श्री शेखावत दौरे पर जाते तो व श्री महता को अपने साथ ले जाते। सदा की तरह एक सावर्जनिक सभा में श्री शेखावत ने श्री महता को दो शब्द बोलने के लिये कहा। श्री महता ने स्वाभाविक मेवाडी शैली में अपना भाषण देते हुये कहा कि श्री शेखावत मुख्यमंत्री है और मैं विधानसभा का एक साधारण सदस्य हू। पर उन्हें समझ लेना चाहिये कि वे ठाकुर हैं तो मैं भी सेठ हू। पर न उनके पास कोई जागीर है और न मेरे पास कोई पैसा। एक मामले में तो हम दोनो पूरी तरह समान है। यदि मेरे सागानेर के निवास स्थान पर केलू (खपरेल) है तो मुख्यमंत्री जी के खाचरियावास के निवास स्थान पर भी खपरेल है। उपस्थित जन समुदाय बडे जोर से हस पडा।

श्री महता के राजनीति से सन्यास ग्रहण करने के बावजूद भी श्री शेखावत ने उनसे आत्मीयता बनाये रखी, तथा श्री महता के अन्तिम दिनों में जब वे अजमेर में अपने पुत्र के यहा रूग्ण शैया पर थे तो श्री शेखावत वहा पहुचे। उन्हें अजमेर से जयपुर ले आये और उनके उपचार की पूरी व्यवस्था सरकारी अस्पताल में करवाई। खेद है कि श्री महता सभी उपचार के बावजूद भी बीमारी से मुक्ति नहीं पा सके। श्री महता सिद्धान्तो के धनी थे। श्री शेखावत से गहरे सम्बन्धों के बावजूद भी एक बार जब उन्होंने उनसे भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण करने के लिये कहा, तो उन्होंने स्पष्ट इन्कार कर दिया।

श्री महता से मेरे 50 वर्ष पुराने सम्बन्ध थे। वस्तुत उनका गाव सागानेर कोठारी नदी के पश्चिमी तट पर स्थित था और मेरा गाव सुवाणा पूर्वी तट पर। वैसे हमारे पूर्वज सागानेर से ही सुवाणा आये थे। जब श्री महता प्रजामण्डल की कार्यकारिणी के सदस्य थे तो मैं मेवाड़ प्रजामण्डल पत्रिका का सम्पादक था। राजस्थान बनने पर वे कांग्रेस से अलग हो गय और मैं राज्य सेवा में चला गया। पर हमारा मिलना जुलना जीवन पर्यन्त बना रहा। राजनीतिक मुद्दो पर हम कभी एक मत नही होत थे। पर उसस हमारे सम्बन्धो मे कभी कोई आँच नहीं आई। वे "सेठ" परिवार में गोद आये थे। अत परम्परा के अनुसार हम सब उन्हें सेठ साहब के नाम से ही सम्बोधित करते थे। एक दिन वे अपने सुयोग्य पुत्र प्रो गजेन्द्र के साथ मेरे घर आये तो मैने उन्हें पूछा कि सेठ साहब क्या हाल है ?" सेठ जी ने कहा कि "और तो सब ठीक है, पर अब मेरी

उम्र हो चली है। यदि अब तुम (लेखक) कर्जा लौटा दो तो तुम्हारा भला होगा।" मैंने कहा कि आप तो मजाक कर रहे हैं पर आपके न रहने पर आपका सुपुत्र तो सचमुच ही मुझसे "कर्जा" वसूल कर लेगा। सेठजी ने फट उत्तर दिया कि तुमने मुझे ही कर्जा नही लौटाया तो मेरे लडके को क्या लौटाओगे। हमारा सारा परिवार हँस पडा।

श्री महता ने अपना 80 वाँ जन्म दिन एस एम एस अस्पताल में बडी हसी खुशी से मनाया। उन्हे कभी यह नहीं बताया गया था कि वे "कैंसर" से पीडित है। पर मुझे विश्वास है, कि यदि उन्हें बता भी दिया जाता वे अपने ईर्द–गिर्द हसी खुशी के वातावरण मे कमी नही आने देते। यह असभव है कि जो व्यक्ति जीवन भर हसा और हसाया, वह मृत्यु के भय से अपनी हसी छोड देता। वे अन्तिम दिनों मे अपने गाव सागानेर चले गये। उनके एक अनन्य मित्र श्री मिश्रीलाल जी पानगडिया जयपुर में आये हुये थे। वे भी सेठ जी की मृत्यु के एक दिन पहले सागानेर पहुच गये। उन्होनें उनसे रात्रि में 2–3 घटे सदा की तरह गप्प शप्प लगाई। अगले ही दिन प्रात काल यह पता चला कि सेठजी इस दुनिया मे नही रहे तो सारा ग्राम उनके घर पर एकत्रित हो गया। शाम तक उनके रिश्तेदार मित्र व अनेक नेता जयपुर और भीलवाडा आदि स्थानो से सागानेर पहुच गये और दाह क्रिया मे शामिल होकर उन्हे अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

श्री महता के मित्रो का दायरा बहुत बडा था। डॉ मोहन सिंह महता, श्री मोहनलाल सुखाडिया, श्री गोकुलभाई भट्ट, श्री सिद्धराज ढड्ढा, श्री भैरूसिंह शेखावत आदि उनके अनन्य मित्रों मे थे। उन्होने अपना सारा जीवन जनसेवा मे लगा दिया। उनकी सम्पति केवल मात्र सागानेर में स्थित एक पैतृक कच्चा पक्का साधारण सा मकान था। अपने या अपनी सताना के लिये उन्होनें कभी किसी से सहायता की अपेक्षा नही की।देवयोग से वे अपनी सतानो के बारे मे बडे भाग्यशाली रहे। उनका एकमात्र पुत्र गजेन्द्र और एक पुत्री रेणुका महाविद्यालय में प्रोफेसर है। उनके दोनो दामाद राज्य में उच्च पदो पर हैं जिनमे एक हाल ही में सेवानिवृत्त हो गये हैं। बहरहाल वे परिवार सम्बन्धी कोई चिन्ता अपने साथ लेकर नही गये। ईश्वर उक्त पुण्यात्मा को शान्ति प्रदान करे। ■

सहृदयी, भावुक मित्र

श्री दौलत सिंह कोठारी

भारतीय प्रशासनिक सेवा के सेवानिवृत उच्च अधिकारी

मुझे बहुत अच्छी तरह से याद है 24 फरवरी 1936 का वह दिन जब मेरी पहली मुलाकात सेठ मनोहर सिंह से हुई थी। वे मेरी बहन कृष्णा की शादी पर उदयपुर से बरात के संग, दूल्हा श्री गुलाबसिंह महता के निकट के मित्र के नाते आये थे। अन्य मित्र, जो बरात में थे, उनमे नवरत्न बोर्दिया थे, यह भी मनोहर सिंह के काफी घनिष्ठ मित्रो में से एक थे। इन्ही दोनो से मेरा परिचय कराया था गुलाब सिंह ने, जो उक्त रिश्ते के साथ मेरे मित्र भी थे। दोनों ही खादी पहनते थे। किन्तु मनोहर सिंह की वेशभूषा उस सामन्ती जमात मे अन्य सबसे भिन्न थी। छरहरा बदन, शेरवानी चूडीदार पजामा ओर ऊपर साफा सब कुछ मोटी खादी के। परिचय कराते समय गुलाब सिंह ने मनोहर सिंह के नाम से पूर्व "सेठ" नही लगाया तो उन्होनें तुरन्त ही भूल सुधारते हुये कहा "मैं सेठ मनोहर सिंह हू" और साथ में यह भी विनोदी स्वर में कहा "पर यह मेरे नाम की पहली विडबना है"। लोग मुझे सेठ के नाम से पुकारते जानते हैं क्योकि मैं नगर सेठ के परिवार में गोद आया हू। किन्तु जीवन में चदा वसूल कर धन एकत्रित करता रहा हू और मैं एक पैसे से एक सो रूपये (उस समय सौ रूपये भी कुछ विशेष महत्व रखते थे) तक का चदा लेता हू। यह मेरे लिये नही बल्कि बीगोद ग्राम सेवा समिति के लिये। बोलो तुम क्या दोगे।मैं भी हैरान रह गया कि पहली मुलाकात में चदा माग रहे हैं, वह भी मुझसे जो 10वी कक्षा का विद्यार्थी पास में एक रूपया भी नही। वह मेरा धर्म सकट समझ गये और कहा "खैर एक रूपया नही दो आने, चार आने ही सही अभी नही तो फिर सही। नही तो शादी में आये उनसे ही एकत्रित करवा देना।"

मैंने उक्त प्रकरण इसलिये उदधृत किया है कि कितना समर्पण था कितनी लगन थी मनोहर सिंह के व्यक्तित्व में, कि वह प्रथम परिचय पर भी अपने उद्देश्य के लिये झोली पसार तैयार थे बिना किसी झिझक के। उस दिन के परिचय के बाद उन्होंने मुझे इतना आकृष्ट किया अपनी ओर कि फिर तो तीन दिन हम हर समय साथ रहे, और वही ऐसा मित्रता की नीव पडी कि वह उनके अतिम समय तक

बढती ही चली गई। इसी अवसर पर इस मित्र मडली में आ मिले थे श्री सत्य प्रसन्न सिंह भडारी जो मेरे भाई भी हैं और मित्र भी। जब विवाह के बाद हम लोग अलग हुये तो हमने यह निर्णय किया कि सभी पुन कही गर्मी की छुट्टियो में एकत्रित हो कुछ समय साथ बिताये।

उक्त सकल्प ने मूर्तरूप लिया जून 1936 मे जब हम बीगोद गये कुछ दिनो के लिये। नवरत्न मल जिन्हे सब मित्र "गट्टू" के नाम से बुलाते है जोधपुर आये थे। वहा से इदौर लौटते हुये रास्ते मे बीगोद जाने का प्रोग्राम बनाया। सत्तू जी (सत्य प्रसन्न सिंह जी) को भी बनेडा लिख दिया और इस प्रकार चारो पुन बीगोद इकट्ठे हो गये।

मनोहर सिंह उस समय बीगोद में डिस्टलरी आफिसर के पद पर कार्यरत थे। अपने पद के कार्य के अतिरिक्त जो अधिक नही था जो भी समय उन्हे मिलता था, वह ग्राम सुधार की विभिन्न गतिविधियो मे लगाते थे। यह एक अत्यन्त साहसपूर्ण एव सर्वथा असाधारण एव क्रातिकारी कदम था। उस वक्त के परिप्रेक्ष्य में ब्रिटिश राज और महाराजाओ के सामतशाही राज्य में इसकी कल्पना करना भी गुनाह था।

ग्रामवासियो में जागरूकता लाना उन्हें अक्षरबोध करा कर पढने योग्य बनाना, शाम को खेलो का आयोजन कर उसमें सम्मिलित होना रात्रि को भजन कीर्तन कैम्प फायर कर बदलते समय की ओर उनका ध्यान आकर्षित करना कोई मामूली काम नही था। आज के परिदृश्य मे तो सरकार ही इन सब को प्रोत्साहित कर रही है। किन्तु तीस के दशक मे तो यह राज्य सरकार के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल बजाने जैसी कुचेष्टा ही मानी जाती थी। राज पर इन कार्यों की क्या प्रतिक्रिया होगी इसकी किंचित मात्र भी परवाह किये बिना मनोहर सिंह अपना ज्यादा समय ग्रामवासियो के लिये केवल बीगोद ही नही किन्तु आसपास के कई एक गावो के उत्थान के लिये व्यतीत करते थे और विभिन्न कार्यक्रम बनाकर क्रियान्वित करते थे।

हम भी बीगोद मे उनके इन्ही सब कार्यक्रमो से जुड गये। शाम को गाववालों के साथ बॉलीबाल खेलना रात्रि आयोजनो मे शामिल होना इत्यादि मनोहरसिह की यह गतिविधिया उस समय की सरकार को क्यो पसद आने लगी ? ईमानदार और सही काम करने वाले अधिकारी के नाते कोई उनकी कार्यशैली और कर्तव्य परायणता पर उगली भी नही उठा सकता था। किन्तु कुछ सामत जागीरदार और ठिकाने वाले उनसे नाराज ही थे, क्योकि वे गाव वालो को यह सदेश ठोक बजाकर देते थे कि वे बेगार न करें जागीरदारों के अत्याचारो को न सहे। दूसरी रजिश यह भी रहती थी

कि कुछ जागीरदार डिस्टिलरी में अपनी नाजायज शराब बनवाने के आदि थे, वे चाहते थे कि यह कार्य मनोहर सिंह भी करें, पर वे कैसे मान सकत थे इस अनुचित माग को। इन्ही लोगो ने इनकी शिकायतें करवाई और डिस्टलरी पर जाच दल बिठवा दिया।

जब हम तीनो मित्र बीगोद पहुचे तो जाच दल वहाँ आया हुआ था और जॉच चल रही थी। मनोहर सिंह को कोई चिन्ता नहीं थी। वह अपने कार्य में मस्त। लोग आते थे गावो से। चदा इक्कठा होता था। छोटी-छोटी रसीदें चदे की एक आने, दो आने तक की कटती। शाम को खेल और रात को भजन कीर्तन या केम्प फायर आयोजित होते रहते। जॉच दल के अधिकारी जॉच का काम तो भूल गये, क्योकि अनियमितता तो कुछ थी नही, वे भी हमारे साथ उन सब गतिविधियो में लग गये जो मनोहर सिंह ने चला रखी थी।

हमने अपने बीगोद प्रवास के दौरान आसपास क रमणीक स्थानो पर जान का प्रोग्राम बनाया। जाच दल के अधिकारी भी हमारे साथ हो गये। ऊटो पर घूमने निकले। हम माडलगढ जोगणियों माता और मेनाल गये, तब वहाँ पर घना जगल था। शेर चीते भी स्वच्छद विचरण करते थे जगल मे। रास्ते में शुतर सवार ने शेर के पजे के निशान देख कर बताया कि "अभी ही इधर से शेर निकला है" यह सुनकर घबराहट तो सब को हुई पर बोला केवल मैं ही कि "क्यो फिर आगे जा रहे हैं, खतरे में", तभी जाच दल के अधिकारी और मनोहर सिंह ने कहा कि "घबराते क्यो हो हम आगे हैं। शेर खायगा तो पहले हमे ही खायेगा" मैंने कहा "यह तो मेरे लिये और भी दु ख की बात होगी कि मेरे अपने सामने शेर तुम्हे खायेगा, वह भी देखू और फिर अपनी बारी का इतजार करू" इसी पर सब की हसी छूट पडी, वातावरण हल्का हुआ और हम अपने सफर पर चलते रहे। यह यात्रा भी बडी सुखद रही, जो मैं अपने जीवन में कभी नही भूल सकता।

जाच से मनोहर सिंह पर कोई आच नही आई। उन्ही दिनो उनके बढते सार्वजनिक कार्यों को देखकर उनका तबादला बीगोद से चित्तौड डिस्टिलरी पर कर दिया गया ताकि वे अपने कार्य क्षेत्र से दूर हो जावें। किन्तु यह क्या उन्हे रोक सकता था। बीगोद और उसके पास के गावो में तो उनका कार्य चलता ही रहा क्योकि वह उसे स्वावलबी सस्था का रूप दे चुके थे और उसे समर्पित कार्यकर्त्ताओ के हाथ में छोड आये थे।चित्तौड के पास ही उन्होने अपना कार्य का प्रसार करना शुरू कर दिया, उसी प्रकार की गतिविधियो से। अततोगत्वा मनोहर सिंह राज्य सेवा को तिलाजलि देकर ग्राम सेवा और सुधार के काम में ही पूर्णतया लग गये।

मनोहर सिंह एक बहुत ही स्नेही और भावुक मित्र थे। हर मित्र की उनको चिंता रहती और पत्र व्यवहार में भी वह कभी शिथिलता नहीं आने देते। उन्हीं के पत्र में उन्होने अपने मित्र मोहन सिंह जी मुडिया की बहन रतन कुमारी के गुणों का वर्णन करते हुये मुझे लिखा, कि यदि मेरा विवाह उससे हो जाय तो वे अत्यत खुश होगें। और नियति ने चाहा भी यही और उनकी कामना पूरी हो गई। मैं तो इसलिये उनका और भी कृतज्ञ हू कि उन्होने मुझे अपनी होने वाली जीवन सगिनी को इगित किया। वह उन्हें हमेशा अपनी बहन मानते रहे और भाई का प्यार देते रहे।

मनोहर सिंह की मित्रो के प्रति आसक्ति और भावुकता देख कर गट्टू के विवाह में डॉ मोहन सिंह जी मेहता, जो "भाई साहब" के नाम से ही जाने जाते थे, ने यह कहा कि "मनोहर सिंह तो एक मरीज है" इसका इलाज इसके दोस्तों से ही होता है, जब तक दोस्त, जिन्हें उन्होने मेडिकल बोर्ड की सज्ञा दी, एकत्रित नहीं होते तब तक इसे चैन नही आता। यह बात अक्षरश सत्य थी। अक्सर शादी विवाह या ऐसे ही मौंको पर सबका मिलना होता था और मेरे विवाह में तो उनके आग्रह पर हमने मनोहर सिंह के मेडिकल बोर्ड का एक अलग ही फोटो ग्रुप खिंचवाया।

मनोहर सिंह जितने भावुक थे उतने विनोदी भी। हर बात को मजाकिया तर्ज से कहना उनकी विशेषता थी। हर समय हल्की फुल्की बात करके और बोझिल वातावरण को वे हल्का कर देते थे। 1936 से लेकर 1990 तक जब तक वे जीवित रहे, हम मिलते ही रहते थे। कभी कहीं कभी कही। 1956 में मैं बारा में जब उप जिलाधीश और विकास अधिकारी था तब सामुदायिक विकास योजना के अन्तर्गत आयोजित एक ग्राम कैम्प में मैने उन्हें बुलाया और वे आ भी गये। हमने बारा म ऐसे ग्राम केम्प की परिपाटी शुरू की जिसमें ग्रामवासी विकास कार्य में लगे, ग्राम सेवक प्रसार अधिकारी सब चार दिन तक कैम्प मे रह कर क्षेत्र की विकास योजना बनाते और पुनरावलोकन करते थ और प्रत्येक प्रात एक घटा श्रमदान द्वारा दिन की शुरूआत करते थे। मनोहर सिंह को यह सब बहुत भाया और वे भी हमारे साथ लग गये। उन दिनो मे फतेहपुर के ग्रामवासियो पर जहा यह कैम्प था उन्होंने अपने आपको, अपनी खुश मिजाजी से इतना सम्मोहित किया कि वहा के निवासी उन्हे बाद में भी बहुत दिनो तक याद करते रहे।

यह उनके कार्य और समर्पण का ही प्रतिफल था कि मतदाताओ ने अपने खर्च पर उन्हें विधानसभा के लिये चुनाव में खडा कर दो बार विजयी बनाया। लोग लाखो खर्च कर विधायक बनते हैं। मनोहर सिंह ने गाव वालो के बल बूते पर लडकर चुनाव जीते। विधानसभा मे भी उन्होंने अपनी सहज अभिव्यक्ति की अमिट

छाप छोडी। मेवाडी दोहो एव कहावतो के माध्यम से अपने मतव्य को प्रकट करना, निर्दलीय विधायक चुने जाने पर काग्रेस में शामिल होने के लिये बडी से बडी कीमत लगने पर भी अपनी निष्ठा एव स्वतत्रता काग्रेस को समर्पित न करना यह उन्ही जैसे त्यागी एव तपस्वी व्यक्तित्व का काम था।

नशा बदी और शराब बदी के वे सबसे बडे हिमायती थे। और समग्र सेवा सघ के कार्य से जुडे होने के नाते इसके प्रचार–प्रसार में अनवरत रूप से लगे रहे। मैंने जब उन्हें मजाक में कहा, कि बिल्ली सौ चूहे खा कर हज्ज को चली है अपने समय के डिस्टलरी ऑफिसर अब शराबबन्दी की बीगोद में दुहाई देते है। तो हर सास में डिस्टलरी की निकली शराब की बू ही आती थी वही अब शराब बदी की वकालत कर रहे हैं। तभी मनोहर सिंह ने कहा कि – "मेरी फोटो के नीचे यह अवश्य छपवा देना कि यह वही व्यक्ति है जो शराबबदी का प्रचारक बना हुआ है पर जिसने अपने आरम्भिक जीवन में हजारो लाखो शराब की बोतलें अपने क्षेत्र में खपा दी। यह मेरे जीवन की दूसरी बडी विडम्बना है।"

विश्वास नहीं होता, कि मनोहर सिंह जैसा जीवत व्यक्तित्व अब नही रहा। सागानेर ने अपना सपूत खोया, बीगोद और माडलगढ न अपना कमठ कार्यकर्ता, परिवार ने अपना मजबूत स्तभ और मैंने खोया है एक सहृदयी प्रिय मित्र। ■

प्रथम दृष्टि में ही अपना बनाने की क्षमता

श्री मीठा लाल मेहता

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

सेठ साहब से चूंकि सभी लोग उन्हें सेठ नहीं होते हुए भी सेठ साहब ही कहते थे, अत इसी नाम से मैं भी उन्हें सम्बोधित करूगा, मेरी प्रथम भेंट भीलवाडा में हुई थी। जब मैं वहा जिला कलेक्टर के पद पर पदासीन हुआ। खादी की वेशभूषा, खुद्दार व्यक्तित्व व अच्छी बात पर ठहाका लगाकर हसने का उनका अपना अदाज था। प्रथम दृष्टि में ये बाते मुझे अच्छी लगी। वे तब माण्डलगढ क्षेत्र से विधायक थे। 1967 में उन्होने अपना चुनाव अभियान लोगो से एक एक रूपया दान लेकर चलाया था और वे विजयी हुए थे। क्षेत्र के विकास के लिये समर्पित कार्यकर्ता होने के नाते वे लगातार मेरे पास विभिन्न जनसमस्याओ के लिये आते रहते थे और इस कारण उनसे आत्मीयता हो गई। चूकि वे नि स्वार्थी थे अत मेरे पूर्ववर्ती जिला कलेक्टर से भी उनके अच्छे सम्बन्ध थे और उनके बारे में अच्छी राय रखते थे।

धीरे-धीरे हमारे सम्बध प्रगाढ होते चले गये। यह आत्मीय सम्बध उन जीवन मूल्यो पर आधारित थे, जिनको महता साहब ने जिया था और जिन पर वे चलने का प्रयत्न कर रहे थे।

भीलवाडा में अकाल राहत कार्यों में हुए भ्रष्टाचार की रोकथाम के लिए मैने भरसक प्रयत्न किये, और इसके फलस्वरूप कई प्रभावशाली व्यक्ति मुझसे परेशान भी हुए। सिद्धातो की लडाई आसान नही होती। इस दौरान सेठ साहब निरतर अपने अनन्य मित्र श्री मोतीलाल जी द्वारा रचित दोहे मुझे भिजवाया करते थे और सम्भवत ये दोहे वे राजनेताओ को भी भिजवाते थे। उनके समय के लिखे कुछ पत्र मेरे पास आज भी सुरक्षित है।एक प्रशासक की यह मजबूरी होती है कि उसे कर्तव्य के सामने अपनी भावनाओ को दबाना पडता है। अत जब भीलवाडा में तत्कालीन सिंचाई मत्रीजी की कार कुछ उपद्रवी तत्वो द्वारा जलाई गई तो भीलवाडा पुलिस द्वारा छात्रो अध्यापको के विरूद्ध बल प्रयोग करने के बाद दगे हुए उनमें मुझे शाति बनाये रखन के लिये सेठ साहब को भी हिरासत मे लेना पडा।तीन चार दिन राजकीय मेहमान

रहने के बाद वे कृष्ण मदिर से निकले लेकिन इससे उनको कोई विषाद नहीं रहा, और हमारे सम्बन्ध मधुर ही बने रहे। मेरे भीलवाडा से स्थानान्तरण के समय एक बडी दावत का आयोजन किया और अश्रुछलक विदाई दी। चूकि वे गाधीवादी थे, अत विदाई के समय सूत की रगी हुई माला ही पहनाते थे।

भीलवाडा के बाद मैं प्रतिनियुक्ति पर भारत सरकार में दिल्ली चला गया और इस बीच में एक साल के प्रशिक्षण पर विदेश भी। वहा भी उनके पत्र आते रहे। आपातकाल स्थिति में वे कुछ समय के लिये जेल में रहे और 1977 में उन्होने अन्तिम बार विधानसभा का चुनाव लडा और फिर माण्डलगढ क्षेत्र से जीते।मुख्यमत्री श्री भैरोसिंह शेखावत से उनके घनिष्ठ सम्बन्ध थे। चूकि मैं सचिव मुख्यमत्री के पद पर उस समय कार्यरत था। अत इस कारण भी व कई बार विभिन्न प्रकार की जनसमस्याओ को लेकर या व्यक्तिगत सम्बन्धो के कारण मिलते थे। विधान सभा मे वे अपनी बात स्पष्ट कहते थे। उन्होने कभी भी विधान सभा से भत्ते नहीं लिये क्योकि वे इस अच्छा नही मानते था। चूकि व विनोदप्रिय थे, अत गम्भीर बात को भी हास्यात्मक तरीके से चुटकी लेकर कहने की उनकी अपनी विशिष्ट शैली थी। जनता पार्टी के बिखराव से खिन्न होकर उन्होंने अप्रेल 1980 मे राजनीति से सन्यास ले लिया और फिर जुट गये समाज सुधार और विशेषकर अपने गाव सागानेर के विकास में। उनके गाव में स्कूल, अस्पताल या विभिन्न प्रकार के विकास हो, इसके लिये वे बडे प्रयत्नशील रहते थे। उन्होंने मुझसे भी कुछ काम करवाने को कहा। स्थानीय जिला कलेक्टर से तो वे आग्रह करते ही थे। मुझसे उन्होने अपने गाव के कई काम करवाये और जनसहयोग भी प्राप्त किया।

सागानेर से उनका विशेष मोह था और इसलिये स्थाई रूप से वहीं निवास करते थे। पिछले दशक मे महता साहब से निरतर भेट हुआ करती थी। जब वे जयपुर आते थे तो अवश्य मुझसे मिलने आते या मैं वहा जाता तो उनसे मिलने का मन करता था। वे निष्पृही व्यक्ति थे जिन्होने जिन्दगी में किसी से कुछ मागा नहीं और अपनी जिन्दादिली तथा अच्छाई के प्रति समर्पण की भावना ही सबको देते रहे।डॉ मोहनसिंह महता का वे बडा आदरपूर्वक स्मरण करते थे। उन्होंने अपनी जिन्दगी ही उनके विचारो के अनुसार ढाली थी। अपने जीवन के अतित एक–दो वर्षो में वे यद्यपि कैन्सर सरीखी असाध्य बीमारी से ग्रस्त रहे लेकिन उनके चेहरे पर हमेशा मुस्कान रहती थी। उनके चेहरे से असाध्य बीमारी से उनके किये जा रहे सघर्ष का पता नहीं लगता था। जिजीविषा मजबूत थी। अस्पताल में ही अपने निधन के एक–दो माह पूर्व उन्होने अपना जन्मदिन तथा विवाह के 50 वर्ष एक साथ मनाये। इस अवसर

पर हम लोग भी शरीक हुए। तब भी यह विश्वास नहीं होता था कि वे अब कुछ दिनो के मेहमान है। फिर एक दिन सेठ साहब के निधन का दुखद समाचार मिला। जिस पर सहज विश्वास नही हो सका। जीवन क्षणभगुरता को देखते हुए विश्वास करना ही पडा। ■

सेवा भी उसी की करो जिसे सेवा की जरुरत है। जिसे सेवा की जरुरत नही, उसकी सेवा करना ढोग है, दम्भ है।

महात्मा गाधी

पढाया और आज वह रेगर बालक सहकारी बैंक का मैनेजर है। समाज में उसका सम्मान है। यह उनका मानवता के प्रति प्रेम का एक उदाहरण मात्र है।

सेठ साहब निष्काम सेवक रहे। उनको राजस्थान सेवक सघ से मामूली सा मानदेय मिलता था। सागानेर में उनका साधारण सा मकान था। वे सामान्य लोगो का जीवन जीत थे। उनका सादा जीवन खानपान, प्रेरणा देने लायक रहा। उन्होंने आजीवन मोटा कपडा पहना और एक झोले में सब कुछ समेटे रखा।

आपने एक सहकारी समिति की स्थापना की। ठेठ गाव के एक किसान सवाईराम को इसका अध्यक्ष बनाया। वे मन्त्री थे और हम सब सचालक मडल के सदस्य थे। इस समिति ने दूर-दराज के गावो में जनहित में कार्य किया। सारे राजस्थान मे इस समिति की एक पहचान बनी। और सहकारी विभाग अपने अधिकारियो व कर्मचारियो को प्रशिक्षण के लिये यहाँ भेजने लगा। इसका सारा श्रेय सेठ साहब की ईमानदारी व निष्काम सेवा को है।

वें सदैव हिन्दू-मुस्लिम एकता के पक्षधर रहे। कई मुसलमान भाईयो से उनके पारिवारिक समबन्ध थे। देश के विभाजन के समय जब मुसलमानो ने वहाँ से जाने का मानस बनाया तो सेठ साहब ही वे व्यक्ति थे जो उनके घरो में जाकर बैठ गए कि यहाँ से एक भी बच्चा बाहर नही जायगा और वास्तव में ऐसा ही हुआ। उनके राम व रहीम एक थे। एक कवि की इस बात को वे बहुत दोहराया करते थे।

शर्मा जी शिव शिव करे, रब रब बोले शेख।
अन्तर केवल नाम रो, धणी एक रो एक।।

ईद मिलन समारोह बडे ही उत्साह के साथ मनाया जाता था और उस दिन वे हर हालत मे इन भाईयो के बीच रहते थे। गाव में बडे-बडे व्यक्तियो को बुलाना उनका विशेष शौक था।

छठे दशक में सेठ साहब बीगोद छोडकर अपने पुश्तैनी गाव सागानेर जाकर रहने लगे। यह बात गाँव वालो को खटकती रही और पूरी बस भरकर लोग उन्हें वापिस लाने के लिए सागानेर गए। तब सब गाव वालो का स्नेह देखकर सुबक-सुबक कर रोने लगे। आज भी वह दृश्य आखो के सामने घूमता है तो सेठ साहब की सरलता व निर्मल भावना से मन भाव विभोर हो उठता है।

सेठ साहब का मेरे साथ सदैव वात्सल्य व स्नेह पूर्ण सम्बन्ध रहा है। वे मुझे अपना पुत्र ही मानते थे। मैं शिक्षा विभाग में वर्षों तक प्रधानाध्यापक तथा शिक्षा अधिकारी रहा। जहाँ-जहाँ भी मैं रहा वहा आप जरूर आते थे और सारे गाव वालों

से मेरे कार्यो की प्रशसा करके उनके बीच मेरी प्रतिष्ठा को गहराई तक स्थापित कर जाते थे। एक बार भीलवाडा के एक बडे स्कूल का मैं आचार्य था। जब वे स्कूल में प्रवेश करते तो बहुत दूर–दूर से ही छात्रों व अध्यापकों से कहते कि यहा मेरा मदन है। अध्यापक आदर से कहते हाँ हमारे साहब कार्यालय में है। वे तत्काल कहते साहब तो तुम्हारा होगा मेरा तो मदन है। यह बात करते, हँसते, बतियाते कार्यालय में आ जाते। आज यह बात जब सोचता हूँ तो लगता है पिता तुल्य वाणी में मदन कहकर पुकारने वाला आज कोई नही है। कहाँ है रिश्तो में इतना अपनापन और वात्सल्य भाव।

सेठ साहब ने कभी अपना कार्यालय लगाकर काम नहीं किया। उनके निर्णय काम सदा चलते फिरते ही होते थे। उनका सम्पर्क अपार था।

आपने कभी भी अपने बडप्पन के अहकार में किसी को नहीं सताया। स्कूलो सहकारी केन्द्रों में जाकर मन्त्री व अध्यक्ष की तरह निरीक्षण नहीं किया। वे सबको बराबर का भागीदार मानते थे और स्वअनुशासन में विश्वास करते थे। अविश्वास तो उन्होनें सीखा ही नहीं था। साधारण से साधारण कार्यकर्ता को वे बहुत आदर देते थे और उससे भी क्षमा मागने में उन्हें कोई हिचक नहीं होती थी।

माडलगढ क्षेत्र के विकास के लिए सेठ साहब ने अथक प्रयास किए। उनका सम्पर्क इतना व्यापक था कि उसका फायदा क्षेत्र को मिला। सारी जनता से जीवित सम्पर्क रहा। हर ग्रामवासी उनसे जुडा हुआ महसूस करता है। सन् 1967 व 1977 के चुनावों में इस क्षेत्र की सम्पूर्ण जनता ने एक स्वर से निर्णय लेकर सेठ साहब को अपना उम्मीदवार चुना। हर वर्ग के व्यक्ति ने अपने खर्चे से चुनाव में सब काम किया। 1967 को चुनाव अनूठा चुनाव था। यह सब सेठ साहब की निष्काम सेवा के कारण का प्रतिफल था।

आज बीगोद में वह फिज़ॉ नहीं है जिसके बागवा वे स्वय थे। मैं कभी–कभी सोचता हू इस मनस्वी के सम्बन्ध में कि पता नही कहा वे हमारे गाव में आए और बडे बडे काम करके पता नहीं कहाँ विलीन हो गए। वास्तव में गीता के शब्दों में वे एक महान कर्मयोगी थे। ■

Unique Seth' sb – Simple livin[g]

Late Shri K.P U Menon s Wife

Ex Chief Secretary

Smt Ganga Menon

I had the priveledge of meeting shri Monohar Singh ji Mehta in the year 1954 My husband was then the District Collector in Bhilwara He never had close friends among people with strong political affiliations But somehow he was very close to Mehta Naturally I too come to know him his wife andchildren, even at that time he used to do a lot of social work in Bigod and Sanganer He was a staunch follower ofJai Prakash Ji & Gandhi Ji

Once I remember as a Collectors wife I went to attend a function in Bigod It was summer time & we were sleeping outside in the open under the trees with no CHARPOYS I had My little daughter with me and I could not sleep the whole night because of the big ants all round But I enjoyed that trip Sanganer is another village where we used to visit him This house was a typical symbol of village life with mud wall outside an ANGAN and a BAITAK I used to wonder why he was called Seth sahib since he never agreed with my mental picture of a sethI remember seeing him always in a clean KURTA-PYJAMA or DHOTHI sometimes with a rough Shawl and a bag on his shoulder, walking always walking. Once I asked him how he manages to keep it so clean It seems he himself to wash his clothes

I remember the wedding of his daughter in his village The whole village turned out there and it was a simple function with khana arranged on the terrace He did not believe in the custom of dowry not took anything during his sons wedding It is a deep satisfaction to see his son and doughter working for social causes like their father

Perhaps we had some relationship with him and his family in our Pooryjanam We used to have a running argument about whether I should call him elder brother or he call me elder sister I felt very very sad when we last saw him in the hospital

I do not wish to remember him lying helpless my strongest memory of shri mehta is of the tall, energetic, Khadi clad friend walking, Laughing and living a rich rewarding life He used to spin yarn on his CHARKA daily He presented me too with a CHARKA when I left Bhilwara

The wheel spins on The wheel of our friendship courage and truth which both families shall believe in

■

उच्च कोटि के जन सेवक

श्री रामकृष्ण शर्मा

सेवा मन्दिर उदयपुर के वरिष्ठ रचनात्मक कार्यकर्ता

मेरे सहपाठी श्री दरियावसिंह महता के काका होने तथा मेवाड प्रजा मण्डल की गतिविधियो मे मनोहरसिंह जी महता के सक्रिय एव अग्रणी होने के कारण सन् 1940 से मैं मनोहरसिंह जी महता से परिचित था। महताजी का पूरा परिवार गाधी भक्त और राष्ट्रीय विचारधारा से ओतप्रोत था। मनोहरसिंह जी के अग्रज एव दरियावसिंह के पिता श्री हीरालाल जी राजकीय सेवामे रहते हुए भी खादीधारी थे और सेवानिवृत्त होने के बाद उदयपुर जिला भूदान ग्राम दान समिति में मास्टर साहब बलवन्त सिंह जी महता के मुख्य सहयोगी रहे। महता जी श्री कनक "मधुर" जी के बाल साथी थे।

सेठ साहब के नाम से सुपरिचित मनोहरसिह जी द्वारा ठक्कर बापा श्री कृष्णदास जी जाजू, डॉ मोहन सिंह जी महता की प्रेरणा से सन् 1933 मे सेवा सघ बीगोद की स्थापना की।सघ द्वारा भीलवाडा जिले की माडलगढ कोटडी तहसीलो मे विधायक व रचनात्मक प्रवृत्तियाँ शिक्षण शालाएँ, बाल मन्दिर छात्रालय सहकारिता प्रसार अकाल एव अग्निपीडितों की सहायता ग्रामोत्थान आदि के प्रेरणादायक कार्य किये जाते रहे हैं। अस्पृश्यता निवारण, सामाजिक कुरीतियो का विरोध, साम्प्रदायिक सद्भाव नशाबन्दी, भूदान–ग्रामदान एव सर्वोदय के कार्यों मे इस सघ ने सेठ साहब के मार्गदर्शन मे ठोस कार्य किये हैं।

श्री महता साहब अपने क्षेत्र के ही नही अपितु राजस्थान के अत्यन्त लोकप्रिय सेवाभावी एव सम्मानित कार्यकर्ता थे। प्रदेश में शराबबन्दी के लिये उनका सम्पूर्ण जीवन समर्पित था। प्रदेश में तो वे शराबबन्दी के पर्याय बन गये थे। जनता सरकार के जमाने में महता जी राज्य विधानसभा में सत्ता दल के विधायक थे। जनता सरकार के शासनकाल में पूज्य गोकुलभाई भट्ट की अगुवाई में राजस्थान प्रदेश नशाबन्दी समिति के अथक प्रयत्नों से जब प्रदेश में पूर्ण शराबबन्दी हुई थी उस समय सेठ साहब की महत्वपूर्ण एव अविस्मरणीय भूमिका रही थी।

सेठ साहब राजस्थान के समस्त प्रौढ शिक्षाकर्मियों के जाने माने थे। पिछले कई वर्षों से वे प्रदेश के प्रौढ शिक्षा आदोलन से जुडे हुये थे। वे एक सच्चे जन शिक्षक थे और जनशिक्षा का काम भी करते थे। गाँव गाँव घूमते। लोगो से मिलते, वातचीत करते सुख–दुख पूछते। अलख जगाते। उनकी हर चर्चा मे शराबबन्दी और लोकशिक्षण की बात निश्चित रूप से रहती। प्रौढ शिक्षा सम्मेलनों में अक्सर नियमित रूप से आते। अपनी ओजस्वी और जोशीली बातो से सभी को प्रेरित करते। जोश दिलाते।

पन्द्रहवें राजस्थान प्रौढ शिक्षा सम्मेलन (1989) में वयोवृद्ध सर्वोदयी कार्यकर्ता मनोहर सिंह जी महता पधारे थे। उन्होने सकल्प किया था कि भीलवाडा जिले के सागानेर कस्बे को सम्पूर्ण साक्षर करेंगे।इसके लिये उन्होंने राजस्थान प्रौढ शिक्षण समिति के अध्यक्ष को जो पत्र लिखा था वह इस प्रकार है।

"में अपनी ओर से अपने लिए यह सकल्प प्रस्तुत करता हूँ कि कस्बा सागानेर (भीलवाडा) मे कोई भी अपढ न रहे।इसके लिये स्थानीय साधनो से तथा स्थानीय युवाशक्ति से पूरा कराने की जिम्मेदारी है। और यह बल इसी सम्मेलन (पन्द्रहवे) से मिला है। इसलिए आपके मार्फत सबसे प्रणाम करता हूँ।'

सस्नेह – मनोहर सिंह महता
सागानेर

सेठ साहब ने जो उपर्युक्त सकल्प लिया और प्रदेश मे शराबवन्दी का जो उनका जीवनध्येय था उसे पूर्ण करने के लिये सेठ साहब के अभिन्न सहयोगी वैद्य नदकुमार जी रूपलाल जी सोमानी और अनेक साथी कार्यकर्तागण जो कि सक्षम है निश्चित रूप से पूर्ण प्रयत्न करेगे, ऐसा विश्वास है।

जनशिक्षा एव लोक सेवा के लिए समर्पित जन नेता स्व मनोहरसिंह महता के निधन से राजस्थान के सर्वोदय नशाबन्दी व प्रौढशिक्षा आदोलन को अपूरणीय क्षति हुई है। ■

मद्यपान से पीड़ित गरीब परिवारो का मसीहा

श्री जसवन्त सिंह सिंघवी

सेवानिवृत भारतीय प्रशासनिक सेवा के उच्च अधिकारी

महता साहब से मेरा राजस्थान के मद्य निषेध आयुक्त एव कलक्टर भीलवाडा के पदो पर रहते हुए निकट सम्पर्क बना रहा। उनसे सम्पर्क करने के बाद कोई भी व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नही रह सकता था। उनके रिश्तो में जो प्रगाढता व अतरगता थी बहुत कम लोगों में देखने को मिलती है। जिस आत्मीयता से वे रिश्तो को बनाने व सुदृढ करने में माहिर थे, वह मैंने अन्य किसी में नही देखी।

उनके व्यक्तित्व के जिस पहलू ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया, वह उनका सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध निरन्तर सघर्ष था। विशेषतया मद्यनिषेध के क्षेत्र में उनका योगदान महान था। अपने रोचक और परिहास युक्त ढग से महता साहब ने मद्यनिषेध के पक्ष में प्रबल जनमत तैयार किया।

ग्राम पचायत की बैठक से लेकर विधानसभा तक उन्होंने सदा मद्यनिषेध के पक्ष में जोरदार वक्तव्य दिए, आन्दोलन किए। उन्होंने मद्यपान से पीडित हजारों गरीब परिवारों को इस व्यसन से मुक्त कराया। वास्तव में वे मद्यमान से पीडित परिवारों के मसीहा थे। वे ईमानदारी, लगन निष्ठा एव श्रम के प्रतीक थे। कोई भी लोभ उनको पथ से विचलित नहीं कर सका।

समाज सेवी कार्यकर्ता उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करें इस आशा व विश्वास के साथ मैं उनके प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ। ■

धरती से जुड़े सेवक

डॉ अजित कुमार जैन

विख्यात शिक्षाकर्मी, निदेशक – प्रौढ शिक्षा
राजस्थान विश्वविद्यालय

स्वर्गीय सेठ मनोहर सिंह महता मेरे पितृ तुल्य एव चार दशक तक मेरे आदर्श रहे हैं। उनके अत्यन्त निकट होने के कारण मुझे उनके लिए कुछ भी लिखने में सकोच एव अब जबकि वे नहीं रहे, अत्यन्त कष्ट हो रहा है। फिर भी –

बात जुलाई, 1990 की है, उनकी मृत्यु से 2-3 माह पूर्व की है। मैं राजस्थान प्रौढ शिक्षण समिति के वार्षिक सम्मेलन में भाग लेने उदयपुर जाने से पूर्व सवाई मानसिंह अस्पताल में उनसे मिलने गया था। जान लेवा बीमारी से ग्रस्त परन्तु चेहरे पर वही सौम्यता और मन में असीम स्नेह भाव से युक्त फूफा साहब (श्री महता) ने मुझे सम्मेलन में भाग लेने वाले साथियों के लिए अपने हस्तलेख में एक सदेश लिख कर दिया। यह पत्र मैंने समिति के अध्यक्ष श्री रणजीत सिंह कूमट को ले जाकर दिया जिसे सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में पढकर सुनाया गया था। अन्य बातों के अलावा श्री महता का प्रौढ शिक्षाकर्मियों के लिए यह सदेश अत्यन्त प्रेरणादायक रहा जिसमें उन्होंने कहा कि इस काम में हमें अपने आपको पूरी तरह खपाना होगा। दूर रह कर औपचारिक तौर पर मौखिक सहानुभूति मात्र दर्शा कर नहीं वरन् अपना सर्वस्व होम करके देश निर्माण के इस काम में लगना होगा। उनके शब्द थे –

"भाला सू बाट्या नीं सिंके, खुद तपणों पड लो"।
जों घर फू के आपणा, चले हमारे साथ"

की ही तर्ज पर श्री महता के ये शब्द लोगो को भावुक बना गए और कार्यकर्ताओ में कार्य के प्रति निष्ठा और समर्पण का उत्साह दे गए। जीवन भर लोक सेवा में निरत श्री महता शराब बदी, दहेज मृत्युभोज के विरुद्ध सघर्ष तथा रचनात्मक कार्य के क्षेत्र मे अनूठी भूमिका का निर्वाह करते हुए वे दशाब्दियों तक हमारे प्रेरणा स्रोत बने रहेंगे। उन्होंने हजारों साथियों को जो प्रेरणा दी और जो मार्ग दिखाया उसके सहारे लोक सेवा का यह पावन पथ चिर आलोकित रहेगा। ■

जुझारू व दृढ़ प्रतिज्ञ व्यक्तित्व

श्री प्रदीप कुमार सिंह

सिंगोली पचायत के सरपच
व प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्ता

मैं बचपन से सेठ साहब से परिचित था। एक पूर्व जागीरदार के घर का सदस्य होने के नाते मेरे चारों तरफ का वातावरण सेठ साहब के विरोधी विचारो वाले व्यक्तियों से घिरा हुआ था। तत्कालीन मेवाड रियासत के ठिकाना सिंगोली में कार्यरत सभी कर्मचारी कामदार, फौजदार, सेठ, पटेल नम्बरदार, हवलदार आदि शाम के समय मेरे दादा तत्कालीन ठाकुर बाबाजी साहब बलदेव सिंह जी के पास उपस्थित होते और दैनिक रिपोर्ट पेश करते कि आज सिंगोली की जागीर के गाँव धाकडखेडी में मनोहर सिंह जी महता ने काश्तकारों को भडकाया और ठिकाने की खिलाफत करने का आह्वान किया, ठिकाने की जमीनों को हथियाने हेतु आगाह किया आदि आदि। मेरे दादा एक रहम दिल इसान थे और इसी कारण वे अपने सब कर्मचारियों की बात सुनकर भी कभी उत्तेजित नहीं होते थे, बल्कि काश्तकारों की समस्याओ पर गम्भीरता से विचार करते थे तथा अपने कर्मचारियों को कृषकों की मदद करने तथा उनके साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करने को कहा करते थे। मैं भी सारी बातें ध्यान से सुनता और विचार करता कि कौन है वह मनोहर सिंह महता ? मैं सन् 1961 में अध्ययन हेतु उदयपुर चला गया था और 1971 के लोकसभा चुनावो में मेरे विधानसभा क्षेत्र माण्डलगढ आया।लेकिन जब 10 वर्ष बाद उदयपुर के महाराणा श्री भगवत सिंह जी के साथ माण्डलगढ आया तब शायद पहली बार सेठ साहब के दर्शन हुए। स्थानीय एक महाराणा के समर्थक ने मेरा सेठ साहब से परिचय कराया और सेठ साहब ने हसते हुए अपनी बाहें फैलाकर मुझे अपने सीने से लगा लिया। मुझे आश्चर्य हुआ कि गीरदारों व राजपूतों का विरोध करने वाला व्यक्ति जिसके बारे में मैं बचपन से ऐसी बातें सुनकर आया था मुझे इतने स्नेह से कैसे गले लगा रहा है। सन् 1967 के विधानसभा चुनावों में मेरे पिता ने श्री मनोहर सिंह महता का समर्थन किया था और सेठ साहब इस चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में माण्डलगढ से काग्रेस प्रत्याशी श्री गणपत लाल जी वर्मा को परास्त कर विधायक निर्वाचित हुए थे।

जब मैं ग्रीष्मावकाश में सिंगोली आया तो मैंने अपने पिता श्री से पूछा कि जो सेठ साहब आप लोगों का इतना घोर विरोध करते थे आप लोगों ने उनका समर्थन कैसे किया तो उन्होंने कहा था कि सेठ साहब हमारा नहीं हमारी नीतियों व हमारे कर्मचारियो की गतिविधियो का विरोध करते थे।तब वे कांग्रेसी थे और अब जब कांग्रेसी कार्यकर्ता गलत नीतिया अपनाने लगे हैं तो सेठ साहब उनका भी विरोध करते है। अत सेठ साहब न तब गलत थे और न अब गलत हैं। यही सोचकर हमने सेठ साहब का समर्थन किया और वे हमारी कसौटी पर खरे भी उतरे हैं। मैंने पूछा कि कौनसी कसौटी तो उन्होने फरमाया कि 1967 के चुनाव में कांग्रेस और विपक्ष के लगभग बराबर-बराबर विधायक जीतकर आये थे। ऐसे में निर्दलीय विधायकों की भूमिका अहम् थी और तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोहन लाल सुखाडिया ने भरसक प्रयास किया कि श्री मनोहर सिंह जी महता जो पूर्व में कांग्रेसी विचारधारा के व्यक्ति थे - कांग्रेस का समर्थन करदें इसके बदले मे उन्हें मंत्री पद व लाखो रूपयो का प्रलोभन दिया गया लेकिन सेठ साहब ने स्पष्ट शब्दो में कहा कि "मेरे क्षेत्र के लोगो ने मुझे कांग्रेस सरकार की गलत नीतिया का विरोध करने के लिए विधानसभा मे भेजा है न कि समर्थन करने।" सेठ साहब सारे प्रलोभनो को ठुकरा कर एक सशक्त विपक्षी विधायक के रूप में उभर कर सामने आये।

मैं तब से सेठ साहब से प्रभावित हुआ और उन से मेरा सम्पर्क तब से बढने लगा। 1972 में अपनी शिक्षा समाप्त कर जब मैं सिंगोली आया उसके बाद मुझे सेठ साहब के सानिध्य में जन सेवा व क्षेत्र में भ्रमण का अवसर मिलता रहा।

मैंने जब सेठ साहब को निकटता से देखा तो लगा कि ये मन के सेठ हैं। धन के नहीं। सेठ साहब जब भी किसी से मिलते तो जोर से हस कर अपनी बाहे फैलाकर उसे गले लगा लेते थे और फिर उसकी सारी बातें गम्भीरता से सुनकर उसके दु खों मे अपने आप को डूबा देते थे। यही वजह थी कि सेठ साहब के नाम पर सारा क्षेत्र फिदा था और उन्हें अपने सुख दु ख के साथी के रूप में देखा करते थे।

समय आगे बढता गया सेठ साहब ने 1972 का चुनाव नही लडा था फिर भी वे इस क्षेत्र की समस्याओ से जुडे रहे और आपातकाल में श्रीमती इंदिरा गाधी की नीतियो का विरोध करते हुए बाबू जयप्रकाश के आंदोलन में शरीक हुए और जेल गये।

1977 के चुनावों में सेठ साहब पुन माण्डलगढ से विधानसभा का चुनाव लडे और फिर एक बार विधायक बनकर विधानसभा में अपनी आवाज उठाई। सेठ साहब के साथ चुनावो में पूरे क्षेत्र में घूमने का मौका मिला था और यही समय था

कि मैं भी सेठ साहब के साथ साथ अपने विधानसभा क्षेत्र में तथा यहाँ की समस्याओं से परिचित हुआ। अपनी विजय के बाद जब खेत्र में धन्यवाद ज्ञापित करने सेठ साहब गये तो वे दो बातें जगह जगह कहते थे और उन दो बातो ने मुझे बहुत प्रभावित किया उनमें से प्रथम बात थी – कि "मैं आप लोगों के आशीर्वाद से चुनाव तो जीत गया हूँ लेकिन मेरी असली जीत तो उस दिन होगी जब मैं अपना कार्यकाल समाप्त होने तक पाक व साफ रह सकू। और द्वितीय श्री सेठ साहब मोती लाल जी का एक दोहा कहा करते थे कि –"हार पचा ले हारण्यों, दो दिन रेर उदास। पण जीत पचावे जीतण्यों उन लाख लाख शाबास।।

मेरी नजर में सेठ साहब उपरोक्त दोनो बातों पर खरे उतरे थे और इसी कारण मृत्युपर्यन्त सेठ साहब की हवेली के दरवाजे पर केलु ही रहे। सेठ साहब के पास न कार हो पाई, न बगला हो पाया न उनके क्षेत्र में खाने हो पाई, न स्वतन्त्रता सेनानी के नाम पर नहरी भूमि हो पाई और न ही सेठ साहब उद्योगपति ही बन पाये।

सेंठ साहब आजीवन नाम के सेठ बने रहे, व्यक्तित्व के सेठ बने रहे, अपनी बात के सेठ बने रहे, जनता के स्नेह के सेंठ बने रहे, अपने चरित्र के सेठ बने रहे यही कारण है कि आज भी इस क्षेत्र के किसान, व्यापारी और दरिद्र नारायण की जबान पर सेठ मनोहर सिंह महता का ही नाम है।

मैं क्षत्रिय हूँ और क्षत्रिय समाज की दुर्दशा व गरीबी का कारण शराब रही है। सेठ साहब शराब के सबसे बडे दुश्मन थे। सेठ साहब शराब के लिए प्रत्येक व्यक्ति को कहा करते थे कि आप शराब छोड दें। मैने अपनी आँखो से देखा कि सेठ साहब अपने पोते की उम्र के शराबी के पैर पकडकर कहते कि– "मैं तेरे पाव पकडता हू तू शराब छोड दें।" उनकी बुजुर्गी और सादगी के मारे शराबियो के होश उड जाते थे और अपनी लत छोडने पर उन्हें विवश होना पडता था। ऐसी बातो से प्रभावित हो शराबियो के परिवार जन सेठ साहब को मसीहा मानते थे। सेठ साहब ने शराबबन्दी के लिए सरकारों स लम्बी लडाई लड़ी थी और 1978 में शराब बन्दी लागू होने पर उन्हें जो प्रसन्नता हुई थी उसका वर्णन नही किया जा सकता, लेकिन जब 1980 में तत्कालीन मुख्यमत्री श्री शिवचरण जी माथुर ने शराबबन्दी समाप्त की तो सेठ साहब को अपार दुख हुआ और उन्होनें तुरन्त एक पत्र मुख्यमत्री जी को लिखा कि – "आपने समूचे राजस्थान को शराब की भट्टी में झौक दिया है ।"

सेठ साहब निश्चय ही एक हसमुख, विवेकशील, जनसेवी कर्त्तव्यनिष्ठ, ईमानदार, स्पष्टवक्ता और सादगी के प्रतीक थे। रूग्णावस्था में कई बार दर्शन का

अवसर मिला, लेकिन कभी उन्होंने यह महसूस नहीं होने दिया कि वे बीमार हैं और उन्हें कोई तकलीफ है।हमेशा की तरह हसकर सीने से लगा लेते थे और घटों पास बिठाकर क्षेत्र की जानकारी लिया करते थे और हमेशा क्षेत्र की समस्याओ से जूझने की प्रेरणा देते थे। साथ ही कहते थे कि मैं भी प्रयास करूगा, मै चाहता हँू कि मैं ठीक होते ही क्षेत्र में आऊऔर क्षेत्र की जनता के सुख दु ख का भागीदार बन सकू।

ऐसी महान विभूति को विधाता ने हमारे बीच से असमय उठा लिया जबकि इस सक्रमण काल में हमें उनकी आवश्यकता थी। हम उन्हें हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं। ■

ऐसे थे मेरे धर्म पिता

श्री चन्द्रसिंह महता

सेवानिवृत्त

वरिष्ठ लेखाधिकारी

मेरा विवाह सन् 1953 में उनकी बडी पुत्री यशवन्त के साथ हुआ। मेरी सगाई के पूर्व मैं उनको जानता भी नहीं था। सारे क्षेत्र की जनता में ये "सेठ साहब" के नाम से ही प्रसिद्ध थे। जब मेरी सगाई हुई तब मैं इस भ्रम में था कि ये कोई नामी गरामी सेठ हैं और इनका बहुत बडा करोबार होगा। मेरी सगाई के बाद ही मेरे रिश्तेदारों ने कहना शुरू कर दिया कि अरे तू किसके चक्कर में आ गया है, वे तो कोरे नाम के सेठ हैं। कुर्ते की जेबें फटी हुई है, कच्चा घर है, मोटी खादी पहनते हैं।इनका रूपयो पैसों से दूर तक का भी वास्ता नहीं है। अभी सभल जा। वे तुम्हें आर्य समाज मन्दिर में ले जाकर माला पहना देंगे। आदि आदि। परन्तु मुझ पर आपकी सादगी और निश्छल व्यवहार का जादू चढ चुका था। इसलिए लोगो के बहकाने का असर होना सभव नही था। उनके आशीर्वाद से मेरा पूरा गृहस्थ जीवन बहुत आनन्द मय है। वे आजीवन बिना पैसो के ही सेठ बने रहे। आर्थिक तगी में ही जीवन काटा और बहुत हसते–हसते काटा। पूरे परिवार में चूंकि मैं बडा था इस कारण बहुत लम्बा सानिध्य रहा और ढेरों प्रसग रह रह कर याद आते हैं। कुछ प्रसग उनके जीवन के तरीके व सिद्धान्तवादी व्यक्तित्व को उजागर करते हैं। उनको मैं कभी भी नही भूल सकता हूँ।

सर्दी के मौसम में एक बार हम दोनो जयपुर से भीलवाडा साथ जा रहे थे। उस दिन हमारी रेल सिगनल पर ही रूक गई। मैं बहुत प्रसन्न हुआ क्योकि मेरा मकान बिल्कुल सामने था, आधी रात थी, सामान भी ज्यादा था अत ज्यादा चलना नहीं पडेगा। रेल कभी भी चल सकती थी। अत हम सामान सहित फटा फट उतर गये। रेल चली गई। मैने सामान उठाया और मकान की तरफ चलने लगा तो काका ने कहा यह क्या कर रहे हो।हम चोर थोडे हो है। टिकिट लेकर यात्रा की है बाकायदा स्टेशन के गेट से टिकिट कलेक्टर को टिकिट देकर निकलेगे। मैने कहा कि मैं सामान घर ले चलता हूँ आप मेरा और आपका टिकिट देकर गेट से आ जाइये। वे

नहीं माने और हम दोनो ने कुलियो की तरह सामान उठाया और स्टेशन की तरफ चले। रेल के चले जाने से टिकिट कलेक्टर भी गेट छोड कर चला गया था। उन्होंने उसे तलाशना शुरू किया। 10 मिनिट बाद वह मिला तब उसे टिकिट देकर फिर उतना ही चक्कर काटकर घर आये। भारी सर्दी में भी पसीना आ रहा था। यह उनकी ईमानदारी का एक छोटा सा उदाहरण है। ईमानदारी उनके जीवन का अतरग हिस्सा था। उसस वे लेश मात्र भी समझौता नही कर सकत थे।

इसी ईमानदारी का दूसरा प्रसग भी हमेशा याद आता है। एक बार मेरा छोटा पुत्र उनके साथ भीलवाडा गया। उसका हमने आधा टिकिट ही लिया था। रास्ते में उन्होने उससे जन्म तिथि पूछी उसके अनुसार वह 12 वर्ष से 2 माह ज्यादा था। यह पता लगते ही अगले स्टेशन पर तत्काल टिकिट चेकर की तलाश की और बच्चे का आधा टिकिट और बनवाया और टिकिट चेकर से क्षमा मागी।

एक और घटना है जो इस आस्था को और मजबूत करती है। एक बार आप भीलवाडा से जयपुर आ रहे थे बहुत ज्यादा भीड थी इस कारण द्वितीय श्रेणी के डिब्बे में नही चढ पाये और प्रथम श्रेणी में चढ गये, और यह सोचा कि कडक्टर आयेगा तब डिफरेन्स चार्ज का टिकिट बनवा लेगे। ट्रेन में नीद आ गई और जगे तो अजमेर आ गया था। अजमेर में आपने टिकिट चेकर की तलाश की तो पता लगा द्वितीय श्रेणी के डिब्बो में काफी जगह है। अत पहले अपना सामान द्वितीय श्रेणी के डिब्बे में रखा और फिर कन्डक्टर को तलाश कर उससे अनुरोध किया कि डिफरेन्स का चार्ज ले ले। कन्डक्टर ने मजबूरी जाहिर की क्योकि वो अजमेर से चढा था और वह अजमेर से आगे का टिकिट बना सकता है पर पिछला नहीं बना सकता। उसने यह भी कहा जब आपको किसी ने चैक नही किया तो क्या मालूम कि आप प्रथम श्रेणी में बैठे या नही फिर आप बिना बात किराया देने की जिद क्यो कर रहें है तो इन्होने कहा ईमानदारी इसलिए नही होनी चाहिए कि दूसरा कहे कि आप ईमानदार हैं। ईमानदारी तो जीवन के रोम रोम का हिस्सा होना चाहिए। अन्तत उनके आग्रह के कारण टिकिट बनाना पडा और उसने टिकिट पर नोट लगाया कि पैसेन्जर ने डिफरेन्स चार्ज स्वय आकर जमा कराया इसलिए जुर्माना नहीं लिया गया। टी टी ने उनको झुककर प्रणाम किया कि ऐसे यात्री से मेरी यह पहली मुलाकात है।

काका को तुरन्त कुछ न कुछ ऐसा सूझता था जो सामान्यत सब लोगों को नहीं सूझ पाता है। एक बार आप हमारे लिए स्नेह वश 2-3 बडे-बडे तरबूज लेकर बस में जयपुर आ रहे थे। कन्डक्टर ने कहा इनका पूरा टिकिट लगेगा। तब आपने

टिकिट चेकर को कहा अगर मैं इन्हें फैंक दू तो फिर तो टिकिट नही लगेगा न। उसने कहा हाँ साहब तब नहीं लगेगा। आपने उसी समय पडौसी से चाकू लिया और तरबूज के खूब सारे टुकडे कर दिये और कन्डक्टर सहित सारे बस के यात्रियो को बाट दिये और कहा वहाँ भी बच्चे खाते यहाँ भी मेरे भाई बहन खा रहे हैं। कन्डक्टर और सब लोग देखते रह गये क्योंकि ऐसा यात्री उन्होंने पहले नहीं देखा था।

काका से सदैव कुछ न कुछ सीखने को मिलता था। उनकी प्रेरणा से मैंने अपने पुत्रों का विवाह पूर्ण सादगी से व थोड़ी लीक से हटकर किया। वे काफी प्रसन्न थे। उन्हीं की प्रेरणा का असर था कि कभी दिमाग में भी नहीं आया कि दहेज भी कोई चीज होती है

उनका जीवन आदर्श था, वे सबके लिए प्रेरणा स्रोत थे। मुझे बहुत प्रसन्नता था कि मैं, मैं ऐसे गुणों के धनी सेठ का दामाद बना। ■

प्रेरणादायी व्यक्तित्व

श्री विनीत लोहिया

पश्चिम रेल्वे में वरिष्ठ अधिकारी

व राजस्थान के प्रमुख खिलाडी

रूढिवादिता के कट्टर विरोधी एव शराबबन्दी के समर्थक, जिन्होंने जिदगी भर अपने सिद्धातो के खिलाफ कभी किसी से समझौता नहीं किया, सर्वोदयी नेता भूतपूर्व विधायक मनोहर सिंह महता की 17 अक्टूबर, 1990 को मृत्यु के साथ ही एक महान युग का अत हो गया जो हमेशा उनके आदर्श व त्याग की याद दिलाता रहेगा।

सर्वोदय नेता जयप्रकाश जी के पक्के अनुयायी, 1967 व 1977 के चुनावों में माडलगढ खेत्र से विधानसभा में विधायक बन कर गये श्री महता का व्यक्तित्व इसी बात से आका जा सकता है कि उन्होंने अपने सिद्धातों को सर्वोपरि मानते हुए सुखाडिया मत्री मडल में केबीनेट मत्री पद व दो लाख रू के खुले निमत्रण को ठुकरा दिया तथा अपना नाता सत्ता के साथ नहीं जोडा। उन्हें यह निमत्रण निर्दलीय सदस्य से काग्रेस दल के शामिल होने के लिए दिया गया था।

आपने जीवन के अन्तिम क्षणो तक स्वदेशी वस्त्र जो कि पूरी तरह खादी के होते थे, पहने तथा सत्ता की किसी सुविधा टेलीफोन, गाडी इत्यादि का उपभोग नहीं किया। सादा जीवन उच्च विचारों वाले श्री महता ग्रामीणों के बीच रहकर उनके उत्थान हेतु जीवन पर्यन्त समर्पित रहे।

उदयपुर में अपनी प्रारभिक शिक्षा के दौरान ही श्री महता डॉ मोहनसिंह महता के सपर्क में आये और स्काउट कार्यक्रम से जुड गये। उनसे इतने प्रभावित हुए कि उन्होने डॉ मोहनसिंह जी को अपना गुरू मान लिया। बचपन से ही आर्य समाज मदिर में आने जाने के कारण श्री महता समाज सुधार के प्रबल समर्थक रहे। गाधी व विनोबा के विचारों से प्रेरणा लेकर मौलिक ढग से समाज सुधार में अपने आपको आजीवन समर्पित रखा।

श्री महता के व्यक्तित्व में एक खास बात यह रही कि अपने घर के सामन्तवादी माहौल में हर सुधार कार्य के लिए जबरदस्त विरोध का सामना करना पडता था किंतु अपने निश्चय पर अडिग रहकर हर सुधार की शुरूआत उन्होंने अपने घर से की।आज भी देखो तो उनके घर में कोई गाडी टेलीफोन, सोफा या किसी भी प्रकार की आधुनिक सुविधाओ के उपकरणो का अस्तित्व नहीं है।

इनके विचारों की गहरी छाप उनके परिवारजनों पर देखने को मिलती है। उनकी दो पुत्रिया व एक पुत्र हैं। श्रीमती रेणुका पामेचा जयपुर में अग्रणी समाज सुधारिका हैं।तो पुत्र डॉ गजेन्द्र महता ने अजमेर के राजकीय महाविद्यालय में व्याख्याता पद पर कार्यरत रहते हुए अपने पिता के विचारों को जन–जन तक पहुचाया है।

युवा अवस्था में जब श्री महता उदयपुर में नौकरी करते थे तो भीलो को शिक्षित करने हेतु अपने व्यक्तिगत प्रयासों से रात्रि पाठशालाएँ चलाते थे। 1931 में बिगोद में आबकारी अधिकारी बन कर आये, तब प्रौढ शिक्षा व जनचेतना के काम को पूरे उत्साह के साथ अपने हाथो में लिया तथा इस कार्यक्रम को जन जन तक पहुचाया।

आजादी की लडाई में कूदने के लिये आपने रियासत की नोकरी भी बलि पर चढा दी तथा पूर्णरूप से सर्वोदय के काम में जुट गये। आजादी की इस मुहिम में आप जेल गये।

गावों के किसानों को राहत पहुचाने के लिये राजस्थान की प्रथम सेवा समिति आपके द्वारा ग्राम बिगोद में खोली गयी इसमें 2000 सदस्य बनाए तथा 300 गावो को अपना कार्य क्षेत्र बनाया। मजेदार बात यह रही कि उन्होंने इस कार्य हेतु कभी भी सरकारी सहायता नही ली। गाव–गाव में स्कूलें खुलवाई औषधालयों का निर्माण करवाया। श्री महता अपने निस्वार्थ कार्यों से आम जनता मे इतने लोकप्रिय हो गये कि जिस गाव में वे जाते, वहा के निवासी इनके दर्शन को उमड पडते।

"सेठ साहब" के नाम से विख्यात श्री महता ने राजनीति के अनेक पडाव देखे, उनमें उथल–पुथल होते देखी। गुलामी से आजादी की राह में हर समय सजग प्रहरी के रूप में अपने आप को झौका, किंतु कभी अपने सिद्धातों के विपरीत कार्य नहीं किया।

उनके जीवन की प्रमुख उपलब्धि ग्रामीण इलाको में शराबबन्दी रही। इस कार्य हेतु उनका अपना एक तौर तरीका हुआ करता था। हमेशा ग्रामीण सभाओ में मेवाडी

भाषा मे दोहे या स्लोगन गा–गा कर सुनाते थे। ग्रामवासी मत्रमुग्ध होकर उन्हें अपने जीवन मे उतारने हेतु उठ खडे होते थे। कधे पर हमेशा थैला लटकाए गाव गाव जाते। बच्चो को इतना अधिक प्यार करते थे कि बच्चे सब कुछ भूलकर उनके साथ हो जाते थे।

इस सर्वोदयी नेता की लोकप्रियता से प्रभावित होकर सन् 1938 में गाधीजी की जर्मन शिष्या कैथरीन उर्फ सरला देवी ने अपनी पुस्तक में इनके कार्यों को काफी सराहा। उन्होने कहा कि ग्रामीण सभाओ में भी महता ने हजारो भीलो व आदिवासियों को सर पर गगाजली रखवा रखवा कर शराब छुडवाई। गाववासियो को अधिक पैदावार करने के लिये सदैव प्रेरित किया जिससे देश व स्वय को खुशहाल बना सकें।

आपको जीवन के अन्तिम क्षणो तक अपने घर की बजाय गाव के उत्थान की चिता रही। स्कूल भवन निर्माण हेतु घर घर जाकर पैसा इकट्ठा किया तथा अपने कार्य को पूरा करने का प्रयास किया।

80 वर्ष की आयु मे एक लबी बीमारी के उपरात दीवाली के एक दिन पूर्व ही 17 अक्टूबर 1990 को श्री महता ने इस ससार को अलविदा कह दी।

मानवता के पुजारी साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रेरक व सच्चे देशभक्त को सच्ची श्रद्धाजलि यही होगी कि हम उनके शुरू किए कार्यों को पूरा करने में सदैव तत्पर रहें। ■

मानवीय गुणों के धनी सेठ साहब

श्री भवरलाल भदादा
सर्वोदय प्रवर्तक
एवं रचनात्मक कार्यकर्ता

सेठ साहब मनोहरसिंह महता जी अपने ढग के एक ही कार्यकर्ता थे, वे जीवन भर निर्लिप्त भाव से सेवा कार्य में जुट रहे, कही कोई कटुता नहीं आने दी। मेवाड रियासत में जब माडलगढ एक जिले का सदर मुकाम था वहा वे आबकारी विभाग मे एक उच्च अधिकारी के रूप में आय और इन्होने माण्डलगढ क्षेत्र में ग्रामोत्थान की दृष्टि से शिक्षा और समाज सुधार के साथ साथ सगठन और स्वावलम्बन क कार्य भी प्रारम्भ किये तब इनके स्नेह और उत्साह से प्रभावित होकर माडलगढ क्षेत्र के कई नौजवान इनके साथी और सहयोगी ही नहीं बन वल्कि इनके प्रेमपूर्ण सम्पर्क से ही मेवाड रियासत के ही नहीं बाहर के भी कई सेवा भावी और समाज सुधाकर इनके मित्र और सहयोगी के रूप में सामने आये और इन सबके सहयोग से इनका ग्रामोत्थान का कार्य निरन्तर बढता गया औरइसी सुगध चारो औरफैलती गयी। सेठ साहब ने जिस निस्वार्थ भाव और सच्चाई के साथ जन सेवा का कार्य किया उसका सुखद परिणाम आना निश्चित ही था और वह आया भी।

अपनी लोकप्रयता के कारण ये इस क्षेत्र से दो बार राजस्थान विधानसभा के विधायक चुने गये और उन्होने वहा जिस निर्भयता के साथ अपने भावो और विचारों को रखा वे उनकी मौलिकता और विशेषताओ को ही उजागर करने वाले रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में उन्होने अपने जीवन का मिशन शराब बदी के कार्यक्रम को ही बना लिया था मानो आबकारी अधिकारी के समय में इन्होने जो शराब की बुराइयाँ देखी और उससे गरीब लोगो के परिवारो को होने वाली बर्बादी तथा महिलाओ पर होने वाले जुल्मों को देखा,उसने इन्हें इतना आहत कर दिया, कि वे इस शराबबदी के कार्य में जी जान से जुट गये। यहा तक कि कोई भी सामाजिक राजनैतिक तथा धार्मिक कार्यक्रम हो इनके द्वारा शराबबदी का उद्घोष हुए बिना नही रहता था।

अपनी सवेदनशीलता और दूसरों के दु ख दर्दों से द्रवित होने के कारण वे जन जन के प्रिय सेठ साहब हो गये थे। भले आज के अर्थ में चादी सोने और रूपये पैसों वाले सेठ समझे और माने जाते हों, लेकिन सच्चे माने में सेठ मनोहरसिंह जी ही सेठ थे,अपने मानवीय गुणो की विशाल सम्पदा के कारण। ईश्वर करे सेठ साहब की यह सेठाई जन जन की धरोहर बने ताकि हमारा यह गौरवशाली देश कालियत की ओर लुढकता जा रहा है वह थमे, और पुन दुनिया के गौरवशाली और सम्पन्न राष्ट्रों की श्रेणी में गिने और माने जाने लगे। सेठ साहब के गौरवशाली और महिमा युक्त व्यक्तित्व को शत् शत् प्रणाम। ■

सेवा भावी व्यक्तित्व

श्री रूपलाल सोमाणी
प्रमुख समाजसेवी,सेवा सदन के सचालक

श्री महता सा ने मेरा हाथ अपने हाथ में लेते हुए भाव विह्वल होकर कहा कि दादा भाई अब मेरी जीने की इच्छा नही है। सब लोगो ने, परिवार वाले, अन्य स्नेही जन व मित्रो ने मेरी खूब सेवा की है। सबका आदर और प्यार मुझे मिला है। मेरी तरफ से सभी को आप निवेदन करना, कि अगर मेरे से कहीं भूल हुई हो तो क्षमा करें। हम सबसे अलग-अलग यही बात कही उनकी आखें छल छला आई। लगभग एक घण्टे तक मैं व अन्य साथी उनके पास रहे। उन्हें निद्रा आयेगी, यह देख समझकर उन्हें नमस्कार करके हम लोग विदा हुये। मुझे आभास हो गया था कि वे हमारे बीच अधिक समय नहीं रहेंगे।

मुझे दिनाक 16 अक्टूबर शाम को 6 00 बजे यह सूचना मिलते ही कि महता सा की हालत नरम है, मैं सदन के अन्य साथियो के साथ सागानेर पहुचा। उनके साथ मेरा यह अन्तिम मिलन था। दूसरे दिन बडे सवेरे ही सूचना मिली कि श्री महता सा नही रहे हैं। वह दिन और अन्तिम मिलन का स्मरण आज भी अन्तर में साकार होकर उभर आता है।

श्रद्धेय भाई सा श्रीसिद्धराज जी ढड्ढा की प्ररेणा से जन सेवकों का राजस्थान सेवक सघ के नाम से सगठन बना। मैं भी उसका सदस्य हुआ और श्री महता सा भी उसके सदस्य थे।उस समय से हमारा साथ हुआ। जो समय के साथ अधिक प्रगाढ होता गया। समय और परिस्थितियो के अनुसार राजनीतिक विचारों को लेकर सामान्य परिवर्तन उसमें होते रहे लेकिन हमारे आपसी सम्बन्ध और व्यवहार मे कोई अन्तर नही हुआ। हमारी यात्रा दिन प्रतिदिन जन सेवा के पथ पर आगे बढती रही।

श्री महता सा का अपना विनोद पूर्ण स्वभाव था। समर्पित भाव से निरन्तर जन सेवा में लगे रहे। अपने क्षेत्र जिले का कोई भी ग्राम, कस्बा नही बचा था जहा वे नही गये अथवा उनका परिचय नही रहा हो। लोगो के दु ख सुख मे शरीक होने,उनके कष्ट निवारण में, उनकी सेवा करने, उनके लिये सघर्ष करने की उनमें अद्भुत साहस और क्षमता थी। वे लोकप्रिय नेता थे और उनका आदर और सम्मान सर्वत्र होता था।

वे दो बार अपने क्षैत्र माण्डलगढ से विधानसभा के सदस्य रहे। पहला विधान सभा चुनाव लोक उम्मीदवार की हैसियत से लडा था और दूसरा 1977 में जनता पार्टी से लडा। कडे मुकाबले में वे दोनो ही बार विजयी हुये।

देश में शराबबन्दी लागू हो, यह उनका सर्वाधिक प्रिय विषय था और इसके लिये आजीवन कार्य करते रहे। सार्वजनिक क्षेत्र में आने से पूर्व वे सरकारी सेवाओ में थे और शराब गोदाम पर व्यवस्थापक होने से शराब व्यक्ति व उसके परिवार के जीवन को किस तरह बेहाल व गरीब बना देती है प्रत्यक्षदर्शी घटनाओ के कारण उन्हें इसका सजीव अनुभव था। श्री गोकुल भाई के नेतृत्व में शराबबन्दी आन्दोलन शुरु हुआ तब अजमेर व झोटवाडा में शराब गोदाम पर धरना दिया गया। उन्होंने उसमें सक्रिय भाग लिया और जेल गये।

सत विनोबा ने देश में व्याप्त असमानता विषमता, शोषण और बेकारी को दूर कर स्वदेशी स्वावलम्बन और ग्रामों के पुन निर्माण और रचना के लिये भू-दान ग्रामदान आन्दोलन का अभिनव प्रयोग किया।इसी क्रम में श्री महता सा ने जिला भीलवाडा व अन्यत्र सर्वोदय आन्दोलन में प्रमुखता से भाग लिया। सत विनोबा की जिला भीलवाडा व चित्तौडगढ की पैदल यात्रा में श्री महता सा भी बराबर उनके साथ रहे।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने सत विनोबा की प्ररणा से अपने को सर्वोदय आन्दोलन के प्रति समर्पित कर दिया। उसमें महता सा भी जिला व प्रदेश में सतत । इस आन्दोलन से जुडे रहे एव अन्य रचनात्मक कार्यों द्वारा समाज सेवा में निरन्तर लगे रहे।

आपात स्थिति के विरुद्ध सन् 1975 में देश व्यापी आन्दोलन व सत्याग्रह चला। उसमें उन्हें और मुझे छ छ माह की सजा हुई थी। उनका यह विनोद पूर्ण कथन अत्यन्त मार्मिक होने से सबके अन्तस्थल को छू लेता था कि सरकार ने हमारे लिय कितनी अच्छी व्यवस्था बनाई है कि जब भी अदालत मे पशी होती जेल से बाहर निकाला जाता तब पुलिस और प्रशासन के निर्देशानुसार दो व्यक्तियो के हाथो में एक साथ हथकडी लगाकर कड पुलिस के पहरे में ले जाया जाता था। इस पर तब श्री महता सा का विनोद पूर्ण व्यगात्मक यह कथन "बूढे से बूढे और जवान स जवान के हाथों म एक साथ हथकडी कसकर सरकार ने अच्छा जोडा मिलाया है। उनकी यह बात तत्कालीन कर्नाटक के राज्यपाल श्री मोहन लाल सुखाडिया तक पहुची। तो उन्हें बहुत दु ख हुआ । तत्कालीन गृहमत्री को फोन पर कहा कि श्री केसरपुरी गोस्वामी, श्री मनोहर सिंह महता श्री रुपलाल सोमानी जैसे जन सेवको के

हथकडी डालकर ले जाना अच्छा नही है। वे भगने वाले थोडे ही हैं।उसके बाद हथकडी लगाना बन्द हो गया। श्री महता सा के सहित हम सात व्यक्तियो को जेल में एक छोटी बैरक में रखा गया। हमने कोई अतिरिक्त सुविधा की कभी माग नही की। नियमानुसार कैदियो द्वारा बनाया भोजन, जो भी जैसा भी था आनन्द पूर्वक हम लोग करते थे। जेल का स्थान ही ऐसा होता है जहा कष्ट और समस्यायें तो आये दिन आती ही रहती है। श्री महता सा में अधिकारियो के साथ मिल बैठ कर उनका हल निकालने की अद्भुद क्षमता थी, और व निकालते थे। हमारा दैनिक नियमित जीवन अन्य साथियो के साथ अध्ययन, मनोविनोद एव ताश खेलने में सहज ही निकल जाता था। श्री महता सा श्री पुरी सा श्री वैद्य नन्द कुमार जी मेरे से 15 दिन पूर्व जेल से निकले थे। मैं और श्री सम्पत पारीक साथ थे। साथ साथ सत्याग्रह किया था और सजायें भी साथ-साथ चली। जब वे बाहर निकले और फिर जेल में मिलने आये तब हमारे जेल में होने की उन्हें गहरी वेदना होती थी।

उसके बाद श्री महता सा प्राय राजनीति से अलग हो गये और अपना शेष जीवन शराबबदी और समाजिक कुरीतियो के विरुद्ध समाज में जन चेतना और जनशक्ति पैदा करने में निरन्तर लगाया। श्री महता सा का सारा जीवन जन सेवा के लिये समर्पित था।जो निरन्तर प्रेरणा का स्त्रोत रहेगा। ■

रचनात्मक कार्यकर्ता

श्री रामस्वरूप अजमेरा
जन सेवा मडल पहुना के मन्त्री

सेठ सा श्री मनोहर सिंह जी सा महता सर्वोदय विचारक एवम् नशाबन्दी के प्रेरक थे। मुझे उनको जन सेवा मडल पहुना का अध्यक्ष बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं उनके साथ इसी सस्था का मत्री था। मण्डल की होने वाली प्रत्येक सभा में वे आये बिना नही रहते। चाहे वे बीमार भी होते लेकिन सभा में जरुर आते, और अपने विचारों का लाभ हम सबको देते। उन्होनें अपने जीवन में सादा रहन सहन उच्च विचार रखे। वे दलित वर्ग के मसीहा थे। कार्यकर्ताओ से जुडे हुए थे। जब-जब भी सभा में कार्यकर्ताओ का प्रश्न आता तो वे उदारता से दिल खोल कर दिलाना चाहते थे - और दिलाते थे। आज इस सस्था का प्रत्येक कार्यकर्ता उनको याद करता है। वे चाहत थे, ग्रामो में रचनात्मक कार्य हो। बापू के दिखाये गये कार्यक्रमों को हाथ में लिया जाय जिससे ग्रामीण जनता का भला हो। वे बराबर प्रेरणा देते रहते कि ग्राम में जहा हम बैठे हैं कोई भी बीमार हो उनकी सेवा करना, सलाह देना नजदीक अस्पताल पहुचाना इसको वे प्रमुख मानते थेइसी प्रकार पिछडी जाति के लडकों के लिए साधन जुटाना छात्रवृतियाँ इकट्ठी कर दिलाना भी एक काम था। जीवन भरनशाबन्दी के लिए सूझते रहे। अपने जीवन में हजारों पत्र उन्होंनें प्रधानमत्री व मुख्य मत्री जी को लिखे होंगे। देश का दुर्भाग्य है कि हम दारु से जनता को मुक्त नहीं करा सके।

मौसर (करियावर) के कट्टर विरोधी थे, मुझे भी उनसे प्रेरणा मिली है। खर्चीली शादिया, आडम्बर, उचा रहन सहन से उनको घृणा होती थी और वे कहते थे - यह हमें बेईमान बनाती है। अत हमें सावधानी रखना चाहिये।

सार्वजनिक कार्यों में सार्वजनिक धन के दुरुपयोग को वे बर्दाश्त नहीं करते थे वे मेवाडी में कहते थे कि यह सार के चने है और ध्यान रखना।

अनेक बातें हमें उनसे सीखने को मिली है। हमें उनके आचरण को अपने जीवन में ढालने का पूरा-पूरा प्रयत्न करना होगा। ■

सच्चे स्पष्टवादी मेरे काका

श्रीमती यशवन्त महता

(पुत्री)

सबसे बडी पुत्री होने के कारण मेरा बचपन बहुत ही लाड प्यार से बीता। गाव में चौथी कक्षा से आगे पढाई नहीं थी, तब काका ने 1949 में मेरी दादी के बहुत विरोध के बावजूद भी अजमेर के पास हटून्डी महिला शिक्षा सस्थान में पढने भेजा। मैं अकेली लकडी थी जो भीलवाडा क्षेत्र से वहा पढने गई उसके बाद अन्य लडकिया भी जाने लगी। वे पढाई को बहुत महत्व देते थे।

आर्थिक स्थिति खराब होते हुए भी मुझे होस्टल में रखा। 1950 में काका कलकत्ता के सर्वोदय सम्मेलन से लौटते हुए हटून्डी रुके ताकि मुझे साथ ले जा सके। वहा का पैसा बाकी था और काका के पास पैसे नही थे, तब मेरी मा की सोने की चूडिया गिरवी रखकर मेरी फीस चुकाई और मुझे वहा से ले गये। कितनी ही आर्थिक तगी थी, पर ईमानदारी उनके जीवन का मूल मत्र था। इसमें मेरी मा की वे सदा तारीफ करते थे कि मा ने सोने व भौतिक सुविधाओ की माग नहीं की इस कारण मैं ईमानदार रह सका।

सामाजिक कुरीतियों के वे सख्त खिलाफ थे। पर्दाप्रथा को तोडने में उन्होनें सदा पहल की, जब मेरी शादी हुई तब इधर दादी जी और उधर ससुराल वाले इस बात पर जोर दे रहे थे कि शादी घूघट में होगी। काका का दृढ निश्चय था कि शादी तो बिना घूघट के होगी। बेटी पीहर में तो घूघट कैसे निकाले और फिर ससुराल में जाकर रजाई ओढाना। इधर काका और उधर मेरे पति के दृढ विचारों का प्रभाव यह हुआ कि उस क्षेत्र की मैं खुले मु ँह शादी वाली पहली महिला रही।

काका बहुत ही स्पष्ट कहने वाले व्यक्ति थे। कौन खुश होता है और कौन नाराज इसकी परवाह कम करते थे। अगर उनकी किसी बात से कोई नाराज हो जाता था तो तत्काल माफी माग लेते थे। माफी मागे बिना उन्हें चैन नही पडती थी।

उनकी एक बात मुझे बहुत अच्छी लगती थी। वे सदर्भ गुण दर्शन किया करते थे और हर काम करने वाले की प्रशसा करते थे। नकारात्मक सोच से वे कोसो दूर थे। इसका परिणाम यह होता था कि काम करने वाले का उत्साह बढ जाता था।

उनकी बात कहने का ढग भी बडा ही विनोदी होता था। कई प्रसगों में से एक प्रसग मुझे याद आता है जो उनके खुलेपन व विनोदी स्वभाव की ओर इगित करता है।

एक बार सुबह सुबह काका अपने दो साथियो के साथ किसी मित्र के घर मिलने गये जो नाश्ता लाया गया वह मिर्च का था जो काका सेवन नहीं करते थे और कोई चीज उस समय घर पर नही थी तब उन्होने चाय पीते हुए मित्र महोदय को अपने पास बुलाया और हाथ पकडकर कहने लगे मेरे को एक थप्पड लगाओ क्योकि सुबह सुबह कुछ खाने की आदत है। सब लोग ठहाका लगाकर हसे फिर हलवा बनाया गया और सबने खाया।

उनके मन में किसी के प्रति द्वेष भाव नही था। नीतियो का विरोध होते हुए भी व्यक्तियो के साथ उनके सम्बन्ध प्रगाढ रहते थे। इसी कारण बीमारी के दौरान हर तरह के व्यक्ति उनसे बार बार मिलने आये।

गाव वालो व गाव के स्कूल से उनका गहरा लगाव था। वे हर व्यक्ति में रुचि लेते थे उन्होंने हर गाव वालो को स्कूल से जोडा और बीमारी में भी वे उसी स्कूल की चिन्ता करते रहें।

मैं कभी कभी सोचती हू, इतने सच्चे स्पष्टवादी व्यक्ति कहा चले गये, उनकी अमिट याद तन मन की गहराई तक समा गई है। ■

क्षमाशील व्यक्तित्व

श्री मोतीलाल छापरवाल

आशुकवि, चिन्तक

महता साहब को (सेठ साहब) नगर परिषद के चुनावो में खडा किया गया। सभी साथियो का उन्हें सहयोग था, केवल में ही एक विरोध में था। इसकी एक वजह तो यह थी कि मैं जानता था कि परिषद में अधिकतर जनसघ के विचार वाले आवेंगे।

इस समय तो वे उन्हें खडा करना चाह रहे है पर अन्त तक नहीं निभा सकेंगे। दूसरा मेरा पक्का मानना था कि महता साहब को विधान सभा में ही जाना चाहिए वह उपयुक्त स्थान है। इन्हो कारणों से मैंने विरोध किया और खुल कर विरोध किया।सभी साथी मेरे इस आचरण से नाराज हुये लेकिन सेठ साहब नाराज नही हुये।उनका मुझसे मिलना जुलना बराबर जारी रहा। चुनाव सम्बन्धी कभी कोई चर्चा नही की। उनका पूर्ववत् व्यवहार बना रहा। उनकी यह कितनी महानता थी।

1967 मे जब सम्पूर्ण जनता ने मतदाता मण्डल बनाकर महता साहब का नाम निर्दलीय उम्मीदवार के रुप में सर्व सम्मति से सुझाया तब मैं उनके विरोध मे नही था पर सिर्फ यह आशका थी कि चुनाव में इतना पैसा कहा से आयेगा क्योकि सेठ साहब के पास नाम मात्र का भी पैसा नहीं था तब मैंने उनके लिए एक दोहा बनाया–

नीं खीसा (जेब) मे पावलो, नीं कोठा मे धान,
मत ओढे जजाल थू, कियो मनोहर मान।

मेरे इस दोहे का महता साहब ने अपने पूरे चुनाव प्रचार में खूब प्रयोग किया और लोगों की तरफ से यह आश्वासन आने लगा कि आपको तो एक भी पैसा खर्च नही करना है। हमारे पास खूब पैसे हैं हम तो आपको विजयी बनाकर भेजेंगे और ऐसा ही हुआ।

एक ओर बात मुझे याद आती है सेठ सा की माताजी बहुत पुराने विचारों की थी और बडे ही खर्चीली स्वभाव की थी। सेठ साहब के विचारो व उनके विचारों में

बहुत अन्तर था, लेकिन आपने धीरे धीरे उन्हें करीब करीब अपने विचारो का बना लिया। मधुरवाणी, नम्रता और सेवा किसको अपना नहीं बना सकती ?

महता साहब की यह विशेषता थी कि गावो में अक्सर वे मेवाडी में ही भाषण देते थे। वे बहुत ही अच्छे वक्ता थे, श्रोताओ को मत्र मुग्ध कर देते थे। विधानसभा के अध्यक्ष श्री निरजन नाथ जी आचार्य तो उनके भाषण को बहुत ही पसन्द किया करते थे। मेरे दोहो को सेठ साहब ने जिस तरह मुखरित किया और वाणी दी उसकी तो मैंने कल्पना भी नही की। बात बात में उस विषय से सम्बधित दोहो का प्रयोग करते थे और उसके साथ मेरा नाम अवश्य लेते थे। उनका दिल अत्यन्त विशाल था आज और ज्यादा अनुभव होता है।

सेठ सा ने अपनी पुत्री का विवाह सादगी से किया पर एक आध मद में कुछ अधिक खर्च हो गया मैंने जिक्र किया कि एक साधारण कार्यकर्ता के हिसाब से तो यह खर्च ज्यादा है। उन्होनें स्वीकार किया कि वास्तव में यह खर्च भी ज्यादा था। सेठ सा मे यह गुण था कि वे जहा भी अपनी भूल देखते, तत्काल भूल स्वीकार कर लेते थे। वे अपने पुत्र की शादी में कम बराती लेकर गये और कोई भोज नही किया। उस समय अतिथि नियत्रण कानून था, उसका भी उन्होंनें पूर्णत पालन किया। वस्तुत वे सच्चे मानव थे। उनमे समाज के प्रति कुछ कर गुजरने की गहरी लगन थी जिसे आजीवन निभाया। ■

जिसने जीना सिखाया

डॉ लाडकुमारी जैन

राज विश्वविद्यालय में व्याख्याता एव

सामाजिक कार्यकर्ता

जीवन एक सघर्ष है जो पग-पग पर करना ही पडता है। बशर्ते कि कोई करना चाहे। जीवन उसी का सफल है, जो अपने व दूसरो के लिए तथा समाज व देश के हित में कुछ कर गुजरने की तमन्ना रखता हो। निर्भीकता से कठिनाईयों का सामना करने की क्षमता रखता हो।एक ऐसा ही व्यक्तित्व था श्रीमान महता साहब का। महता साहब, जो कि सेठ साहब के नाम से प्रसिद्ध थे, नजदीकी लोग उन्हें "काका" कह कर पुकारते थे। मैं भी उन्हें "काका" ही कहा करती थी। शुरु से ही उन्होंने मुझे अपनी पुत्री सा समझा स्नेह व प्यार किया। सबसे बडी बात तो यह है कि उन्होंनें मुझे जीना सिखाया, सकट के क्षणो में मुझे सम्भाला और प्रोत्साहन दिया। कभी भी यह नही कहा, कि तुमने यह अच्छा नहीं किया। उनका व्यवहार ही ऐसा था, कि हर कोई उन्हें अपने समीप पाता था। उन्होंने दहेज मृत्युभोज व झूठे आडम्बरों का डट कर और खुलकर विरोध किया। सामाजिक कुप्रथाओ पर कडा प्रहार किया। विशेष रुप से शराब बन्दी पर बहुत जोर दिया। उन्होंने समाज की असलियत को पहचाना तथा उसमें सुधार का अथक प्रयास किया।

काका से मेरा सर्वप्रथम सम्पर्क तब हुआ, जब मैं 8-9 वर्ष की थी। बेगू के पास कदवासा में श्री सिद्ध कवरजी महाराज की बडी दीक्षा महासती श्री यशकवरजी के सानिध्य में सम्पन्न होने जा रही थी। मैं अपने पिताजी के साथ इस समारोह में सम्मिलित होने जा रही थी। बेगू बस स्टेण्ड पर उतरने के बाद कदवासा जाने के लिए हम बैलगाडी की इन्तजार में खडे थे कि पिताजी ने जोर से बोला सेठ साहब आ रहे हैं ।मैंने नजर घुमायी और सोच में पड गयी कि सेठ साहब किसको कहा गया ? सेठ साहब से मेरा मतलब तो मोटे पेट, अच्छी पगडी, अच्छे कपड़े, गले में सोने की चैन हाथो में सोने की अगूठी से था, लेकिन उनमें तो ऐसा कुछ भी नही था। मैंने सोचा बाद में अकेले में पिताजी से पूछूगी। पिताजी ने सेठ साहब से मिलवाया सेठ साहब ने कदवासा पैदल पहुचने का प्रस्ताव रखा। पूर्णिमा की रात थी चन्द्रमा अपनी

रोशनी बिखेर रहा था। हम तीनों बेगू से कदवासा की पैदल यात्रा पर निकल गये। थोडी दूर चलने के बाद मुझे थकान महसूस होने लगी इस बात को "काका" समझ गये। मेरा ध्यान इधर इधर लगाते हुए कि देखो चन्द्रमा के साथ-साथ अपन भी दौडते हैं, कौन पहल पहुचता है। कभी में उन्हें पकड्रू तो कभी वे मुझे, इस तरह दौडाते भी रहे और चलते भी रहे। बीच में एक बार तो उन्होंने मुझे उठा कर अपने कन्धो पर भी बैठा दिया। इस तरह हम तीनों कदवासा पहुचे गय। उस रात पैदल यात्रा बहुत ही सुहावनी व आनन्दकर लगी। वही से पैदल चलने की इतनी अच्छी आदत पडी कि बाद में जब कभी भी महाराज माडलगढ आते और विहार करते तो मैं उनके साथ माडलगढ से लाडपुरा माडलगढ से हुरडा व त्रिवेणी पैदल चली जाती थी। यानि कि करीब-करीब 5-6 किलोमीटर तो चल ही लेती थी।

कई बार चातुर्मास में व्याख्यान के समय "काका" के जोशीले भाषण सुनने का अवसर मिला। उनके भाषण सुनकर व उनसे मिलकर बहुत प्रोत्साहन मिलता था। शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जो उनके व्यक्तित्व व विचारों से प्रभावित न हुआ हो। एक बार उनके भाषण के तुरन्त बाद मैंने भी महाराज साहब को निवेदन किया कि आप आज ही इन सबको सौगन्ध दिला दो कि इस गाव के लोग कभी भी न दहेज लेंगे और न ही मृत्युभोज करेंगे।

मई, 1970 में जब मेरे दादा साहब का स्वर्गवास हुआ तब काका हमारे घर आये। बाहर काफी लोग बैठे हुए थे, और अन्दर महिलाए। बारी-बारी से दोना जगह जाकर उन्होनें कहा रोना-धोना बन्द करो। इस घर मे मृत्युभोज नही होना चाहिए। फिर मुझसे कहा तुम जिस घर मे हो वहा तो यह प्रश्न ही नही उठता। मारु साहब तो स्वय इसके खिलाफ थे। जब पिताजी ने काका को विश्वास दिलाया कि ऐसा कुछ भी नही होगा तब उन्होने वहा से प्रस्थान किया। गावो मे प्रोढ शिक्षा व नारी शिक्षा की उन्होंने अलख जगायी। हायर सैकण्डरी पास करने के बाद मेरी शिक्षा के भविष्य पर भी प्रश्न चिन्ह लग रहा था। मैं बहुत परेशान थी कि आगे क्या होगा ? भीलवाडा व चित्तौड मे महिला महाविद्यालय भी नहीं है।

लडकी के कॉलेज मे भेजने को घर वाले बिल्कुल तैयार नही हैं। मेरी आगे की पढाई अधकार रुपी सागर मे गोते खा रही थी कि कही से कोई किनारा मिल जाये। एसे अधकार मे डूब ही रही थी कि किसी ने मानो दीपक जला कर रोशनी कर दी वे थे - 'काका । उन्होनें आकर मुझे समझाया तुम चिन्ता मत रो। तुम अपनी भूख हडताल बन्द कर दो। तुम मे पढने के प्रति इतनी लगन है मैं तुम्हे जरुर वनस्थली भिजवाऊगा। मेरी बेटी रेणुका को भी मैंने वही भेजा था। उहोने मेरे घरवाला

को बहुत समझाया यहा तक कह डाला "यदि तुम लडकी की पढाई के खर्चे से डरते हो, तो मैं भेज दूगा। आज से यह मेरी बेटी है। "उधर मेरे दादाजी का मुझे बराबर समर्थन मिलता रहा। बाद में घरवालो का हृदय परिवर्तन हुआ और उन्होनें मुझे वनस्थली अध्ययन हेतु भेज दिया जहा से मैने बी ए किया तथा बाद में एस ए भी कर लिया।

1977-78 में उन्होने एक बार फिर मेरा हौसला बुलन्द किया जब मैं गहरे सकट के दौर से गुजर रही थी एक ऐसा हादसा हुआ। मेरे पति की एक्सीडेन्ट में मृत्यु हो गयी जिसने मुझ में पहले से विद्यमान शक्ति और सामर्थ्य को झकझोर दिया। मैं अन्दर ही अन्दर से टूटी जा रही थी, निराश होने लगी थी जिन्दगी से। ऐसे समय में आकर उन्होने मुझे सभाला, घरवालो को समझाया, कि इसे नौकरी करने दो। मुझसे कहा अभी तुम जो भी नौकरी मिले तुरन्त स्वीकार कर लो बाद मे धीरे-धीरे सब ठीक हो जायेगा।

विधवा विवाह को प्रोत्साहन देते हुए 1981 मे उन्होनें हमारे विवाह की न केवल तारीफ की बल्कि इतने खुश हुए कि उतनी खुशी शायद ही किसी दूसरे को हुई हो। उस समय उन्होनें विमलजी को तो बहुत धन्यवाद दिया ही, साथ ही यह भी कहा - तुम्हारे माता-पिता कहा रहते हैं, मुझे पता दो। मैं वहॉ जाकर उनके चरण छूआ जिसने तुम जैसे हीरे को जन्म दिया। हमें सागानर बुलाया और मालाए पहना कर हमारा स्वागत किया और कहा तुम लोगो ने यह बहुत ही अच्छा कदम उठाया। समय-समय पर उनका मार्ग दर्शन मिलता रहा। उनकी जीवन यात्रा के अतिम दिनों में जब वे जयपुर में अपना इलाज करवा रहे थे, हम दोनो उनसे मिलने जाया करते थे। वे उस समय असहनीय शारीरिक पीडा से ग्रस्त थे। लेकिन उनके चहरे पर तब भी तेजस्विता झलक रही थी। उस समय भी हमें गले लगाना हमारी पीठ थपथपाना, जो कि उनकी पुरानी आदत थी बनी हुई रही। तुम दोनो अच्छा कर रहे हो, अच्छा करते रहना। हमें उनका यह आर्शीवाद अन्तिम दिनो में भी मिला। बाद मे समझ में आया कि वे एक अलग तरह के सेठ साहब थे।जिनकी पूजी धन दौलत नहीं थी। काका जैसा व्यक्तित्व आज दीपक लेकर ढूढे तो इस अंधेरे में नही मिलेगा। उनका व्यक्तित्व बहुगुणो की खान था। बहु आयामी चरित्र था उनका। ऐसे महापुरुष को मेरा कोटिश नमन। ईश्वर इस समाज व देश को उन जैसे व्यक्ति दे।

शराब मुक्ति के सच्चे सेनानी

श्री बद्री प्रसाद स्वामी
नागौर जिला सर्वोदय मडल के सयोजक

श्री महता अत्यन्त उत्साही साथी थे। मेरा उनसे परिचय 1954 के भूदान कार्यक्रम के दौरान हुआ और वह निरन्तर गहरा होता गया। उनका व्यक्तित्व बहु आयामी था, वे सर्वोदय विचारधारा के पक्के समर्थक व कार्यकर्ता थे, मेरे चित्त पर उनकी छवि शराब मुक्ति के सच्चे सेनानी के रुप में अकित है।

सर्वोदय से जुडा कोई भी कार्यक्रम हो उनकी जुबान पर हमेशा शराब मुक्ति की ही बात सुनने को मिलती थी। वस्तुत चाहे शिक्षा का कार्यक्रम हो, बैठक हो, विधानसभा हो, समग्र सेवा सघ की या नशाबदी की बैठक हो वे पूरे तर्क सहित पुरजोर शब्दो मे शराबबदी की वकालत करते थे। इतना ज्यादा अपनी पहचान को शराब बन्दी से जोडना उनके व्यक्तित्व की अलग पहचान बन चुका था। उनकी लगन, गहरी निष्ठा और प्रयास के कारण ही राजस्थान में एक बार शराबबन्दी कराकर ही रहे। वे असलियत में इस मामले में वे हम सबके अगुआ तो थे ही परन्तु श्री गोकुल भाई भट्ट के भी सक्रिय साथी और सहयोगी थे।

शराब बन्दी के लिए उनके किए गए प्रयास राजस्थान के नरनारी सदैव याद रखेंगे। वे शराब को सब पापो की जननी मानते थे, इस कारण जड पर प्रहार करते थे और कहते थे कि विनाश के रास्ते से विकास नहीं हो सकता और कार्यकर्ता शराब की बुराई का प्रचार करता रहे और राज्य सरकार अपनी आय के लोभ में गली गली में शराब बेचें ये दो बातें साथ नहीं चल सकती।

उनकी निर्भीकता खुश मिजाजी और अन्तिम समय तक सकट सहन करने की शक्ति हमें हमेशा याद रहेगी। ■

ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया

श्री सुरेन्द्र सिंह पामेचा (दामाद)
इंजिनियर

कुछ ही बिरले ऐसे होते हैं जो पद, कुर्सी यश धनलाभ की बिना चाह रखे, समाज के उत्थान, गरीबो की सेवा, शिक्षा, छूआछूत शराब बन्दी, मृत्युभोज तिलक दहेज आदि समाज सुधारक कार्यों में आजीवन समर्पित रहते हैं। उनमें से काका एक थे।

सन् 57 मे मैं पहली बार काका के सम्पर्क में आया था। आपकी कर्मस्थली बीगोद थी। और आप मेरे फूफा के मकान में रहते थे और मैं छठी कक्षा मे पढने वहा आया था। आपको सारा गाव ही नहीं, साराक्षेत्र 'सेठ साहब' के नाम से जानता था। वस्तुत आप सद्गुणों से सेठ थे अन्यथा पैसो के हिसाब से आप अत्यन्त साधारण व्यक्ति थे। मुझे याद है घर में भौतिक सुविधा के नाम पर कुछ भी नहीं था। अपने ही नहीं घर भर के कपड़े भी कभी-कभी आप नदी पर धोने के लिए जाया करते थे। श्रम के प्रति उनका गहरा लगाव था और हर व्यक्ति को यह कहा करते थे पढ लिख कर श्रम से दूर मत भागो।

शिक्षा के प्रति आपका बहुत जुड़ाव था और होनहार विद्यार्थी को वे अत्यन्त प्रोत्साहित करते थे और उसकी हर सम्भव सहायता के लिए तत्पर रहते थे। काका की प्रेरणा से मैं इंजिनियर बन सका। मेरे व्यक्तित्व में मेरे मामासा व काका का योगदान सदैव याद रहेगा।

मैं इसे बहुत बडा सौभाग्य मानता हू कि ऐसे व्यक्ति का दामाद बना। वे दामाद व पुत्र में कभी अन्तर नहीं करते थे। अपनी बीमारी के दौरान उनकी सेवा का सौभाग्य मिला, उन्होंनें जीवन भर जो अटूट स्नेह दिया वह हमारे लिए बहुत बडी पूंजी है।

वे बहुत ही मस्त प्रकृति के व्यक्ति थे। जहा बैठते, वहीं हँसी का माहौल बना देते थे। मुझे एक प्रसग याद है। एक बार काका किसी मित्र के यहा गए। अन्य साथी भी साथ थे। वे मिर्च नहीं खाते थे। अत उनके कहने पर दूध, रोटी का इन्तजाम किया गया। मित्र महोदय छोटी सी कटोरी में दूध ले आए और एक मक्की की रोटी

रख दी। काका ने कहा एक पानी की गिलास व एक बड़ा कटोरा ला दीजिए। जब पानी व कटोरा आ गया तो काका ने दूध बडे कटोरे में डाला और ऊपर से पानी डालने ही लगे कि मित्र ने कहा यह आप क्या कर रहे हैं ? काका ने कहा रोटी मोटी है, दूध कम है तो क्या किया जाए ? तत्काल दूध और आ गया और सब लोग खूब देर तक हँसते – हँसते लोटपोट होने लगे। ऐसे रोचक प्रसगों से भरा हुआ था उनका जीवन।

काका अपने क्षेत्र के विकास के लिए अन्त समय तक प्रयत्नशील रहे। निस्वार्थ सेवा का ही परिणाम था कि हर दल और अधिकारी का उन्हें भरपूर सहयोग मिला। हर अधिकारी उनका आदर करता था, और उनके साथ गहरा आत्मीय रिश्ता बना लेता था। बीमारी के दौरान में उनके रिश्तो की आत्मीयता व गहराई को देख कर अत्यन्त अभिभूत हुआ।

वे बहुत खुले विचारो के व्यक्ति थे। पूरे परिवार में कभी नही लगता था कौन बहू है कौन बेटी, कौन पुत्र और कौन दामाद। कभी उनसे कोई गलती हो जाए तो जब तक उससे क्षमा न माग ले उन्हे चैन नही मिलती थी। यह गुण बहुत मुश्किल से लोगो में मिलता है।

कबीर की यह पंक्ति "ज्यो की त्यो धर दीनी चदरिया" काका की जिन्दगी को चरितार्थ करती है। काका हमारे बीच नहीं है पर उनके विचार प्ररणादायी शब्द निस्वार्थ सेवा सदैव हमारे बीच जीवित रहेगे। ■

अन्ध विश्वासों को तोड़ने वाले

श्री फैयाज अली काजी

वरिष्ठ अध्यापक व प्रख्यात खिलाड़ी

श्री मनोहर सिंह जी महता सारे क्षेत्र में सेठ साहब के नाम से विख्यात रहे हैं। मैं सन् 48 से ही निरन्तर उनके सम्पर्क में रहा। सन् 48 से 51 तक सेवा सघ द्वारा सचालित उनकी सस्था में एक शिक्षक के रूप में कार्य किया और घनिष्ठ सम्पर्क में आने का मौका मिला। कार्यकत्ताओ के प्रति उनका स्नेह असीम था।

सेठ साहब में अनेक गुणो का सगम था। वे लोकप्रिय जननेता स्पष्टवक्ता, मधुरभाषी, निर्भीक समाज सेवी थे। पिछडे लोगो के उत्थान में रात दिन लगन व निष्ठा से लगे रहना उनके जीवन का अग बन चुका था। शराब मृत्युभोज व अधविश्वासो को समाप्त करने में वे अपने जीवन के अतिम क्षणो तक जूझते रहे। ग्रामीण अशिक्षित जनता में चेतना का सचार करते रहे।

उनके जीवन की कई घटनाएँ मुझे आज भी खूब याद आती हैं । अशिक्षित अज्ञानी लोगों मे ज्ञान लाकर अन्ध विश्वासो से उन्हें मुक्त करने का एक अनूठा तरीका उनमें था, जिसकी एक घटना अत्यन्त रोचक व महत्वपूर्ण है।

सन् 1949 में हम सेवा सघ के करीब 20 साथी तीन दिन के शिविर के लिए पैदल यात्रा कर रहे थे। उस समय गावो में लोग बीमार को डॉक्टर के पास ले जाने के बजाए "भोपा" (देवी देवता का ढोंग करने वाले) के पास ले जाते थे और इस कदर अन्धविश्वास में जकडे रहते थे,कि मरीज की चाहे मृत्यु ही क्यों न हो जाए, मनुष्य के वेश में देवता स्वरूप भोपा को सच्चा ईश्वर मानते थे। जब हम यात्रा कर रहे थे तो हमें दूर से ढोल बाजे व नगाडों की आवाज व भोपा का भॉव आए जैसा सुनाई दिया। हम आगे बढते गए तो एक देवता का स्थान आया वहाँ लगभग दो सौ लोग एकत्र थे और एक व्यक्ति को देवता का भॉव आ रहा था। हम वही जाकर बैठ गए। ढोल थाली नगाडा बजता रहा,अचानक सेठ साहब मनोहर सिंह जी महता को जोर का भॉव आया,यानि उनके शरीर में देवता ने प्रवेश कर लिया,वे देवता के चबूतरे पर जा बैठे। भॉव मे इतनी वास्तविकता थी कि उपस्थित जन समुदाय सिर झुकाने लगे और देवता (सेठ साहब) से कई प्रश्न पूछने लगे और सेठ साहब उनके ज्ञान वर्धक उत्तर देने

लगे। उसी समय एक बीमार औरत को वहाँ लाकर सामने लिटा दिया तब देवता 'सेठ साहब' ने उसके पेट पर भभूत (राख) लगाई और कहा कि कल के सूरज में इस बीमार को अस्पताल ले जाना। (मू थाके लार हू)। मैं तुम्हारे साथ हूं।

थोड़ी देर बाद सेठ साहब के शरीर से देवता का प्रस्थान होने लगा और उन्होंने पूछा तुम्हारे पास यह क्या चीज है लोगों ने जवाब दिया अन्दाता, देव नारायण के लिए दही की जावणियाँ (मटकियाँ) लाए हैं।

देवता (सेठ साहब) ने कहा कि यह दही दूर से आए इन यात्रियों (हमारी तरफ इशारा करके) को पिला दो। देखते ही देखते सारा दही हमको मिल गया। भूख जबरदस्त लग रही थी जो खूब आनन्द आ गया। इस प्रकार लोगों की ही भाषा में लोगों के अंधविश्वास को तोडने का जबरदस्त काम सेठ साहब ने वहां बरसों तक किया। जनता से इतनी गहराई से जुड़े जन नायक बिरले ही होते हैं। ■

स्नेह मूर्ति सेठ साहब

श्री महेन्द्र कुमार
रचनात्मक कार्यकर्त्ता,खेराड ग्रामोदय सघ सावर के मन्त्री

सेठ साहब चले गये। उनकी यादें अमर हो गई। जब मैं उनके व्यक्तित्व के अनेक पहलुओ पर विचार करता हू, तो लगता है कि वे गुणों की खान थे। तपा हुआ सोना थे।ऊपर से नीचे तक पावन ह्रदय थे। अपने से छोटो के लिए ममता रखते थे। बडो के दिलों में उनके लिए स्नेह था। विरोधी भी उनमें कोई दुर्गुण नही ढूढ पाते थे। वे स्वतत्रता सेनानी थे। लोक शिक्षक की दृष्टि से वे सामाजिक दुर्गुणों से बचने की चेतावनी देने में कतई नहीं हिचकिचाते थे। पर्दाप्रथा, दहेज, मृत्युभोज, छुआछूत, व्यसन आदि के विरोध में वे अपने पूरे जीवन भर लडते रहे। केवल विरोध ही नहीं किया स्वय अपने परिवार में भी इन सामाजिक बुराईयों से परहेज रखा। उन्होनें कई महिलाओ को पर्दे की कैद से मुक्त कराया। वे ही ऐसे व्यक्ति थे जो हरिजन के घर भी मौत हो जाय तो सात्वना देने अवश्य जाते थे। भीलवाडा में किसी के यहा अकाल मृत्यु हो गई – दुर्घटना हो गई तो मनोहर सिंह जी अवश्य उनकी सम्वेदना में शामिल होते थे। उनका सम्पर्क का क्षेत्र विशाल था। सर्वोदय परिवार के अगुआओ में से एक थे। ग्रामदान, भूदान, ग्रामस्वराज्य, पूज्य विनोबाजी द्वारा प्रेरित सभी आदोलनो में उन्होने आगे होकर भाग लिया। शराबबन्दी के तो वे पर्याय ही बन गये थे। सेठ साहब कौन से ? शराबबन्दी वाले। चाहे विधान सभा हो अथवा आम सभा, चाहे समाज हो अथवा व्यक्ति शराब के विरोध में साधिकार वे जब कुछ कहते थ, सबको नतमस्तक होकर सुनना ही पडता था।

सठ साहब जैसे लोगो को कोई नियमो में नही बाध सकता था। वे सद्व्यापी सच्चे लोक सेवक थे।सरला बहन से लेकर सिद्धराज जी तक उनके सम्पर्को से प्रभावित थे, पर राजनीति को उन्होने कभी अछूत नही समझा। मौका आने पर व बडो बडों से भिडे।उन्हें धूल चटाई। केबिनेट की कुर्सी उनको नही ललचा सकी। उनके बिकने का तो सवाल ही नही उठता था। फिर भी यह उनकी महानता थी कि विरोधियों के हृदय में भी उनके लिए स्थान रहता था। अनेक सस्थाये उन्हें सदस्य बनाकर गौरवान्वित होती थी परन्तु ज्यो ही उन्होनें उनमे बुराई देखी कहने में कभी

नहीं चूके। गाधी के सच्चे अनुयायी की तरह उन्होने व्यक्ति से कभी परहेज नहीं किया पर बुराई का विरोध किया। स्वनामधन्य मोतीलाल जी छापरवाल के नीति भरे दोहे तो वे जब भी मिलते सुनाते ही रहते थे।

उनका पारिवारिक जीवन सुखमय था। उनकी सहधर्मिणी भी भारतीय महिला की तरह उनके विचारो के अनुरूप सदा उनके साथ चली।खद्दर को जीवन का अग बनाया।

बीगोद क्षेत्र उनका मुख्य सेवा केन्द्र था जिसमें मुसलमान भी काफी तादाद में रहते हैं। सन् 1947 में देश के टुकडे हुए और मुस्लिम लोग आतक और भय से बीगोद छोडकर जाने की तेयारी करने लगे पर सेठ साहब फौलाद की दीवार बनकर अड गये। हिन्दू मुस्लिम एकता की मिसाल उस समय सेठ साहब के साहस से ही बन सकी। मेरे भीलवाडा रहने पर उनके जीवन के अतिम वर्षों में उनसे मेरा ज्यादा सम्पर्क हो पाया। मैंने मकान की कठिनाई का उन्हें जिक्र किया तो वे अपने सागानेर स्थित घर में रहने के लिए मुझे आग्रह करने लगे। सस्थाओ में कार्यकर्ता अपनी कठिनाइयाँ निवेदन करने के लिए सेठ साहब को ही अपना हितैषी समझते थे।

वे अपने मन के सेठ थे। उदारता मे श्रेष्ठ थे। आम कार्यकर्ता के प्रवक्ता थे। राजनीति में ईमानदार थे। व्यक्तिगत जीवन में निष्कलक थे। दुखियो का दु ख बटाते थे। वे स्नेह के भडार थे। उनकी स्नेह भरी यादें तो अब मुझे जैस गूगे को गुड के स्वादी की तरह आभास कराती ही रहेगी। भगवान उनकी आत्मा को शाति प्रदान करें। उनके गुणो को कार्यकर्ता अपने में उतारे और उनके द्वारा छोडे गये रचनात्मक कार्यों में उन्ही के समान कर्मठता से लाने की प्रेरणा लें। ■

धुन के पक्के समाज सेवक

श्री रामचन्द्र देवपुरा

श्री गाधी विद्यालय गुलाबपुरा के सेवानिवृत्त
प्रधानाचार्य

धुन के पक्के मन के सच्चे, वाणी के मधुर समझ मे तीखे आपत्तिकाल मे भी सदा प्रसन्नचित्त रहने वाले सेठ मनोहर सिंह महता जीवन पर्यन्त बिना पैसे की परन्तु सच्ची सेठाई के धनी रहे।

शराब, मृतक भोज और दहेज के जानी दुश्मन इस समाज सेवी व्यक्तित्व के सामने बडे-बडे सेठो की सेठाई छोटी पड गई। सामाजिक कुरीतियों के निवारण हतु वे हर पल तैयार रहते थे।

उन्होनें एक सच्चा गाधीवादी जीवन जिया। सर्वोदय के महान लक्ष्य की पूर्ति हेतु जन प्रतिनिधि के रूप मे भी आगे आये तो शुद्ध सेवा भावना के बल पर। अपने जन प्रतिनिधि चुनाव में भी सेठ साहब ने एक सच्चे आदर्श की स्थापना की।

जब कभी सेठ मनोहर सिंह किसी बाल सभा में या सामाजिक जन सभा मे किसी सुकार्य के लिए धन की माग करने खडे होते तो देखते ही देखते अप्रत्याशित राशि इकट्ठी हो जाती थी।

हसी, मजाक में ही बडे प्रभावी ढग से तीखी मार करक सही बात को समझा देने की उनमे अद्भुत क्षमता थी। जन सेवा के हर कार्य में उन्हे आगे देखा गया है। उन्हें श्री मनोहर सिह महता के नाम से जितने लोग जानते हैं उनसे कहीं अधिक लोग केवल "सेठ साहब" के नाम से जानते है।

जीवन के अन्तिम दिनों में यद्यपि व केन्सर जैसे रोग में रूग्ण रहे परन्तु अन्तिम समय तक उनका मनोबल इस कष्ट साध्य रोग को भी दबाये ही रहा।

व्यक्ति को अपने वश मे रखना तो उनके बाये हाथ का खेल था। अपनी विनोद-प्रियता से वे सब को वश में कर लेते थे।

गाधी विद्यालय गुलाबपुरासेवे इस सस्था के सस्थापक प्रधानाध्यापक श्री ढाबरिया साहब के अनन्य मित्र के रूप में जुडे हुए थे।और तभी सन् 1९

ही मुझे भी उनका अपार स्नेह मिला। सन् 1966 में स्वर्गीय दाबरिया साहब के देहान्त के अवसर पर और हाल ही में सन् 1989 की जनवरी में स्वर्गीय श्री जगन्नाथ सिंह जी साहब महता के निधन के अवसर पर उन्होंने कहा था – "वे काम करते-करते ही अचानक चल दिए। ऐसी मृत्यु से तो डाह भी होती है। कबीर के शब्दों में "ज्योंकी त्यों धर दीनी चदरिया" यही बात आज उनके लिए भी सही उतरती है।

मेरा और गाधी विद्यालय के शिक्षको का परिचय तो वे सबस अपने पुत्र, दामाद, दोहिते के गुरू कह कर ही कराते थे। शिक्षको समाज सेवियो और आचरणवान व्यक्तियो के लिए उनके मन में अपार स्नेह और श्रद्धा थी। उनसे मिलकर प्रत्येक व्यक्ति में हर बार एक नया जोश पैदा होता था।

आज उन्ही का दोहा याद आता है –

एक मरयो काही घट्यो, मिट्यो गॉव को पाप।
एक मरयो सब रो पड़्या , जाणे मर ग्यो बाप।।

सचमुच उनकी मृत्यु से सबको उतनी ही पीडा हुई है जितनी पीडा अपने निकट से निकट प्रियजन की मृत्यु पर होती है। वे सब के अपने अति-प्रिय जन थे।

उन्होन अपना सारा जीवन दीन-दुखियो की सेवा में तथा सामाजिक कुरीतियो को समाप्त करने में और बालको को मानव मात्र को चरित्रवान बनाने के प्रयास में लगा दिया। वे जग में अपने जीवन को धन्य कर गये।

सम्मोहक व्यक्तित्व

श्री माणिक राम नुवाल
स्वतंत्रता सेनानी, एवं जन कार्यकर्ता

मेरा उनसे सम्पर्क सन् 1928 से हुआ और जीवन के अन्त तक बना रहा। सन् 1928-29 में भाई साहब डॉ मोहन सिंह जी महता उदयपुर स्काउट्स पैट्रो-लीडर्स मेवाड वालों द्वारा 15 दिन के लिए नैनीताल यात्रा के दौरान यह परिचय प्रारम्भ हुआ। इसके बाद सन् 1932 में सेवा सघ बीगोद द्वारा खटवाडा मे खोली गई प्रथम पाठशाला में अध्यापक बनाया गया। खटवाडा पाठशाला के साथ ही सेवा सघ ने पुस्तकालय, वाचनालय, औषधालय, सहकारी समिति खोली। मैं सबसे जुडता गया।

आसपास के गावो में नशा निषेध, हरिजन सेवा एव सामाजिक सुधार आदि का काम भी शुरू कर दिया गया।इस तरह वह क्षेत्र रचनात्मक कार्यों का केन्द्र बन गया। और महता साहब के अथक प्रयासो से रात दिन घूम फिर कर सेवा करने वाले साथियो का एक बहुत अच्छा समूह व सगठन बन गया। मैं इसी समूह का एक सदस्य रहा और कार्य निरन्तर गति पकडता गया।

महता साहब में मिलन सारिता प्रफुल्लता कूट-कूट कर भरी हुई थी। उनके व्यक्तित्व में सहज आकर्षण व सम्मोहक शक्ति थी। एक बार कोई उनसे मिलले तो दोबारा उसे मिलने की इच्छा होती थी। जिन्होंने भी उनसे सम्पर्क किया वह हमेशा के लिए उनका हो गया।

महता साहब का हँसता हुआ उत्साहित चेहरा कभी भुलाया नही जा सकता। उन्होंने सैकडो आदमियो का जीवन बनाया सैकडों कार्यकर्ता तैयार किए। कार्यकताओ में निष्ठा लगन व नैतिक चरित्र को खूब आगे बढाया। उनके सम्पर्क में जो भी आया उसे आगे बढाने का भरपूर अवसर उन्होंने दिया। सबकी सहायता की और हमेशा के लिए अमर हो गए। ■

काका की कथनी व करनी में अन्तर नहीं

डॉ गजेन्द्र महता

व्याख्याता प्राणीशास्त्र

पिताजी को मैं और परिवार के सभी सदस्य 'काका' नाम से ही सम्बोधित करते थे। होश सम्भालने के बाद से ही मैंने उनके जीवन पर गाधीजी की शिक्षाओ का गहरा असर देखा। वे एक बात सदैव कहते थे कि मनुष्य की कथनी व करनी में अन्तर नही होना चाहिए। मेरे काका के जीवन पर यह बात शत-प्रतिशत सिद्ध होती है। वे जो कहते थे वही करते थे और अपने सिद्धान्तों पर अटल रहते थे। उनके जीवन की कुछ बातें मेरे मानस पटल पर पूरी तरह अकित हैं। मैं उनका उल्लेख करना चाहता हूँ।

सादा जीवन

उनका रहन-सहन अत्यन्त साधारण था। उन्होंने अपने जीवन में कभी कपडों पर प्रेस नही करवाई। वे अपने कपडे सदैव अपने हाथ से ही धोते थे। खान-पान भी बहुत साधारण था। मुख्यमत्री से लेकर प्रान्त व जिले के सभी बडे-छोटे प्रशासनिक अधिकारी घर पर आया करते थे सबको घर का बना साधारण खाना ही खिलाया जाता था, मुख्यत मक्के की घूघरी व उसकी पपडी ही खिलाते थे। उनके मित्र छापरवाल साहब ने इस सादे भोजन पर एक दोहा लिखा -

महताजी की दावता, म देखी दस बीस।
पाव मक्की की घूघरी, निपटादे पच्चीस।।

हमारे घर में खाट के अलावा किसी तरह का फर्नीचर (सिर्फ चार लाहे की कुर्सियॉ जो मैनें नोकरी लगने के बाद खरीदी) नहीं है। ड्राईग रूम सोफा फोन खाने की टेबिल जेसी कोई चीज घर में नही है। जो भी आते थे वे दरी पर ही बैठते थे और

वही पर खाना खाते थे। सर्दी में मोटे रेजे का कोट पहनते थे और उसको "रेजेलीन" कहते थे।

छुआछूत से सख्त परहेज

गाधीजी का उनके जीवन पर बहुत असर था। वे छूआछूत को नही मानते थे तथा उसके लिए वे सतत सघर्षशील रहे। 1970 में एक हरिजन महिला को शमशान ले जाने के लिए कोई हरिजन तैयार नही हुआ तो उन्होंने अपने गाव सागानेर से ही अपने साथियो को साथ लेकर सम्मान क साथ उसका दाह सस्कार किया। हमार गाव के ही एक अत्यन्त गरीब होनहार मेधावी छात्र हजारी लाल रैगर को अपने घर पर ही रखा, पढाया फिर उसे नवोदय विद्यालय हुरडा मे भर्ती करवाया।

सामाजिक कुरीतियो का विरोध

सामाजिक कुरीतियो जैसे बाल विवाह तिलक दहेज मृत्युभोज आदि का हमेशा विरोध किया तथा अपने जीवन मे बहुत सारे विधवा विवाह सम्पन्न करवाए। हमारी दादीजी का जब 102 वर्ष की आयु मे देहावसान हुआ तो घर में पाव भर शक्कर की मिठाई भी नही बनाई। पिछले कुछ सालो से तो खर्चीली शादियो में जाना ही बन्द कर दिया था केवल सामूहिक विवाहो विधवा विवाह, सादगीपूर्ण विवाह या लीक से हटकर होने वाले विवाहो में ही सम्मिलित होते थे और उन दम्पतियो को अपने घर बुलाकर उनका बड अनूठे ढग से स्वागत करते थे और सारे गाव को आमन्त्रित करत थे। जिस शादी में भी जाते थ वर वधू को गाधी विनोबा की पुस्तकें ही उपहार मे देते थे। हमारी बहन की शादी में हर बराती को गाधी की आत्मकथा भेट की थी।

आर्थिक प्रलोभन से कोसो दूर

अपना व अपने परिवार का जीवन आर्थिक तगी में होते हुए भी किसी भी तरह का आर्थिक प्रलाभन उनको अपने पथ व सिद्धान्तो से नही डिगा सका। सन् 1967 के चुनाव में आप निर्दलीय विधायक चुने गए उस समय सरकार बनाने के लिए एक विधायक की कमी थी और आपको दल बदल के लिए मत्री पद और कई आर्थिक प्रलोभन पथ से एक कदम भी नही डिगा सके।

उनके कार्य क्षेत्र बीगोद मे कोठारी बाध के डूब म आने के कारण एक जमीन के टुकडे के मुआवजे के हजारो रूपए सरकार ने भेजे वो वापिस कर दिए। भूतपूर्व विधायको को मिलने वाल हाऊसिंग बोर्ड के मकान की सुविधा का लाभ नही उठाया। आपातकाल में तृतीय श्रेणी की जेल में रहे और सुविधाओ को लेने से साफ मना कर दिया। जनता सरकार ने सभी जेल जाने वालो को मुआवजा दिया काका ने

उसे अस्वीकार कर दिया। 80 वर्ष की आयु में मृत्यु के समय बैंक में कुल 535 रूपए छोड गए थे।

मुझे गर्व है कि मैं ऐस पिता की सन्तान हूँ जिनका जीवन आईने की तरह साफ था तथा कच्चे खपरेल मकान, बिना फर्नीचर, फोन, तथा रेजा पहन कर अपने आपको बहुत गौरवान्वित महसूस करते थे। मोरारजी, विनोबाजी से लेकर छोटे से छोटे कार्यकर्ता व हर ग्रामवासी के मन में एक गहरी छाप छोडी। ■



त्रिलोचन

जन्म 20 अगस्त 1917, चिरानीपट्टी, कटघरापट्टी, सुल्तानपुर, उ० प्र०।

शिक्षा बी० ए० तथा एम० ए० (पूर्वार्द्ध) अंग्रेजी साहित्य में।

आज, जनवार्ता, समाज, प्रदीप, चित्ररेखा, हंस और कहानी आदि पत्रिकाओं और समाचार पत्रों का सह-सम्पादन कर चुके हैं।

1952-53 में गणेशराय नेशनल इण्टर कालेज जौनपुर में अंग्रेजी के प्रवक्ता।

1970-72 के दौरान विदेशी छात्रों को हिन्दी, संस्कृत और उर्दू की शिक्षा।

कुछ वर्ष उर्दू विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की द्विभाषिक कोश (उर्दू हिन्दी) परियोजना में कार्य।

सम्प्रति अध्यक्ष, मुक्तिबोध पीठ, सागर विश्वविद्यालय, सागर (म० प्र०)।

प्रकाशित कृतियाँ धरती (कविता संग्रह 1945, दूसरा संस्करण 1977)
गुलाब और बुलबुल (गजलें और रुबाइयां 1956)
दिगन्त (सॉनेट 1957)
ताप के ताए हुए दिन (कविता संग्रह 1980)
शब्द (कविता संग्रह 1960)
उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981)
अरघान (कविता संग्रह 1984)

पता सी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

उसे अस्वीकार कर दिया। 80 वर्ष की आयु में मृत्यु के समय बैंक में कुल 535 रूपए छोड गए थे।

मुझे गर्व है कि मैं ऐस पिता की सन्तान हूँ जिनका जीवन आईने की तरह साफ था तथा कच्चे खपरेल मकान बिना फर्नीचर, फोन, तथा रेजा पहन कर अपने आपको बहुत गौरवान्वित महसूस करते थे। मोरारजी, विनोबाजी से लेकर छोटे से छोटे कार्यकर्त्ता व हर ग्रामवासी के मन में एक गहरी छाप छोडी। ■

जन-जन के लाड़ले

श्री रतनकुमार "चदुल
गाँधीवादी विचारक एव कार्यकर्ता

दुनियाँ मे दो तरह के व्यक्ति होते हैं, एक वे जो स्वय के लिए जीते हैं दूसरे वे जो दूसरो के लिए जीते हैं। सेठ साहब मनोहर सिंह जी महता जिन्हें मैं भाईसाहब के नाम से ही सम्बोधित करता था, दूसरी श्रेणी के व्यक्ति थे। वे सदा समाज के लिए जिए, परायो को अपना बनाया।

स्वभाव से सरल सिद्धान्त के पक्के और श्रम के प्रति निष्ठा रखने वाले सेठ मनोहर सिंह जी सभी के लाडले थे। मैं एक बार बीगोद गया तब गाव में उनके समर्पण को देखकर गद्‌गद् हो गया। सारे गाव में एक भी व्यक्ति ऐसा नही था जो उन्हें न जानता हो। बाजार मे निकलते तो हर व्यक्ति उन्हें अभिवादन करता था। धुन के धनी महता साहब अन्दर-बाहर से एक समान थे। उनकी बात में लाग लपेट नही होती थी।

जीवन भर वे मोटा खाओ, मोटा पहनो सिद्धान्त से जुडे रहे। रेजे का मोटा कुर्ता व टाट का सर्वोदयी झोला विधानसभा तक उनके नाम का पर्याय बन गया। वे सादगी के सटीक प्रमाण थे। उनके घर पर मैंने घाट व छाछ का कलेवा कई बार किया। चित्तौड जिले में 17 दिन तक प्रखण्ड ग्रामदान की पदयात्रा के दौरान वे हमें चने व गुड हाथो से बाँट कर खिलाया करते थे। वह आज भी मुझे बार-बार याद आता है। गोकुलभाई भट्ट के बाद वे दूसरे व्यक्ति थे जिनकी जीवटता ने जन-जन को आत्मीय प्यार दिया था।

वे जिन्दादिल इन्सान थे। एक बार मैं सुबह-सुबह टहलने गया था। देखा हाथ में मकई का जड समेत पौधा लिए सेठ साहब आ रहे हैं। मैने प्रणाम किया और पूछा इतनी जल्दी किधर जाना हो रहा है ? वे बोले जिले के "बाप' से मिलने जा रहा हूं। जिलाधीश को प्रत्यक्ष यह पौधा दिखला कर माग करूगा पानी खेतो में कब छोडोगे ? सही बात में वे बडो बडो से अड जाते थे, और अपनी सही बात मनवा

कर ही दम लेते थे। उनका चरित्र बेदाग था। विरोधी विचारधारा वाले भी उनका सम्मान करते थे।

बाल विवाह, मृत्युभोज, शराब, दहेज जैसी सामाजिक कुरीतियों विरोका किया था। उन्होंने कभी अपने सिद्धान्तो के साथ समझौता नहीं किया। लोग उनकी याद को भुला नहीं सकते। वे सदा जन–जन के लाडले के रूप में अमर रहेगे। ■

> 'इस तर्क में कि नशा बन्दी करना लोगो के अधिकार में हस्तक्षेप करना है, उतनी ही त्रुटी है, जितनी की इस तर्क में कि चोरी रोकने के कानून चोरी करने के अधिकार में हस्तक्षेप करते हैं। चोर सम्पूर्ण सासारिक वस्तुओ को ही चुराता है, लेकिन एक शराबी अपनी ओर अपने पडौसी की मर्यादा का अपहरण करता है।'
>
> महात्मा गाधी

गरीबों के हम सफर

श्री मनोहरसिंह पोखरना

सागनेर

पूज्यनीय सेठ साहब के दिनाक 17 10 90 प्रात काल स्वर्गवास के समाचार मिलते ही मैंने ऐसा महसूस किया कि आज राष्ट्र का एक सपूत जो हमेशा भ्रष्टाचार, सामाजिक कुरीतियो दहेज मृत्युभोज छूआछूत शराबबन्दी आदि से जूझता रहा, राष्ट्र को समर्पित हो गया। सेठ साहब और मेरा परिवार हमेशा दिन में दो तीन बार एक दूसरे के दु ख सुख की चर्चा कर ही लिया करते थे। सेठ साहब से मेरा व मेरे परिवार की अतिम वार्ता दिनाक 16 10 90 को रात्रि के नौ बजे हुई।

सेठ साहब गरीब बीमार की जाच कराने हेतु स्वय साथ जाते और डॉक्टर्स को सारा काम छोड कर दिखाने जाते।

सेठ साहब में सबसे बडी बात थी वो हमेशा अन्याय का विरोध करते, और उस समय आपको तनिक भी क्रोध आ जाता तो ठीक 10-15 मिनट बाद ही उक्त व्यक्ति से जाकर क्षमा माग कर अपना बोझ हल्का कर लेते थे। क्षमा मागने में उन्होंने कभी भी यह महसूस नहीं किया कि अमुक व्यक्ति उम्र में छोटा है या बडा नि सकोच क्षमा माग लेते।

सेठ साहब कही भी भाषण देते तो शिक्षित अशिक्षित दोनों तरह के नागरिक उसे सुनकर मन्त्रमुग्ध हो जाते थे।

सेठ साहब ने बच्चो को अच्छी शिक्षा अच्छे स्कूलो में मिले, इसके लिए हमेशा प्रयास किया। सागोनर के दोनों स्कूलों के भवन निर्माण आप ही के प्रयास से तैयार हुए। तीसरे का कार्य भी आप ही के द्वारा शुरू कराया गया किन्तु पूर्ण होने से पूर्व ही विधाता ने हम सबके बीच में से आपको उठा लिया।

ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि सेठ साहब की आत्मा को शान्ति दे व परिवार को इस हादसे को सहन करने की शक्ति दें।

पूज्यनीय सेठ साहब से मेरा सम्पर्क 40 वर्ष से परिवार सा रहा। मैं जब 10 वर्ष का था उस समय आपके मकान में रहते थे। अपने बच्चो के जैसा स्नेह दिया।

मैं जब हाई स्कूल पास कर नौकरी हेतु आपके पास गया सिफारिश हेतु तब आपने कहा इन्टरव्यू देओ, तुम काबिल होवोगे तो तुम्हें निश्चित सफलता मिल जायेगी। मैने आपकी आज्ञा का पालन किया, आपकी इच्छा थी कि मैं आगे और पढ़ूं। आखिर आपने कॉलेज में दाखिल करवाया।

सेठ साहब का हमेशा मेरे प्रति यह आग्रह रहा कि सेवानिवृत्ति के बाद तुम सागानेर के विकास कार्यों में सहयोग करो।

सच्चे जन नायक

श्री बशीधर आचार्य

शिक्षाविद् एव रचनात्मक कार्यकर्ता

सेठ साहब सच्चे माने में जन नायक थे। फूल फकीर पर पूरे सेठजी थे पैसो से फकीर और मन से सेठ। किसी का दु ख नहीं देख सकते थे। हर आदमी उनका था वे जनता के प्यारे थे।

एक दिन मैं उनके पास खडा था। एक कार्यकर्ता आया, उसके लिए जनता की ओर से शिकायत थी। सेठ साहब ने कहा चलो मैं चलता हूँ। मुझे कहा चल बशी तू भी चल। हम उस कार्यकर्ता के साथ गाँव में पहुँचे। जनता की शिकायतें थी। इस कारण शाम को गाँव की सभा बुलाई। मुझे भी कहा बोलने के लिए और मैने लोगो को समझाने की कोशिश की पर लोगो में काफी नाराजगी थी तब सेठ जी उठ कर खडे हुए और बोले –

जनता जनार्दन होती है भगवान का रूप है, पच परमेश्वर है। कार्यकर्ता आपका बालक है। उसने गलती की है उसके लिए मैं जनता से माफी मांगता हूँ। आप कहो तो इसने जो बच्चो से आचार व दही मगवाया है उसकी सजा के रूप में इसे यहाँ से हटा दें, और पाठशाला बन्द कर दें। इसको दूसरे स्कूल में रख देता हूँ और वहाँ दही व आचार की हाँडी इसके गले में लटका दूगा। उन्होने गम्भीर वातावरण को अपने वाक्पटुता से इतना हल्का कर दिया कि सब लोग खूब हँसने लगे और एक स्वर में बोले कि नही इनको मत ले जाईयेगा। इन्हें यहीं रहने दीजिएगा। इस प्रकार सारा वातावरण प्रेममय हो गया। और सुबह सारे गाव वाले हमें बहुत दूर तक पहुँचाने आए। बाद में उन्होने कार्यकर्ता को इस ढग से समझाया कि दोबारा कभी शिकायत नही हुई।

कार्यकर्ता को वे बहुत ही महत्व देते थे। उसकी पैठ गाँव मे कैसे जमे यही प्रयास रहता था। प्रारम्भ से अन्त तक हर कार्यकर्ता को साथी माना। अपना घर का सदस्य माना। उसका दु ख उन्होने अपना दु ख समझा। कोई व्यक्ति में जरा सी भी लगन व निष्ठा देखते थे, तो उसकी इतनी ज्यादा तारीफ करते थे कि वह व्यक्ति

अपने आप को बहुत महत्वपूर्ण समझने लगता था। यही कारण था कि उन्होंने हजारों कार्यकर्ता तैयार किए, जो आज भी लगन व निष्ठा से कार्य कर रहे हैं।

शराबबन्दी उनके जीवन का लक्ष्य था और उसमें अपना जीवन खपा दिया।

सतगुरू श्री दाता दयाल ने एक बार कहा था मनोहर सिंह जी जैसा निस्वार्थी, निर्लोभी, जनता की सेवा में पूर्ण समर्पित व्यक्ति विरले ही होते है। उनमें बुराई ढूढना ईश्वर में बुराई ढूढना है। वे सच्चे जन नायक थे। ■

'जब तक राज्य शराब पीने की इजाजत ही नहीं बल्कि सुविधा भी देता रहेगा, तब तक सुधारकों को सफलता मिलना लगभग असम्भव है।'

महात्मा गांधी (हरिजन 25-9-37)

मेवाड़ की माटी का एक स्वाभिमानी सपूत

श्री देवेन्द्र कुमार हिरण
साहित्य रत्न एवं प्रसिद्ध समाज सेवी

- 0 मेवाड की यह ऐतिहासिक धरती,
- 0 जिसका अपना गरिमापूर्ण इतिहास है।
- 0 इस धरती की रक्षा के लिये महाराणा प्रताप ने
- 0 अपना सब कुछ समर्पित किया।
- 0 पन्ना धाय ने अपने पुत्र का बलिदान किया।
- 0 हजारो वीरागनाओ ने शील की रक्षार्थ जौहर किया।
- 0 भाभासाह ने अपना सम्पूर्ण धन धरती के लिए न्यौछावर किया।
- 0 भक्तिमति महासती मीरा ने इसी धरती पर अध्यात्म की ज्योति जलाई।
- 0 इसी धरती पर
- 0 जन्मा एक कर्म योगी
- 0 जो जीवन भर सेवा का सकल्प लिये जिया।
- 0 हाथो में लोक सेवा का कार्य
- 0 वाणी में सेवा ही सेवा का नारा
- 0 सक्षमता सशक्तता सर्जनता एव शालीनता
- 0 बाना रहा है इस धुन के धनी व्यक्तित्व का।
- 0 जीवन में कई सघर्ष आये,।
- 0 परीक्षा की घडियाँ भी आई

- मगर ठुकरा दिया पद, प्रलोभन एव पैसा
- सिद्धान्त एव स्वाभिमान सर्वोपरि
- स्पष्टता को कभी छिपाया नही ।
- जो सही लगा वही कहा
- जीवन मूल्यो के प्रति सदैव समर्पण रहा।
- सीधी–साधी मेवाडी वेषभूषा
- खादी की धोती कुरता एव कन्धे पर एक झोला
- बस यही एक पहचान इस व्यक्तित्व की ।
- गाँव–गाँव में भ्रमण कर अलख जगाई
- शराब बन्दी की मृत्युभोज उन्मूलन की ।
- सेवा का ऐसा कौनसा क्षेत्र
- जो इस व्यक्तित्व के आयाम से अछूता रहा है।
- यह सहज व्यक्तित्व के जीवन की बोलती कहानी
- हम सब के लिये प्रेरणा की निशानी है।
- इस व्यक्तित्व ने मुझे
- अत्यधिक स्नेह दिया
- अपनत्व दिया एव मार्ग दर्शन दिया ।
- प्रणाम करता हूँ
- इस अलमस्त कर्मश को
- कर्मठ कर्मयोगी को
- धुन के धनी इस व्यक्तित्व को
- और हमारे अपने सबके
- सेठ साहब श्री महता साहब को ।

■

रचनात्मक कार्यकर्ता

श्री गणपतिलाल वर्मा

स्वतत्रता सेनानी एव भूतपूर्व विधायक

भाई श्री मनोहरसिंह जी महता जो इस क्षेत्र में सेठ साहब के नाम से जाने पहचाने जाते थे, सदा हसमुख रहने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने अपना सारा जीवन ग्रामदान, भूदान, शराबबन्दी में खपाया और अशिक्षा व सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ लोगो मे जन जागृति करने का काम किया। और सिर्फ बातें ही नही की उन पर अत्यन्त गहराई से अमल किया और कराया।

शराबबन्दी के लिए तो वे एक बार राजस्थान विधानसभा मे सदस्य के रूप में गए ताकि वे अपना मकसद पूरा कानून बना कर सके। उन्होंने विधानसभा मे जाकर शराबबन्दी के बारे में अपनी आवाज बुलन्द की। और एक बार राजस्थान में पूर्ण शराबबन्दी लागू हुई। इसमे उनके प्रयासो को कभी भी भुलाया नही जा सकता।

वे पक्के सर्वोदयी थे, सहकारिता क्षेत्र व ग्राम विकास में पूर्ण रूप से सलग्न रहे। उनके जीवन का हर पल रचनात्मक कार्यों में ही लगा रहा। कोई सा भी कार्य हो उनका सोच सदैव सावजनिक रहा। मेरा व उनका कार्य क्षेत्र दो भागो में बटा हुआ था। मैं राजनीति व रचनात्मक कामो से जुडा हुआ था। वे पूरी तरह रचनात्मक काम में रत थे। राजनीति भी उन्हे रचनात्मक कामो से दूर नही कर पाई।

हम दोनो इस माडलगढ क्षेत्र में सार्वजनिक कार्यों में प्रतिद्वन्द्वी के रूप में रहे। प्रतिस्पर्द्धा ने हमें एक-दूसरे से दूर कभी नहीं किया। उनके डर से मैं विधायक रहते हुए गलत कामो से डरता रहा। उस क्षेत्र में मैं जो काम कर पाया और जो प्रतिष्ठा प्राप्त की वह उन्ही की देन है। उन्ही के कारण मैंने इतना सावधान व सचेत होकर कार्य किया। मेरे व उनके व्यक्तिगत सम्बन्ध हमेशा अच्छे बने रहे। जब हम मिलते एक दूसरे को गले लगा लेते थे। उनका आत्मीय स्नेह आज भी मुझे खूब याद आता है। उनका सार्वजनिक जीवन हम सबके लिए अनुकरणीय है और रहेगा। ■

सेठ साहब – श्रेष्ठ व्यक्तित्व

श्री रणजीत सिंह कुमट
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं राजस्थान प्रौढ शिक्षा समिति के अध्यक्ष

भाला सू वाटियाँन सिके" यह शब्द बार–बार गूजते है जब कभी प्रौढ शिक्षा का सम्मेलन होता है। सेठ साहब मनोहरसिंह जो पैसे से कभी सेठ नही रहे लेकिन उनकी बातें, कार्य और इरादे श्रेष्ठ होते थे, और श्रेष्ठ का ही अपभ्रश शब्द सेठ है। जिनके विचार श्रेष्ठ हो, जीवन आदर्श हो, कर्म से परिपूर्ण हो कथनी और करनी में भेद न हो, ऐसे मनीषी की स्मृतियाँ पथ–प्रदर्शक ही नही होती, समय–समय पर झकझोर देने वाली होती हैं। प्रौढ शिक्षा के कार्यकर्ताओ के सम्मेलन में हमेशा इस बात पर जोर देते थे, कि यदि यह कार्य करना है तो भाषण और योजना छोडो और कार्य क्षेत्र में जुड जाओ। जब स्वय निरक्षर लोगों के सम्पर्क में आओगे तो उनकी समस्या जानोगे और समुचित कदम उठाओगे। बिना प्रत्यक्ष अनुभव के मच पर कई बातें आदर्श और थोथी हो सकती है।

सेठ साहब कर्मठ कार्यकर्ता ही नही थे, बल्कि एह जुझारु व्यक्ति थे। जीवन भर सघर्ष किया, न केवल आर्दशों को जीने के लिए बल्कि अपनी बातो को मनवाने फैलाने और लोगों मे आदर्श मूल्यो की स्थापना के लिए। बाल विवाह मृत्यु भोज, शराब, दिखावा आदि कई सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ उन्होने अपनी आवाज उठाई, आन्दोलन किया, जेल गये। स्वतत्रता सग्राम के दौरान उन्होने कुर्बानियाँ तो दी ही थी, लेकिन स्वतत्रता के बाद भी इन नीतियो के प्रति अपने सग्राम को नही छोडा और महात्मा गाधी के बताए सिद्धान्तो को अन्य अनुयायियो की तरह ताक पर नही रखा। सत्य को जीया अनुपालना की और एक सबसे बडी बात इस सारे सघर्ष मे किसी प्रकार के अह को अपने पास फटकने नही दिया अधिकतर सच्चे और ईमानदार लोगो को इस बात का अहम् होता है कि उनके जैसा कोई भी व्यक्ति ईमानदार नहीं है और उस अहम् से ग्रसित होकर कुठित जीवन व्यतीत करते हें और दूसरो में भी कुठा पैदा करते हैं। लेकिन सेठ साहब मे इसकी कोई झलक नही थी बल्कि विनय उनका मूल सूत्र था और सच्चाई और ईमानदारी का दभ अपने व्यवहार में नहीं आने दिया।

सेंठ साहब रोचक वक्ता थे, और अपनी लोक भाषा में लोगों को रोचक उदाहरण देकर मत्रमुग्ध कर देते थे। उनकी बात दिल से दिल तक पहुचती थी क्योंकि वे दिल से बोलते थे। दिखावा, आडम्बर के सख्त खिलाफ थे। किसी शादी में यदि बडी बारात होती या दिखावा होता तो वे नहीं आते थे और केवल एक पोस्ट कार्ड पर हल्दी से पीली किनारी भरकर उस पर अपनी शुभकामना सन्देश भेजते थे।

भीलवाडा में मेरे भतीजे ने बिना आडम्बर के शादी की और इसी प्रकार मेरे एक अन्य भतीजे ने बम्बई में बिना बारात ले जाए शादी की। इन दोनों घटनाओ को जहा भी वे जाते अपने भाषण में उजागर करते और इन दोनों बच्चों को अपने घर बुलाकर खूब सम्मान दिया।

सरलता सहृदयता उनके मन, वचन और कर्म में पूर्णत झलकती थी। किसी का दुख वे देख नहीं सकते थे, और दुख निवारण के लिए जो भी उनसे बनता था तत्काल करने को तैयार हो जाते।पुराने भारतीय आदर्शों को निभाने और प्रचार करने के नाते माता-पिता की सेवा, अतिथि सेवा आदि आदर्शों को खुद निभाते और दूसरों को निभाने के लिए प्रेरित करते।

आज के इस भौतिक युग में ऐसे मनीषी दुर्लभ ही नही असामान्य कहे जाते हैं। आदर्शवादी होना "सनक" कही जाती है। आज के मूल्य बदल गये है, भाषा बदल गई है, लेकिन ऐसे दुर्लभ व्यक्तियों के दर्शन भी दुर्लभ हैं और सामान्य व्यक्ति तो वे है ही नहीं और जो सामान्य नहीं है वे ही पूज्यनीय है।अनुकरण उनका शायद कोई करें न करें लेकिन पूजा और श्रद्धा से नत मस्तक सब होगें। वह दिन शुभ होगा जब हम सब अनुकरण कर पायेगें और उनके आदर्शों को पुनर्स्थापित कर पायेगे।

समाज के पुनरूत्थान के लिए एक नहीं कई मनोहर सिंह जी महता चाहिए और उनका प्रादुर्भाव शीघ्र हो यही भगवान से प्रार्थना है। उनकी यादें अमर रहेंगी क्योंकि गीता के मुताबिक ऐसे ही व्यक्ति पुन पदार्पण कर ह्रास हुए मूल्यों का पुनरूत्थान करते हैं। ■

लोकसम्पर्क कलाकेअद्भुत साधक

श्री सम्पतलाल पारीक
प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्ता

श्री मनोहरसिंह जी महता, आप जनता में सेठ साहब के नाम से प्रसिद्ध थे, मेरा उनसे परिचय उनके सेवा क्षेत्र बींगोद में हुआ। मैं उस समय राजकीय विद्यालय में शिक्षक था।वे क्षेत्र में सार्वजनिक सेवक के रूप में लोकप्रिय थे। क्षेत्र के हर तबके मे उनकी पहुच थी। अपनी सेवा–भावना एव जागीरी के जुल्मो के खिलाफ सघर्ष करने के कारण उनकी बडी लोकप्रियता थी। आस पास के गावो से विद्यालय मे बच्चे पढने आते थे। मैने सेठ साहब से ग्रामीण छात्रों के लिए छात्रावास चलाने के लिए सहयोग देने के लिए अपना प्रस्ताव रखा। महता साहब ने तुरन्त ही इस काम में सहयोग प्रदान किया। उन्होने बीगोद सेवा सघ द्वारा छात्रावास के बालको के लिए भोजन की व्यवस्था कर दी। यह सन् 1951 की घटना है, तब ही से मैं उनके सम्पर्क में आया और जीवन पर्यन्त उनके सम्पर्क में रहा।

सेठ साहब की सेवा भावना का मेरे जीवन पर बडा प्रभाव पडा। क्योकि उनका दृष्टिकोण रचनात्मक था। बीगोद सेवा सघ द्वारा क्षेत्र में जन जागरण तथा जन मेवा की दृष्टि से शिक्षा, चिकित्सा एव सहकारिता सम्बन्धी कार्य किए जाते थे। गावो में पाठशालाएँ चलती थी। मैने भी नई तालीम के शिक्षण की दृष्टि से सेठ साहब के सेवा क्षेत्र खटवाडा में पिंजाई तथा कताई का शिक्षण लिया। सेठ साहब ने किसानो को आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए, बीगोद में किसानो की सहकारी समिति की स्थापना की।जो एक आदर्श सहकारी समिति थी। जहाँ सही कीमत पर वस्तुएँ मिलती थी। इस समिति ने क्षेत्र मे किसानो के आर्थिक विकास में सही मायने में मदद की। साहुकारों के ऋण से मुक्ति दिलाई।

सेठ साहब को हर समय किसानो विशेष रूप से गरीब लोगों को मदद के लिए तत्पर देखा। अकाल के समय उन्होने गरीब लोगो के लिए अनाज की व्यवस्था की थी। जिसका मेरे जीवन पर बडा प्रभाव पडा। गरीब लोग जगल से लकडियाँ लेकर आते थे और उसके बदले में अनाज देते थे। इससे अकाल में लोगों को भूखे मरने से बचाया था।सेठ साहब का मन सेवा एव करूणा से भरा रहता था। किसी के

दु खदर्द की खबर मिलते ही घर पहुच जाते और उसकी मदद करते थे। उनकी जन सम्पर्क की कला सहज सधी हुई थी। वे हसते-हसते, बातचीत करते हर किसी के घर के अदर बिना किसी हिचकिचाहट के पहुच जाते और सबके साथ आत्मीयता का रिश्ता कायम कर लेते थे। यह उनके चरित्र एव हसमुख स्वभाव का विशेष गुण था। मेवाडी भाषा में मुहावरों के साथ बातचीत करने की उनकी विशेष शैली थी। जिसके कारण हर किसी के मन को सहज ही जीत लेते थे। और अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे। बडे हाजिर जवाब थे। वे बात-बात मे किस्से सुना देते थे।सामने वाले को हसाते रहते थे। इसलिए ग्रामीण जनता में वे बहुत ही लोकप्रिय हो गये। उनका सम्पर्क सब वर्गों में था। क्योंकि वे निस्पृह सेवा भावी पुरूष थे।उनके स्वभाव में सरलता तथा मन में निर्मलता थी।

जहाँ सेठ साहब किसानो पर होने वाले जुल्मो के खिलाफ सघर्ष करते थे, उसके साथ वे शराबबन्दी के लिए तथा सामजिक कुरीतियो के खिलाफ भी लडते थे। पर्दा प्रथा के सख्त विरोधी थे।शराबबन्दी के लिए वे सारे प्रदेश म प्रसिद्ध थे। उन्होंने बीगोद से डिस्टलरी हटवाई। उठते-बैठते शराबबन्दी के लिए लडते रहते थे।

महता साहब दो बार अपने क्षेत्र माडलगढ से विधानसभा के सदस्य चुने गये। वे लोक उम्मीदवार की तरह चुनाव में खडे हुए और अपनी लोकप्रियता के कारण ही विजयी हुए। विधानसभा मे भी उन्होने बडी निर्भीकता और साहस से शराबबन्दी की आवाज बुलद की। उसके लिए श्री गोकुलभाई जी के साथ कधे से कधा मिलाकर सघर्ष किया जिसके फलस्वरूप प्रदेश मे शराबबन्दी लागू हुई। सेठ साहब ने 1975 में आपातकाल का भी विरोध किया। जनतत्र की रक्षा के लिए सत्याग्रह किया और जेल यातना भुगती।

वे एक खुश मिजाज लोक सेवक थे। गाधी वादी विचारधारा मे उनकी निष्ठा थी। रचनात्मक कार्यों द्वारा जनता की सेवा में विश्वास था। वे राष्ट्रीय विचारो के व्यक्ति थे।उन्होनें ग्रामीण क्षेत्र की सेवा करने के लिए निष्ठावान, कमठ कार्यकर्ताओ का दल तैयार किया और जो आज भी विषम परिस्थितियो में गावों के विकास कार्यों में लगे हुए है।बीगोद सेवा सघ द्वारा उन्होने ग्रामीण जनता की सेवा की और उन्होने सही मायने में एक ग्रामीण कार्यकर्ता का जीवन जीया। मोटा ही खाया और मोटा ही पहना। उनका जीवन सादगी की भावना से ओत-प्रोत था। उन्होने एक स्वाभिमानी की तरह जीवन जिया। वे ग्रामीण क्षेत्र में काम करने वालों के लिए आदर्श पुरूष थे। वे लोक सेवा तथा लोक सम्पर्क के लिए सदा स्मरणीय रहेगें। ■

धुन के धनी साहस के सूरमा

डॉ शिवकुमार द्विवेदी
सम्पादक
दैनिक लोक जीवन

खादी की धोती रेजीलीन का कुरता जाकेट तथा कन्धे पर झोला लिए हुए सेठ मनोहर सिंहजी महता भीलवाडा के प्रत्येक सामाजिक तथा सार्वजनिक समारोह में अपनी अलग एक पहचान बनाये हुये थे। पूरी आधी शताब्दी के रचनात्मक कार्यकाल में उनकी एक ही धुन थी एक ही सपना, सोच तथा सकल्प था –गरीबों का उत्थान हो, शोषण से पिछडे हुए लोगो को मुक्ति दिलाई जाये सत्यानाशी शराब की लत छुडाई जाये। शराब बन्दी का कार्यक्रम उनके जीवन का एक ध्येय उद्देश्य और लक्ष्य बन गया था। आधी रात को उठकर आये सेठसाहब किसी भी विषय पर कोई बात करें – शराब बन्दी की चर्चा उसमें निश्चित रूप से आ ही जायेगी। जीवन के प्रारम्भ से अन्तिम क्षण तक इस कार्यक्रम को उन्होने निभाया। दु ख है कि समूचा जीवन इस कार्य में लोप कर देने के बाद भी सेठ साहब व कई सदाशयी व्यक्तियो का यह सकल्प पूरा नहीं हो सका काश ! राजनेता गरीबों के जीवन में घुन की तरह चिपटी इस सत्यानाशी जोक से छुटकारा दिलाने की ओर ध्यान देते।

सेवा सघ के माध्यम से बीगोद को केन्द्र बनाकर सन् 1940 से सेठ साहब ने अपनी रचनात्मक यात्रा प्रारम्भ की। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, कृषि में सुधार का प्रचार आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए सहकारिता का प्रचार ग्राम पचायतो के माध्यम से ग्रामों का पुनर्निर्माण तथा विकास का कार्यक्रम तथा सबसे ऊपर शराब बन्दी की बात जीवन के अन्तिम क्षण तक उन्हें प्रेरित करती रही।

न चाहते हुए भी सक्रिय राजनीति में सेठ साहब को दो बार आना पडा। माडलगढ क्षेत्र से भारी बहुमत से निर्वाचित होकर वे दो बार विधायक बने। पर लगता नहीं था कि वे विधायक हैं। वही चिर परिचित स्वाभाविक हँसी के साथ विधान सभा में मेवाडी भाषा मे उनकी बात जिन्होंने सुनी वे आज भी उसे भुला नहीं सकते। सार्वजनिक तथा राजनीतिक जीवन में नैतिकता के हामी और उसके लिए लडने वाले सेठजी आसानी से सत्ता में प्रतिष्ठित हो सकते थे लेकिन इस स्थिति

में वे कसौटी पर खरे उतरे। जीवन के प्रारम्भ से गरीबो की सेवा का जो व्रत लिया, प्राण प्रण से उसे निभाया।

पिछले 40 वर्षों से मेरा उनका निकट सम्बन्ध रहा। अपनी प्रेरणा, सदाशयता और सहयोगी मनोवृति से सेठ साहब ने अनगिनत युवकों को रचनात्मक कार्यों की दिशा में प्रेरित किया।जो कहा उसे जीवन में उतारा। कथनी और करनी की यह समानता बिरले लोगो में देखने को मिलती है। चाहे पारिवारिक विवाह समारोह हो या अन्य कोई कार्य वे अपने सिद्धान्तो से कभी विचलित न हुये।बहुत कम परिवार ऐसे है जिनके जीवन में पिता की मान्यताओ का आचरण कर सम्मान होता है। सेठ साहब के समूचे परिवार पुत्र पुत्रियों के जीवन में उनकी ही मार्यादा, निष्ठा और सस्कार देखे जा सकते हैं।

समूचे मेवाड और विशेषत भीलवाडा के सार्वजनिक जीवन में सेठ साहब सदैव स्मरणीय रहेंगे। उनकी पवित्र आत्मा आज की पीढी को उनकी प्रतिज्ञा पूरी करने की प्रेरणा देती रहे। ■

अतुलनीय मनोहर काका

डॉ अरूण बोर्दिया

श्रीमती मजुला बोर्दिया

जबसे हमने होश सभाला है हमारे दोनो परिवारो में हमने परिवार के एक अभिन्न आत्मीय के रूप में, सुख दुख, हर्षोल्लास व विषाद के हर मौके पर मनोहर काका का सान्निध्य पाया और उनका स्नेहिल स्पर्श अनुभव किया है।हमारे साथ उनका अनाम सम्बन्ध इतना गहरा और आत्मीय है कि आज चाहे वे हमारे बीच नहीं हैं, पर इतने लम्बे समय तक उनके साथ बीता हर क्षण हमारे स्मृति पटल पर अंकित है। मोटी खादी के लम्बे कुरते पजामें मे बडा सा झोला लटकाये रमते जोगी की भांति अचानक किसी भी समय उनका हमारे बीच अवतरित हो जाना कोई नई बात नही थी।उनके आते ही सम्पूर्ण वातावरण में उनका उन्मुक्त अट्टहास गूज उठता था, चाहे वह रात्रि का प्रथम प्रहर हो या अन्तिम, क्योकि वे तो तभी पहुचेंगे, जब अपने पिछले पडाव से उनकी बस उन्हें अगले पडाव पर पहुँचायेगी और तभीसे प्रारम्भ हो जाते थे उनके अनुभवो के लच्छेदार विवरण। उनका मुक्त अट्टहास तथा हँसी का अजस्त्र प्रवाह–जिसमें वे खुद बहते, हमे बहाते और न जाने कहाँ समय निकल जाता, पता ही न चलता और वे "रमते जोगी" जैसे अनायास आते थे वैसे ही अपने अगले पडाव के लिए रवाना भी हो जाते थे।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी मनोहर काका के जीवन की सबसे बडी विशेषता जिसने हमे मोह लिया था, थी 'आत्मीयता' । हमारे जैसे कई परिवार है जो उनकी इस आत्मीयता की गरमाहट का आनद ले रहे हैं। हम दोनो के प्रति उनका बहुत स्नेह था। बहुत वर्षों पहले एक बार किसी व्यक्तिगत समस्या को लेकर हम कुछ परेशान थे। उनको जब इसका आभास हुआ तो उन्होने स्वत ही समस्या के निवारण हेतु हमारे लिए "सिगोली श्याम' भगवान की मान्यता मान ली। समस्या का निवारण जब हो गया तो हम तो मस्त हो गये व इस बात को बिल्कुल भूल गये पर उनका एक दिन उलाहना भरा पत्र मिला जिसमें आदेश था हमें नियत दिन उनके पास पहुचना है ताकि हमारे "सिंगोलीश्याम' की मान्यता को पूरा करा सके।उनकी इस अपनत्व की भावना ने हम दानों को उनके और निकट ला दिया।उनका व्यक्तित्व इतना

विशाल था कि उनका हर आत्मीय यह महसूस करता था कि वही मनोहर काका के सबसे निकट है। वे यथासभव इन परिवारो के सुख दुख में उपस्थित हो इस अहसास को दृढ करते थे। आखिर के दिनो में अस्वस्थता के कारण जब उनका व्यक्तिगत रूप से जाना सभव नही हो पाता था तो उनका आशीष, बधाई या प्रशसा का पत्र तो अवश्य पहुचता ही था।

"मनोहर काका" एक ओर तो घर परिवार के दायरे से बहुत दूर एक निस्पृह समाज सेवी थे तो दूसरी ओर एक अत्यन्त ही कोमल हृदय वाले आत्मीय। जहा एक ओर समाज सेवा के आदर्श प्रहरी की भाति सादगी की पराकाष्ठा में अपनी पुत्री का विवाह सम्पन्न किया तो दूसरी ओर उसकी विदाई में एक बालक की तरह बिलख बिलख कर रोये। वे परिवार व मित्रजनो की किसी भी परेशानी दु ख में द्रवित हो जाते थे और उनकी हर सभव सहायता करने को तत्पर रहते थे। किसी की कोई भी व्यथा उनके लिए हलकी नही थी, वे किसी की कोई भी आवश्यकता उनके लिए छोटी नही थी, पर स्वय निस्पृह, जिनकी अपने परिवार की आवश्यता पर कभी नजर नही गई। राज्य सरकार में उनके प्रभाव की कमी नही थी, पर उन्होने अपने स्वय या अपने परिवार के लिए कभी कुछ नही मागा, परन्तु जब भी किसी अन्य व्यक्ति को कठिनाई में देखा उसकी कठिनाई को हल करने का हर सभव प्रयास किया।

आज के इस जटिल परिवेश में मनोहर काका जैसा पारदर्शी सरल व सहज व्यक्तित्व का मिलना दुलभ है। व जिस उन्मुक्तता स किसी व्यक्ति की प्रशसा करते थे वह इस बात का परिचायक है कि उनका दृदय बहुत उदार था। अपने इष्ट मित्रो की उन्नति में वे अन्त तक प्रसन्न होते थे पर साथ ही अगर उनका कोई आचरण उन्हें उचित नही लगा तो उसे भी विना हिचक जाहिर भी कर देते थे, और उनकी ऐसी आलोचना को कभी किसी ने अन्यथा नही लिया क्योकि सब जानते थे, कि वे तो एक आत्म सन्तुष्ट प्राणी हैं, जिन्हें किसी से न स्पर्धा रही न बैर। वे स्वय तो निर्लिप्त थे। उनकी नाराजगी उस व्यक्ति से नही उसके विशेष कार्य या आचरण से थी।

पारस की अमूल्यता दूसरो का मूल्य बढाने में है। मनोहर काका ने वही किया। सदा अपने पास आने वाले व्यक्ति की उन्मुक्त प्रशसा कर उसका मूल्य बढाया।

ऐसे दुर्लभ व्यक्तित्व वाले "मनोहर काका" को शत् शत् नमन। ■

खुली पुस्तक

श्री भवर लाल सिसोदिया
प्रमुख कार्यकर्ता एवं एडवोकेट चित्तौड़गढ

"सेठ-साहब" के नाम से राजस्थान के हर-कोने में जाने पहिचाने पूज्य मनोहरसिंह जी का सम्पूर्ण-जीवन "सेठ" शब्द के साथ जुडे विचार से सही अर्थो में ठीक विपरीत था। नाम सेठाई से जुडा था तो काम दरिद्र नारायण की सेवा में रहा। उनकी वेश-भूषा ठेठ "मेवाडी" रही। मोटी खादी का धोती कुर्ता ओर देशी चमडे की जूती पहने, बगल में झोला लटकाये वे एक ऐसे अलमस्त फकीर थे, जो जीवन पर्यन्त शलाका-पुरूष विनोबा के बताये रास्ते पर सिर उचा रखकर चलते रहे। ग्राम-दान हेतु गाव-गाव अलख जगायी। गोकुल भाई के दाहिने हाथ सेठ साहब ने नशाबन्दी का एसा शखनाद फू का कि जीवन पर्यन्त वे उन्ही के शब्दों में "भूत" बनकर काम करते रहे। नशाबन्दी का उन्हे ऐसा नशा चढा कि उन्होंने इस जन जागरण आन्दोलन में, जो भी उनके रास्ते में बाधा बना उससे सघर्ष किया। स्वभाव से मृदुल होते हुए भी नशाबन्दी के मामले मे उन्होने किसी को माफ नही किया चाहे वह व्यक्ति शासन क किसी भी उच्च पद पर आसीन क्यो न रहा हो जो भी सामने आया उसे खरी-खाटी सुनाने में पीछे मुडकर नही देखा।

सेठ साहब अपनी बात को ठेठ मेवाडी लहजे में कहन से भी कभी नही चूकते। चाहे जैसा अवसर हो वे ता एक ही रग मे रग थे। "सरकार का घाटा शराब की कमाई से पूरा नही होता है तो वेश्यालय की दुकान क्यो नही चलाती"। ऐसी कडवी बात भी वे सार्वजनिक मभा मे कह देते थे।

वे तो निडर थे निर्भीक थे। उनका जीवन सदैव खुली पुस्तक रहा। मित्रो को असीम प्रेम व स्नेह दिया। उनकी ठहाका भरी हसी आज भी सुनाई देती है जिसकी गूज हमे हमेशा प्रेरणा देती रहेगी। मुझ पर सदैव स्नेह वर्षा करते रहे एव विशेष कर धर्म पत्नी शकुन्तलाजी मे उनकी गुरू पुत्री होने से घर पर अवश्य मिलन पधारते।

सामाजिक कायकर्ताओ को वे अपनी पू जी मानकर चलत एव ऐसा जादू था उनकी वाणी मे की वह पू जी निरन्तर बढती ही गई।

ऐसे 'सिह' को हमारा शत्-शत् वन्दन। ■

समाज सेवा के उद्‌बोधक

श्री देवेन्द्र कुमार कर्णावट

अणुव्रत प्रवक्ता

नई समाज रचना की कल्पना करने वाले कुछ ही ऐसे स्वप्न दृष्टा हुये हैं जिन्होंने रूढिग्रस्त समाज व्यवस्था के विरुद्ध न सिर्फ अलख जगाई वरन् नये समाज की प्रेरणा दी। उसके लिऐ जूझे सदैव आन्दोलित रहे। इस श्रृखला मे राजस्थान के कुछ इने गिने समाज सेवो हैं उन में श्री मनोहरसिंह महता का नाम अत्यन्त आदर के साथ लिया जा सकता है। प्रचलित भाषा मे वे सेठ साहब के नाम से प्रसिद्ध थे। लेकिन वे समाज सेवा के उद्‌बोधक और क्रान्तिकारी प्रचेता थे।

न सिर्फ मेवाड वरन् राजस्थान मे वे कही भी जाते, विशेषत गाँवो मे बाल विवाह, अनमेल विवाह मृत्यु भोज, दहेज प्रथा एव विवाहादि अवसरो पर होने वाले प्रदर्शन तथा फिजूल खर्चों के विरुद्ध वातावरण का निर्माण करते सभा सम्मेलन करते, विशुद्ध मेवाडी और राजस्थानी में भाषण करते और अपने मेवाडी दोहों से ऐसा समा बाधते कि श्रोतागण उनकी ओजस्वी वाणी से प्रभावित हो उठते थे। मेवाड के सैकडो गाँवो में सामाजिक कुप्रथाओ एव ओसर–मोसर मिटाने का सर्वाधिक श्रेय श्री मनोहरसिंह महता को है। सच पूछा जाये तो वे राजस्थानी भाषा के ओजस्वी प्रवक्ता थे।

राजस्थान नशाबन्दी परिषद के वे न सिर्फ सस्था प्रदर्शक बल्कि अग्रणी नेता थे। तपो पूत स्व श्री गोकुल भाई भट्ट के नेतृत्व में और उसके बाद राजस्थान में शराब बन्दी के विरुद्ध न सिर्फ आवाज उठाने, वरन् निरन्तर लोक जीवन मे आन्दोलित रहने का सर्वाधिक श्रेय श्री मनोहर सिंह महता को है।शराब बन्दी के लिए उन्होने क्या–क्या नही किया ? अपने जीवन का श्रेष्ठतम समय उन्होंने शराब बन्दी के लिए दे दिया। शराब बन्दी के लिए राजस्थान सरकार से निरन्तर लडते रहे जेल गये ओर गृह त्याग कर गाँव–गाँव की ठोकर खाई। लेकिन ये कभी निराश नही हुए।शराब बन्दी के लिए सेठ साहब ने उत्साहपूर्ण वातावरण का निर्माण किया। अनेक सत्याग्रह किये। यहा तक कि अणुव्रत आन्दोलन को सर्वोदय के निकट लाने में महता साहब ने अपनी अथक निष्ठा का परिचय दिया। वस्तुत वे सर्वोदय के

जहा निष्ठाशील प्रवक्ता थे वहा वे आचार्य विनोबा और आचार्य तुलसी क भी अन्यतम थे। सर्वोदय जगत के साथ अणुव्रत आन्दोलन के प्रति उनकी सेवाओ को कभी नही भुलाया जा सकता। अणुव्रत अधिवेशन और अणुव्रत की सगोष्ठियो में भाग लेकर जिस चेतना पूर्ण शक्ति का उन्हान आविर्भाव किया वह सदैव सस्मरणीय रहेगा।

समाज के क्रान्तिकारी प्रचेता के रूप मे श्री मनोहरसिंह महता का अपना एक इतिहास है। इसकी झलक राजस्थान में नशाबन्दी आदोलन के साथ मेवाड के विभिन्न अम्तलो और सस्थाओ में आज भी वर्तमान है। आश्चर्य का विषय यह है कि समाज निर्माण की भाँति राजनीति को भी उन्होने समान रूप मे प्रभावित किया।वे राजस्थान विधान सभा के एक सम्मानित सदस्य रहे। अपनी प्रगतिशील विचारधारा और स्पष्टवादी नोक झोक से वे कभी कभी राजस्थान विधान सभा को भी झझोड देते थे।राजस्थान के बडे–बडे राजनेता जहा उनके आदर्शों से प्रेरित थे, वहाँ उनकी शक्ति के भी कायल थे। यदि अतिशयोक्ति नही लग तो मैं नम्रतापूर्वक कह सकता हूँ कि वे राजस्थान मे नशाबदी आन्दोलन और नव समाज सरचना के न सिर्फ प्रवक्ता थे वरन् हनुमान थे। ऐसे चरित्र बली एव प्रेरणाशील व्यक्तित्व को जो हमारे मध्य नही रहे शत् शत प्रणाम। ■

दुर्लभ जनसेवी

श्री चुन्नीलाल स्वर्णकार
चित्तौडगढ

सन् 1953 मे ग्राम भीचोर मे गाधी स्मारक निधि द्वारा ग्राम सेवा केन्द्र की स्वीकृति होकर उसमे प्रमुख कार्यकर्ता श्री सुन्दरलाल जी 'आजाद' की नियुक्ति की गई। मैंने व शकररावजी न तभी सावजनिक कार्यों की शुरुआत की।

उन्ही दिनो ग्राम थाकडखेडी का गाधी स्मारक निधि द्वारा गाधी घर योजना के लिए चयन किया। उनमें प्रमुख कार्यकर्ता श्री मनोहर सिंह जी महता (सेठ साहब) थे। तभी से मेरा उनसे सम्पर्क हुआ। सेंठ साहव भीचोर के हर कार्यक्रम में आते थे। और कार्यकर्ताओ को नई प्रेरणा देकर जाते थे। थाकडखेडी में कोई भी आयोजन हो में अवश्य जाता था।

सेठ सा बडे कुशल वक्ता थे। अपने भाषण से वे श्रोताओ को मत्रमुग्ध कर देते थे। अत्यन्त विनोदी प्रकृति के थे। बच्चे, वृद्ध सब उनके मित्र बन जाते थे। अहकार पास होकर भी नही निकला था। आपका सारा जीवन समाज को समर्पित था। शराबबन्दी आपके जीवन का लक्ष्य रहा। सैकडों परिवारो को शराब की आदत से मुक्त कराया। उनके बीच रह कर कार्य किया।

भीचोर में श्री जयप्रकाश नारायण, श्री कृष्ण दास जी जाजू, श्री करणभाई, श्री सिद्धराज ढड्ढा, गोकुलभाई भट्ट आदि गणमान्य व्यक्तियों का पदार्पण सेठ साहब के कारण ही सम्भव हुआ। उनका परिचय अपार था।

खादी के बारे में आपका पक्का विचार था कि इसे सरकार मे (रिबेट) मुक्त होना चाहिए। खादी को स्वावलम्बी बनाना जरुरी है।

छोटे से छोटा कार्यकर्ता उनके लिए महत्वपूर्ण था। उसको बहुत महत्व देते थे। घर घर जाकर महिलाओ के विचारो को बदलने का प्रयास करते थे।

उनके विनोद के प्रसग आज भी याद आते हैं। हर बात को कहने का उनका अन्दाज ही निराला था और उसका व्यापक प्रभाव पडता था। ऐसे जनसेवी दुर्लभ ही होते है। ■

मूक सेवक

श्री सोहन लाल मून्दडा
रचनात्मक कार्यकर्ता
बीगोद

सन् 32 से मेरा महता साहब से सम्पर्क हुआ और अन्त तक घनिष्ठ बना रहा। मैं उन्हें पिता ही मानता था। सबसे पहले उन्होंने सेवा सघ का स्कूल खोला जिसमें मैं पढने वाला पहला विद्यार्थी था। माणिक रामजी नुवाल जैसे गुरु से हमने शिक्षा प्राप्त की और हमारा जीवन बना। सेठ सा ने शिक्षा पर सबसे ज्यादा ध्यान दिया और इस मारे पिछडे इलाके में 40 से भी ज्यादा स्कूल सेवा सघ के द्वारा चलाए गए और गरीब किसानो के बच्चों को पढने का अवसर मिला।

सम्वत् 96 में इस क्षेत्र में अकाल पडा जब महता साहब के सेवा कार्यों से एक भी व्यक्ति भूखे नही मरा। हर प्राकृतिक विपदा में सेठ सा ने लोगों को भरपूर राहत दी। मैं जब पढता था वे वेयरहाउस पर नौकरी करते थे और हर शराबी को शराब छोडने का कहते थे। उनका नाम ही शराबबन्दी वाले सेठ साहब रख दिया गया था। जागीरदारो के जुल्म से लोगों को बचाना भी उनका काम था। सहकारी समिति की स्थापना करके गरीब परिवारों को बहुत ही राहत पहुचाई थी। उनके सेवा के कार्यों को गिनना मेरे लिए सम्भव नहीं है।

उनके सेवा कार्यों का ही फल था कि इस क्षेत्र की जनता ने जी जान से उनको 67 व 77 के चुनावों में खडा करके विधानसभा में पहुचाया। यह प्रसग बडा ही रोचक है। सारे क्षैत्र की जनता ने तय करके उनको खडा होने के लिए बाध्य किया। उन्होंने कहा चुनाव में पैसे चाहिए और मेरे पास एक भी पैसा नही है। क्षैत्र की जनता ने कहा आपको तो खडा होना ही पडेगा पैसे भी हम देगें और वोट भी हम देगें। सारे क्षेत्र मं काग्रेस का भारी जोर था पर जनता ने तो तय कर लिया था कि महता सा को ही वोट देना है। सब अपनी अपनी रोटी बाध कर अपना अपना किराया खर्च करके प्रचार करने पहुच जाते थे। उनको 13 हजार वोटों की जीत मिली। आप निर्दलीय विधायक थे। सुखाडिया सा सरकार बनाना चाहते थे। महता सा पर चारो तरफ से दवाव डलवाया गया कि वे निर्दलीय से काग्रेस में आ जायें। महता सा ने साफ मना कर दिया। हर प्रलोभन उनके सामने बौना था। उन्होंने कहा थैला लेकर आया हू और

यही लटकाए हुए गाव गाव घूमकर जनता की सेवा करुगा मेरा यही उद्देश्य है। विधानसभा के पूरे पाच साल में क्षैत्र के व प्रदेश के हर मुद्दे पर अपनी स्पष्ट राय रखी और शराबबन्दी की आवाज बुलन्द की। सन् 77 के चुनाव में भी ऐसा ही माहौल था। वे विधायक के रुप में भी सच्चे कार्यकर्ता थे।

सन् 32 से 90 तक यानि 58 वर्ष तक मेरी जिन्दगी उनके साथ गुजरी यह मेरा सौभाग्य है। उनका एक काम बहुत ही महत्वपूर्ण है वह है कार्यकर्ताओ को तैयार करना। आज भी उनके तैयार किए हुए कार्यकर्ता जैसे वैद्य नन्दकुमार जी उसी निष्ठा स कार्य कर रह हैं। सेठ सा के कार्यो का परिणाम था कि माडलगढ क्षैत्र की एक अलग पहचान बनी। सेठ सा को मेरा शत् शत् प्रणाम। ■

एक व्यक्तित्व जिसे मैंने पहिचाना

श्री सुन्दरलाल महता
सेवानिवृत न्यायाधीश

श्रीमान् मनोहर सिंह जी महता न केवल श्रेष्ठिवर्ग में अपितु सामान्य जन-मानस में श्रद्धा व सम्मान के पात्र थे। उनका व्यक्तित्व अनूठा था। मेरा उनसे परिचय उनके दामाद श्री चन्द्र सिंह जी मेहता, जो मेरे सहपाठी एव परम मित्र रहे हैं, के माध्यम से जनवरी, 1954 में उनके निवास स्थान पर हुआ था। उनके आकर्षक व्यक्तित्व के कारण उनके प्रति सम्मान की भावना बन गयी थी। मैं प्रथम परिचय के समय ही ऐसा अनुभव करने लगा कि यह प्रथम परिचय नही अपितु वर्षों से परिचित है और घनिष्ठ सम्बन्ध है।

श्री महता साहब का सभी धर्मों के प्रति आदर का भाव था। सभी धर्मों की अच्छाईयों के प्रति नत-मस्तक थे उनमें उदारता थी, विवेक था और अत्यन्त ही सरलता थी। वे प्रत्येक व्यक्ति से आत्मीयता के साथ व्यवहार करते थे और उनकी सहायता भी। वे निरभिमानी व्यक्ति थे, उनमे कभी अभिमान की मात्रा नहीं देखी गयी। छोटे मे छोटे व्यक्ति के प्रति भी उनका आदर व दया का भाव रहता था। अनेक उदात् गुणो के धनी थे वे ।

गाधीवादी सर्वोदयी थे। वे धनी सेठ परिवार के दत्तक पुत्र थे परन्तु व्यवहार मे वे साधारण परिष्कृत सुधारवादी परिवार के सदस्य थ।

महता साहब मद्य निषेध के कट्टर समर्थक एव सामाजिक कुरीतियों दहेज प्रथा मृत्यु भोज, पर्दा प्रथा व छुआछूत के कट्टर विरोधी थे। वे दिखावे के लिये ही ऐसे नही थे अपितु व्यवहार में उक्त गुणो के पूर्ण रुप से पालक थे। अपनी दोनों पुत्रियो का विवाह बिना दहज पर्दा-प्रथा को त्यागते हुये पूर्ण सादगी के साथ सम्पन्न कराया था। अपने एक मात्र पुत्र का विवाह भी पूर्ण सिद्धान्तो के साथ साधारण बरात ले जाकर विवाह को सम्पन्न कराया था । श्री मान मेहता साहब ने कभी यह नहीं सोचा कि उनके इस व्यवहार के लिये उनके परिजन सम्बन्धी अथवा जन-मानस क्या सोचते व कहते हैं।

कोई उच्च अधिकारी हो या भले ही कोई साधारण स्थिति का व्यक्ति हो सब से ही वे समान रुप से व्यवहार करते थे। जो भी व्यक्ति उनके सम्पर्क में आता वह यही

महता साहब किसी से भी स्वय के लिये कुछ नहीं चाहते परन्तु दीन दुखी व पीड़ितो के लिये माग करने तथा उनके सहयोग के लिये सदैव तत्पर रहते थे।

महता साहब दृढ सकल्प एव अविचलित व्यक्तित्व के व्यक्ति थे। श्रीमान् महता साहब ने पहली बार विधानसभा में, शासक-दल के प्रत्याशी को पराजित कर प्रवेश किया था। शासक-दल बहुमत प्राप्त नही करने के कारण पुन सरकार बनाने में कठिनाई अनुभव कर रहा था। श्रीमान् महता साहब चूकि गाधीवादी एव सर्वोदयी होने के कारण उन्हें आग्रह किया गया कि वे शासक दल की सदस्यता ग्रहण कर शासक दल को सरकार बनाने में सहयोग करें। इस दृढ सकल्पी व्यक्ति ने उक्त प्रस्ताव को आदरपूर्वक अस्वीकार कर दिया और यह घोषणा की कि वे अपने मतदाताओ के साथ छल नही कर सकते। मतदाताओ ने उन्हें विपक्ष में बैठने के लिये विजयी बनाया है और वे विपक्ष में बैठेंगे और शासक दल की सदस्यता ग्रहण नहीं करेंगे। विधानसभा में उठने वाले सभी प्रश्नों पर प्रश्नों के गुणावगुण को ध्यान में रखते हुये अपने विचार व्यक्त करेगे। उन्होंने यहा तक कहा कि अन्य विपक्षी दल के सदस्य सत्ता-पक्ष के साथ हो जावे परन्तु वे मतदाताओ की इच्छानुसार विपक्ष में ही रहेगें।

मितव्ययी के साथ ही जहा तक सम्भव हो राज-कोष के धन का स्वय के लिये उपयोग नही होने देना चाहते थे। वे सदैव विधानसभा के सदस्य होते हुये रेल के द्वितीय श्रेणी में यात्रा करते थे। केवल एक बार अति विशिष्ट व्यक्ति के साथ यात्रा करने के कारण रेल के प्रथम श्रेणी में यात्रा करने के लिए बाध्य होना पडा। मुझे स्मरण है कि उनके पैरों में कुछ पीडा हो गयी थी। जिस दल का प्रतिनिधित्व श्रीमान् महता साहब करते थे वह दल शासक दल था। निदान व उपचार के लिये चिकित्सकों ने बम्बई जाने का सुझाव दिया था। अति विशिष्ठ व्यक्ति ने उन्हें अनुरोध किया कि वे स्वय उनके साथ बम्बई चलेगें। परन्तु इस महान् व्यक्ति ने चिकित्सकों के सुझाव को स्वीकार नही किया। वे चाहते थे कि उनके कारण राज-कोष पर अनावश्यक भार न पडे। उन्होंने चिकित्सकों से यही निवेदन किया कि वे जो भी उपचार यहाँ उपलब्ध हो, वह उन्हें दें वे स्वस्थ हो जावेंगे। अन्तत स्थानीय चिकित्सको के उपचार से वे पैरों की पीडा से मुक्त हो गये।

सच्चे अर्थों में वे मानवता के एक प्रतीक थे। उनके जैसा व्यक्तित्व आज देखने को नहीं मिलता। वे वास्तव में मेवाड की विभूति थे। उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये गौरव का अनुभव होता है। ■

आत्मीयता से ओत प्रोत

श्री रमेशचन्द्र ओझा
खादी एवं रचनात्मक कार्यकर्ता

सन् 1936 की बात है, मैं वर्धा से आ रहा था। खण्डवा से अजमेर आने वाली ट्रेन में चित्तौड स्टेशन पर जिस डिब्बे में मैं बैठा था उसी में आकर लगभग मेरी ही उम्र के एक नौजवान पास वाली सीट पर आकर जमे। वे खादी की पोशाक पहने थे। मेरी खादी की पोशाक देखकर उन्होंने अपना नाम मनोहर सिंह महता बताते हुए स्नेहाकर्षक मुख मुद्रा से मुझे मेरा परिचय पूछा। उन दिनों मैं गाधी आश्रम हटूडी में स्व हरिभाऊ उपाध्याय के निजी सचिव के रुप में कार्य करता था।

बातचीत से ही स्पष्ट हुआ कि श्री महता आबकारी विभाग में अधिकारी थे। मुझे उनकी बात से अनुमान हो गया था कि यह सज्जन अपने मौजूदा काम से सतुष्ट नहीं थे। उनकी पूरी ललक राष्ट्रसेवा, ग्राम सेवा व रचनात्मक कार्यों की तरफ थी और मुझे स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि ये पूर्णत राष्ट्रसेवा के काम में प्रविष्ट होंगें। इस मुलाकात से पहले ही वे सेवा सघ बीगोद की स्थापना कर चुके थे और कुछ समय बाद श्री महता पूर्ण रुप से गाव में रचनात्मक काम में उतर पडे। डॉ मोहन सिंह महता व बाबू साहब हुक्मी चन्द जी की प्रेरणा उनके हृदय में रहने वाली सेवा भावना को सिंचित करती रही।

बीगोद सेवा सघ के माध्यम से कई ग्रामों, कस्बों में दिवस पाठशालाए, रात्रिशालाएँ चलाना ग्रामवासियों गरीबों के अभाव अभियोग दूर करवाना समाज सुधार के लिए प्रचार प्रसार कार्य तथा रोगी सेवा के लिए औषधालय चालू करना आदि कार्यक्रमों द्वारा सेवा सघ ने अद्भुत कार्य किया। सयोग से इस काम के लिए श्री महता को सर्व श्री वैद्य नन्दकुमार, बशीधर श्री वैष्णव भवरलाल जोशी आदि कई स्थानीय साथी कार्यकर्ताओ का सक्रिय सहयोग उपलब्ध हो गया। सेठ साहब की सूझबूझ और कुशलता से कई सरकारी शिक्षण-सस्थाओ के सुयोग्य शिक्षको जिनमें श्री मदनलाल जोशी तथा श्री यशवन्तसिंह पागरिया आदि कई सज्जनों का सहयोग भी सेवा कार्यों में उपलब्ध होता रहा।

ग्रामीण लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार करने तथा उनकी सहायता हेतु बोगोद कस्बे में उन्होंने सहकारी समिति की स्थापना की। यह सहकारी समिति उस सम्पूर्ण क्षेत्र की पहली थी।

राजस्थान सेवक संघ की स्थापना शाहपुरा के स्व. श्री चन्दन सिंह भड़कतिया द्वारा होकर राजस्थान प्रदेश मुख्यत: तत्कालीन मेवाड़ राज्य में रचनात्मक काम करने वाले संस्था संचालकों – प्रमुखों का एक संगठन बनाया गया। स्व. ठक्कर बापा इसके प्रथम अध्यक्ष तथा भाईसाहब सिद्ध राज ढड्ढा उसके मन्त्री बनाए गए। संघ के प्राथमिक सदस्यों में सेठसाहब श्री मनोहर सिंह महता प्रमुख सदस्यों में से एक थे। प्रारम्भिक वर्षों में संघ की वार्षिक सभा जब बोगोद में हुई तब वहाँ के कार्य से ठक्कर बापा तथा अन्य सभी लोग अत्यन्त प्रभावित तथा प्रसन्न हुए। संघ की सभाओं तथा अन्य सभा सम्मेलनों में जब सेठ साहब पहुंचते तो अपने विनोदी स्वभाव से सबको आनन्दित कर देते और उनके पहुंचने पर सारे वातावरण में एक अनूठा उल्लास बिखर जाता। भाषण देने की कला उनकी बड़ी अद्भुत थी। सबको मंत्रमुग्ध कर देते थे। पत्र लिखने में भी वे अपने निकटवर्ती साथियों का उनके हित की बात लिखने में संकोच नहीं करते और खरी सच्ची वाजिब चेतावनी दे देते थे। सन् 1958-59 में जब राजस्थान में विनोबा की पदयात्रा का समय था और मैं जीप से अकस्मात दुर्घटना ग्रस्त हो अस्पताल में था तो उन्होंने संवेदना सूचक अन्यान्य बातों के साथ एक वाक्य यह लिख दिया कि " अब तो इस जीप के आग ही लगा देना, संस्था में जीप रखना ही मत"। उनके इस अधिकार-पूर्ण एक खरे वाक्य में कितनी आत्मीयता झलकती है।

सेठ साहब ने राजनीति में प्रवेश करने से पूर्व और बाद में भी प्राय: सभी रचनात्मक कार्यों, अभियानों में अपनी पूरी शक्ति और समय देकर भाग लिया। चाहे भूदान यज्ञ सम्बन्धी भूमिदान प्राप्ति का काम हो चाहे शराब बन्दी के प्रचार प्रसार अभियान का कार्यक्रम सबसे उनकी अगुवाई रही। सेठ साहब का देश के सभी सर्वोदय कार्यकर्ताओं से अत्यन्त घनिष्ठ व आत्मीय संबंध था। जाजूजी जैसे गम्भीर व्यक्ति भी सेठ साहब के विनोदी स्वभाव के आगे नतमस्तक थे। एक बार सेठ साहब ने जय प्रकाश जी की अध्यक्षता में होने वाली संघ की वार्षिक सभा में भोपा बनकर भैरूंजी के घोड़ले के रूप में भाँव जगाकर जय प्रकाश जी को अपने दरबार में बुलाकर फटकार बताने के स्वर में कहा– ओ! जयप्रकाश! तुम अपने नेता पद के जोश और व्यक्तित्व के गुरुर में मत रह जाना, तुम्हारी सारी पद प्रतिष्ठा के मूल में तुम्हारी पत्नी प्रभावती की तपस्या और साधना का बल है।

मेरे सारे परिवार से उनका अत्यन्त आत्मीय सम्बध था । राजनैतिक विचारों का मतभेद उनकी आत्मीयता में कभी आडे नहीं आता था । सेठ साहब में मिलन सारिता और अपनत्व ग्रहण कर लेने की जो अद्‌भुत वृति थी वह किंचित ही अन्यन्त दृष्टिगोचर हो पाती है । सेठ साहब सेठ साहब ही थे । आत्मीयता की प्रतिमूर्ति को मेरा शत् शत् प्रणाम । ■

> 'अगर मुझे एक घन्टे के लिये सारे भारत का डिक्टेटर बना दिया जाय तो पहला काम यह करुगा कि तमाम शराब खानों को मुआवजा दिये बिना ही बद करवा दूगा।'
>
> महात्मा गाधी (यग इन्डिया) 25 6.3

सच्चे लोक सेवक

श्री बशीधर श्री वैष्णव

धाकडखेडी

श्री मनोहर सिंह महता प्रिय समाज सेवी , रचनात्मक कार्यकर्ता के साथ –साथ राजनीतिज्ञ भी थे । जीवन के उतरार्ध में दल गत राजनीति से अलग हो गए थे , किन्तु राजनीति उनकी विचार धारा का अभिन्न अग बनी रही ।

सन् 1928 के आस पास सरकारी नौकरी का परित्याग करके बीगोद ग्राम में सेवा सघ बीगोद के नाम से रचनात्मक सस्था की स्थापना की । कार्य क्षेत्र वर्तमान माण्डलगढ उपखण्ड को बनाया । उस समय देश में ब्रिटिश हुकूमत थी । यह क्षेत्र मेवाड में आने के कारण उदयपुर रियासत के अन्तर्गत आता था । रियासतों में छोटी बड़ी जागीरें थी , जिनके शासक किसानो से लगान नहीं लेकर ऊपज का तीसरा हिस्सा लेते थे और साथ ही कई तरह की बेगार भी ली जाती थी ।

बिजौलियाँ में (जो पुरा जागीरी क्षैत्त था) स्वर्गीय विजय सिंह पथिक के नेतृत्व में बैठ बेगारों तथा जागीरी जुल्मो के खिलाफ आन्दोलन चल रहा था । श्री महता ने इस क्षेत्र में बैठ बेगारों व अन्य शोषणों के खिलाफ जिहाद छेडा । लोगो में अन्याय के खिलाफ लडने की हिम्मत पैदा की और पूरे क्षेत्र में जहाँ जहाँ भी जागीर के गाव थे , प्रौढ शालाओ के माध्यम से नये –नये कार्यकर्ता तैयार करके बिठाये , जिन्होने पूरे क्षेत्र में चेतना पैदा की । जनता ने सघर्ष करके उपज का तीसरा हिस्सा देना बन्द कर दिया । बैठ बेगारों तथा लागतों का विरोध किया । इसका परिणाम जागीरी क्षैत्र में सेटलमेन्ट होकर लगान कायम हो गया । यह सब सेठ साहब श्री महता द्वारा पैदा की गई जागृति का पहला परिणाम था ।

क्षेत्र में जागीरदार काफी नाराज थे। लोगो को भय था कि कहीं महता साहब के जीवन पर प्रहार न हो जाए। महता साहब गाधी मार्ग के अनुयायी थे, इस कारण अत्याचारों और जुल्मों का विरोध करते थे, व्यक्ति का नहीं । परिणाम भी वैसा ही रहा और धीरे–धीरे सब छोटे–बडे जागीरदार सेठ साहब के अत्यन्त घनिष्ठ मित्र बनते गए ।

शिक्षा की दृष्टि से माडलगढ क्षैत्र में घोर अधकार था । यहाँ तीन प्राथमिक विद्यालय थे । सेवा सघ बीगोद के माध्यम से श्री महता ने 100 के लगभग शालाओ व प्रौढशालाओ का सचालन किया । कार्यकर्ताओ के निर्वाह व्यय का अधिकाश हिस्सा भी क्षैत्र से ही जुटाया जाता था । यह सब व्यापक जन–सम्पर्क व जन आधार का प्रतीक था । इस तरह सेठ साहब ने क्षैत्र में सैंकडो जागरुक कार्यकर्ता साथियों की फौज खडी की ।

समाज सुधार, अधविश्वास और कुरीतियों के निवारण की दिशा में उन्होंने जबरदस्त अभियान चलाया । वे अपने प्रचार के लिए बैठके तथा सभा सम्मेलन का इन्तजार नहीं करते थे । खाते, पीते, उठते, बैठते बसों में सफर करते समय प्रचार किया करते थे और यह प्रचार ठोस साबित होता था । उन्होने अपनी बात कहने के लिए कभी समय तथा अनुकूलता की प्रतीक्षा नही कि यह उनकी खासियत थी ।

इस क्षैत्र में घोर अज्ञानता व अधकार था । चिकित्सा का कोई साधन नही था, बीमार होने पर लोग देव भोपा के यहाँ जाया करते थे । एक बार सैठ साहब अपने साथियो के साथ कैम्प करने जा रहे थे । रास्ते में एक देवता का स्थान था जहाँ सैंकडो लोग एक बीमार को लेकर इकट्ठे हो रहे थे। सारी स्थिति समझ लेने पर महता साहब ने खुद ने देवता का भाव अपने मे पैदा किया और ललकार कर देवता के पास जा बैठे। ओर सब लोगो को अपने पास बुलाया । उन्होने खुद ने मरीज की नब्ज देखकर कहा कि इसको कोई भूत प्रेत फेट चोट नही हैं । यह तो शारीरिक रूप से बीमार है और अपने साथ आए आगुन्तको की तरफ इशारा करते हुए बताया की इनमें से एक वैद्य हैं उनको दिखाकर दवा ले लो ठीक हो जायगा । हमारे साथी वैद्यजी ने दवा दी और मरीज ठीक होने लगा । इस प्रकार अनूठे तरीके से अधविश्वास तोडते थे । उन्होंने जीवन भर सघर्ष किया । उसका प्रभाव यह हुआ कि लोगो को इन कुरीतियो का अहसास हुआ ।

विनोबा के भूदान,ग्रामदान आन्दोलन ने वैचारिक दृष्टि से देश मे एक जबरदस्त हलचल पैदा की । भूदान मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक समाज रचना के लिए उन्होने कार्यकर्ताओ से जीवन दान मागा। बौद्व गया सर्वोदय सम्मेलन में जय प्रकाश बाबू के साथ देश के हजारों लोगो ने दलगत राजनीति से परे रहकर शोषण विहिन समाज रचना के लिए जीवन दान दिया । इसमें महता साहब और हम लोग जय बाबू के साथी थे । धीरे धीरे चिन्तन के आगे बढने पर जयप्रकाश बाबू ने स्पष्ट किया की हम दलगत राजनीति से अलग हुए हैं, राजनीति से नही क्योकि लोकतन्त्र में हर नागरिक का राजनैतिक उत्तरदायित्व होता है।

सन् 1966-67 में महता साहब के सानिध्य में क्षेत्र के रचनात्मक कार्यकर्ताओ ने क्षैत्र के सामने एक विचार रखा कि चुनावों में राजनैतिक दलों द्वारा खडे किए गए उम्मीदवारों में से किसी एक को वोट देने के अलावा जनता के पास कोई विकल्प नहीं बचता यह कैसी व्यवस्था है ? उम्मीदवार को खडा करने में जनता की कोई भागीदारी नहीं होती । इस विचार को बुनियादी तौर पर लोगों ने स्वीकार किया और क्षैत्त के नागरिकों की बैठके हुई और अन्तिम बैठक में, जिसमें लगभग पाँच दस हजार लोग थे, सर्वसम्मति से श्री मनोहर सिंह जी महता को लोक उम्मीदवार बनाया । महता साहब के आखो में अश्रुधारा बहने लगी । रुधे हुए कठ से कहा कि मैं एक अदना सेवक हूं । मेरे पास चुनाव लडने के लिए पैसा कहाँ है ? लोगों ने एक स्वर में कहा कि आप जनता के उम्मीदवार हैं सब व्यवस्था जनता ही करेंगी । आप को तो मात्र नोमिनेशन पत्र भरना है । वास्तव में मतदाताओ ने ही चुनाव लडा । मतदाताओ ने वोट और नोट दोनों दिए । सारे क्षैत्र में चेतना का सचार हो गया । भारी मतों यानि लगभग तेरह हजार वोटों से आप विजयी रहे । यह थी उनकी लोक प्रियता । आज देश में लोक उम्मीदवार खडा करने की विचार चल रहा है लेकिन महता साहब ने इस विचार को आज से 25 वर्ष पूर्व ही साकार करके दिखा दिया था क्योंकि वे सच्चे लोक सेवक थे ।

जीवन के उतरार्ध में उनके जीवन का मिशन मुख्य रुप से शराबबन्दी बन गया था । हजारों लोगों को शराब नहीं पीने की प्रतिज्ञाएँ दिलवाई । उनका शराब छुडवाया । जब वे विधानसभा सदस्य थे वे विधानसभा में शराबबन्दी के लिए खूब बोले । सत्याग्रहों में भाग लिया उनका सचालन किया ।

पूरा माडलगढ क्षैत्र उनका कार्यक्षैत्र था । इस क्षैत्र में धाकडखेडी प्रमुख गाव है। इस गाव के विकास में, सामाजिक सुधार में आपकी प्रमुख भूमिका रही । इस गाव पर आज भी उनके विचारों की छाप है । गाव में उन्हें लोग गुरु एव पिता तुल्य मानते रहे हैं। और उनका भी हर घर से परिवार का नाता बना रहा ।

विनम्रता, सहदयता और मृदुता उनके स्वाभाविक गुण थे । वे अपने ढग के वक्ता थे । जनसमुदाय को तुरन्त अपनी ओर आकर्षित कर लेना उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी । सादा जीवन उच्च विचार उनके जीवन के उसूल थे । जीवन भरअपने सिद्वान्तों पर डटे रहे । लोगों को प्रेरणा दी । कई कार्यकर्ताओ को तैयार किया जो आज भी उनके विचारों के अनुसार त्याग, तपस्या और सच्चरित्रता का जीवन जीते हुए समाज व गाव में काम कर रहे हैं । वे सच्चे लोक सेवक थे। उनका जीवन सार्थक जीवन था । ■

गरीबों के मसीहा

श्री मिस्त्री नसीरुद्दीन
काछोला

कोई बिरला ही व्यक्ति होगा जो मनोहर सिंह महता के नाम से परिचित न हो । सेठ कहें या सन्त आजन्म गरीबो, दलितो के हित में कार्य किया । जागीरदारों के जुल्म से लोगो को बचाया । सेठ साहब उन दिनों अपने भाषणों में यह कहते कि राजाओ और नवाबो का राज समाप्त होगा । और जनता का जनता पर राज होगा, तब लोग आश्यर्च करते थे । सेठसाहब का हर वाक्य सही साबित हुआ और देश आजाद हुआ ।

सेठ साहब गाधी युग की एक अनूठी निधि थे । वे गरीबो के सच्चे मसीहा थे । उन्होने सेवा सघ बीगोद व सहकारी समिति की स्थापना करके सम्पूर्ण क्षैत्र में रचनात्मक कार्यो का जाल बिछा दिया । कुरीतियों के खिलाफ जेहाद छेड दिया । लोगो की आर्थिक स्थिति को ठीक करने का बीडा उठाया । ग्रामीणों की भलाई का कोई काम ऐसा नही था जो सेठ साहब ने न किया हो । हर ग्रामवासी से आपका आत्मीय सम्बन्ध था । यही कारण है कि सन् 67 व 77 का चुनाव उन्होंने नही जनता ने लडा और वे विजयी हुये।

जैतपुरा व अन्य बाध बधवाकर अत्यन्त पिछडे क्षैत्र में खुशहाली का दौर आपके प्रयत्नो से ही सम्भव हुआ । आप में जबरदस्त सकल्प शक्ति थी । जो काम हाथ में लेते थे उसे पूरा करके ही छोडते थे।

सन् 1967 में विधायक चुन जाने के बाद आपको सुखाडिया जी ने अपनी तरफ मिलाना चाहा और पद का भी लालच दिया जिसे सिद्वान्तों के धनी सेठ साहब ने एक झटके से ठुकरा दिया ।

सेठ साहब शराबबन्दी के प्रबल समर्थक थे । इस क्षैत्र में सत्याग्रह चलाया । पद यात्राए की । लोगों को समझाया ओर उनकी शराब छुडवाई । लोगों के अधविश्वासों को तोडने का कार्य भी किया ।

काछेला में जन सहयोग से जो स्कूल भवन सेठ साहब ने खड़े किए वे उनकी स्थाई यादगार हैं।

वे सच्चे मसीहा थे। निस्वार्थी थे। वे दूसरों के लिए ही सदैव जिए। ऐसे प्राणी बिरले ही होते हैं। ■

"मैं अपने बच्चों को आग या गहरे पानी में कूदने से रोकने के लिये बल प्रयोग करने में पसो पेश नहीं करता। शराब की ओर लपकना धधकती हुई भट्टी या बढती हुई नदी की ओर लपकने से बहुत ज्यादा खतरनाक है। भट्टी या नदी से तो केवल शरीर का नाश होता है मगर शराब शरीर और आत्मा दोनो का नाश कर देती है।"

बापू (यग इन्डिया 8-8-29)

धुन के धनी

श्री हफीज मोहम्मद
पूर्व जिला प्रमुख भीलवाड़ा

श्री महता धुन के धनी थे। उन्होंने सेवा संघ व सहकारी समिति के माध्यम से किसानों की पैदावार का उचित मूल्य दिलाने व गाव गाव में शिक्षा फैलाने का काम किया। जिले में सर्वोदय के काम को जन जन तक ले जाने और भूदान के माध्यम से गरीब भूमिहीन काश्तकारों को भूमि वितरित करने, कुरीति निवारण का कार्य किए। आज हर हर गरीब आदमी श्री महता को दुआ दे रहा है।

समाज में शराब, बाल विवाह, दहेज, मृत्युभोज जैसी कुरीतियों के खिलाफ अलख जगाया। आज जिले में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो सेठ साहब के कार्यों को आगे बढाए।

दो बार वे विधान सभा के सदस्य बने और सरकार को सच बात कहने में कभी नहीं चुके। 1977 में उन्होंने सरकार को मजबूर कर नशाबन्दी कराने में जो सफलता प्राप्त की वह श्लाघनीय है।

मैं सेठ साहब की आत्मा के प्रति सादर नमन करते हुए जिले में समाज सेवी कार्यकर्ताओ से अपील करता हूँ, कि सेठ साहब के अधूरे कार्यों को पूरा करने का बीडा उठाएँ। ■

जनता के सच्चे सेवक

श्री समरथ सिंह महता
सामाजिक कार्यकर्ता
बीगोद

श्री मनोहर सिंह महता के जीवन के सब कार्यों को लिखना आसान काम नहीं है। मुझे 45 वर्ष तक उनके साथ रहने का अवसर मिला। सन् 32 में जब श्री महता बीगोद में आबकारी अधिकारी के पद पर आए तब मैं एक छोटा बच्चा था और मुझे अच्छी तरह याद है कि उस समय श्री महता , बच्चो में सस्कार निर्माण के लिए बच्चो में आजादी की लौ जगाते और सुसस्कार पैदा करते थे। खेल क्लब की स्थापना करके नोजवानो को देश के लिए सगठित किया। रात्रि में प्रौढशाला स्वय चलाकर प्रौढो व वृद्धो में, स्त्री व पुरुषो में साक्षरता के साथ साथ कथा एव कहानियों द्वारा आजादी की तडफन पैदा करते थे। और सामाजिक बदलाव के लिए लोगो को तैयार करते थे। बीगोद व खटवाडा में प्रारम्भ करके कार्य को सारे क्षैत्र में फैला दिया । वे गरीब जनता के दुख दूर करने वाले मसीहा बन गए । सारी जनता अपनी समस्याएँ लेकर उनके पास आने लगी ।

श्री महता ने सेवा सघ नामक सस्था कायम की व सब साथियो के साथ मिलकर विविध प्रवृतियो का सचालन किया । जीवन का कोई ऐसा क्षैत्र नही था जिसमे श्री महता ने काम न किया हो ।

श्री महता के जीवन का एक भी क्षण ऐसा नही था जो बिना सेवा के गुजरा हो । उन्होंनें जितन काम प्रारम्भ किए वे समाज को आग ल जाने वाले थे । आने वाली पीढी को उनके जीवन से प्रेरणा लेकर उन कार्यों को निरन्तर आगे बढना चाहिए । ■

मेरे प्रेरक

कुवर देवेन्द्र सिंह
विधायक

मैं सेन्ट एन्सलम अजमेर का छात्र था। मैं एक अच्छा खिलाडी था। भीलवाडे जिले में जिला स्तरीय टूर्नामेन्ट में उन्होंने मुझे अचानक जनरल रैफरी बनाकर जो प्यार व वात्सल्य दिया वह अन्त तक बनाए रखा।

श्री महता एक व्यक्ति नहीं स्वय एक सस्था थे। कई बडे बडे काम वे खडे खडे सफलता पूर्वक करवा देते थे। वे निष्ठावान रचनात्मक लोक सेवक थे। गावों की विभिन्न समस्याओ से वे जीवन भर जुडे रहे। वे गाव में ही रहते थे। एक साधारण सा घोडा रख रखा था। उस पर बैठकर गॉव गॉव घूमा करते थ। बीगोद उनकी कर्मस्थली थी। मृत्यु भोज बालविवाह शराब, निरक्षरता बन्धुआ मजदुरी छूआछूत पर्दाप्रथा, तिलक दहेज आदि समस्याओ से जीवन पर पूर्ण निष्ठा के साथ जूझते रहे। रात्रि शालाएं चलाई। कई विद्यालय खोले। वे स्वय लोगों को पढाते थे। सहकारी समिति की स्थापना करके किसानों की खुशहाली के लिए काम किया। दूर दराज गावों मे जहा कहीं भी मृत्यु भोज हो या कोई और बात हो वे पहुच ही जाते थे और लोगों को इन बुराइयों से दूर रहने का सकल्प कराते थे। दारू पीने वालो का मन बदलने का प्रयास करत थे। उनको देखकर मदर टेरेसा का स्मरण हो आता था।

लोगो को प्रभावित करने तथा उन्हें अपना बनाने के लिए वे एक अनोखे जादूगर थे। कोई भी व्यक्ति चाहे राजनेता हो अधिकारी हो विद्वान हो कार्यकर्ता हो, एक बार उनकी छडी के नीचे निकल गया वह जीवन भर उनका हो जाया करता था। इन रिश्तों में गहरी आत्मीयता होती थी।

श्री महता बहुत ही विनोदी थे। मैंने उन्हें कभी उदास नहीं देखा। जीवन के अन्तिम क्षण तक वे प्रसन्न और हँसते हुए रहे। वे भयकर बीमारी को भी उसी मस्ती के साथ झेल रहे थे।

श्री महता ने भीलवाडा के पिछडे क्षेत्र में लोक जागरण का कार्य किया। लोगों में काम की लगन पैदा की। उस युग में निष्काम भावना और ईमानदारी से कार्य

करके लोक मानस को जिस तरह बदला उसका मुझ पर अत्यन्त प्रभाव पडा। उनके सम्पर्क में आया। खादी पहनने लगा। मैं अपने परिवार की समस्त सामन्ती कट्टरताओ व परम्पराओ को तोड कर श्री महता की प्रेरणा से समाज सेवा की ओर मुड गया। नि सन्देह यह समाज सेवा का बीज मेरे जीवन के लिए वरदान साबित हुआ। मेरे प्रेरक श्री महता थे।

हाजिर जवाबी

श्री तेज मल बापना
भूतपूर्व विधायक एव एडवोकेट

बचपन एव विद्यार्थी जीवन से ही मेरा उन से घनिष्ट सम्पर्क रहा । वे ग्राम्य जीवन के अत्यन्त निकट थे। और ग्रामीणों की सेवा को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था । इसीलिए बीगोद ग्राम में उनहोंने सेवा सघ की स्थापना की जिसके माध्यम से उन्होनें पूरे माण्डलगढ,बिजोलियाँ क्षैत्र की जनता की सेवा की ।

श्री महता बडे हँसमुख ■ व्यवहार कुशल थे । किसी भी परिस्थिति मे वो मिलते तो वातावरण को बडा मधुर बना देते थे । गुस्सा तो उनमें कभी देखा ही नही । साधारण प्रसग में भी उनकी वाकपटुता हँसी का फव्वारा छोड देती थी । उनका ग्राम्य जनता से सीधा एव निकट का सम्बन्ध हो गया था। इसी कारण वो माडलगढ क्षैत्र से दो बार जन प्रतिनिधि के रुप में विधान सभा सदस्य चुने गए ।

उनके जीवन के दो मुख्य उद्देश्य रहे हैं । प्रथम तो शराबबन्दी व दूसरा दहेज व तिलक का विरोध । इन दोनो बुराइयो के प्रति वो जनता एव समाज को बराबर लताड देते रहते थे। और उनके मन म बडी पीडा होती थी जब गरीब किसान या मजदूर शराब में अपनी गाढी कमाई का पैसा बहाते व अपनी शरीरिक व पारिवारिक स्थिति को खराब करते देखते थे । ऐसी ही पीडा उनको समाज में बढती हुई तिलक दहेज प्रथा की बिमारी से होती थी । और उसे जड से मिटाने की उनके अन्तर्मन में लालसा जीवन के आखिरी पडाव तक भी उतनी ही तीव्र थी। ।

वे स्वतन्त्रता सेनानी थे । सामन्ती जुल्मों के प्रति उन्होनें निरन्तर सघर्ष किया । प्रारम्भ में मेवाड प्रजामण्डल व फिर राष्ट्रीय काग्रेस के वे सक्रिय व कर्मठ कार्यकर्ता रहे थे । वे हाजिर जवाबी थे । राजनैतिक जीवन का एक बडा मधुर प्रसग मुझे बार-2 याद आता है ।

सन् 1950-51 का समय था। जब वृहत राजस्थान बन गया था। और राजस्थान काग्रेस के दो गुट हो गए थे। एक उस समय राजस्थान के मुख्यमत्री श्री हीरा लाल शास्त्री का गुट था दूसरा श्री जयनारायण व्यास व श्री माणिक्य लाल वर्मा का था । श्री महता , श्री हीरा लाल शास्त्री के गुट मे थे और मैं वर्मा,व्यास गुट मे था ।

इस समय प्रदेश कांग्रेस के प्रतिनिधियों के चुनाव हो रहे थे। जिला कांग्रेस के मन्त्री होने से में भी माण्डलगढ क्षेत्र में चुनाव प्रचारार्थ गया था । मैनें काफी भ्रमण व प्रयास करके उनके एक साथी को अपने खेमे में ले आया। और माण्डलगढ में ही मेरे ही परिजनों के यहां भोजन करने अपने साथ ले गया । मुझे डर भी लग रहा था कि कही मनोहर सिंह जी नही आ जावे । उन दिनों गावों में उच्च नीच का बडा भेद भाव चलता था और मैं भी वह भूल कर बैठा कि उस साथी को दूर अलग खाने के लए बैठा दिया । मैं अपन साथ लेकर नहीं बैठा । महता साहब भी माण्डलगढ आ गए। और उनको यह भनक लग गई कि उनके साथी को मैं अपने खेमे में फोड लाया हूँ । वे तुरन्त मेरे काका श्री नाथूलाल जी बापना के मकान पर आ धमके और सारी स्थिति को देखकर वहो से बोलना शुरु किया।

"वाह बापना साहब आपके तो बैठने को गादी लगी है । बाजोट पर कलई की थाली है। ओर पानी का लोटा भी हिंगलोट पर रखा हुआ है। ओर आपके उस नये साथी को क्या गोला यानि गुलाम समझा है जिसे दूर टाटपट्टी पर बिठा रखा है। पीतल की थाली है। और दूर से ही भोजन परोसा जा रहा है । अभी से आपका उस साथी के साथ एसा भदभाव पूर्ण व्यवहार। बड शर्म की बात हे । जिसे आप बडी कोशिश व चतुराई से फोड लाये हो यदि उसमें आत्म सम्मान होता तो वो थाली फेंक कर चला जाता " ।

इतना सुनते ही मैं तो पसीना पसीना हो गया । मुझे मेरी गल्ती का अहसासहो गया था । पर उस साथी पर यह असर हुआ कि उसने खाना खाया न खाया और तुरन्त मनोहर सिंह जी के साथ चला गया। यह घटना मेरे व उनके जीवन की एक मधुर यादगार बन गई थी। और इस घटना का उल्लेख वे यदा कदा करते थे । उनकी हाजिर जवाबी का कोई मुकाबला नही था।

वे बिना पैसे क सेठ थ और सारा क्षेत्र उन्हें फकीर सेठ के रुप में जानता पहचानता था । उनकी क्षति अपूरणीय है। ■

अनूठा स्नेही-निश्छल व्यक्ति

श्री भवर सिंह चौधरी
जिला-शिक्षाधिकारी

सेठ साहब मेरी बुआ (श्रीमति विमला देवी) को शादी से पहले देखने के लिए मेरे गाँव नन्दराय पधारे। में उस समय 6-7 वर्ष का था। मुझे उसकी स्मृति है। बेलगाडी मे खटवाडा से पधारे थे। खटवाडा उस समय उनका कार्य मुख्यालय था । पहली पत्नी का स्वर्गवास हो जाने से दूसरे विवाह के लिए लडकी देखने आए । उनके साथ सरला बहिन (गाधी की शिष्या मिस हाईलम अग्रेज महिला) भी थी । वह भी बेलगाडी मे ही आई थी । आज से 50 वर्ष पहले इस तरह लडकी देखने आना और साथ मे अग्रज महिला का होना अनोखी बात थी । चर्चा हुई गाव म कि इनके तो पहले ही अग्रेज मेम है।

बुआ सेठ सा0 को पसन्द आई और सगाई होकर शादी हो गई।। शादी में गिनती के बाराती थे। सुनते रहे कि सेठ साहब की पहली शादी जो मगरोप हुई उसमें दोनो ओर से बहुत खर्चा किया गया ओर दोनो परिवार आर्थिक सकट में आ गऐ। उस समय सेठ सा0 के विचार पूरी तरह पल्लवित नही हुये थे । लेकिन इस दूसरी शादी तक उनके विचारो म पूर्ण परिपक्वता आ गई थी ओर शादी विवाह मे होने वाले फिजूल खर्चो के घोर विरोधी हो गए थे । उस समय से मैं उनके सम्पर्क मे आया में आठ वर्ष का था और मेरे पिताजी का स्वर्गवास हो गया। में बुआ के यहॉ खटवाडा और बीगोद आता जाता रहता था। में वहॉ श्री महता की बाते सुनता। विचार सुनता। काम को देखता। आन जाने वाला को देखता। उसका प्रभाव मुझ पर पडा और तभी से समाज के लिए कुछ करन की भावना पैदा हुई ।

उनके साथ बिताया हर क्षण एक सस्मरण है। उसको अकित कर पाना सम्भव नही है। 50 वर्षो का जो सानिध्य मिला वह अविस्मरणीय है।

श्री महता प्रत्युत्पन्न मति थे। हाजिर जवावी थे। विनोदी थे। गुणग्राही थे। स्नेही थे। निडर एव निर्भीक थे । चिन्तक एव विचारक थे । विद्वान थे । कर्मशील वसेवाभावी थे । सेवा उनका जीवन धर्म था।। समाज सुधार के प्रबल पोषक थे। जीवन का कोई आयाम ऐसा नही जिसमे उनकी गति नही रही हो। उन्होने जो भी उनक सम्पर्क

में आया उसे प्रभावित किया । उनका व्यक्तित्व ऐसा था कि हर व्यक्ति जो उनके सम्पर्क में आता यह समझता कि सेठ सा0 उन्ही के निकट हैं। व सदैव प्रेम व स्नेह बॉटते रहे । छोटे से लेकर बडे को स्नेह बॉटते रहे। बालको के साथ खेलना, उनसे विनोद करना और बालको में बालक बन जाना उनकी सहजता थी ।

श्री महता विद्वानो मे प्रखर रहते थे । ग्रामीणो मे ठेठ ग्रामीण । उन्ही की मेवाडी बोली में बोलते तो लोग भाव विभोर हो जाते थे। उनका सारे दिन भर का समय जन सम्पर्क एव उसमें समाज सुधार की शिक्षा के लिए व्यतीत होता था। वे लोक शिक्षण के एक प्रबल युक्ति पूर्ण व्यक्ति थे । उन्होने महिलाओ, युवको, ग्रामीणो, किसानो एव सामाजिक कार्यकर्ताओ को अपने काम व्यवहार एव विचारो स प्रभावित किया।

श्री महता रचना धर्मी थे । रचनात्मक कामो की एक अजस्त्र श्रृखला उन्होनें अपन कर्म क्षैत्र मे पैदा की ओर वह आज भी अपना प्रभाव बनाये हुए है । उनकी पैदल यात्राओ से बने सम्पर्क एव काम को उस पीढी के लोग आज भी गावो में याद करते हैं।

श्री महता ठठ ग्रामीण जीवन जीते थे । गाधी विचार के वयावहारिक व्यक्ति थे । गाधी के विचारो को ही उन्होनें क्षैत्र में फैलाया । गाधी के रचनात्मक कामो को करना ही उनके जीवन का मिशन था । शराबबन्दी तो उनके जीवन का पर्याय बन गया । अहर्निश इसी के लिय जीये और काम किया । क्षैत्र मे उन्हे गाधीजी के इतना समीप मानते थे कि जब 1948 मे गाधी जी का स्वर्गवास हुआ तो ग्रामीण लोग उनको सात्वना देने आऐ। वे लोग मेवाडी मे कहते "गाधी जी मर गये सेठ साहब न बतलाया वा"। गाधी जी मर गए हें सेठ साहब के यहाँ बेठ आएँ। वस्तुत सेठ साहब को अपन यहाँ तीन दिन तक बैठक लगानी पडी। आज भी मुझे एसा लगता हे कि सेठ साहब यही कही है। उनका मेरे से अपार स्नेह था । मैं उनके साथ चल रहा हूँ । वे मरे नही हें । ऐसे व्यक्ति मर नही सकते । वे मरकर भी जीवित हें । मुझे पुकार रहे हैं। "भवर जी इधर आवो सुनो यह देखो यह करो कैसे हो ? और क्या हाल चाल है?' ■

रचनात्मक कार्यों का पहला पाठ पढ़ाया

श्री भवर लाल जोशी

रचनात्मक कार्यकर्ता एव विधायक माडलगढ

सेठ साहब श्री मनोहर सिंह महता का व्यक्तित्व ही ऐसा था कि मेरे जैसे सैकडों कार्यकर्ताओ को रचनात्मक कार्यों की तरफ मोड दिया । उनके व्यक्तित्व व कृतित्व का प्रकाशन समाज के हर वर्ग को ऊचा उठने व समाज के लिए कार्य करने की प्रेरणा देता रहेगा ।

सन् 1944 से मुझे सेठ साहब के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करने का अवसर मिला । सेठ साहब प्रारम्भ से ही दरिद्र नारायण की सेवा में रत थे । उस समय मेवाड की सामन्ती सरकार द्वारा भारी मात्रा में कमोटेशन टेक्स के रुप में किसानों से कर वसूल किया जाता था । इसके विरोध में सन् 44 में प्रथम बार माडलगढ में अम्बा की बावडी स्थान पर तहसील के समस्त किसानों को एकत्र कर सेठ साहब की अध्यक्षता में एक सघर्ष समिति का गठन किया गया और मुझे उसका मत्री बनाया गया । इस सघर्ष का परिणाम यह निकला, कि सामन्ती सरकार को किसानों को कई रियायतें देनी पडी ।

इसी प्रकार जागीरदारी क्षेत्र माडलगढ मे जमीन के सेटलमेन्ट का पूरा बीडा सेठ साहब ने उठाया और वर्षो से किसानो का जो शोषण हो रहा था उससे मुक्ति दिलाई । इस कार्य में मुझे सेठ साहब के साथ जुडकर जो कुछ सीखने को मिला आज वह सचित पूजी है । मैं सोचता हूँ सेठ साहब ने मुझे रचनात्मक कार्या का जो पाठ पढाया वह बाद में मेरे जीवन का मूल आधार बन गया ।

सेठ साहब के प्रयत्नों से सेवा सघ बोगोद की व सहकारी समिति की स्थापना हुई । सेठ साहब की अध्यक्षता में सेवा सघ ने गरीब व्यक्ति के हर पक्ष पर कार्य किया । उन्होंने कर्मठ साथियो को तैयार किया और आज अलग अलग सूत्री कार्यक्रम घोषित करके भी जो कार्य सरकार नहीं कर पा रही है व सब कार्य उस समय सेठ साहब के नेतृत्व व मार्गदर्शन मे सेवा सघ बोगोद ने कर दिखाए ।

जागीरदारो के आतक के खिलाफ एक जोरदार अभियान सेठ साहब ने चलाया। इसमे वैद्य नन्द कुमार जैसे साहसी कार्यकर्ता साथ थे। यह क्षेत्र शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्र में अधकार मय था। इन दोनो ही कार्यो की शुरुआत इस क्षैत्र में हुई। सेवा सघ के माध्यम से शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षैत्र में जो पहल उस समय की गई उसी का परिणाम है कि यह क्षैत्र इतना जागृत है।

शिक्षा के साथ ही सामाजिक व राजनैतिक चेतना जागृत करने का काम प्रजामण्डल के माध्यम से श्री महता के नेतृत्व मे यहॉ प्रारम्भ हुआ। सामाजिक कुरीतियो जैसे शराब दहेज, मृत्युभोज बालविवाह,आदि के विरुद्व बुलन्द आवाज चारो तरफ गॅूजन लगी।

माडलगढ क्षैत्र में सरका मवेशी का जोर था उसमें तत्कालीन राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री माणिक्य लाल जी वर्मा के सहयोग से सेठ साहब ने इस क्षेत्र में पुलिस केम्प की आयोजना से मवेशियो को बरामद करवा कर, किसानो को वापिस दिलवाया। इसी क्रम में विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि पुलिस ने जब गडबडी पैदा की तो उनके विरुद्व सख्त कार्यवाही कराई गई। मैं सेठ साहब के हर कार्य में साथ था। इस कारण उनके हर प्रयास की ईमानदारी से मैं अभिभूत रहा।

सन्त विनोबा भावे की प्रेरणा स जब भूदान आन्दोलन शुरु हुआ तो सेठ साहब ने सर्वाधिक भूदान का सकल्प पूरा किया इस सन्दर्भ में महीनो तक पैदल यात्राओ में मैं उनके साथ था। हजारो बीघा जमीन भूदान में प्राप्त करके भूमिहीन किसानो में वितरित करने का कार्य सम्पन्न किया। उन पैदल यात्राओ में जन जागरण का कार्य भी चलता रहा।

किसानो की आर्थिक स्थिति को उचा उठाने के लिए सेठ साहब ने बीगोद में किसान सहकारी समिति का गठन कर समिति के माध्यम से गॉव-गॉव में आवश्यक उपभोक्ता सामग्री जैसे सस्ता कपडा नकम चीनी, मिट्टी का तेल, लकडी आदि वितरित करने का कार्य करके गरीब लोगो को राहत पहुॅचाई। इसके बदले में किसानो से अनाज खरीदा जाता था जिससे व्यापारी उनका शोषण न कर सके। इस तरह किसानो को दोहरा लाभ हुआ। उन्हे उनकी पैदावार का उचित मूल्य मिला और आवश्यक सामग्री उन्हे रियायती दरो पर मिली। यह सूझ सेठ साहब की थी और आज मुझे लगता है कि कितना बडा काम कितनी सफलता से हो गया जो लम्बी चौडी मशीनरी के बावजूद हम आज नही कर पा रहे हैं।

सेठ साहब समर्पित लोक सेवक के रुप में आजीवन जनहित के कार्यों में लगे रहे । मेरे जैसे अनेको कार्यकर्ताओ को तैयार किया । हमे सेठ साहब के जीवन से प्रेरणा लेकर कार्य क्षेत्र मे कूदना चाहिए ओर कार्य करना चाहिए । उनके निधन से समाज को अपूरणीय क्षति हुई है किन्तु यदि हम उनेक पदचिन्हो पर चले तो यही उनेक प्रति सच्ची श्रद्वाजंलि होगी ।

जीवन यात्रा के संरक्षक

श्रीमती शिव कुमारी भार्गव
शराबबन्दी कार्यकर्ता किशनगढ

श्री मनोहर सिह महता मात्र सर्वोदयी नेता नहीं थे, वरन् दीन-दुखिया महिलाओ व हर गरीब व्यक्ति के प्रति अत्यन्त सम्वेदन शील थे। दूसरो के दुख को महसूस करने की उनमे अपार क्षमता थी।

शराब विरोधी होने के साथ-साथ वे 'दहेज टीका' लेन के भी कट्टर विरोधी थे। मैने उनमे महामानव के गुण देखे। राजनीति में रहने पर भी वे राजनैतिक कुचालो से दूर थे। जल मे कमल समान उनका व्यक्तित्व था।

सन् 1972 मे अजमेर मे रामगज की शराब डिस्टलरी पर शराबबन्दी आन्दोलन चलाया जा रहा था। उन्ही दिनों श्री गोकुल भाई भट्ट तथा श्री महता शराबबन्दी के लिए एक सभा मे किशनगढ आए हुए थे। वही श्री महता से मेरा परिचय हुआ। श्री हरीशचन्द्र स्वामी मुझे शराबबन्दी आन्दोलन मे अजमेर ले गए। वहाँ भाई साहब श्री मनोहर सिंह जी महता ने ऐसा उत्साहित किया कि दूसरे दिन ही मैंने डिस्टलरी पर गिरफ्तारी दी। उन दिनो आन्दोलन का नेतृत्व श्री महता कर रहे थे।

हाथी भाटा से हम सत्याग्रहियो का जुलूस रामगज डिस्टलरी तक पहुचना था। वहाँ पर सर्वधर्म प्रार्थना की जाती। उसके बाद श्री महता शराबबन्दी के लिए प्ररणादायी व जोशील भाषण देते थे। आस पास का जन समूह उनका भाषण सुनने को एकत्र हो जाता था। हर दिन का चुना हुआ सत्याग्रही डिस्टलरी के फाटक पर प्रवेश करने पर अपनी गिरफ्तारी देता था। श्री महता के प्रोत्साहन व प्ररणा से मैंने 13 बार गिरफ्तारी दी। पुलिस हमे अजमेर से दूर विरान स्थानो पर छोड आती थी जहाँ पर किसी वाहन का होना असम्भव था। वहाँ से हम सब पैदल शराबबन्दी के नारे लगाते व गीत गाते हुए पुन अपने घरो को लौटते थे।

महिलाओ की गिरफ्तारी के साथ भाई साहब श्री मनोहरसिह महता अवश्य गिरफ्तारी देते थे ताकि महिलाओ को पुलिस तग न कर सके तथा उनके मार्ग मे आने वाली बाधाओ के समय वे सरक्षण प्रदान कर सके। इस प्रकार शराबबन्दी के आन्दोलन में श्री गोकुल भाई भट्ट व श्री मनोहर सिंह महता के नाम स्वर्णाक्षरो मे

अग्रिम पंक्ति में अंकित है। राजस्थान में शराबबन्दी का कोई कार्यक्रम ऐसा नहीं हुआ जहाँ श्री महता उपस्थित न हों।

श्री महता किशनगढ में साल में 3-4 बार अवश्य आते थे। चाहे बालाजी का मेला हो, चाहे चिकित्सा शिविर हो, आर्यसमाज का सम्मेलन हो या जैन साधुओ का चातुर्मास। हर उत्सव में अपार जन समूह को ठैठ मेवाडी भाषा में सम्बोधित करते थे। उनकी वाणी में इतना सम्मोहन था कि सभा में बैठे-2 कई युवक युवतियाँ 'दहेज-टीका' के विरोध में प्रतिज्ञा ले लेते थे। सामाजिक कुरीतिया के खिलाफ इतना जबरदस्त विद्रोह का स्वर मैंने आज तक किसी और में नही देखा।

विनोद प्रिय इतने थे कि गम्भीर अथवा निराश पूर्ण वातावरण को भी हास्य विनोदपूर्ण बना देते थे। उनके चुटकुले, दोहे सारे वातावरण को रसमय बना देते थे।

जब कभी भी सर्वोदय सम्मेलन होते तो वे छोटे-छोटे कार्यकर्ताओ को स्टेज पर बोलने के लिए प्रेरित किया करते थे। अच्छा काम करने पर सदैव शाबाशी और पीठ थपथपाते थे। इससे हम जैसे साधारण कार्यकर्ताओ को काम करने की प्रेरणा मिलती थी। आज तो सब छोटे कार्यकर्ताओ को पीछे धकेल कर बाहर कर देते है अथवा उन्हें अपनी सिद्धि का साधन बनाते हैं। उन्होंने मेरी जैसी कार्यकर्ता का निर्माण अपने हाथो से किया और खूब काम करवाया। यह मेरा प्रत्यक्ष प्रमाणित अनुभव मुझे आज भी प्रेरणा देता है। उनका वरद हस्त सदैव मुझ पर रहा। चाहे घरेलू समस्या हो या सामाजिक आन्दोलन सम्बन्धी गुत्थी वे मेरे सशक्त प्रहरी बने रहे। मेरे पति की मृत्यु का समाचार सुनते ही वे मुझसे मिलने आए और मुझमें साहस का सचार किया।

अमीर गरीब छोटे बडे जाति पाति का भेद तो वे करना ही नहीं जानते थे। वे निर्भीक और स्पष्टवादी थे। वे गलत बात सह नहीं सकते थे और उसकी आलोचना कडे शब्दों मे कर डालते थे। वे बडे उदार हृदय व समभाव के स्वामी थे। जब वे आबकारी अधिकारी थे तो उनके कार्यालय में एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी था जो वृद्धावस्था में अपने पुत्र, राजकीय विद्यालय के प्रिंसिपल के साथ रहता था। जब भाई साहब श्री महता उनसे मिलने गए तो उसने उसे पैरों से उठाकर गले से लगा लिया। उसकी प्रशसा करते हुए कहा कि तुम धन्य हो कि तुमने अपने पुत्र को योग्य बनाया तब उस महानुभाव का उत्तर सुनने योग्य था। उसने कहा साहब मैं साधारण सा व्यक्ति था। आप की प्रेरणा तथा सहायता से अपने पुत्र को उच्च शिक्षा

दे सका। यदि आपने नेक सलाह, प्रोत्साहन व आर्थिक मदद न की होती तो मेरा पुत्र इस योग्यता को हासिल नहीं कर सकता था।

राजस्थान की समस्त रचनात्मक गाधीवादी सस्थाओ के वे प्राण थे। मेरा सार्वजनिक जीवन उनकी ही प्रेरणा से बना है। उनके सरक्षण मे बिताये क्षण मेरे लिए अमूल्य हैं। गुरु दक्षिणा में देने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है। मैं उनको शत् शत् प्रणाम करती हूं। ■

मेरे प्रेरणा स्त्रोत

डॉ रेणुका पामेचा

मुझे काका हर पल साथ दिखाई देत हैं। उनका स्मरण करते ही मेर कार्य करने की ताकत बढ जाती है। इरादे बुलन्द हो जाते हैं और ऐसा लगता है कि कोई कार्य असम्भव नही है। उनको मैंने जितना गहराई से देखा मेरा सामाजिक रुझान उतना ही बढता गया। मैंने यह स्पष्ट देखा कि वे स्वय के लिए नही दूसरो के लिए बने थे। उनको अपन आपको हर तरह का कष्ट देकर भी आराम मिलता था यदि उससे दूसरे का भला हो। यही कारण है कि कभी भौतिक सुख सुविधा की लालसा नही की। न कभी कोई आडम्बर किया। उन्होंने सस्थाए भी खडी की सिर्फ कार्य के माध्यम क रुप मे । सस्थाओ मे कल्पना की निष्ठा व चरित्र वान लोगो की। ऐसे लोगो को तैयार भी किया और सस्थाओ को स्वावलम्वी भी वनाया।

मुझे काका की एक वात हमेशा अच्छी लगी। उनके अन्दर जवरदस्त दया भावना थी। मेहनत करने वाले इन्सान से उन्हे सच्चा प्रेम था। मजदूर से मजदूरी तय कर लेने के बाद भी वो सदैव ज्यादा दिया करते थे। उन्हे हर क्षण लगता था इसे और ज्यादा मिलना चाहिए। इस वात पर अन्य लोगो से उनका मतभेद भी होता था पर उसकी उन्हे कतई परवाह नही थी। गाव में लोग कहते थे सेठ साहब ने मजदूरो की आदत खराब कर दी है।

वस्तुत वे भावना प्रधान इन्सान थे। हर व्यक्ति उन्हें अपने निकट पाता था और वे स्वय हर व्यक्ति के निकट थे। उन्होने गुण दर्शन करना सीखाया। छोटे से छोटा काम भी उनकी नजरो में अत्यन्त महत्वपूर्ण था। व हर उम्र के लोगा के साथ वैसे ही हो जाते थे। आडम्बर से दूर अपनत्व का भाव लिए हर घर मे उनका अन्दर तक प्रवेश था। यही कारण था कि महिलाओ को वे समाज वदलाव मे शामिल कर पाए।

उनके व्यक्तित्व गुणो म ईमानदारी निष्ठा व जुझारुपन का अहसास मैंने हर क्षण किया। उन्हें पत्र लिखने व पत्र का तत्काल जवाब देने की आदत थी। मुझे लिखे गए हर पत्र म जीवन का सदेश होता था। मेरे कार्यों की प्रशसा भी करते थे और क्या करना चाहिए यह भी वताते थे। उनके पत्रो मे सदैव यह सन्देश था कि अन्याय को कभी मत सहना। उसका डटकर मुकाबला करना। सच्चाई व निष्ठा का अपना आभूषण मानना,तुम सदैव आग बढती रहोगी। सादगी किस कहत हैं यह मैंने

काका में देखा। दो झोलों में उनकी सारी दुनिया थी। अपना सामान स्वय उठाना और अपना हर काम खुद करना उनके जीवन का अभिन्न अग था।

उनकी एक बात मुझे आज भी ताकत देती है वह है इस रुढिवादी समाज को ठोकर मारना सीखो। कौन क्या कहता है इसकी परवाह नही करोगी तभी बदलाव सम्भव होगा। लीक से हटकर कुछ करने की हिम्मत है तो सामाजिक कार्यों को हाथ मे लो। मुझे अच्छी तरह याद है कि सारे क्षेत्र में लीक से हटकर जो भी काम हुआ उसमें काका की प्रमुख मौजूदगी होती थी।

जिस किसी घर मे मौत हो जाए वहा काका अवश्य पहुचते थे और मृत्यु के साथ जुडी हुई हर कुरीति के खिलाफ पूरा वातावरण बनाकर ही वहा से हटते थे। जोर जोर से रोने के खिलाफ जबरदस्त माहौल बनाया। एक भी सामाजिक कुरीति एसी नही थी जिस पर काका ने प्रत्यक्ष व तीखा प्रहार नही किया हो।

गावो के रचनात्मक सृजनात्मक व निर्माण कार्यों में उनकी अथक आस्था थी। जिस किसी काम के बारे मे वे ठान लेते थे फिर उसे पूरा करके ही छोडते थे। वे बार बार मीरा को स्मरण करते थे। उनका मानना था जब तक मीरा जैसा बावलापन व समर्पण समाज के प्रति नही बनेगा कोई व्यक्ति काम नहीं कर सकता। उनके शब्दो में काम का भूत व्यक्ति पर सवार होना चाहिए।

समाज बदलाव की अभिनव कल्पना में उनका गाधीवादी सोच प्रबल था। गाधी व महावीर का अटूट साहित्य उन्होने पढा और उसको जीवन में उतारा। उनका सोचना था कि इन्सान को स्वय को टटोलना चाहिए और देखना चाहिए कि उसकी कथनी व करनी मे तो कही अन्तर नही है। काका अत्यन्त सवेदनशील प्राणी थे। बीमारी के दौरान भी उनमे जो जीवट था वह अद्वितीय था। अपने चारो और हर समय खुशनुमा वातावरण रखते थे और कोई भी व्यक्ति उन्हे उदास नजर आता था तो जब तक उसकी उदासी को दूर नही कर देते उन्हें चैन नही पडता था। उन्हें इतने दोहे चुटकले किस्से याद थे कि जैसे खजाना अपार हो। हम सबका परिचय उन्होने अपने हर परिचित से हर बार कराया वह मुझे आज महसूस होता है जब मेरा वह परिचय आज समाज मे काम करने की प्रेरणा दे रहा है।

उनके काम के तरीको से कोई नाराज भी हो तो भी उनके फर्क नही पडता था। व राजनीति मे आए तज स्वार्थ वाले लोग उनसे नाराज रहे क्योकि वे गलत काम नही करवा सकते थे। राजनीति में आने के बाद उन्होने एक बार कहा था कि एक वोट देकर व्यक्ति अपने प्रतिनिधि से यह अपेक्षा करता है कि वह उसकी हर सही गलत बात मे साथ दे यह ठीक नहीं है। राजनीति इतने स्पष्ट, ईमानदार निष्ठावान लोगो

को रास नही आ सकती इस कारण राजनीति में कब आए और कब गए इसका उनके जीवन प्रवाह पर कहीं कोई असर नही पडा। वे जैसे झोला लटकाए विधानसभा में गए वैसे ही वापिस आ गए।

मैंने जीवन को, किताबों से नही, काका के जीवन से सीखा है। मैंने उनके संघर्ष को देखा महसूस किया है। वे मेरे अटूट प्रेरणास्त्रोत हैं। मेरे कार्य की ताकत है। उनका सशरीर मेरे साथ न होना मुझे आज भी बहुत ज्यादा विचलित करता है। मैं जब कभी उदास होती हूँ मुझे काका की याद आती है, क्योंकि वे मुझे कभी भी उदास नही देख सकते थे। मेरी उदासी का कारण जब तक जान नही लेते और उसे दूर नहीं कर लेते थे तब तक उनको चैन नही पडता था। आज उनकी यादो के सहारे ही जिया जा सकता है। मेरे जैसे पिता सबको मिले बार बार मिले हर जन्म में मिले।

मेरा शत् शत् प्रणाम



শ্রদ্ধাঞ্জলি





श्रद्धा सुमन

17 अक्टूबर 1990 को श्री महता का देहान्त हो गया। हजारों की सख्या में लोग श्रद्धा सुमन अर्पित करने आए। फटे हाल किसान व हरिजन से लेकर बडे सेठ व प्रमुख राजनीतिज्ञ, प्रशासनिक अधिकारी श्रद्धा सुमन अर्पित करने वालों में थे। कई व्यक्तियों ने श्रद्धाजलियाँ भेजी, उन सबको लिखें तो लम्बी सूची बन जाएगी। उनमें से कतिपय श्रद्धाजलियों को इस पुस्तक का हिस्सा बनाया है। यह भावना के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत हैं।

बीमारी के दौरान

आचार्य श्री तुलसी का सन्देश

भाई चादमल जी दुगड के पत्र से ज्ञात हुआ कि मनोहर सिंह जी महता अस्वस्थ चल रहे हैं। महता जी स्वस्थ-चिन्तन, स्पष्टवक्ता तथा निर्भीक विचारों वाले व्यक्ति हैं। वे पक्के जैन, सच्चे अणुव्रती तथा कर्म से तेरापथी है। मैंने उन जैसे निश्छल और समर्पित व्यक्ति बहुत कम देखे हैं। मैं समझ नहीं सका, कि ऐसे व्यक्तियों को बीमारियाँ क्यों सताती है। खैर, यह किसी के वश की बात नहीं है। हमारा विश्वास है कि महता जी अस्वस्थता में भी दृढ मनोबल तथा पूरी सहनशीलता का परिचय देंगे और अपने अतीत के सचित कर्मों को तोड गिराऐगें। हमारे मन में उनके प्रति जो वात्सल्य एव सद्भावना है, उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। महता जी के आध्यात्मिक और नैतिक जीवन के प्रति बहुत बहुत शुभकामना।

पाली मारवाड़ — आचार्य तुलसी

28 जून, 1990

■

विधानसभा मे शोकाभिव्यक्ति

मुख्यमत्री श्री भैरोसिंह शेखावत

8 10 90

श्री मनोहर सिह महता मैं उनके बारे मे अधिक कह नही सकता। मैं ऐसा समझता हूँ कि मैंने उनको हमेशा अपने बडे भाई के रूप में माना है और उन्होंने मुझे अपने छोटे भाई के रूप में माना है। भ्रातृत्व का कितना मिश्रण हो सकता है और कितना प्रभाव हो सकता है मैं इसी बात से इस सदन को कह सकता हू कि इस व्यक्ति ने मरते वक्त तक कभी भी अहसास नही किया मन मे यह जानते हुये कि मेरी मौत निकट है। अस्पताल मे मिले चाहे घर मे मिले बात चीत में ऐसा लगता था जैस इनके पास मौत आ ही नही सकती। जैसे इस व्यक्ति को मृत्यु का किसी प्रकार का भय ही नही। मरते दम तक जो व्यक्ति हसते–हसते चला गया और हसते–हसते जाते वक्त तक मन में किसी प्रकार की वेदना नहीं थी। केवल वेदना यही थी कि आज देश मे जिस प्रकार की समस्यायें हैं उन समस्याओ का समाधान उचित ढग से हो। शराबबन्दी के मामले मे उस व्यक्ति ने एक इतिहास बनाया और शराबबन्दी के मसले पर इस राजस्थान विधानसभा मे जब वे सदस्य थे चाहे मसला पीने के पानी का हो चाहे मसला डाकूग्रस्त समस्या का हो चाहे मसला अकाल का हो चाहे मसला गरीबो के उत्थान का हो मनोहरसिंह जी महता की एक धारणा बनी हुई थी कि इस देश को बरबाद करने वाली शराब है। और यह शराबबन्दी जब तक नहीं होगी तब तक राजस्थान मे गरीबी का उन्मूलन नही होगा। जब तक शराबबन्द नही होगी राजस्थान मे अपराधवृत्ति मे किसी प्रकार की कमी नही आयेगी। मैं ऐसा समझता हू वह व्यक्ति चला गया मैं कभी कल्पना भी नही करता था। मनोहरसिंह जी जैसा हसमुख आदमी पलग के ऊपर जिसने कभी यह महसूस नही किया कि बीमारी मेरे लिए घातक है। हालाकि बीमारी घातक थी इसमे कोई सन्देह नही। लेकिन चेहरे पर और विचारो मे इस प्रकार की भावना उन्होंनें व्यक्त नहीं की। वह व्यक्ति भी हमारे बीच से उठ कर चला गया मुझें इसका दु ख हैं। मैं उनके प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करता हू और उनके शोक सन्तप्त परिवार को इस दारूण दु ख को सहन करने की ईश्वर शक्ति प्रदान करें भगवान से इस बात की प्रार्थना करता हू कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। ■

पूर्व मुख्यमंत्री एवं प्रतिपक्ष के नेता
श्री हरिदेव जोशी

मनोहरसिंह जी महता दरअसल एक जुझारू कार्यकर्ता थे, जो काम वह हाथ मे लेते थे उस काम को कभी अधूरा नही छोडतें थे। प्राण फूंक देते थे। जैसा अभी सदन के नेता ने कहा शराबबन्दी के मामले मे वे राजस्थान के उत्कृष्ट लोगो मे से थे जो निष्ठापूर्वक शराबबन्दी पर काम करते थे। भैरोंसिंह जी को याद है जब वो पहले मुख्यमंत्री थे उस समय उनको कुछ कहना पड़ा था कुछ करना पडा था। उसके बाद मे आप लोग कितना क्याक्यासक यह तो मैं नहीं जानता पर ऐसे जुझारू कार्यकर्ता बहुत कम मिलते है।

■

श्री नत्थी सिंह
जनतादल के नेता

मनोहरसिंह जी महता गाधीवादी विचारो के महान समर्थक थे शराबबन्दी के प्रति पूर्णतया समर्पित थे। वे कभी भी अपने निश्चय से न डिगने वाले मेधावी सदस्य थे।

■

देवेन्द्र सिंह कर्णावट
अध्यक्ष - अखिल भारतीय अणुव्रत समिति

स्व श्री गोकुल भाई भट्ट के बाद श्रीमान मनोहर सिंह जी महता ही एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होने नशाबन्दी आन्दोलन की अलख जगाए रखी। सर्वोदय के प्रति उनकी अटूट आस्था थी। वे उच्च विचारो के धनी थे। उन्होनें राजस्थान मे गाधी की दीपशिखा को जलाते हुये जो कुछ किया वह कभी नही भूला जा सकता उनके निधन से राजस्थान की एक विभूति उठ चली है। इसकी पूर्ति कठिनतम है।

■

महेन्द्र मुनि "कमल"
जैन श्वेताम्बर साधु

श्रीयुत मेहता साहब का निधन एक ऐसी क्षति है, जिसकी पूर्ति असम्भव है। स्व मेहता साहब स्वस्थ विचारो के धनी थे। उनका व्यक्तित्व व कृतित्व अनूठा था। उन्होने समाज में नई चेतना फूकने के लिए समर्पित भाव से जिन्दगी भर जिस निष्ठा के साथ जो कार्य किए उन्हें कोई भी कभी नही भूल सकता।

■

ग्रामोद्योग विकास मण्डल
देवगढ (उदयपुर)

राजस्थान मे आपने गोकुल भाई के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर शराब की बुराइयाँ बताते हुए शराबबन्दी के कार्यक्रम मे अगवानी की। वे राजस्थान विधानसभा के सदस्य रहते हुए बहुत ही जागरूकता निर्भयता के साथ अपनी बात कहते रहे।

■

फतहलाल बरडिया
बेगलोर

मैं उनका प्रशसक था। उनमें अनेक गुण थे। वे सिद्धान्तो के धनी कर्मनिष्ठ व्यक्ति थे। उनका हँसमुख चेहरा, विनोदी स्वभाव और सबके साथ उडेलता स्नेह पूर्ण व्यवहार बराबर याद आते रहेंगे। भाई मनोहरसिंह जी जोवट वाले एक आदर्श पुरूष थे। एसे जोवट वाले कि जैसे मैंने शायद ही कोई अन्य देखे हो। वे एक अलौकिक कर्तव्यनिष्ठ चरित्रवान व्यक्ति थे। शराब को वे समाज के विनाश की जड समझते थे। इस वास्ते वे अन्त तक शराब बन्दी लागू करवाने के लिए जूझते रहे और प्रशासनिक शक्तियो से सघर्ष करते रहे। वे मानवीय गुणो से ओत प्रोत थे। नैतिक बल और साहस तो उनमे इतना था कि उन्होंने समाज के हितार्थ उच्च से उच्च सत्ताधारी से टक्कर लेने में भी भय नही खाया। वे जब तक जिए समाज के बहुमुखी विकास के लिए अथक परिश्रम करते रहे। सच्ची लगन व निस्पृह सेवाभाव उनमें कूट कूट कर भरा था। सादा रहन सहन मानसिक सरलता व हसमुख स्वभाव उनके

चरित्र के अभिन्न अग बन गए थे। उनका एक समर्पित जीवन था। उन्होंने समाज के लिए बहुत कुछ किया और उसके उत्कर्ष के लिए अनेक स्वप्न सजोए। समाज उनका चिर ऋणी रहेगा। उनको आदर्शवान कर्मयोगी की सज्ञा दी जाए तो अत्युक्ति नही होगी। मेरे प्रति उनका हार्दिक स्नेह व सौजन्यता एक अविस्मरणीय थाती रहेगी। वे हम सबो के लिए एक प्रेरणा के स्त्रोत बने रहेगें।

■

कालूलाल श्रीमाली
प्रमुख शिक्षाविद् एव
भूतपूर्व शिक्षामन्त्री

श्री मनोहर सिह महता का मेरा परिचय स्काउटिंग द्वारा हुआ वो रोवर भी रहे और हसमुख रहा करते थे और दूसरो को भी हसाते थे। उन्होने समाज सेवा का व्रत लिया और उसको बहुत खूबी के साथ निभाया। उन्होने पद की कभी भी लालसा नही की और स्वतन्त्र रूप से काम करते थे। उनके देहावसान से मेवाड ने एक बहुत सच्चे और कर्मठ कार्यकर्ता को खो दिया।

■

भीलवाडा
जिला प्रोढ शिक्षा सघ

सेठ साहब गुण के धनी थे। उनका व्यक्तित्व अद्वितीय था। वे समाज सुधार के सतत् प्रणेता थे। वे सच्चे गाधीवादी थे कर्मयोगी थे। सेवा उनके जीवन का धर्म था। सर्वधर्म स्वभाव के निष्ठावान पोषक थे। सहयोग एव सहकार उनके जीवन के अमूल्य तत्व थे। ग्रामोत्थान प्रौढ शिक्षा एव सामान्य शिक्षा के लिए उन्होने जीवन भर कार्य किया। वे 50 वर्षो से अधिक समय तक गाव से लेकर विधानसभा तक अपने कार्य एव व्यवहार से लोक मानस को प्रभावित करते रहे।

वे बालको मे बालक युवाओ मे युवा प्रोढो मे प्रौढ ज्ञानियो में ज्ञानी चिन्तको म प्रखर चिन्तक सन्तो मे सन्त समाज सुधारको मे उत्कृष्ट समाज सुधारक एव राजनेताओ में श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ थे। उनकी राजनीति लोकमत पर आधारित थी। साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए उन्होने सारा जीवन खपा दिया।

जिला प्रौढ शिक्षा सघ के वे सस्थापक थे। उन्होंने सस्था के काम एव विकास में पूर्ण मार्गदर्शन दिया।

श्री शम्भू पटवा

मानद सचिव

बीकानेर प्रौढ शिक्षण समिति

"प्रौढ शिक्षा सम्मेलनो तथा अन्य सार्वजनिक आयोजनों में जब उनको सुनने और बातचीत करने का अवसर मिलता था तो लगता था कि एक नौजवान से बात हो रही हो। उनका काम और व्यवहार सबके लिए सदा प्रेरणादायक रहेगा।

■

सेवा सदन, भीलवाडा

श्रद्धेय सेठ साहब श्री मनोहर सिंह महता का देहावसान दिनाक 17 अक्टूबर 1990 को हुआ है। वे सस्था के स्थायी सदस्य और सचालक मण्डल के वरिष्ठ सदस्य रहे हैं। सेवा सदन के विकास में उनका सदैव महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वे राजस्थान के उन प्रमुख समाज सेवको मे से थे, जिनका सम्पूर्ण जीवन समाज सेवा के लिए समर्पित था। वे राजस्थान विधानसभा के दो बार सदस्य रहे है। उन्होंने प्रदेश में शराबबन्दी आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। आपात स्थिति के विरोध मे उन्होंने सत्याग्रह किया और कारावास भुगता। वे विनोद पूर्ण ढग से अपनी बात कहने और जन सम्पर्क की कला मे माहिर थे। वे प्रदेश की कई रचनात्मक सस्थाओ से जुडे हुये थे। उनके निधन से समाज सेवा के क्षेत्र मे जो रिक्तता हुई है उसकी पूर्ति कठिन है।

■

श्री शोभालाल गुप्त

नई दिल्ली

उनके साथ हमारा दीर्घकालीन घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। जब वह राज्य सेवा में बीगोद में शराब के कारखाने को चला रहे थे तब वह हरिजन सेवा के काम मे भी रूचि ले रहे थे। उन्होने अनेक हरिजन पाठशालाएँ चलाने और हरिजन उत्थान के अन्य कामो मे योग दिया था। राजपूताना हरिजन सेवक सघ के मन्त्री के नाते उन्होंने

मुझे अपना अतिथि बनाया और अत्यन्त आदर एव स्नेह दिया।

स्व मोहन सिंह महता के स्काउट आन्दोलन ने उनमें चरित्र और सवा के बीज डाले। बाद मे तो राज्य सेवा से त्याग पत्र दकर सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र मे पूरी तरह कूद पडे। गाधी दर्शन और सर्वोदय क आदर्शों में उनकी आस्था बहुत गहरी थी और उनकी पूर्ति मे अपना सारा जीवन लगा दिया। वे दीन दुखियो क सखा और सहारा थे। राजस्थान मे शराबन्दी आन्दोलन के कट्टर पक्षधर थे और उसके लिए जेल भी गए। वे सक्रिय और सरल स्वभाव के थे। उनका जीवन सादा था। मै उनके गुणो के आगे नतमस्तक हू।

■

श्री गजेन्द्र कुमार जैन
मन्त्री – राजस्थान
राज्य गाधी स्मारक निधि

महता साहब मे मेरा पिछले 20-25 वर्षो से परिचय था और जब भेट होती थी बडी गर्म जोशी से तन और मन उल्लासित हो जाता था। बातो मे राजस्थानी लोक कहावतो की तो झडी लग जाती थी और चूकि मुझे कहावतो के सकलन का शौक था सो उनकी बातो से ढेर सारी कहावते मैने सजोली थी।

शराबबन्दी के विषय में उनका उत्साह तो सारे बाध तोड देता था। उनक जैसे जीवट वाले कायकता अब कहा दीखने म आते हैं। उनका स्थान भरा जाना आसान नही है।

■

श्री एम एल कालिया
महानिदेशक पुलिस
राजस्थान सरकार

पिछले 25 वर्षो से मुझे उनका अगाध प्रेम मिला और उनका वरदहस्त हमेशा हमारे सर पर रहा। उनका व्यक्तित्व विलक्षण था और ऐसे आदर्श व्यक्तित्व वाले व्यक्ति आज कल बिरले ही मिलते हैं। जितनी उत्कृष्ठ ईमानदारी उत्साह व लगन से उन्होनें जनता की सेवा की है वह अद्वितीय है। उनके जीवन से अगर हम

थोडा बहुत भी सीख पाएँ, तो मैं यह मानकर चलता हू कि हमारा जन्म कृतार्थ हो गया।

■

श्री बशीलाल पारस
भीलवाड़ा

जाने वाले तो फिर नही आते
जाने वालो की याद आती है।

श्रद्धेय आत्मीय श्री मनोहर सिंह जी महता का यकायक देह शून्य हो जाना लगा कि भरी जाजम से सबका चहेता यकायक उठकर चला गया है।

वो मात्र व्यक्ति ही नही बहुआयामी व्यक्तित्व थे। उनकी सिद्धान्तो के प्रति अडिग आस्था थी, जो वरेण्य है। सर्वसाधारण में एव साहित्यिक रसज्ञ मर्मज्ञों के बीच समाहत थे।

उनके सहज सादगी से ओतप्रोत जीवन में एक तीर्थंकर की दिव्यदृष्टि समाहित थी। उनके विदा होने का साधारण पूर्वाभास भी हो जाता तो उन्हें अपना सारा सर्वस्व लगा रोक लेता।

न हाथ ही थाम सके
न पकड सके दामन,
बडे करीब से उठकर
चला गया कोई।

■

उदयपुर की स्वयसेवी सस्थाओ की ओर से श्रद्धा सुमन
(सेवा मन्दिर, आस्था, उबेश्वर विकास मण्डल, प्रयास, सहयोग, विकास सस्था)

श्री मनोहर सिह जी महता सचमुच एक विलक्षण तथा असाधारण व्यक्तित्व के धनी महापुरूष थे। स्व राष्ट्रपिता महात्मा गाधी सत विनोबा भाव, राज के महान सर्वोदयी नेता गोकुल भाई भट्ट एव उदयपुर के कर्मठ शिक्षा कर्मी डॉ मोहन सिंह महत्ता जैसे महापुरूषो से उन्होने प्रेरणा ली तथा अपने निजी एव मौलिक ढग से

समाज सुधार में अपने आपको आजीवन खपाया। उन्होनें समुदाय के विभिन्न वर्गो में सौहार्द स्थापित करके लोकशक्ति के जागरण का अद्‌भुत कार्य किया और शराब को नैतिकता का घोर शत्रु एव निर्धनो की निर्धनता का मूल कारण मानकर, उसका तन मन धन से विरोध किया। अपनी सच्ची समाज सेवा के बल पर ही एक बार स्वतन्त्र रूप से तथा दूसरी बार एक पार्टी विशेष के टिकिट पर वे राजस्थान विधानसभा के लिए निर्वाचित हुए थे।

लोकसेवा का मूल मन्त्र बताते हुए उनका बारम्बार यह कहना "भाले से बाटियाँ नही सेकी जाती' इस बात का द्योतक था कि निर्धनो या निरक्षरो से दूर दूर रहकर आप उनकी सहायता और सेवा नही कर सकते हैं। सचमुच श्री मनोहरसिंह जी महता ने एक आदर्श समाज सेवा की जो मिसाल पेश की है वह शेष समाज सेवको के लिए दीर्घकाल तक प्रेरणास्पद एव मार्गदर्शक सिद्ध होगी।

■

परमपूज्या यश कवर जी महारासा
जैन साध्वी

श्रीयुत सेठ सा का जीवन बडा ही आदर्श जीवन था। वे परम साहसी निर्भीक एव स्पष्टवक्ता थे। धर्मानुप्राणित उनका आदर्श जीवन सभी के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। लोक कल्याण की उदात्त भावना उनके जीवन का मुख्य ध्येय था।

सम्पूर्ण जीवन अनुपम आदर्शो के साथ व्यतीत हुआ। समाज मे व्याप्त कुरीतियों, रुढियो को शमन करने के लिए भरसक प्रयास किए थे। मानवीय गुणो की वे खान थे। उन्होनें सारा जीवन दीन दुखियो की सेवा में खपा दिया।

■

श्री रामेश्वर चित्तोडा
बिजोलियाँ

जन जन की आत्मा के प्यारे, माडलगढ क्षेत्र की विकास गगा के भागीरथ सर्वोदय के माध्यम से हर पल सेवा को समर्पित एक कर्मठ कार्यकर्ता, हम सबके लिए प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं। ■

श्री पी सी पालीवाल
अजमेर

काका ने सारा जीवन सिद्धान्तों व नैतिक मूल्यों पर निर्वाह किया व उन्होंने कहा उसको अभ्यास निभाया। उनका जीवन गंगा के जल के समान पावन निर्मल व पारदर्शी था। उनके जीवन से हम सबको प्रेरणा लेनी चाहिए। सच्चा जीवन उच्च विचार के व प्रतिमूर्ति थ।



श्री जसवन्त सिंह सिंघवी
उदयपुर

भाई मनोहर सिंह जी साहब ने अपने पीछे अनेक प्रेरणादायक कार्यों की स्मृतियाँ छोडी है। ये एक चरित्रवान समाज सेवी व्यक्ति थे। उनके उच्च विचारों की छाप राजस्थान वासियो के मानस पर सदा बनी रहेगी। एक विधायक के रूप में उनका कार्य सदा याद रहेगा। मद्य निषेध के लिए उन्होने जीवनभर सघर्ष किया। उनके निधन से मुझको व्यक्तिगत आघात पहुचा है। उनके प्रेरणादायक जीवन का अनुकरण कर समाज की सेवा में लगना चाहिए।



श्री यशवन्त मेहता
जोधपुर

वे अजातशत्रु थे। उनकी साधना, निस्वार्थ जीवन समाज सेवा की तन्मयता तथा राष्ट्रप्रेम जन–जन की जिह्वा पर है। उनकी मृदुभाषी वाणी तथा विनोदपूर्ण वाक्चातुर्य से सारा राजस्थान प्रभावित था। जब कभी भी उन्होने राजनीति मे प्रवेश किया उनका कुशल नेतृत्व प्रशसनीय और अनुकरणीय रहा। इनका उठ जाना समाज के लिए अपूरणीय क्षति है।



श्री त्रिलोकचन्द जैन
दुर्गापुरा – जयपुर

श्री सेठ साहब एक जिन्दादिल इन्सान थ। यमराज भी उनके शरीर को छूते हुए मुस्कुराया होगा और एक क्षण क लिए हिचका होगा। हर परिस्थिति में हँसते रहना और मुस्कुराहट बिखेर देना उनका स्वाभाविक चरित्र था।

उनकी हम सब कार्यकर्ताओ के प्रति आत्मीय भाव था। जिसका बडा सम्बल भी था। इस कभी नही भुलाया जा सकेगा। छोटे से लेकर वृद्ध तक उनका समभाव रहता था वह हर मोके पर सदा आँखो के सामने झलकते रहेगे।

■

परम विदुषी श्री सिद्ध कवरजी महारासा
जैन साध्वी – राजस्थान

धर्म प्रमी समाजसेवी महता सा का सघ से उठ जाना बहुत बडी क्षति है। आप पूरी जिन्दगी दीन दुखियो की सेवा एव समाज की कुरीतियो के खिलाफ जूझते रहे। एसे व्यक्तित्व के धनी की शून्यता की पूर्ति होना कठिन है।

■

श्री जमनेश दरगड
जयपुर

श्री महता प्रजातन्त्र क जागरूक प्रहरी थे। वे सार्वजनिक जीवन के चरित्रवान व्यक्ति थे। नशाबन्दी के लिए गाधीवादी विचारधारा के लिए व स्वदेशी के लिए उन्होने निरन्तर सघर्ष किया। आपातकाल की काली छाया स उन्हाने टक्कर ली। प्रजातन्त्र क प्रहरी क रुप म राजस्थान विधानसभा म उन्होने जनता का जागरुक नेतृत्व किया। व सर्वोदय विचारधारा के प्रति समर्पित थे।

हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए वह भीलवाडा के शानदार उदाहरण हे। उनकी मृत्यु भीलवाडा के सार्वजनिक जीवन की और राजस्थान के सार्वजनिक जीवन की अपूर्व क्षति है। उनके निधन स एक स्पष्टवक्ता चरित्रवान निष्ठावान व खादी जगत का महान व्यक्ति उठ गया।

■

गांधी उच्च माध्यमिक विद्यालय परिवार
गुलाबपुरा

स्वतंत्रता संग्राम के अग्रिम सेनानी सेठ सा. के निधन से सम्पूर्ण विद्यालय परिवार शोक मग्न हो गया। आदरणीय सेठ सा. निष्ठावान सर्वोदयी कार्यकर्ता एवं दृढ़ संकल्पी जन सेवक थे। 1967 से 1980 तक मांडलगढ़ निर्वाचन क्षेत्र से विधायक रहकर प्रदेश की जनता को सफल नेतृत्व प्रदान किया एवं मद्यनिषेध स्वदेशी प्रचार, सामाजिक कुरीतियों के निवारण आदि के माध्यम से स्वस्थ समाज निर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया।

सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धान्त को आत्मसात कर उन्होंने एक आदर्श उपस्थित किया। गांधीवादी आदर्शों के वे एक प्रतिमान थे। उनके स्वर्गवास से सार्वजनिक जीवन को महान क्षति हुई है।

■

श्री समुद्र सिंह पोखरणा
चित्तौड़गढ

पूज्य काका सरलता व स्पष्टवादिता के प्रतीक थे। समाज के विघातक कुरीतियों पर अजेय प्रहारक एव बेजोड़ वक्ता के रूप में उनकी पहचान सर्वविदित हो गई थी। ऐसे निष्कामी साधक को खोकर सभी को असह्य वेदना हुई है। प्रेम और माधुर्य उनके रोम–रोम से टपकता था। उनका पार्थिव शरीर अब नहीं रहा किन्तु उनके शब्दों की अजेय शक्ति,प्रेम और पराए को अपना बनाने की अनूठी कला,कई दशकों तक लोगों के मन में मौजूद रहेगी।

■

श्री बालूलाल पानगड़िया
जयपुर

सेठ सा का लम्बा जीवन देश सेवा में बीता। उन्होंने समाज को बहुत दिया। स्वय कुछ भी नही लिया। उन्होंने सदैव हजारो लाखों मायूस लोगों को हंसाया और स्वय भी जीवन भर हंसते रहे। यही नहीं अपनी गहन बीमारी को भी हंसते–हंसते गुजार गए। क्या गजब के इन्सान थे वे। अब न उनके विनोद सुनने को मिलेंगे और न ही कटाक्ष।

■

बीगोद ग्राम के नागरिक

माननीय सेठ साहब के देहावसान से बीगोद ग्राम के सभी नागरिक हतप्रभ है। उन्होंने इस ग्राम व सम्पूर्ण क्षेत्र की सेवा में पूरा जीवन लगाया है। इसके लिए हम सब उनके ऋणी है। ऐसे समर्पित लोक सेवक को खोकर यह क्षेत्र अपने को अनाथ महसूस करता है।

■

श्री मिश्रीलाल मानगड़िया
सागानेर

सेठ सा को गरीबों के प्रति बहुत सहानुभूति थी। गाव में कोई भी गरीब बीमार होता, उसको डॉक्टर के पास अपने खर्चे से बिना अड़चन ले जाते थे। हर सार्वजनिक काम में वे अगुवा थे। पैसा सग्रह करने की उनकी आदत नही थी। सादगी उनके रोम-रोम में व्याप्त थी। कभी किसी को कुछ कह देते थे और उसका मन दुख जाता तो फौरन उसके घर जाकर उससे माफी मागते थे। ऐसे सरल स्वभाव वाले बहुत कम होते हैं। सेठ सा जैसा निस्वार्थी व्यक्ति होना बहुत मुश्किल है। हमारे गाव से ऐसा आदमी उठ गया जिसकी पूर्ति करना सम्भव नहीं है।

■

जिला प्रौढ शिक्षा समिति
कोटा

श्री मनोहर सिंह जी महता स्वत त्रता सेनानी एव सच्चे सर्वोदयी कार्यकता थे। गाधी दर्शन को उन्होंनें जीवन में उतारा था। राजस्थान में प्रौढ शिक्षा के अग्रणी थे और नशाबन्दी के प्रेरक थे। उनके चले जान से सार्वजनिक जीवन में अपूरणीय क्षति हुई है।

■

श्री रुप नारायण
अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद
नई दिल्ली

महता जी राजस्थान के उन कुछ निष्ठावान व्यक्तियो में एक प्रमुख थे, जिन्होंने जीवन पर्यन्त समाज सेवा में अपने को खपा दिया था। नशाबन्दी के क्षेत्र में

उनकी सेवाएँ विशेष रुप म उल्लेखनीय हैं। जब तक व राजस्थान की विधानसभा के सदस्य रहे हमेशा ही नशाबन्दी के पक्ष म अपनी आवाज उठाई थी। उनके निधन स समाज व राष्ट को अपार क्षति हुई है।

■

श्री रणछोड दास गट्टाणी
जोधपुर

राज्य सवा क सिलसिल म मैं भीलवाडा गया तब उनसे परिचय हुआ जो निरन्तर प्रगाढ होता गया। उनमें बहुत स दैवीय गुण थ। उन्होंने स्वय ने भले ही जीवन मे दुख देख परन्तु दूसरो को जीवन हँसते-हँसत जीना सिखाया। ऐसी खूबी कितनो मे मिलती है ?

सार्वजनिक जीवन म जीवन मूल्यो का स्थान का महत्व व जानते थे और वे सदा कदाचार को हराने मे लग रहे।

■

समस्त साथी
कस्तूरबा गाधी स्मारक ट्रस्ट
शाहपुरा

महता सा के समान जुझारु प्रसन्नचित्त उत्साही कर्मठ स्नेही भाई की क्षति अपूर्णनीय है। आज की सकट की घडी मे उनके जैसे व्यक्ति की आवश्यकता थी।

■

उत्तमचन्द सुखलेचा (अध्यक्ष)
मेवाड क्षेत्रीय तेरापथ युवक परिषद
देवगढ (राजस्थान)

श्री मान् महता सा की आचार्य श्री तुलसी के प्रति बडी श्रद्धा थी। देवगढ मे श्री महता सा क कार्यक्रम रुढियो के निवारण के सम्बध में साधु साध्विया के सानिध्य मे सम्पन्न हुए थे। दवगढ के युवक उनके प्रति बहुत श्रद्धावान हैं। उनकी वाणी म तर्जस्विता एव स्नेह था। रुढियो के ऊपर समाज के सामने बहुत जोरदार शब्दो मे प्रहार करते थे। उनकी वातो का असर गहराई से होता था। उनका यह तेज सबका स्मरण रहेगा।

■

श्री शिवचरण माथुर
सदस्य- राजस्थान
विधानसभा

सेठ सा भीलवाडा ही नही बल्कि राजस्थान के सार्वजनिक जीवन के एक अग्रणी व्यक्ति थे। शराब बन्दी तथा अन्य सामाजिक कुरीतियो क विरुद्ध जीवन भर उन्होने सघर्ष किया। निष्ठापूर्वक कर्तव्य करते रहना सेठ सा का जीवन क्रम था। उनके निधन से प्रदेश के सामाजिक जीवन मे एक ऐसी रिक्तता पैदा हो गई है जिसकी पूर्ति साधारण तौर पर सम्भव नही है।

■

श्री प्रकाश चन्द्र जैन
सदस्य -राज सिविल सेवा
अपील अधिकरण - जयपुर

श्रीयुत मेहता सा कर्मठ एव त्यागी पुरुष थे जिन्होनें अपना सर्वस्व पीडित मानवता की सेवा हेतु अर्पित कर दिया। उनका सरल जीवन एवम् कर्तव्य के प्रति निष्ठा अनुकरणीय थी।

■

श्री आजाद गोयल
भीलवाडा

सेठ सा मस्ताना व्यक्तित्व के धनी थ। व जैसे अन्दर थे वैसे ही बाहर थे। बच्चो जैसा भोलापन पर अपनी बात के पक्के। विधायक रहे पर कार्यकर्ता ही बने रहे। मातृभाषा (मेवाडी) के प्रति अटूट लगाव था। बडी से बडी सभा मे ठेठ मेवाडी में अपनी बात कहते थे।

बीगोद सेवा सघ की स्थापना कर शिक्षा, ग्रामोद्योग व कुरीति निवारण पर विशेष ध्यान दिया। नशाबन्दी के काम मे तो उन्होने जान फूक दी। जनता का प्यार पाने वाला मुझे उनके मुकाबले कोई दूसरा व्यक्ति नजर नही आया।

■

श्री भीमसिंह सचेती

गुलाबपुरा (भीलवाडा)

श्री मनोहर सिह महता सभी क आदरणीय थे। वसुदेव कुटुम्बकम की प्रेरणा उनमे थी। उनका स्नेह नयनो से बरसता था। एक घटना सदा याद आती है। एक बार व्यसन मुक्ति हेतु, पद यात्रा पुष्कर से कितलसर तक हुई। महता साहब भी समापन समारोह में पधारे। लाखो लोगो की उपस्थिति मे समारोह में कितलसर में "पन्ना गुरु स्मृति चिकित्सालय की स्थापना हुई। महता सा ने मिट्टी उठाकर अपने मस्तक पर तिलक किया और अपने शरीर पर डाल कर कहा यह माटी व भूमि धन्य है जहाँ एक महान आत्मा ने जन्म लिया। इस घटना से उनकी सरलता शालीनता मन को गद्गद करती है।

■

श्री चादमल दुग्गड

आसीन्द

श्री मनोहर सिह जी महता बहुत बडे समाज सुधारक थे। वे समूचे राजस्थान के गौरव थे। उनके जीवन मे सयम सादगी सत्यवादिता निर्भिकता बेजोड एव अनुकरणीय थी। वह विचारो के धनी थे। सामाजिक कुरीतियो आडम्बर दहेज प्रथा के सख्त विरोधी थे। शराबबन्दी आन्दोलन के लिए उनकी जो भूमिका रही वह भुलाई नही जा सकेगी। आपने माडलगढ विधानसभा से निर्दलीय चुनाव लडा और भारी बहुमत से विजयी होकर विधानसभा मे गए। सरकार बनाने के लिए जो बहुमत चाहिए उसमे एक मत की कमी थीसके लिए आपको मिनिस्टर बनाने सहित अनेक प्रलोभन दिए गए पर आपने अपने सिद्धान्तो पर कायम रहते हुए किसी भी प्रलोभन को स्वीकार नही किया।

■

श्री दरियाव सिंह महता 'जिज्ञासु'
बस्सी

श्री मनोहर सिंह जी काकासा मेरे पिताजी के छोटे भाई थे और मेरे पिताजी के गाधी वादी वयक्तित्व का आप पर अत्यन्त प्रभाव था । शराब मृत्युभोज तिलक दहेज जौ कुरीतियो के खिलाफ आजीवन सघर्ष करते रहे । काकासा मेरे लिए सदा प्रेरणा स्त्रोत रहे । उनकी प्रेरणा से खादी वस्त्र धारण किये और ग्रामोधोगी वसतुओ का सदैव इस्तेमाल किया । देश व समाज के प्रति उनका समपण सदैव स्वण अक्षरो में अकित रहेगा । वे भावना प्रधान पुरुष थे । सेवा भाव उनके मानस मे ओत प्रोत हो गया था । व किसी को दुखी नही देख सकते थे । दया प्रधानता न ही उनको समाज का सच्चा सेवक बना दिया । भावना के कारण लोग उन से प्रभावित थे और लोगो से वे प्रभावित थे । उनका जीवन रहसयमय नही था खुला था । हर कोइ उन्हें पढ सकता था ।



श्री लक्ष्मी चन्द भडारी
अध्यक्ष- राजस्थान समग्र सेवा सघ

श्री मनोहर सिंह जी महता स पिछले 30 वर्षो से प्रत्यक्ष रुप में सम्पर्क रहा । विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमो के अतिरिक्त विशष रुप से भुदान एव शराबबन्दी आन्दोलन के समय नजदीक से जानने का अवसर मिला । श्री मेहता जी निर्भिक और उत्साही एव जीवट कार्यकर्ता थे । उनका जीवन जीवन आचार-विचार प्रत्येक व्यक्ति को आकर्षित करता था । उनके काय करने की पद्धति लोक सम्पर्क तथा उनके व्यवहारिक जीवन से सहज ही उनके मित्र बनजाते थे । उन्होने लोक जीवन को जगाने एव शराबबन्दी आन्दोलन को गति प्रदान करने मे विशेष भुमिका निभाई । राजस्थान विधान सभा मे शराबबन्दी के प्रश्न को बराबर उठाते रहे । उनसे सार्वजनिक एव ग्रामीण क्षैत्र मे कार्य करने वाले कार्यकर्ताओ को निरन्तर प्रेरणा मिलती रहेगी ।



Jaswant Mehta
Tax Consultant, Calcutta

In fact,we have not only lost one of our dearest family member but the village the district, the State and the nation as a whole, has lost a champion of Social reforms a strong soldier freedom fighter a reformist, a man of streling character an apostle of simple living and high thinking and an ardent social worker – turned politician and again reverted to original position after witnessing the disastrous and most malign character of todays class of politicians

■

Dr– Jasbeer Jain
Rajasthan University

I met him just once and that too briefly but his wisdom and generosity his cheerfulness his involvement in others– all these qualities have left a lasting impression on me and I am the richer for the meeting with him

The values and Ideals will continue to live in the family

■

श्री रामप्रसाद लढ्ढा
पूर्व सिंचाई मत्री

श्री मेहता का सारा जीवन लोक सेवा से ओत-प्रोत रहा। वे अत्यन्त कर्मठ एव निष्ठावान लोक सेवक थे। उनका सम्पूर्ण कार्य एव व्यवहार लोक शिक्षण से प्रेरित था। उन्होने शिक्षा सहकारिता, समाज-सुधार, शराब बन्दी एव ग्राम विकास के लिये जीवन भर अहर्निश समर्पित भाव से कार्य किया। शराब बन्दी और उनका जीवन एक दूसरे के पर्यायवाची हो गये थे।

उनके साथ काम करने का मुझे भी मौका मिला और उन दिनो में जबकि स्वतत्र विचार की बात करना और लोक शक्ति जागृत करने में बडी कठिनाइयाँ थी, उन्होने माण्डलगढ क्षेत्र में कार्यकर्ताओ की एक फौज तैयार की और उनके साथ क्षेत्र में रचनात्मक कार्यों की मुहिम चलाई जिससे वह क्षेत्र आज भी प्रभावित है।

श्री महता के द्वारा जन-जागरण की जलाई जोत बराबर जलती रहे और उनके द्वारा प्रारम्भ किये गये कार्यों को गति मिले, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी।



श्रीमती रश्मि महता
सागानेर

मैरा सौभाग्य है कि में काका की पुत्रवधू बनी। उनका जैसा स्नेह व प्रम बरसाने वाले व्यक्ति बहुत कम होते है। मुझे पुत्री से भी ज्यादा स्नेह दिया। वे स्नेह के ही सेठ थे। धन का उनके पास कोई काम नही था। मैरी वे हर व्यक्ति के सामने

इतनी ज्यादा तारीफ करते थे कि मुझे समझ नहीं आता था कि मैं इस काबिल हूँ भी या नही । उनको आडम्बर से बहुत चिढ थी । उनकी सादगी बेमिसाल थी । उनमें जो गुण विद्यमान थ व आज भी हमारे सबके लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं । उनका अभाव कभी पूरा नही हो सकता ।

उनकी सफलता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि मेरी सगाई के बाद वे इन्दौर आए और मुझे बाजार ले गए और कहा तेरे लिए एक साडी खरीद ले । फिर कहा मेरे पास 150 रुपये है तू इतने पैसों वाली साडी ही पसन्द करना । यही सादगी उनके कच्चे खपरेल घर के सन्दर्भ में भी थी । उनकी यह सादगी ही सबसे ज्यादा श्रद्धा पैदा करती है ।

■

श्री सुन्दरलाल आजाद
बेगू

मेरा महता साहब के साथ घनिष्ट वैचारिक सम्पर्क था । ग्राम सवा केन्द्र धाकडखेडा और सर्वोदय आश्रम भी चोर के माध्यम से हम दोनो जुडे रहे । उनका निर्मल स्वभाव व सम्पर्क शैली सबको प्रभावित करती थी । उनकी स्मृति को स्थाई रखने के लिए हमें लोकराज सर्वोदय समाज की स्थापना मे जुट जाना चाहिए ।

■

श्री चतुर्भुज उपाध्याय
बस्सी

मैं उनका बाल्यकाल का साथी रहा। देश प्रेम की भावना उनमें बचपन से ही थी। वे निष्काम सेवा धर्मी थे। उन्होंने अपना सारा जीवन मानव मात्र की सेवा में लगा दिया। उनके सम्बन्धों की प्रगाढ़ता में कभी अन्तर नहीं आया।



परिशिष्ट प्रथम

अभिनन्दन पत्र-सन् 1937

श्रीमान् सेठ मनोहरसिंह जी महता

डिस्टलरी ऑफिसर बीगोद, मेवाड

आपका सन् 1931 ई म यहाँ डिस्टलरी पदपर पदार्पण हुआ आपके आगमन से जो सेवायें इस प्रान्त की हुई उसके लिए हमें आशा न थी क्योंकि एक तो जवान व सरकारी पद में कौन व्यक्ति ऐसा होगा जिसका ध्यान इस और हो। लेकिन आपने अपनी विद्वता, दयालुता और परोपकार प्रवृति का जो परिचय दिया उससे हम सब बडे आभारी हैं और रहेंगे।

आपका दिल पढने पढाने की तरफ था । यहाँ पधार कर सर्वप्रथम आपने अपने निवास पर रात्रि पाठशाला प्रारम्भ की और उन गरीब किसानो के लडका को जो दिन में तालीम प्राप्त नही कर सकते थे उन्हें आपने पढाना प्रारम्भ किया। यह पाठशाला आज तक चल रही है। इसमें कितने ही किसान बालकों ने अच्छी तालीम प्राप्त की। अपने जीवन को सफल बनाया और बनाते रहेंगे।

रात्रि पाठशाला धूमधाम से चलने के बाद आपका सेवा में विशेष ध्यान हुआ और खटवाडा मे दिन व रात्रि पाठशाला प्रारम्भ की व एक छोटी लाईब्रेरी प्रारम्भ की जिससे यहा क लोग पढाई की तरफ प्रेरित हुए। कई हरिजन विद्यार्थियो ने आजीवन मदिरा मास सेवन न करने का प्रण लिया यह भी अत्यन्त सराहनीय है।

इसके बाद उत्तरोत्तर सेवा भाव बढने के कारण जोजवा आम्बा बडलियास बनका खेडा हरेल मे दिन व रात्रि पाठशालाएँ स्थापित कराई और वहा के बालको की देश हित की भावना व शिक्षा दिला उनका भी ध्यान सेवा में आकर्षित किया।

इन सबके होते हुए भी आपका हृदय सेवा मे और आगे हिलौरें मार रहा था और शीघ्र ही आपके द्वारा भीलवाडा माण्डलगढ प्रान्तीय सेवा सघ कायम होकर उसकी प्रधानता मे उपरोक्त स्कूलो के अलावा बीगोद में शान्ति औषधालय और सागानेर में श्री कृष्ण औषधालय स्थापित हुआ और इनकी शाखाएँ सब स्कूलो म खोली गई। इन सबके खर्च का बजट 500 रुपये लगभग बना। उसका भार असह्य होते हुए भी आपने दूर दूर घूम कर कई कष्टो का सामना करते हुए चन्दे द्वारा पूरा किया जो लगातार तीन

साल से आज तक सुचारु रुप से चल रहा है। इन सवाओ से जो फायदा यहा क लोगो को हुआ है उसको लिखने में लखनी असमर्थ है।

आपने अपने जीवन के पल जन सेवा में लगाये हें। हरिजनो के कार्यों में आप विशेष रुप से जुडे रहे उनको अच्छी नसीहत देकर मदिरा व मास के लिए सौगन्ध दिलाये। यह कितने महत्व की वात है। प्रत्येक हरिजन भाई आपका आभारी हे। आपकी सहन–शीलता सच्चाई नम्रता दानशीलता और चतुराई व मधुरता की जो छाप यहाँ के कई युवक व बालको पर पडी है वह सदा अमिट रहेगी।

खेद है कि ऐसे सहृदय दयालु प्रेम मूर्ति का यहा से तबादला हो गया। हम आपके अलौकिक असाधारण अद्वितीय गुणो के वर्णन करने मे असमर्थ है। ईश्वर आपको सर्वदा सुख सम्पन्न देखकर आरोग्यता और दीर्घायु प्रदान करे। यही हार्दिक अभिलाषा है। अन्त मे हम सब श्रद्धा व भक्ति से अभिनन्दन करते हुए सानुनय प्रार्थना करते हें कि हमारी तरफ से कोई भी त्रुटि हो गई हो तो उसे अपने दयालु स्वभाव द्वारा विस्मृत करके हमको अपने विशाल स्मृति पट से दूर न कीजिए और शीघ्रातिशीघ्र वापिस यहाँ पधार कर इन सब कार्यो को वापिस अपने हाथ मे लीजिए।

आपके स्नेही भाजन

समस्त जनता बीगोद प्रान्त

नोट – यह अभिनन्दन पत्र हाथ से लिखकर बीगोद की जनता ने श्री महता के बीगोद से स्थानान्तरण के समय विदाई समारोह मे दिया। स्मरण रहे श्री महता ने राजकीय सेवा स त्यागपत्र देकर बीगोद को ही अपनी कर्मस्थली वनाया था।

■

परिशिष्ट द्वितीय

संस्था सूची

श्री मनोहर सिंह महता राजस्थान की अनेक महत्वपूर्ण रचनात्मक व सर्वोदयी सस्थाओ मे अभिन्न रुप से जुडे हुए थ। उनका सिलसिलेवार ब्यौरा कही उपलब्ध नही है। उनके मित्र एव साथी वर्तमान में सेवा सघ बोगोद के अध्यक्ष श्री वैद्य नन्दकुमार ने अपनी याददाश्त के आधार पर जो सूची बनाई वह यहा प्रस्तुत है।

1 अखिल भारतीय नशाबन्दी समिति
2 अखिल भारतीय गाधी घर योजना
3 समग्र सेवा सघ
4 राजस्थान प्रदेश नशाबन्दी समिति – मत्री
5 गाधी स्मारक निधि
6 राजस्थान हरिजन सेवक सघ
7 राजस्थान भूदान यज्ञ एव ग्रामदान बोर्ड
8 राजस्थान सेवक सघ
9 राजस्थान प्रौढ शिक्षा समिति
10 राजस्थान अणुव्रत आन्दोलन समिति
11 कस्तूरबा स्मारक ट्रस्ट
12 मेवाड प्रजामण्डल – कार्यकारिणी समिति सदस्य
13 मेवाड बाढ रिलिफ कमेटी – उदयपुर
14 मेवाड चम्बर आफ कामर्स
15 विधाभवन उदयपुर
16 सेवा मन्दिर उदयपुर
17 गाधी विद्यालय गुलाबपुरा
18 खारीतट सर्वोदय सघ शाहपुरा
19 ग्राम सेवा सघ भीलवाडा
20 जिला प्रौढ शिक्षा सघ भीलवाडा

21 केन्द्रीय सहकारी बैंक, भीलवाडा
22. भूमि विकास बैंक, भीलवाडा
23 किसान सहकारी समिति भादू (भीलवाडा)
24 सेवा सदन, भीलवाड़ा
25 जन सेवा मडल पहुना
26 ग्राम सेवा समिति जहाजपुर
27 आतरी उपरमाल विद्यापीठ, बिजौलिया
28 सेवा सघ बीगोद – सस्थापक
29 किसान वृहत् बहुसन्धी सहकारी समिति लि बिगोद–सस्थापक
30 समग्र ग्राम विकास योजना– धाकडखेडी -सयोजक
31 खादी ग्रामोद्योग केन्द्र धाकडखेडी–सस्थापक
32. सागानेर विद्यालय विकास समिति–अध्यक्ष
33 विधानसभा विशेषाधिकार समिति 1967 अध्यक्ष
34 विधानसभा याचिका समिति 1977 अध्यक्ष
35 गो सेवा सघ भीलवाडा सदस्य



काका के प्रिय दोहे

काका भाषण कला में माहिर थे। उनकी ओजस्वी वाणी व लोगों के मन की भाषा में दोहे चार चाद लगा देते थे। ये सब दोहे उनके मित्र श्री मोतीलाल जी छापरवाल के बनाए हुए थे। इन दोहो का प्रयोग विधानसभा से लेकर ग्राम सभा तक किया। उनके कुछ प्रिय दोहो को यहा प्रस्तुत किया है।

- रुख लगाओ एक भले ही,
  सौ मदिर निर्माण करो।
- चाह न राखो नाम की करो काम की बात।
  काम जठा तक नी बणे जूम्या रो दिन रात।।
- करता रो अभ्यास तो काम कठिन नी कोय।
  दरजी डोरो रात ने सुई मायले पोय।।
- थे की दो कन वे करयो इ मे उलझे काँह।
  हुयो देख जन रो भलो खुशी मान ई मॉह ।।
- साथ भण्यो हाकिम बण्यो घर छेटी नो पास।
  मिलवा ग्यो पूछ्यो मने कसे गाव रेवास।।
- अ तस उजलो चाहिजे तन सू काई काम।
  जम्यो तेल पावे कई घी का जतरो दाम।।
- काम शुरु जो भी करो पहला करो विचार।
  छोडो मत कीदा पछे आध बीच में जार।।
- भूल चूक करणी नही दख ओर की होड।
  गा मायने होय बल उत्तरी करणी दोड ।।

- राज कराई थें कसी, भली भणाई आज।
पाव बोझ ले चालता सुत ने आवे लाज।।
- भाषा हुई न आपणी हुयो आपणो राज।
मन सू गई न दासता हाय हाल भी आज ।।
- गाव बलाई जद करे बात नशा रे साथ।
अधिकारियों रो अकलबो नी अचरज री बात।।
- नेताजी कह दो जरा, किण सू सीख्या डाव।
भोपो केवे जो तरह अब के थावर आव।।
- बाध बधा बणवा सडक भली मदरसा खोल।
नैतिकता बिन देश रो नी कोडी रो मोल।।
- दाल परीगी तेल ग्यो घी तो कोसा दूर।
नाल्येमत खाले परी रोटी जल में चूर।।
- मिर्च्यां तक भी देश में महगी हुई अपार।
हे गरीब अब ग्रास तू, पाणी पीर उतार।।
- दादी घृत कुल्हड पकड, मायड मरियो लेर।
आज जीमावे है बहू, कदी यक फू बो फेर।।
- मूणा में भरता घीरत खायाभरता नाज।
अब छुक्लया में नाज अर शीशी में घी आज ।।
- मोट्यारा नालो मतो घी शक्कर की बाट।
दुर्लभ कर दी आज ये जो मक्की की घाट।।
- आख मीच करजे मतो कदी न आसी आँच।
भडिया कागज ऊपरे, दस्तखत करजे बाँच।।
- सादर पूछू राज ने, समझा दो थोडोक।
जूआ लाटरी मायने अन्तर है कतरोक।

– ब्याह करो देवे जदी, धन बेटी रो बाप।
कठे आपरो मॉजनो कस्या महाजन आप।।
– यू वाता चाहे भली, लाख सुणा दो आप।
चरित विना पडसी नहीं, मनख ऊपरे छाप।।
– मनख होर ई वात को, सदा राखजे ध्यान।
काम वणावो है कठिन सरडावो आसान।।
– करजे मत अभिमान यू, म्हैं कीदो यो काम।।
थू तो एक निमित है करवा वालो राम।।
– हो न सके जो काम तो कर देणों इन्कार।
खोटी करणो ठीक नी बारे रोज बुलार।।
– जी ने जग में ओर री है सेवा रो चाव।
वी रे लाख अभाव पण आनन्द रो न अभाव।।
– आडे मत पड ओर के आडे आवो सीख।
मनख जूण दी रामजी याद राख अतरीक।।
– अवगुण सू कई काम है गुण ने लेणो देख।
केलो खाणो आपणो, छिलको देणो फेंक।।
– सिवा एक लगोट रे, तन पर रख्यो न तार।
वाने सादर आज भी पूज रियो ससार।।
– नाप तोल कर बोलणो नीं करणी बकवाद।
साग सुधारे लूण कम अधिक बिगाडे स्वाद।।
– अतरो सो तो राखजे मनख होर ओसाण।
खोटाया करणी नहीं धन ओदा रे पाण।।
– मान लेवता आज मैं गाधीजी री सीख।
पडती कदी न मागणों परदेशा सू भीख।

– बणज बणाता ब्याव ने, रती न आई लाज।
पहली बार दहेज की, करे सूगला आज।।
– बढयो देश में देखलो कस्यो भयकर पाप।
धन बेटी का बापसू, माग वर को बाप।।
– गाधी के मन भावता, कर न सके यू काम।
का लेवे हर बात में जद गाधी को नाम।।
– गोरा ग्या करबा लाग्या काला साहिब राज।
दारु तो सोरो करयो दोरो करियो नाज।।
– सिर घोलो हो जायसा मर ही शायद जाय।
तो पण मिले न आज तो अणी राज में न्याय।।
– काम करे नी बात सू, सरे न कीदा रीस।
सर राज में दो जदी बिना रसीदी फीस।।
– पहली फीस वकील जी पूरी लई धराय।
रियो पियो लीपिक लियो तो भी मिल्यो न न्याय।।
– ओछा सू व्यवहार थू, भूल चूक मत राख।
एक टका की कसर में गाल्या देसी लाख।।
– राई नाकर कूप में खोजो तो मिल जाए।
कर सू छुट्यो राज में, कागद हाथ न आए।।
– सत्ता मा ही है नशो तोल बोल कतरोक।।
मदिरा की सो बोतला गटकावे जतरोक।।
– वादा कीदा मोखला फिरिया सो सो बार।
दरसण थे दीदा नहीं जीत्या पाछे आर।।
– कलम खींचती दाण तो राज करे नी गोर।
तडके हुकम दूसरो रात पडया दे ओर।।